विषय.	पृष्ठांक.

वीरविनोद,

प्रथम भाग.

भूगोल.

इस अपार शून्याकार आकाशमें अनेक ग्रह, उपग्रह, और उपग्रहोपग्रह भ्रमण करते हैं, जिनके विषयमें अनेक विद्वानोंका प्रमाण भिन्न भिन्न युक्तियोंके साथ प्रसिद्ध हुआ और होता जाता है, तथापि अबतक इस खगोलका निर्णय हस्तामलक नहीं हुआ. कितनेएक विद्वानोंका विचार है, कि जैसा यह सूर्य दिखाई देता है, और इसके साथ बहुतसे ग्रह, उपग्रह भ्रमण करते हैं वैसेही और भी अनेक सूर्य हैं, जो हमको नक्षत्र रूपसे दिखाई देते हैं और वे किसी एक बड़े सूर्यके गिर्द घूमते हुए चले जाते हैं. कई ऐसा कहते हैं, कि उस बड़े सूर्यके समान, जो हमारी पृथ्वीसे सम्बन्ध रखता है, अनेक सूर्य किसी अन्य बड़े सूर्यके गिर्द अपनी अपनी परिधिपर चक्कर खारहे हैं; परन्तु हम इस अपार महाकाशका वर्णन करनेमें पूरा पूरा सामर्थ्य न रखनेके कारण विस्तारको छोड़कर केवल अपना प्रयोजन सिद्ध करते हैं. जो सूर्य कि हमको दिखलाई देता है, उसके विषयमें अनेक विद्वानोंका कथन है, कि वह पृथ्वीके सदृश ठोस और किसी न किसी प्रकारकी स्टष्टि रखनेवाला है. कई विद्वानोंका यह आशय है, कि वह कुहरा अथवा धुएंके समान वस्तुका एक प्रकाशमान गोला है. कितनेएक यों बयान करते हैं, कि यह गैसके मुवाफ़िक़ रौशनीका एक गोला है. परन्तु इस समयके अनेक विद्वानोंकी

यह राय है, कि न इसमें कठोरता है और न किसी प्रकारकी स्टाप्टि है. जो पाठकगण इस प्रकरणको सविस्तर देखना चाहें, खगोलकी किताबोंमें देखसक्ते हैं; हम इसके लिये केवल इतनाही लिखेंगे, कि यह ८ लाख ६० हज़ार मीलके क़रीब व्यासवाला एक अग्निका गोला है, जो अपनी कीलपर २५ दिन ८ घंटा ९ मिनट में पूरा एक दौरा करता हुआ बड़े वेगसे अपने ग्रह, उपग्रहोंके साथ निज परिधिपर दौड़ता है. पहिले हमारे भारतवासी विद्वानोंने यह निर्णय किया था, कि सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, और शनैश्चर इस पृथ्वीके गिर्द घूमते हैं, परन्तु इस बातमें सिद्धान्त वेत्ता ज्योतिषियोंको विश्वास नहीं था, जैसाकि आर्य भट्टने अपने ग्रन्थ आर्य-सिद्धान्तमें सूर्यके गिर्द पृथ्वीका घूमना माना है, और पिछले दैवज्ञोंने पुराणोंका खण्डन समझकर इस विषयको छोड़दिया. सूर्य मंडलके गिर्द घूमने वाले ग्रह इस क्रमसे हैं- बुध, शुक्र, पृथ्वी, मंगल, बृहस्पति, शनैश्चर, युरेनस या हर्शल और नेप्च्यून इत्यादि, जिनके उपग्रह और आकार वग़ैरहका मुफ़स्सल हाल नीचे लिखे हुए नक्शहसे मालूम होगाः-

ग्रहोंके नाम और उनके उपग्रह, व्यास व गति वग़ैरहका नक्शह.

ग्रहोंके नाम.	उप ग्रहोंकी संख्या.	व्यास व हिसाब मील.	अपनी अपनी कीलपर एकबार घूमनेका समय.	सूर्यसे ग्रहोंका अन्तर व हिसाब मील.	सूर्यकी एक प्रदक्षिणामें ग्रहों का समय.	गतिका वेग एक घंटेमें.
बुध	०	३०५८	२४घंटा,५ मिनट	३५३९२०००	८७.९ दिन	१२६००० मील
शुक्र	०	७५१०	२३घंटा,२१मिनट	६६१३४०००	२२४.७ दिन	८०००० मील
पृथ्वी	१	७९२६	२३घंटा,५६मिनट	९१४३०००	३६५$\frac{1}{4}$ दिन	६४८०० मील
मङ्गल	०	४३६३	२४घंटा,३७मिनट	१३९३११०००	६८६.९ दिन	५४००० मील
बृहस्पति	४	८४८४६	९ घंटा, ५५मिनट	४७५६९२०००	४३३२.५दिन	३२४०० मील
शनैश्चर	८	७०१३६	१०घंटा,२९मिनट	८७२१३७०००	१०७५९.२दिन	२१६०० मील

युरेनस या हर्शल	६	३३२४७	९घंटा, ३०मिनट	१७५३८६९०००	३०६८६·८दिन	१८०००मील
नेपच्यून	२	३७२७६	अनिश्चित	२७४५९९८०००	६०१२६·७दिन	१०८०० मील

मङ्गल और वृहस्पतिके बीच वाले एक ग्रह के टूटजानेसे जो कईएक टुकड़े होगये, उनके नाम यूरोपिअन विद्वानोंने फ़्लोरा, वेस्टा, ईरिस, मेटिस, हिबी, आस्ट्रिया, जूनो, सीरिस और पालास वग़ैरह रक्खे हैं.

अब हम उपरोक्त ग्रहोंमेंसे इस प्राकृतिक पृथ्वीका वर्णन करते हैं, जिसको यूरोपिअन विद्वानोंने हस्तामलकवत् कर दिखलाया है. पुराणोंके मतको छोड़कर भारतवर्षीय प्राचीन और अर्वाचीन गणितकारोंका मत, वर्त्तमान यूरोपिअन विद्वानोंके मतसे एकता के साथ यह प्रगट करता है, कि यह प्राकृतिक भूगोल नारंगीके समान गोलाकार है, जिसके दक्षिण और उत्तर ध्रुवोंके समीपवाले हिस्से दबे हुए हैं. इस भूमंडलका व्यास ७९२५ मील, परिधि २४८९६ मील, और क्षेत्रफल १९७०००००० वर्गात्मक मील है, जिसका दो तिहाई हिस्सह जल और एक तिहाई थल है. यह गोला ३६० अंशोंमें विभक्त किया गया है, और हरएक अंश ६९$\frac{1}{10}$ मीलका माना गया है. गोले के दक्षिणोत्तर भागोंको अक्षांश, पूर्व-पश्चिम भागोंको देशान्तर, और एक अंशके साठवें भागको कला तथा कलाके साठवें भागको विकला कहते हैं. इस भूमंडलकी मध्य रेखाका नाम विषुवत रेखा (ख़ति इस्तिवा) है, जिसके दक्षिणोत्तर ध्रुवोंकी तरफ़ अर्थात् उत्तर और दक्षिण दोनों ओर साढ़े तेईस तेईस अंशकी दूरीपर उष्ण कटिबद्ध माना गया है, उसके बीच वाले देश उष्ण प्रधान हैं; और दोनों ध्रुवोंसे साढ़े तेईस तेईस अंशके अन्तरपर दो शीत कटिबद्ध रेखा कहलाती हैं. इन दोनों रेखाओं अर्थात् उष्ण-कटिबद्ध और शीत कटिबद्धके बीचवाले देश शीतोष्ण प्रधान माने गये हैं; और शीत-कटिबद्धसे दोनों ध्रुवोंकी तरफ़के देश शीत प्रधान माने गये हैं, क्योंकि वहां सूर्यकी किरणें सदा तिरछी पड़ती हैं. जो कि इस गोलेका दो तिहाई हिस्सह जलसे ढकाहुआ है, इसलिये उसमें यात्रा करनेके निमित्त भूगोल वेत्ता लोगोंने उसके न्यारे न्यारे विभाग बनाकर उनको नीचे लिखे हुए कल्पित नामोंसे प्रसिद्ध करदिया है. प्रथम पासिफ़िक महासागर, जो एशिया और अमेरिकाके बीचमें है, उसका क्षेत्रफल अनुमान ७२०००००० वर्गमील है; दूसरा अटलांटिक महासागर, जो यूरोप, आफ़्रिक़ा और अमेरीकाके बीचमें है, और इसका क्षेत्रफल अनुमान ३५०००००० वर्गमील है; तीसरा हिन्द महासागर, यह हिन्दुस्तानके दक्षिणमें है, और इसका क्षेत्रफल अनुमान

२५०००००० वर्गमील है; चौथा उत्तर महासागर, जो उत्तर ध्रुववृत्त अर्थात् ध्रुवसे २३ $\frac{1}{2}$ अंशकी दूरीपर फैलाहुआ है, इसका क्षेत्रफल अनुमान ५०००००० वर्गमील है; और पांचवां दक्षिण महासागर, जो दक्षिण ध्रुववृत्तके भीतर अनुमान ८०००००० वर्गमीलके विस्तारमें फैला हुआ है.

इस गोलेमें $\frac{1}{3}$ स्थल है, जिसके दो बड़े भाग अर्थात् एक पूर्व गोलार्द्ध, और दूसरा पश्चिम गोलार्द्ध कहलाता है. अंग्रेज़ी किताबोंमें लिखा है, कि पश्चिम गोलार्द्धका भेद पहिले लोगोंको मालूम नहीं था, परन्तु ईसवी १४९२ [वि० १५४८ = हि० ८९७] में क्रिस्टोफ़र कोलम्बसने दर्याफ़्त करके इसका नाम नई दुनया रक्खा. जलके समान स्थलके भी ५ बड़े विभाग माने गये हैं. पहिला एशिया, दूसरा यूरोप, तीसरा आफ़्रिक़ा, चौथा उत्तरी व दक्षिणी अमेरिका, और पांचवां ओशेनिया अर्थात् आस्ट्रेलिया व न्यूज़ीलैंड वग़ैरह टापू.

अब हम एशियाको छोड़कर, जिसका हाल पीछे लिखा जायेगा, यहांपर दूसरे ४ खंडोंका वर्णन करते हैं.

यूरोप.

सीमा- उत्तरको, उत्तर महासागर; पश्चिमको, अटलांटिक महासागर; दक्षिणमें, भूमध्यसागर, मारमोरा सागर, काला सागर, और काकेशस पर्वत; और पूर्वमें कास्पिअन समुद्र, यूराल नदी, और यूराल पहाड़ है. यह महाद्वीप पूर्व गोलार्द्धके ३६°-०′ से ७१°-१०′ उत्तर अक्षांश, और ९°-३०′ से ६८°-०′ पूर्व देशान्तरके बीचमें वाक़े है. इसकी अधिकसे अधिक लम्बाई ३००० मील और चौड़ाई २४०० मील है, क्षेत्रफल इसका ३८३०००० मील मुरब्बा, और आबादी ३२७५००००० से कुछ अधिक है. इस महाद्वीपमें नीचे लिखे अनुसार २१ राज्य हैंः-

यूरोपके राज्योंका नक़्शह.

नम्बर.	नाम राज्य.	राजधानी.	क्षेत्रफल (वर्ग मील)	आबादी.	कैफ़ियत.
१	इंग्लैंड मए वेलसके	लण्डन	५८३२०	२५९७४४३९	ये तीनों मुल्क एक बादशाह याने क्वीन विक्टोरियाके आधीन हैं.
२	स्कॉट लैंड	एडिम्बरा	३०४६३	३७३५५७३	
३	आइलैंड	डब्लिन	३१७५४	५१७४८३६	

नम्बर.	नाम राज्य.	राजधानी.	क्षेत्रफल (वर्गमील)	आबादी.	कैफ़ियत.
४	फ्रांस	पैरिस	२०१९००	३७६७२०००	
५	स्पेन	मैड्रिड	१८२७५८	१६८५८७२१	
६	पुर्तगाल	लिस्बन्	३६५००	४७४५१२४	
७	बेल्जिअम्	ब्रुसेल्स	११३५०	५९१००००	
८	हॉलैण्ड	ऐम्स्टर्डम्	१२६३७	४३९१०००	
९	जर्मनी व प्रुशिया	बर्लिन्	२१२०००	४६८५६०००	ये दोनों देश मिलकर जर्मनीकी बादशाहत बनी है.
			१३६२३८	२८३१८०००	
१०	डेन्मार्क	कोपन-हेगन्	१४५५३	१९६९०००	
११	नॉर्वे	क्रिश्चे-निया	१२१८०७	१८०६९००	
१२	स्वीडन	स्टॉक्होम्	१६८०४२	४७१७०००	
१३	यूरोपीयरशिया	सेण्टपीट-र्सबर्ग	२२०००००	८८५०००००	इसमें पोलैण्ड व फ़िन्लैण्ड भी शामिल हैं.
१४	आस्ट्रिया-हंगरी	वीएना	२४०९४३	३९२२४०००	
१५	स्विट्ज़रलैण्ड	बर्न	१५७२७	२८४६१०२	
१६	इटली	रोम	११४४४५	२९९४४०००	
१७	टर्की (रूम)	कॉन्स्टेंटीनोपल (कुस्तुन्तुन्या)	१३५५००	८९८७०००	

नम्बर.	नाम राज्य.	राजधानी.	क्षेत्रफल (वर्ग मील)	आबादी.	कैफ़ियत.
१८	रोमानिया	बुचारेस्ट	४९४६३	५३७६०००	
१९	सर्विया	बेल्ग्रेड	१८८१६	१९७००००	
२०	मॉंटिनिग्रो	सेटिन	२८९८	२३६०००	
२१	ग्रीस (यूनान)	एथेन्स	२५४४१	१९८००००	

पहाड़– आल्प्स पर्वत, इटलीको जर्मनी, स्विट्ज़रलैंएड और फ्रांससे जुदा करता है; पिरेनीज़, फ्रांस और स्पेनके बीचमें; एपिनाइन्ज़, इटलीमें; बाल्कन, टर्कीमें; कार्पेथिअन, आस्ट्रियामें; डॉफ्रिन अथवा डोवर फ़ील्ड, नॉर्वेमें; कोलन पर्वत, नॉर्वे और स्वीडनके मध्यमें; यूराल और काकेशस पर्वत, यूरोप और एशियाके बीचमें हैं.

एटना पर्वत जो सिसिलीके टापूमें है, सबसे बड़ा ज्वालामुखी है; इसके सिवा हेक्ला तथा विसूविअस नामके दो छोटे ज्वालामुखी पर्वत और भी हैं. हेक्ला आइसलैंएड में और विसूविअस इटली देशमें है.

द्वीप– नोवाज़ेम्बला, स्पिट्ज़बर्जन, और लोफ़ोडन उत्तर महासागरमें; फ़्यूनन, ज़ीलैंएड, और लालैंएड, कैटेगेटमें; ओलैंएड, गॉथलैंएड, ओज़ल, डेगो और आलैंएड, बाल्टिक समुद्रमें; आइसलैंएड, फ़ैरो, ग्रेट ब्रिटन और आइर्लैंएड अटलांटिक महासागरमें; मैजॉरका, मिनॉरका, सार्डिनिया, कॉर्सिका, सिसिली, माल्टा, इयोनिअन द्वीप, कैंएडिया अथवा क्रीट, भूमध्य सागरमें; और नीग्रोपॉन्ट तथा साइक्लेडीज़ यूनानके समुद्रमें हैं.

प्रायद्वीप– जटलैंड, डेन्मार्कमें; मोरिया, ग्रीस (यूनान) में; और क्रिमिया, रशिया के दक्षिणमें है.

अन्तरीप– उत्तरी अन्तरीप, नॉर्वेके उत्तरमें; स्पार्टिवेन्टो, इटलीके दक्षिणमें; मटापान, यूनानके दक्षिणमें; नेज़ नॉर्वेके दक्षिणमें; स्का, डेन्मार्कके उत्तरमें; क्लिअर, आइर्लैंएडके दक्षिणमें; फ़्लेम्बोरो और फ़ोरलैंड, इंग्लिस्तानके पूर्वमें; डंकन्सबे हेड, स्कॉट्लैंडके उत्तरमें; लैंड्ज़एंड, इग्लैंडके दक्षिण–पश्चिममें; लाहोग, फ्रांसके उत्तर–पश्चिममें; ओर्टेगल और फ़िनिस्टर, स्पेनके उत्तर–पश्चिममें; और सेंट विन्सेंट, पुर्तगालके दक्षिण–पश्चिममें है.

डमरूमध्य- पहिला कॉरिन्थ, जो मोरिया और उत्तर ग्रीस (यूनान) को जोड़ता है, और दूसरा पैरेकॉप, जो क्रिमियाको रशियासे मिलाता है.

समुद्र और खाड़ी- श्वेत समुद्र, रशियाके उत्तरमें; स्कैगररैक्, डेन्मार्क और नॉर्वेके मध्यमें; कैटेगेट, डेन्मार्क और स्वीडनके बीचमें; बाल्टिक, स्वीडनको जर्मनी, प्रुशिया और रशियासे जुदा करता है; रिगा और फ़िन्लैण्डकी खाड़ी, रशियाके पश्चिममें; बॉथनियाकी खाड़ी, स्वीडन और रशियाके बीचमें; उत्तरी समुद्र या जर्मन सागर, नॉर्वे और ब्रिटानियाके मध्यमें; सेण्ट ज्यॉर्जकी नहर और आइलैंण्डका समुद्र, आइलैंण्ड और ब्रिटनके मध्यमें; इंग्लैण्डकी नहर, इंग्लिस्तान और फ्रांसके मध्यमें; बिस्केकी खाड़ी, फ्रांसके पश्चिम और स्पेनके उत्तरमें; रूमसागर अथवा भूमध्यसागर, यूरोप और आफ्रिकाके बीचमें; लायन्सकी खाड़ी फ्रांसके दक्षिणमें; जिनोआकी खाड़ी, इटलीके उत्तर-पश्चिममें; टॉरेन्टोकी खाड़ी, इटलीके दक्षिणमें; एड्रियाटिक् समुद्र, या वेनिसका खाल, इटली और टर्की (रूम) के बीचमें; यूनानका समुद्र, यूनान और एशिया कोचकके बीचमें; मारमोरा सागर, यूरोपीय रूम और एशियाई रूमके मध्यमें; काला सागर और अज़ोफ़ सागर रूसके दक्षिणमें हैं.

मुहाने- साउण्ड, ज़ीलैंण्ड और स्वीडनके बीचमें; मसीना, इटली और सिसिलीके मध्यमें; बोनिफ़ेशियो, कॉर्सिका और सार्डिनियाके बीचमें; जिब्राल्टर, स्पेन और आफ्रिकाके बीचमें; ओट्रेन्टो, इटली और यूरोपीय रूमके बीचमें; बास्फ़ोरस, मारमोरा और काले सागरके बीचमें; काफ़ा, काले सागर और अज़ोफ़ सागरके मध्यमें; डोवर, जर्मन सागर और इंग्लिश चैनलके मध्यमें.

झील- लडोगा, ओनीगा, और पीपस नामके झील, रशियामें; वेनर और वेटर, स्वेडनमें; जिनीवा, स्विट्ज़रलैंडमें; और कॉन्स्टेन्स, स्विट्ज़रलैंड और जर्मनीके बीचमें है.

यूरोप देशकी मुख्य मुख्य नदियां.

नम्बर.	नाम नदी	लंबाई व हिसाब मील.	जिन देशोंमें होकर बहती है.	गिरनेका स्थान.
१	वॉलगा	२४००	रशिया	कास्पिअन समुद्र

नम्बर.	नाम नदी.	लम्बाई व हिसाब मील.	जिन देशोंमें होकर वहती है.	गिरनेका स्थान.
२	डैन्यूब	१७५०	जर्मनी, आस्ट्रिया टर्की, रोमानिया और सर्विया.	काला समुद्र
३	नीपर	१२६०	रशिया.	काला समुद्र
४	डोन	११००	रशिया.	अज़ोफ़ सागर
५	पिचोरा	९००	रशिया.	उत्तर महासागर
६	राइन	७६०	स्विट्ज़र्लैण्ड, जर्मनी व हॉलैण्ड.	उत्तर समुद्र
७	उत्तर ड्वीना	७६०	रशिया.	श्वेतसागर
८	नीस्टर	७००	आस्ट्रिया और रशिया.	कालासागर
९	एल्ब	६९०	जर्मनी.	उत्तर समुद्र
१०	विश्च्यूला	६२८	रशियाका पोलैण्ड और प्रुशिया	वाल्टिक समुद्र
११	लोयर	५७०	फ्रांस	बिस्केकी खाड़ी
१२	ओडर	५५०	प्रुशिया.	वाल्टिक समुद्र
१३	टेगस	५१०	स्पेन और पुर्तगाल.	अटलांटिक महासागर
१४	टेमस	२१५	इंग्लैण्ड	जर्मन समुद्र

इस महाद्वीपकी आवो हवा सम और सुहावनी है, उत्तरी देशोंमें शरदी और दक्षिणी विभागोंमें गर्मी रहती है.

यूरोप खण्डके लोग विद्या, बल, दस्तकारी, हुनर, इज़्ज़त, और लियाक़तमें दूसरे मुल्कोंसे उत्तम हैं, और सिवा रियासत टर्की (रूम) के जो मुसल्मानी धर्म पालते हैं, यहांके तमाम बाशिन्दोंका मुख्य धर्म क्रिश्चिअन है.

आफ्रिका.

आफ्रिका महाद्वीप पूर्वी गोलार्द्धके पश्चिममें है; इसकी आबादी अनुमान २०६०००००, लम्बाई क़रीब ५००० मील, चौड़ाई ४६०० मील, और रक़बह ११७५०००० वर्गमील है.

सीमा – इसके उत्तरमें, भूमध्यसागर; पश्चिममें, अटलांटिक महासागर; दक्षिणमें, दक्षिण महासागर; और पूर्वमें हिन्द महासागर, लालसागर और स्वेज़की नहर है. इस महाद्वीपमें १८ देश हैं, जिनके नाम मए राजधानीके नीचे लिखे अनुसार हैं:–

आफ्रिकाके राज्योंका नक्शह.

नम्बर.	नाम देश.	नाम राजधानी.	नम्बर.	नाम देश.	नाम राजधानी.
१	मिश्र (इजिप्ट)	क़ाहिरा	७	ट्यूनिस	ट्यूनिस
२	न्यूबिया	ख़र्तूम	८	एल्जीरिया	अल्जिअर्स
३	एबिसीनिया	गौंडार	९	मोराको	मोराको
४	बार्क़ा	बेनग़ाज़ी	१०	सोडान	टिम्बकटू
५	फ़ेज़ान	मर्ज़ूक़	११	सेनिगेम्बिया	बैथर्स्ट
६	त्रिपोली	त्रिपोली	१२	उत्तरी गिनी	कोमासी

नम्बर.	नाम देश.	नाम राजधानी.	नम्बर.	नाम देश.	नाम राजधानी.
१३	दक्षिणी गिनी	लोआंगो	१६	मैडेगास्कर	टैनन्रिवो
१४	केप कॉलोनी	केपटाउन	१७	मोज़ेम्विक	मोज़ेम्विक
१५	नेटाल	पीटरमैरिट्ज़्वर्ग	१८	जैंज़िबार या जंगुबार	जैंज़िबार

पहाड़– अतलस पर्वत, बार्बरीके पश्चिममें; लोपाटा, मोज़ेम्विकके पश्चिममें; किलिमैन्जारो और केनिया नामके पर्वत भूमध्य रेखाके पास; एबिसीनिया या हबूशके पहाड़, एबिसीनियामें; कॉंग पर्वत, निग्रीशियाके दक्षिणमें; कैमेरून्स, व्याफ़्रामें; निउ वेल्ड, केप कॉलोनीमें; और टेनेरिफ़ नामका ज्वालामुखी, कैनेरी द्वीपमें है.

द्वीप– मैडीरा, कैनेरी, केपवर्डके द्वीप, फ़र्नैण्डोपो, सेण्ट टॉमस, असेन्शन, और सेण्ट हेलिना नामके द्वीप अटलांटिक महासागरमें; मैडेगास्कर, बोर्वन, मॉरिशिअस, कोमोरो, अमिरैन्टी, सेशेल्, और सौकोट्रा हिन्द महासागरमें हैं.

अन्तरीप– बॉन और स्पार्टेल, उत्तरमें; व्लैंको और वर्ड, पश्चिममें; केप ऑव गुड होप और अगलहास दक्षिणमें; कॉरिन्टीज़, डेल्गाडो, और ग्वार्डाफ़्यु पूर्व दिशामें हैं.

समुद्र व खाड़ी– सिड्रा और केब्ज़ नामकी खाड़ियां उत्तरमें; गिनी, बेनिन् और व्याफ़्राके आखात, पश्चिममें; सेण्ट हेलिना, फ़ाल्स और अल्गोआ आखात, दक्षिणमें; लालसमुद्र, अदनकी खाड़ी (जो आफ़्रिका और अरबके मध्यमें हैं) और मोज़ेम्विककी नहर (मोज़ेम्विक और मैडेगास्करके बीचमें) पूर्वमें हैं.

झील– झील चाड, सोडानमें; अल्बर्ट न्यान्ज़ा, विक्टोरिया न्यान्ज़ा, मुटाज़िज और टंगेनिका, ज़ैंज़िबारके पश्चिममें; और न्यासा, शिर्वा, और बैंगव्योलो, मोज़ेम्विकके पश्चिममें हैं.

आफ्रिकाकी मुख्य मुख्य नदियां.

नम्बर.	नाम नदी.	लम्बाई व हिसाब मील.	जिन देशोंमें होकर वहती है.	गिरनेका स्थान.
१	नाइल	३३००	मिश्र, न्यूबिया और विषुवत रेखाके आसपास वाले मुल्क.	भूमध्य सागर
२	काँगो अथवा ज़ेरी	३०००	काँगो फ़्री स्टेट	अटलांटिकमहासागर
३	नाइजर	२३००	सोडान और उत्तर गिनी	गिनीकी खाड़ी
४	ज़ेम्वेज़ी	१४००	दक्षिणी आफ्रिका	मोज़ेम्बिककी नहर
५	ऑरेंज	१०००	केप कॉलोनीके उत्तरमें	अटलांटिकमहासागर
६	सेनिगाल	१०००	सेनिगेम्बिया	ऐज़न
७	गेम्बिया	१०००	सेनिगेम्बिया	ऐज़न

इस महाद्वीपकी आवोहवा पृथ्वीके अन्य भागोंसे अधिक गर्म है. यहांपर ख़ासकर दो ऋतु अर्थात् गर्मी और वरसात ही होते हैं, शरदी कम पड़ती है.

यहांके क़रीव क़रीव तमाम वाशिन्दे असभ्य और जंगली हैं, और उनका मज्हव यातो मुसल्मानी या मूर्तिपूजक है.

अमेरिका.

इस खंडके दो विभाग किये गये हैं, जिनको उत्तर अमेरिका और दक्षिण अमेरिका कहते हैं.

(उत्तर अमेरिका.)

इस खण्डकी ज़ियादहसे ज़ियादह लम्बाई ४४०० मील, और चौड़ाई ३०००

मील है, इसका क्षेत्रफल ९०००००० मील मुरब्बा और आबादी ७२०००००० से कुछ अधिक है.

सीमा- इसके उत्तरमें, उत्तर महासागर; पश्चिममें, पासिफ़िक महासागर; दक्षिणमें पासिफ़िक महासागर, पनामाका डमरूमध्य, और मैक्सिकोका आखात; और पूर्वमें अटलांटिक महासागर है. उत्तर अमेरिकाके देशोंके पृथक् पृथक् नाम मए उनकी राजधानियोंके नीचे लिखे अनुसार हैंः-

उत्तर अमेरिकाके राज्योंका नक़्शह.

नम्बर.	नाम देश.	नाम राजधानी.	नम्बर.	नाम देश.	नाम राजधानी.
१	ग्रीनलैंएड	जूलिअनशाब	९	केवाटिन्	फ़ोर्ट यार्क
२	कनाडा	ओटावा	१०	न्यूफ़ाउंडलैंएड	सेन्ट जॉन्स
३	नोवा स्कोशिया	हैलिफ़ैक्स	११	युनाइ टेडस्टेट्स	वाशिंग्टन
४	न्यूब्रंज़्विक	फ़्रेडेरिक्टन	१२	मैक्सिको	मैक्सिको
५	क्वेबेक	क्वेबेक	१३	ग्वाटेमाला	ग्वाटेमाला
६	ऑन्टेरियो	ओटावा	१४	सैनूसाल्वेडोर	सैनूसाल्वेडोर
७	मॉनीटोबा	विन्नीपेग	१५	ब्रिटिश हॉंड्यूराज़	बेलीज़
८	ब्रिटिश कोलम्बिया	विक्टोरिया			

पहाड़- अलेघनी पर्वत, युनाइटेड स्टेट्समें; रॉकी पर्वत, अमेरिकाके पश्चिमी तटपर उत्तर महासागरसे पनामा डमरूमध्यतक फैला हुआ है; कैलिफ़ोर्नियाका पहाड़, कैलिफ़ोर्नियामें; कोरडिलेराज़, मैक्सिकोमें; फ़ेअरवेदर और सेण्ट एलियास अलास्काके तटपर. इनके अलावह पोपोकैटेपेल और ओरिज़ाबा नामके दो ज्वाला-मुखी पर्वत मैक्सिकोमें हैं.

द्वीप- वेस्ट इंडीज़, बर्म्यूडाज़, केप ब्रिटन, प्रिन्स एडवर्ड, और न्यूफ़ाउण्डलैण्ड, अटलांटिक महासागरमें; ग्रीनलैण्ड, ब्रिटिश अमेरिकाके ईशान कोणमें; बैंक्सलैण्ड, कॉक्बर्न, पैरी द्वीप, ग्रिन्नेललैण्ड, हॉललैंड, और ग्रेटलैण्ड, उत्तर महासागरमें; और एल्यूशियन तथा वैंकोवर, उत्तर पासिफ़िक महासागरमें हैं.

प्रायद्वीप - लैब्रेडोर, बूथिया और मेल्विल, उत्तरमें; नोवा स्कोशिया, ब्रिटिश अमेरिकाके अग्नि कोणमें; फ़्लॉरिडा, युनाइटेड स्टेट्सके अग्निकोणमें; यूकेटन, मैक्सिको के अग्निकोणमें; लोअर कैलिफ़ोर्निया, मैक्सिकोके पश्चिममें; और अलास्का, अलास्काके दक्षिण-पश्चिममें है.

अन्तरीप- फ़ेअरवेल, ग्रीनलैण्डके दक्षिणमें; चडले, ब्रिटिश अमेरिकाके उत्तरमें, और चार्ल्स दक्षिणमें; सेबल, नोवास्कोशियाके दक्षिणमें; सेबल या टांचा, फ़्लॉरिडाके दक्षिणमें; कैटोच, यूकेटनके उत्तरमें; सेन्ट लूकस, कैलिफ़ोर्नियाके दक्षिणमें; प्रिन्स ऑव वेल्स, बहरिंग मुहानेपर; और बारो, उत्तरमें.

समुद्र व खाड़ी- बैफ़िन आखात, ग्रीनलैण्डके पश्चिमोत्तरमें; हडसन, ब्रिटिश अमेरिकाके उत्तरमें, और सेन्ट जेम्सकी खाड़ी दक्षिणमें; कैलिफ़ोर्नियाकी खाड़ी, मैक्सिकोके पश्चिममें; कैम्पेचे, यूकेटनके पश्चिममें; हॉंडूराज़ आखात, हॉंडूराज़के पूर्व में; कैरिबिअन, मध्य अमेरिकाके, पूर्वमें; चेसापीक आखात, युनाइटेड स्टेट्सके पूर्वमें; सेण्ट लॉरेन्सकी खाड़ी, अमेरिका और न्यूफ़ाउण्डलैण्डके बीचमें; फ़्लॉरिडाकी नहर, युनाइटेड स्टेट्स और बहामा द्वीपके मध्यमें; और फ़ंडेकी खाड़ी, नोवास्कोशिया और न्यू ब्रन्ज़्विकके मध्यमें है.

मुहाना- डेविस, अटलांटिक महासागर और बैफ़िन आखातको मिलाता है; लैंकेस्टर साउण्ड, बारो, मेल्विल साउण्ड, और बैंक्स स्ट्रेट, बैफ़िन आखातके पश्चिममें; स्मिथ साउण्ड, केनेडी नहर, और रोबसन, बैफ़िन आखातके उत्तरमें; हडसन, और फ़्राबिशर, हडसनकी खाड़ी में; बेल आइल, लैब्रेडोर और न्यूफ़ाउण्ड लैण्डके मध्यमें; बहरिंग, उत्तरी अमेरिका और एशियाके मध्यमें, जुआन डि फ्यूका, युनाइटेड स्टेट्स और वैंकोवर द्वीपके मध्यमें.

झील- ग्रेट स्लेव, ग्रेटबेअर, एथाबास्का, और विनिपेग, कनाडाके राज्यमें; सुपीरिअर, ह्यूरन, ईरी, ऑन्टेरियो, युनाइटेड स्टेट्स और कनाडाके बीचमें; मिशिगन और ग्रेट साल्ट, युनाइटेड स्टेट्समें; निकारागुआ, मध्य अमेरिकामें; और नियाग्राका मशहूर झरना ऑन्टेरियो और ईरी झीलके बीचमें हैं.

उत्तरी अमेरिकाकी मुख्य मुख्य नदियां.

नम्बर.	नाम नदी.	लंबाई ब हिसाव मील.	जिन देशोंमें होकर बहती है.	गिरनेका स्थान.
१	मिसिसिपी	३१६०	युनाइटेड स्टेट्स	मैक्सिकोकी खाड़ी
२	सेन्ट लॉरेन्स	२०००	कनाडाके दक्षिण पूर्व	अटलांटिक महासागर
३	आर्केन्सस	२०००	०	मिसिसिपी नदी
४	मैकेनूज़ी	१६००	कनाडा राज्यके उत्तरी पश्चिमी ज़िलोंमें	उत्तर महासागर
५	लालनदी	१५००	०	मिसिसिपी नदी
६	रायो ग्रैण्डी डेल् नोर्ट	१४००	युनाइटेड स्टेट्स और मैक्सिकोके बीचमें	मैक्सिकोकी खाड़ी
७	ओहियो	१०३३	०	मिसिसिपी नदी
८	कोलम्बिया (आरेगोन)	१०००	युनाइटेड स्टेट्सके उत्तर-पश्चिममें	पासिफ़िक महासागर
९	फ्रेज़र	०	ब्रिटिश कोलम्बिया	ज्यॉर्जियाकी खाड़ी

इस महाद्वीपकी आबोहवा, पूर्वी गोलार्द्धके देशोंकी अपेक्षा ठंढी है.

इस खण्डमें अंग्रेज़ोंके अलावह कई दूसरे देशोंके लोग और वहांके अस्ली बाशिन्दे रहते हैं. यहांके निवासियोंका मज़्हब प्रायः क्रिश्चिअन है. यह देश नई नई बातों और वस्तुओंके निर्माण करनेकी शक्तिमें यूरोपसे भी बढ़कर है.

(दक्षिण अमेरिका.)

इस महाद्वीपकी ज़ियादहसे ज़ियादह लम्बाई ४७०० मील, और चौड़ाई ३२००

मील है. क्षेत्रफल इसका ६५०००००० मील मुरब्बा, और आबादी २८०००००० मनुष्योंकी है.

सीमा- उत्तरमें, कैरिबिअन सागर और पनामाका डमरूमध्य; पश्चिममें, पासिफ़िक महासागर; दक्षिणमें, दक्षिण महासागर; और पूर्वमें, अटलांटिक महासागर है. इस खण्डमें नीचे लिखे हुए १४ राज्य हैं:-

दक्षिण अमेरिकाके राज्योंका नक्शह.

नम्बर.	नाम देश.	नाम राजधानी.	नम्बर.	नाम देश.	नाम राजधानी.
१	कोलम्बिया	बगोटा	८	पेरू	लाइमा
२	इक्केडोर	क्वीटो	९	बोलीविया	चुकीसाका
३	वेनेज्यूला	कैरेकास	१०	पैराग्वे	ऐसेनूशन
४	गियाना (.फ्रांसीसी)	केनी	११	लाप्लाटा	बोनस एरीज़
५	गियाना (ब्रिटिश)	ज्यॉर्ज टाउन	१२	यूरूग्वे	मोन्टविड्यो
६	गियाना (डची)	पैरेमैरिवो	१३	चीली	सेनूशिएगो
७	ब्राज़िल	रायोजैनीरो	१४	पैटेगोनिया	पन्टा एरिनाज़

पर्वत- एंडीज़ अथवा कॉर्डिलेराज़, पश्चिमी तटपर पनामा डमरूमध्यसे मैजेलनके मुहानेतक फैला हुआ है, इसमें कोटोपाक्सी, ऐंटीसाना, और पिचिनूचा नामी तीन ज्वालामुखी हैं; पेरिम, अमेज़न और ओरिनिको नदियोंके मध्यमें; और ब्राज़िल का पहाड़, ब्राज़िल देशमें है.

द्वीप- टेराडेल् फ्यूगो, फ़ॉकलैण्ड और स्टेटन, अटलांटिक महासागरमें; जुआन-फ़र्नेन्डीज़, चिल्लीके पश्चिममें; चिन्का द्वीप, पेरूके पश्चिममें; और गेलापागोस, इक्केडोर के पश्चिममें है.

अन्तरीप – सेन्टरॉक, ब्राज़िलके पूर्वमें; और हॉर्न, टेराडेल् फ्यूगोके दक्षिणमें है.

डमरूमध्य – पनामा, उत्तर और दक्षिण अमेरिकाको जोड़ता है. आज कल इसको काटकर अटलांटिक और पासिफ़िक महासागरको मुहानेके ज़रीएसे एक करनेकी कोशिश होरही है.

समुद्र व खाड़ी– डारिअन आखात, कोलम्बियाके उत्तरमें; मराकेबो, वेनेज़्यूलाके किनारेपर; ऑलसेएट्सका आखात और अमेज़न नदीका दहाना, ब्राज़िलके उत्तरमें; लाह्राटा नदीका दहाना, लाह्राटाके पूर्वमें; ग्वायाकिलकी खाड़ी और पनामाका आखात, कोलम्बियाके किनारेपर पासिफ़िक महासागरमें हैं.

मुहाना – मैजेलन्, पैटेगोनिया और टेराडेल् फ्यूगोके बीचमें; लेमेरी, टेराडेल्- फ्यूगो और स्टेटन द्वीपके बीचमें हैं.

झील – मराकेबो, वेनेज्यूलामें; टीटीकाका, पेरू और बोलीवियामें; और पेटास ब्राज़िलके दक्षिणमें.

दक्षिण अमेरिकाकी मुख्य मुख्य नदियां.

नम्बर.	नाम नदी.	लम्बाई ब हिसाब मील.	जिन देशोंमें होकर बहती है.	गिरनेका स्थान.
१	अमेज़न	४०००	ब्राज़िल	अटलांटिक महासागर
२	लाह्राटा	२३००	आर्जेन्टाइन	”
३	सैन् फ्रैन्सिस्को	१५००	ब्राज़िल	”
४	ओरिनोको	१४८०	वेनेज्यूला	”
५	मैग्डेलिना	८६०	कोलम्बिया	केरेबिअन सागर
६	एसक्वीबो	४५०	गियाना	अटलांटिक महासागर

इस महाद्वीपकी आबोहवा उत्तरी अमेरिकाकी अपेक्षा गर्म है. मुल्कके बाशिन्दोंकी हालत और उनका मज़्हब उत्तर अमेरिकासे मिलता जुलता हुआ है.
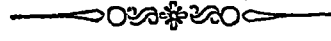
ओशिनिया.

इस द्वीप समूहमें सम्पूर्ण पासिफ़िक महासागरके और बहुतसे हिन्द महासागरके द्वीप शामिल हैं. ये सब द्वीप तीन भागोंमें विभक्त हैं,- पहिला मैलेशिया, दूसरा आस्ट्रेलेशिया, और तीसरा पॉलिनेशिया.

(१) मैलेशिया सम्बन्धी द्वीप.

नम्बर.	नाम द्वीप.	मुख्य शहर.	नम्बर.	नाम द्वीप.	मुख्य शहर.
१	समात्रा	बेन्कूलन् और आचीन	४	सेलिबीज़्	मकासर
२	जावा	बटेविया	५	मौल्यूकस और बैंडास	ऐम्बॉयना
३	बोर्नियो	ब्रूनी	६	फ़िलिपाइन	मैनिल्ला

मैलेशियाके कुल द्वीपोंका रक़बह ८००००० मील मुरब्बा, और आबादी २७०००००० मनुष्योंकी है.

(२) आस्ट्रेलेशिया सम्बन्धी द्वीप.

नम्बर.	नाम द्वीप.	मुख्य नगर.	नम्बर.	नाम द्वीप.	मुख्य नगर.
१	न्यू साउथ वेल्स	सिडनी	३	दक्षिणी आस्ट्रेलिया	एडिलेड
२	विक्टोरिया	मेल्बोर्न	४	क्वीन्स लैंड	ब्रिस्बेन

नम्बर.	नाम द्वीप.	मुख्य नगर.	नम्बर.	नाम द्वीप.	मुख्य नगर.
५	पश्चिमी आस्ट्रेलिया	पर्थ	९	न्यू हेब्रिडीज़	०
६	उत्तरी आस्ट्रेलिया	पोर्ट एसिंग्टन	१०	न्यू कैलेडोनिया	०
७	न्यू गिनीज़	०	११	टैस्मानिया	हॉवर्ट टाउन
८	सुलैमान द्वीप	०	१२	न्यू ज़ीलैण्ड	ऑक्लैण्ड

आस्ट्रेलिया, टैस्मानिया, और न्यू ज़ीलैण्ड, ये तीनों आस्ट्रेलेशियाके मुख्य विभाग हैं.

आस्ट्रेलियाकी लम्बाई २५००, और चौड़ाई १९७० मील है. यह द्वीप दुनयाभरके सब द्वीपोंमें बड़ा है; इसका क्षेत्रफल ३०००००० मील मुरब्बा, और इसके पृथक् पृथक् विभागोंकी आबादी नीचे लिखे मूजिब है:-

न्यू साउथवेल्सकी ९८१०००, विक्टोरियाकी ९९२०००, दक्षिण आस्ट्रेलियाकी ३१९०००, और क्वीन्स लैण्डकी ३३३०००.

(३) पॉलिनेशिया.

इसमें कई एक छोटे बड़े टापू हैं, जिनमेंसे सैंडविच, फ़िजी, सोसाइटी, कोरल, कैरोलाइन्स, मार्शल, गिल्बर्ट और बोनिन वग़ैरह मुख्य हैं. इस विभाग की कुल आबादी अनुमान १५००००० मनुष्य है.

एशिया.

यह खंड १°-२०′ से ७८° उत्तर अक्षांश, और २६° अंशसे १९०° पूर्व देशान्तरके बीचमें वाके है. इसकी ज़ियादहसे ज़ियादह लम्बाई ६००० मील, और चौड़ाई ५३०० मील है. इसका क्षेत्रफल मए इसके मुतअल्लक़ द्वीपोंके १७५००००० मील मुरब्बा, और आबादी अनुमान ७९६०००००० मनुष्योंकी है.

सीमा-उत्तर तरफ़, उत्तर महासागर; पश्चिम तरफ़, यूराल पर्वत, यूराल नदी,

कास्पिअन समुद्र, काकेशस पर्वत, काला समुद्र, भूमध्य सागर, स्वेज़की नहर, और लाल समुद्र; दक्षिण तरफ़, हिन्द महासागर; और पूर्व तरफ़, पासिफ़िक महासागर है.

इस महाद्वीपमें निम्न लिखित मुख्य मुख्य देश हैं:-

एशियाई रूम (टर्की); अरेबिया (अरबिस्तान); ईरान (पर्शिया); अफ़गानिस्तान; बिलोचिस्तान; हिन्दुस्तान; ईस्टर्न पेनिनशुला (पूर्वी प्रायद्वीप); चीनका राज्य, जिसमें चीन, तिब्बत, मंगोलिया, मंचूरिया और पूर्वी तुर्किस्तान शामिल हैं; तुर्किस्तान; एशियाई रूस; कोरिया, और जापान.

अब हम हिन्दुस्तानको छोड़कर, जिसका सविस्तर हाल आगे लिखा जायेगा, यहांपर एशियाके दूसरे मुल्कोंका मुख्तसर हाल लिखते हैं:-

एशियाई रूम.

यह मुल्क (अरबके ज़िलोंको छोड़कर) ३०° से ४२° उत्तर अक्षांश, और २६° से ४८°-३०′ पूर्व देशान्तरके बीचमें वाके है. इसकी ज़ियादह से ज़ियादह लम्बाई ९५० मील, और चौड़ाई ७६० मील है. क्षेत्रफल ७१०३२० मील मुरब्बा, और आबादी १७०००००० के क़रीब है.

सीमा- उत्तरमें डार्डेनल्स, मारमोराका आखात, काला समुद्र और रशिया; पश्चिममें आर्किपेलैगो, और भूमध्यसागर; दक्षिणमें अरब; और पूर्वमें ईरान और रशिया है.

विभाग- १-एशिया माइनर, जिसमें एनेटोलिया, कैरेमानिया और सीवास शामिल हैं; २- सिरिया, जिसमें पैलेस्टाइन (ईसा मसीहकी जन्म भूमि) भी शामिल है; ३- एल्जेसिरा; ४- आर्मीनिया; ५- कुर्दिस्तान; ६- इराक़ि अरब; और इनके अलावह इस रियासतके तीन ज़िले, याने हिजाज़, यमन और एल्हासा अथवा लाहसा अरबमें हैं.

पहाड़- टौरस, (कोह तूर), ओलिम्पस, ईदा, और लेबेनन, ये चारों इस रियासतमें मुख्य पर्वत हैं.

द्वीप- इस रियासतमें लेसबोस, सायो, सामोस, पैटमोस, कोस, रोडस, स्कार्पैण्टो और साइप्रस टापू शामिल हैं, जिनमेंसे साइप्रस अंग्रेज़ोंका है.

नदी- किज़िल इर्माक, सकरिया या सैंगेरिअस, सरबत, मेंडर, ओरंटीज़, जॉर्डन,

यूफ़्रेटीज़ और टाइग्रिस इस देशकी मुख्य नदियां हैं. यूफ़्रेटीज़की लम्बाई १७०० मील, और टाइग्रिसकी ८०० मील है.

झील- रूम देशमें दो झील याने वान, और एसफ़ाल्टिटीज़, जिसमें मछलियां न जीनेके सबब उसे मृत्यु सरोवर भी कहते हैं, मुख्य झील हैं.

मुख्य शहर-स्मर्ना, इस रियासतकी राजधानी है; ओलिम्पस पर्वतकी तलहटीमें ब्रूसा, अंगोरा, और टोकट व्यापारके लिये मश्हूर हैं. इनके अलावह अलप्पो, दमिश्क़, बेरूत, जेरूसलम, मोसल, बग़्दाद, बसरा, ट्रेबिज़ोन्ड, अर्ज़िरूम, बित्लीस और वान वग़ैरह मश्हूर शहर हैं.

यह रूम की सल्तनत यूरोप और एशिया दोनों खण्डोंमें है, परन्तु ऊपर लिखा हुआ हाल सिर्फ़ उस हिस्सहका है, जो एशियामें वाके़ है. यह मुल्क अक्सर पहाड़ी है, परन्तु दरोंकी ज़मीनमें पैदावार ज़ियादह होती है; और यहां अंगोराके बकरे ऊनके लिये मश्हूर गिने जाते हैं. यह मुल्क पुरानी तवारीख़के लिये बड़ा मश्हूर है, जिसमें आज कल भी ज़मीन खोदनेसे मूर्ति वग़ैरह पुरानी चीज़ें निकलती हैं. कई जगह पुराने ज़मानहके बने हुए टूटे फूटे सूर्य्यके मन्दिर भी आज दिनतक दिखलाई देते हैं. ट्रॉय, सार्डिस, इफ़ेसस, एंटियोक, टायरे, सिडौन, बाल्बक, टाड्मर, या पलमाइरा, निनिवे और बाबिलन, ये शहर पुराने ज़मानहमें बड़े मश्हूर थे, परन्तु समयके फेरफारसे बिल्कुल खण्डहर होगये हैं, यहांतक कि उनका पूरा पूरा पता भी नहीं लगसक्ता. इस मुल्कमें तुर्कमान, यूनानी, आर्मीनी, अरब, मुसल्मान और ईसाई भी बसते हैं; और यहां यूनानी, टर्की, शामी, आर्मीनी, अरबी, फ़ार्सी वग़ैरह ज़बानें बोली जाती हैं.

अरब.

यह मुल्क १२°- ४०′ से ३५° उत्तर अक्षांश, और ३२°- ३७′ से ६०° पूर्व देशान्तरके बीचमें वाके़ है. इसकी ज़ियादहसे ज़ियादह लम्बाई १५०० मील, चौड़ाई १३०० मील, क्षेत्रफल १२१९००० मील मुरब्बा, और आबादी ४०००००० है (१).

---

(१) एशियाई रूमका जो विभाग अरबमें है, उसकी आबादी और क्षेत्रफल वग़ैरह इसमें शामिल नहीं है.

सीमा- उत्तरमें, सिरिया और यूफ़्रेटीज़ नदी; पश्चिममें, लाल समुद्र और स्वेज़की नहर; दक्षिणमें, अदनका आखात और अरबका समुद्र; और पूर्वमें ओमन और ईरान के आखात हैं.

विभाग- इस मुल्कके ख़ास हिस्से १- एल्-हिजाज़, २- एल्-यमन, ३- हेड्रामॉट, ४- ओमन, ५- एल्-हासा, और ६- नेज्जेद हैं.

पहाड़- इस देशमें मुख्य पर्वत सरबल, हॉरेब और सीनाई (१) हैं.

द्वीप- इस मुल्कके मुतऋल्लक़ जज़ीरे सौकोट्रा और बहरिंग हैं.

मश्हूर शहर- एल्-हिजाज़में मक्का, जो मुहम्मदकी जन्मभूमि होनेके कारण प्रसिद्ध है; लाल समुद्रके तटपर जिद्दा; उत्तरकी तरफ़ मदीना, जिसमें पैग़म्बर मुहम्मदकी क़ब्र है; एल्-यमनसे दक्षिण-पश्चिमको मोचा; और मध्यमें वाहबी लोगोंकी राजधानी रियाद है. ऊपर लिखे हुए शहरोंके अलावह साना व मस्क़त वग़ैरह और भी बड़े २ शहर हैं. दक्षिणी किनारेपर अदन शहर अंग्रेज़ोंका है.

यह मुल्क बिल्कुल रेगिस्तानी है, केवल कहीं कहीं उर्वरा धरती टापूकी तरह दिखलाई देती है. इस मुल्कमें बर्साती नालोंके सिवा कोई नदी या झील नहीं है. यहांके घोड़े दुन्याभरमें मश्हूर हैं, और ऊंट व गधे भी यहां बहुत होते हैं. बहरिंग टापूके बाशिन्दे समुद्रमेंसे मोती निकालते हैं. सौकोट्रा टापूसे मूंगा और अंबर बाहिर भेजाजाता है. यहांके आदमी रूई अथवा ऊनकी पन्द्रह पन्द्रह तक टोपियां ऊपर तले पहिनते हैं, जिनमें ऊपर वाली टोपी सबसे बढ़िया होती है. ग़रीबसे ग़रीब आदमी भी दो टोपी ज़ुरूर पहिनता है, और उसके ऊपर दुपट्टा बांधते हैं. मुहम्मदसे पहिले यहांके लोग भी मूर्त्ति पूजक थे.

ईरान.

यह मुल्क २६° से ३९° उत्तर अक्षांश, और ४४° से ६३° पूर्व देशान्तरके बीचमें वाक़े है. इसकी लम्बाई अनुमान१३०० मील, और चौड़ाई ८०० मील है. इसका क्षेत्रफल ६२८००० मील मुरब्बा और आबादी अनुमान ७६५३००० मनुष्योंकी है.

सीमा- इसके उत्तरमें, रूसका मुल्क और कास्पिअन समुद्र; पश्चिममें, एशियाई

(१) इस पहाड़की अधिकसे अधिक ऊंचाई ८५९३ फ़ीट है.

रूम; दक्षिणमें, ईरानका आखात, और ओमनकी खाड़ी; और पूर्वमें, अफ़्गानिस्तान व बिलोचिस्तान हैं.

विभाग- ईरानका देश बारह ज़िलों व हिस्सोंमें तक्सीम कियागया है.

पहाड़- इस देशमें मुख्य पर्वत एल्बुर्ज़ और डेमावेन्ड हैं.

द्वीप- हुर्मुज़ और कर्क आदि कई छोटे छोटे टापू, जो ईरानकी खाड़ीमें हैं, इसी बादशाहतमें गिनेजाते हैं.

नदी- ईरानमें वहने वाली दो नदियां, याने आरास या आरेक्सिस, और किज़िल-ओज़न हैं, जो दोनों कास्पिअन समुद्रमें गिरती हैं.

झील- उरूमिया, बख्तेगान, और सीस्तान या हांमू इस मुल्कके खास झील हैं.

शहर- तिहरान, जो हालमें राजधानी है; इस्फ़हान, पुरानी राजधानी; शीराज़; बूशहर; गौम्ब्रून; तब्रेज़; रेश्ट; अस्त्राबाद मशहद; यज़्द; और किर्मान वगैरह मुख्य शहर हैं.

ईरानकी खाड़ीमेंसे बहुत .उम्दह मोती निकलते हैं. इस मुल्कमें पहाड़ और रेगिस्तान अधिक है, तोभी बीच बीचकी भूमि बड़ी उपजाऊ और मनोहर है. यहांकी खांनोंमेंसे चांदी, सीसा, लोहा, तांबा, संगमर्मर और गन्धक वगैरह चीज़ें निकलती हैं. यहांके लोगोंकी मुख्य सवारी घोड़ा है; औरतें ऊंटोंपर पर्देके अन्दर बैठती हैं, गाड़ी यहां नहीं होती. रेशमी कपड़ा, कम्ख़ाब, शाल, बन्दूक़, पिस्तौल और तलवारें यहां बहुत अच्छी बनती हैं.

ईरानके पुराने बाशिन्दोंकी भाषा और धर्म भारतवर्षके आर्य लोगोंके मुवाफ़िक़ था. वे अग्निहोत्री थे, और उनमें ब्राह्मण आदि चारों वर्ण भी थे; परन्तु पिछले ज़मानहमें बड़ा फेरफार हुआ, और सन् ६३६ ईसवी में क़ादसियाकी लड़ाईमें जब ईरानके बादशाह यज़्दगुर्दने अरबी लोगोंसे शिकस्त पाई, तभीसे ईरानियोंको मुसल्मान होना पड़ा.

शीराज़से ३० मील वायुकोणमें ईरानकी अति प्राचीन राजधानी प्रसिद्ध है, जिसको अंग्रेज़ लोग पार्सिपोलिस कहते हैं, और सिकन्दरने उसे ग़ारत किया था. अब यह राजधानी एक खंडहर है, परन्तु इसका कुछ भाग, जो अभीतक मौजूद है, उसपर बहुतसे प्राचीन फ़ार्सी अक्षर तीरके फलकी सूरतपर खुदे हुए हैं, जिनको इस ज़मानहमें कोई नहीं पढ़सक्ता था, परन्तु मेजर रॉलिन्सन साहिबने दस वर्षकी मिह्नतसे उस

लिपिका मतलब निकाला, और उन अक्षरोंकी वर्णमाला बनाई. अब उसकी सहायतासे जहां जहां पुराने मकानोंपर उस समयके अक्षर लिखेहुए मिले हैं वे सब पढ़लिये गये. यह प्राचीन भाषा जो तीरके सदृश अक्षरोंमें लिखी है, संस्कृतसे और विशेषकर वेदकी भाषासे मिलती हुई है; और वहांके पत्थरोंमें खुदी हुई मूर्तियोंकी पोशाक, उनके हथियार, उनकी सवारी और आकृति हिन्दुस्तानके कई प्राचीन मन्दिरोंकी नक़ाशीसे ऐसी मिलती है, कि जिन लोगोंने ईरान और हिन्दुस्तानके प्राचीन इतिहासको अच्छी तरह देखा है, उनके मनको यह निश्चय होगया है, कि उस समय हिन्दुस्तान और ईरानके चाल चलन, मत और व्यवहार आदिमें कुछ विशेष अन्तर न था.

अफ़ग़ानिस्तान.

यह मुल्क २८°- ५०′ से ३७°- ३०′ उत्तर अक्षांश, और ६१° से ७४°-४०′ पूर्व देशान्तरके दर्मियान वाक़े है. क्षेत्रफल इस देशका २६०००० मील मुरब्बा और आबादी अनुमान ४०००००० मनुष्योंकी है.

सीमा - इसके उत्तरमें, एशियाई रूस और बुख़ारा; पश्चिममें, ईरान; दक्षिणमें, बिलोचिस्तान; और पूर्वमें, हिन्दुस्तान है.

विभाग - अफ़्ग़ानिस्तानमें काबुल, जलालाबाद, ग़ज़्नी, क़न्धार, हिरात, और अफ़्ग़ान तुर्किस्तान नामके ६ ज़िले हैं.

पहाड़ व नदी- अफ़्ग़ानिस्तानके मुख्य पर्वत हिन्दूकुश (१) व सुलैमान और नदियां काबुल व हेल्मंड हैं.

शहर- इस देशके मुख्य मुख्य नगर काबुल (राजधानी), जलालाबाद, ग़ज़्नी, क़न्धार, हिरात और कंदूज़ हैं.

इस मुल्कमें पहाड़ और जंगल बहुत है, परन्तु जो धरती पानीसे तर है वह अत्यन्त उपजाऊ और उर्वरा है. मेवा यहां बहुत .उम्दह होता है, और हिरातके पहाड़ोंमें हींगके पेड़ बहुत हैं. सोना, चांदी, माणक, सीसा, लोहा, सुरमा, गंधक, हरताल और फ़िटकरी आदि चीज़ें यहांकी खानोंसे निकलती हैं.

पुराने ज़मानहमें यह मुल्क भारतवर्षीय राजाओंके आधीन था, उसके बाद

(१) इस पहाड़की अधिकसे अधिक ऊंचाई २५००० फ़ीट है.

सिकन्दरके समयमें यूनानी सूबेदारोंके तहतमें रहा, फिर धीरे धीरे ईरानके बादशाहों के कृबज़हमें आया, और बादको ईरानके साथ ही ख़लीफ़ाओंकी सल्तनतमें शामिल होगया.

बिलोचिस्तान.

यह मुल्क २४°-५०′ से ३०°-२०′ उत्तर अक्षांश, और ६२°- से ६९°-१८′ पूर्व देशान्तरके बीचमें वाके है. इसका क्षेत्रफल अनुमान १००००० मील मुरब्बा, और आबादी अनुमान १०००००० मनुष्योंकी है.

सीमा - इसके उत्तरमें, अफ़्ग़ानिस्तान; पश्चिममें, ईरान; दक्षिणमें, अरबका समुद्र; और पूर्वमें, हिन्दुस्तान है.

इस मुल्कमें मुख्य पर्वत हाला, और मुख्य शहर क़िलात और गंडावा हैं.

इस मुल्कमें पर्वत अधिक हैं, और बिलोची और ब्राहोई क़ौमें ज़ियादहतर बसती हैं. क़िलातका ख़ान बिलोचिस्तानका राज्य कर्त्ता कहाजाता है, परन्तु वह केवल नामका ही राज्य कर्त्ता है, हक़ीक़तमें वहांकी अलग अलग क़ौमोंके सर्दारोंको ही वहांका राज्य कर्त्ता मानना चाहिये.

पूर्वी प्रायद्वीप.

यह विभाग १°-२०′ से २८° उत्तर अक्षांश और ९१° से १०९° पूर्व देशान्तरके बीचमें वाके है. इसकी ज़ियादहसे ज़ियादह लम्बाई १८०० मील, चौड़ाई ९६० मील, क्षेत्रफल ८७८००० मील मुरब्बा, और आबादी २५५०००००० मनुष्योंकी है.

सीमा - इसके उत्तरमें, चीन व तिब्बत; पश्चिममें, हिन्दुस्तान और बंगालका आखात; दक्षिणमें, मलाकाका मुहाना और स्यामका आखात; और पूर्वमें चीनका समुद्र व टौंक्विनका आखात है.

विभाग - इस मुल्कके मुख्य ६ विभाग हैं, उनमेंसे अव्वल अंग्रेज़ी मुल्क, जिसमें आसाम, चिटागौंग, उत्तर और दक्षिण बर्मा, पिनांग या प्रिन्स ऑव वेल्स टापू, और वेलेज़ली, मलाका, तथा सिंगापुर शामिल हैं; दूसरा स्याम; तीसरा कम्बोडिया; चौथा उत्तर कोचीन चाइना या अनाम; पांचवां टौंक्विन; और छठा दक्षिण कोचीन चाइना है.

नदी- इरावदी (१), उत्तर और दक्षिण वर्ह्मामें; सैलून, वर्ह्मा और स्यामके बीचमें; मीनाम (२) स्याममें; और मेक्यांग (३) स्यामसे निकलकर कम्बोदिया और दक्षिण कोचीन चाइनामें भी वहती है.

मुख्य शहर - उत्तर वर्ह्मामें मंडाले, जो यहांकी राजधानी है; दक्षिण वर्ह्मामें अराकान, रंगून, मोल्मीन और टेनासरिम हैं; पिनांग टापूका मुख्य शहर ज्यॉर्ज टाउन, और सिंगापुर टापूका सिंगापुर है; स्यामका मुख्य शहर बैंकॉक; कम्बोदियाका पेनोंपिंग; उत्तरी कोचीन चाइनाका ह्यू; टाँकिनका केशो या हेनोई; और दक्षिण कोचीनचाइनाका मुख्य शहर सेगोन है.

वर्ह्मा देशमें चावलकी पैदाइश वहुत होती है, और जंगलोंमें सागके दरख़्त बहुत हैं. यहांके टैंगन सर्वोत्तम गिनेजाते हैं. पेगूके नज़्दीकवाले जंगलोंमें शेर और हाथी अधिक पाये जाते हैं. इस देशकी खानोंमेंसे सोना, चांदी, माणक, नीलम, लोहा, सीसा, सुरमा, गंधक, हरताल, संखिया, मिटिया तैल, कोयला, और संगमर्मर वगैरह क़ीमती पत्थर वहुत निकलते हैं. यहांके लोग सूरत व शक्लमें चीनियोंसे मिलते हैं. मर्द डाढ़ी व मूछोंके वाल मोचनेसे उखाड़ डालते हैं, और औरतोंकी तरह सुरमा और मिस्सी लगाते हैं. औरतें यहांकी गौरी लेकिन् भद्दी सूरत वाली होती हैं, और कुल घरके कामका भार अक्सर उन्हींको उठाना पड़ता है. धर्म यहांका बौद्ध है, और जातिभेद नहीं है, परन्तु वौद्ध धर्मके मुख्य नियमोंका उल्लंघन करके मछली तथा मांस खाते हैं और शराव भी पीते हैं. मुलम्मेका काम इस देशके लोग अच्छा करते हैं, और धातु तथा मिट्टीके वर्त्तन और रेशमके कपड़े, और संगमर्मरकी मूर्त्तियां उम्दह वनाते हैं. यह मुल्क पहिले स्वतंत्र था, परन्तु सन् १८८६ ई० में लॉर्ड डफ़रिनके समयमें छीनाजाकर हिन्दुस्तानके शामिल करलियागया.

स्यामके मुल्कमें भी चावलकी पैदाइश अच्छी होती है, और इलायची, दारचीनी, तेजपात, काली मिर्च, और अगर भी वहुत होता है. इस मुल्ककी खानोंमेंसे हीरा, नीलम, माणक, लोहा, रांगा, सीसा, तांवा, और सुरमा निकलता है. नदियोंका रेता धोनेसे सोना भी मिलता है. इस मुल्कमें चुम्बकका पहाड़ है. यहांकी राजधानी

(१) इस नदीकी लम्वाई १२०० मील है.

(२) इस नदीकी लम्वाई ८०० मील है.

(३) इस नदीकी लम्वाई १७०० मील है.

बैंकॉकका बाज़ार बिल्कुल पानीके ऊपर है, बांसके बेड़े बनाकर उनपर दूकानदार रहते और अपना माल बेचते हैं; घोड़ा व गाड़ीका कुल काम किश्तियोंसे लिया जाता है. यहांके लोगोंका चालचलन और धर्म बर्ह्माके लोगोंका सा है. इन लोगोंको गानेका अधिक शौक़ है, और ये अपने नाखुन कभी नहीं कटवाते.
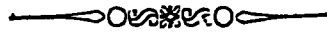
चीनका राज्य.

(१)- चीन ख़ास.

यह मुल्क २०° से ४२° अंश उत्तर अक्षांश और ९८° से १२३° पूर्व देशांतरके बीचमें वाक़े है. इसकी ज़ियादहसे ज़ियादह लम्बाई १६०० मील, चौड़ाई १३०० मील, क्षेत्रफल १६००००० मील मुरब्बा, और आबादी ३८१०००००० मनुष्योंकी है.

सीमा – इसके उत्तरमें, मंगोलिया, और मंचूरिया; पश्चिममें, मंगोलिया, तिब्बत, और बर्ह्मा; दक्षिणमें, टॉंक्विन, और चीनी समुद्र; और पूर्वमें, पीला समुद्र और पासिफ़िक महासागर है.

द्वीप – दक्षिणमें, हेनन्; पूर्वमें फ़ॉरमोसा, चूज़न और लूचू हैं; मकाओ नामी टापू पुर्त्तगाल वालोंका है, और हॉंगकॉंग अंग्रेज़ोंका है.

नदियां – उत्तरमें, पेहो और होआंगहो (१); मध्यमें, यांग्सिक्यांग (२); और दक्षिणमें चूक्यांग (३) है.

मश्हूर शहर – पेहो नदीके पास पेकिन राजधानी; यांग्सिक्यांग नदीके ऊपर नैन्किन; टे झीलके नज़्दीक सूचू; पूर्वी किनारेपर अमोय, फ़्यूचू, निंग्पो, और शंघाई; और दक्षिणी किनारेपर कैंटन है.

(२)- तिब्बत.

चीन राज्यका यह विभाग हिन्दुस्तानके उत्तरमें है. इसकी लम्बाई १५०० मील, चौड़ाई ५०० मील, क्षेत्रफल ७००००० मील मुरब्बा, और आबादी ६०००००० मनुष्योंकी है.

(१) इस नदीकी लम्बाई २६०० मील है.
(२) इस नदीकी लम्बाई ३२०० मील है.
(३) इस नदीकी लम्बाई १०५० मील है.

इस देशमें मुख्य पर्वत हिमालय और क्वेनलून हैं. मुख्य नदियां सिंधु और सांपू (ब्रह्मपुत्र) हैं. मुख्य भील पाल्टी, टेंग्री और मानसरोवर हैं. तिब्बतकी राजधानी शहर लासा है.

---

(३)- मंगोलिया.

इसकी लम्बाई १७०० मील, चौड़ाई १००० मील, और आबादी अनुमान २०००००० मनुष्योंकी है.

इसमें ख़ास पर्वत इनूशान, और मुख्य शहर साइबेरियाके पास उरगा, और मेवतचिन हैं.

---

(४)- मंचूरिया.

यह राज्य चीनका उत्तर-पूर्वी कोना है, जिसमें १२०००००० मनुष्योंकी आबादी है. इसमें मुख्य नदी आमूर (१), और शहर किरिनौला व मौक्डेन हैं.

---

(५)- पूर्वी तुर्किस्तान.

चीन राज्यका यह विभाग तिब्बतके उत्तर पश्चिममें है. इसमें मुख्य पर्वत क्वेनलून; मुख्य नदियां काशग़र, यार्क़न्द, और ख़ोतन हैं. मुख्य झीलें लॉबनोर और बास्टन हैं, और मुख्य शहर कराशर, ख़ोतन या इल्ची, यार्क़न्द और काशग़र हैं.

चीन देश बहुत पुराना मुल्क है. यहांके लोग प्राचीन समयसे ही सुधरे हुए हैं, और प्राचीन समयसे ही इसमें विद्याका प्रचार चला आता है. इन्हीं लोगोंने चुम्बकके गुण प्रगट किये हैं, और आजतक हरएक गांवमें बादशाहकी तरफ़से स्कूल नियत हैं. आदमीकी बनाई हुई अ़जीब चीज़ोंमेंसे इस मुल्कमें एक बड़ी दीवार है, जो १४०० मील लम्बी और २० से ३० फुट तक ऊंची और इतनीही चौड़ी है, जिसमें सौ सौ गज़के फ़ासिलेपर बुर्ज बने हैं. एक बड़ी नहर क़रीब ७०० मील लम्बी बनाई हुई है. यहांके लोगोंकी मुख्य ख़ुराक चावल है. इस मुल्कके बाशिन्दे ख़ुदपसन्द, कायर, कपटी, शक्की, चालाक और मिहनती होते हैं. उनका चिहरा ज़र्द, पेशानियां बुलन्द, आंखें छोटी, और बाल काले होते हैं. औरतोंके पैरके पंजे जितने छोटे हों उतनी ही वे ख़ूबसूरत गिनी जाती हैं, और इसीलिये

(१) इस नदीकी लम्बाई २३०० मील है.

छोटी उम्रमें उनके पैरके पंजे ऐसे कसकर बांधदिये जाते हैं, कि बड़े होनेपर बढ़ने नहीं पाते. वहांके लोगोंका मज़्हब बौद्ध है, परन्तु वे लोग मांस खाते हैं और देवी देवताओंकी संख्या बहुत बड़ी मानते हैं. वहांकी मुख्य पैदावार चाय, रेशम, कोयला और कई तरहके खनिज धातु हैं. चीनी भाषामें एक एक शब्दके लिये एक एक अक्षर मौजूद है, इसी कारण वहांकी वर्णमालामें ३०००० से ज़ियादह अक्षर हैं. यहांके लोग कारीगरीमें बहुत होश्यार हैं और हाथी दांत, रेशम और मिट्टीसे कई तरहकी चीज़ें बनाते हैं. तिब्बतका मालिक लामा गुरु कहलाता है, और चीनी उसको बुद्धका अवतार मानते हैं. मुल्कका कारोबार उसका नाइब जिसको राजा कहते हैं, करता है; परन्तु हक़ीक़तमें इख़्तियार बिल्कुल सूबेदारका है, कि जो चीनकी तरफ़से वहां रहता है. धर्म बौद्ध है. मंगोलियाका मुल्क समुद्रके सत्हसे बहुत ऊंचा है. मंचूरिया बड़ा उपजाऊ मुल्क है. इन दोनों मुल्कोंमें हरएक क़ौमका ख़ान या सर्दार रहता है, जो चीनके बादशाहको ख़िराजदेते हैं. पूर्वी तुर्किस्तानमें नाज और फल अच्छे पैदा होते हैं; और पाहाड़ोंमेंसे सोना, चांदी, लोहा, और कोयला निकलता है. सन् १८६३ ई० में यहांके लोग बग़ावत करके चीन राज्यसे स्वतंत्र होगये थे, लेकिन् सन् १८७८ ई० में फिर चीन वालोंने उन्हें अपना मातहत बनालिया. मज़्हब यहांका मुसल्मानी है.

तुर्किस्तान.

यह मुल्क ३६° से ४४° उत्तर अक्षांश, और ५६° से ७४° पूर्व देशान्तरके बीचमें वाक़े है. इसकी लम्बाई ज़ियादहसे ज़ियादह ९०० मील, चौड़ाई ५०० मील, क्षेत्रफल ११४००० मील मुरब्बा, और आबादी अनुमान ३०००००० मनुष्योंकी है.

सीमा- इसके उत्तर और पश्चिममें, एशियाई रूस; दक्षिणमें, फ़ारिस (पर्शिया), और अफ़्ग़ानिस्तान; और पूर्वमें, पूर्वी तुर्किस्तान है. इस मुल्कके दो विभाग, याने ख़ीवा और बुख़ारा कियेगये हैं. इसमें मुख्य पर्वत दक्षिणकी ओर हिन्दूकुश, और पूर्वमें, बेलोरताग़ है. बड़ी नदी इस मुल्कमें सिर्फ़ ऑक्सस या अमू दर्या (१) है. मुख्य शहर बुख़ारा, ऑक्सस नदीके नज़्दीक है; दूसरा शहर ऑक्सस नदीके किनारेपर ख़ीवा है. इस मुल्कका बहुतसा हिस्सह रेगिस्तान है. ऑक्सस और जेगज़ार्टीज़ नदियोंके किनारेकी ज़मीन उपजाऊ है. यहांके लोग ज़ियादहतर मवेशी रखते हैं, और जहां

---

(१) इस नदीकी लम्बाई १३०० मील है.

घासका आराम देखते हैं वहीं जारहते हैं. सन् ईसवीके चौदहवें शतकमें बुख़ारा नगर एशियाको फ़तह करने वाले तीमूरकी राजधानी था, और ख़ीवा भी प्रबल राज्य था, लेकिन् अब ये दोनों ज़िले मात्र रहगये हैं, जो रशिया (रूस) के मातहत् हैं. यहांके लोग मुसलमानी मज़्हब रखते हैं.

एशियाई रूस.

यह मुल्क ३८° से ७८° उत्तर अक्षांश, और ३७° से १९०° पूर्व देशान्तरके बीचमें वाके़ है. इसकी ज़ियादहसे ज़ियादह लम्बाई ४००० मील, चौड़ाई २००० मील, क्षेत्रफल ६२२१००० मील मुरब्बा, और आबादी १३०००००० मनुष्योंकी है.

सीमा - इसके उत्तरमें, उत्तर समुद्र; पश्चिममें, यूरोपी रूस; दक्षिणमें, ईरान, अफ़्ग़ानिस्तान, तुर्किस्तान, मंगोलिया और मंचूरिया; और पूर्वमें पासिफ़िक महासागर है.

पहाड़—काकेशस (कोह क़ाफ़), यूराल और अल्ताई, इस देशके मुख्य पहाड़ हैं.

द्वीप - इस देशके मुख्य द्वीप लियाखोव या नया साइबेरिया, रेंगललैण्ड, और सघेलिअन हैं.

नदी - इस देशकी बड़ी नदियां यूराल, जेग्ज़ार्टीज़, ओबी, येनिसी, लीना, और आमूर हैं.

झील - बेकल, चॅनी, बाल्कश और एरिवन है.

मुख्य शहर—ताश्क़न्द, कोकन, टोबॉल्स्क, टॉम्स्क, क्याच्टा, इर्कूट्स्क, याकूट्स्क, टिफ़्लिस, बाकू और मर्व हैं.

इस मुल्कमें जंगल और उजाड़ बहुत है, परन्तु दक्षिण भागकी धरती उपजाऊ है. यहां घोड़े और मवेशी बहुत होते हैं. उत्तर भागमें केवल झील, दलदल, और बर्फ़िस्तान है. यहांकी खानोंमेंसे सोना, चांदी, प्लाटिनम्, तांबा, सीसा, लोहा, पारा, गंधक, फिटकरी, हीरा, लसनिया और पुखराज वग़ैरह क़ीमती चीज़ें निकलती हैं. इस मुल्कके साइबेरिया नामक विभागमें रूसके राजद्रोही और बड़े बड़े गुनहगार रक्खे जाते हैं, और उनसे खान खोदनेका काम लियाजाता है. साइबेरियाके अग्निकोणमें कैमचाटका नामी प्रायद्वीप क़रीब ६०० मील लम्बा है, जिसमें कई ज्वालामुखी पर्वत हैं. उत्तरी

विभागमें शरदीके कारण खेती नहीं होसक्ती, वहांके बाशिन्दे शिकार व जंगली फलोंसे निर्वाह करते हैं. यहां नावकी क़िस्मसे एक बिना पहियोंकी गाड़ीमें कुत्ते जोड़कर बर्फ़िस्तानमें सफ़र कियाजाता है. उत्तरी समुद्रके नज़्दीक वाले लोग छोटे व मज़्बूत होते हैं और उनकी गर्दन तंग, आंखें काली, सिर बड़ा, पेशानी चौड़ी, नाक चिपटी, मुंह लंबा, होंठ पतले, रंग गेहुवां, कड़े और कंधेतक लटकते हुए काले बाल, डाढ़ी कम, और पैर छोटे होते हैं. वे लोग जलजीवोंसे पेट भरते, और वस्त्रकी जगह चमड़ा पहिनते हैं. शीतकालमें जब वहां महीनोंकी लम्बी रातें होती हैं, तो उस समय वहांके लोग बर्फ़में खड्डे खोदकर उसके ऊपर बर्फ़से कुटीसी बना लेते हैं, और उसके अन्दर रहते हैं. ये लोग शरदीके दिनोंमें घास व मछलीकी चर्बीको जलाकर उससे तापते हैं. ठंढ वहां इतनी सख़्त होती है, कि आग लगानेपर भी ये मकान नहीं गलते, और अन्दर रहने वालोंको बाहिर की हवासे बचाते हैं. जब कभी गर्मीसे बर्फ़ गलजाती है, तो ज़मीनके अन्दरसे हाथियोंके दांत निकलते हैं. ईसवी १८०३ [वि० १८६० = हि० १२१८] में बर्फ़के नीचे एक जानवरकी पूरी लाश मिली थी, जो ९ फ़ीट ४ इंच ऊंची, और १६ फ़ीट ४ इंच लम्बी थी, उसके दांत भैंसके सींगोंके मुवाफ़िक़ मुड़े हुए ९ फ़ीट ६ इंच लम्बे और ४॥ मन वज़नमें थे. उसके बदनपर ऊनकी तरह काले बाल थे. वहां वाले इस जानवरको मेमात कहते हैं, और उसके दांतोंकी बिक्री होती है. यह जानवर हाथीकी जातिका है, परन्तु आजतक वैसे दांतोंका हाथी ज़िन्दह देखनेमें नहीं आया. यह बड़े आश्चर्यकी बात है, कि जब इन दिनोंमें कोई हाथी वहांपर खाने पीनेके लिये कुछ न मिलनेके कारण क्षण भरभी नहीं जी सक्ता, तो जिन हज़ारों जानवरोंकी हड्डियां वहां मिलती हैं वे कैसे ज़िन्दह रहे होंगे.

कोरिया.

यह प्राय द्वीप रूप मुल्क ३३° से ४३° उत्तर अक्षांश, और १२४° से १३०° पूर्व देशान्तरके मध्यमें वाके़ है. इसका क्षेत्रफल अनुमान ८७७६० मील मुरब्बा, और आबादी अनुमान ९०००००० मनुष्योंकी है.

सीमा– उत्तरमें, मंचूरिया; पश्चिम और दक्षिणमें, पीला समुद्र; और पूर्वमें कोरियाका मुहाना है.

इस मुल्कमें मुख्य नदी टोमनक्यंग और मुख्य शहर किकिंटाओ या सेउल और पिंगयंग हैं. यह मुल्क सख़्त होनेपर भी उपजाऊ है, और इसमें खेती अच्छी

होती है. कोरियाका अन्दरूनी हाल बहुत ही कम जाना गया है, क्योंकि यहांके लोग विदेशियोंको अपने देशके अन्दर अक्सर कम आनेदेते हैं, और धर्मका वर्ताव चीन वालोंके बराबर रखते हैं.

जापान.

यह कई छोटे बड़े टापुओंके समूहसे बना हुआ मुल्क २६° से ५१° उत्तर अक्षांश, और १२९° से १५६° पूर्व देशान्तरके बीचमें वाक़े है. क्षेत्रफल इसका १५०००० मील मुरब्बा, और आबादी ३८१५१००० मनुष्योंकी है.

द्वीप– जापानके मुख्य टापू निफ़ोन, येस्सो, सिकोफ, क्यूसू, क्युराइल और लूचू हैं.

मुख्य शहर – निफ़ोनके टापूमें टोक्यो या येड्डो और क्योटो (म्याको) हैं. येस्सोमें मेट्स्मे और हाकोडाडी; और क्यूसूमें नेगेसाकी मुख्य नगर हैं. यहांकी धरती ज़ियादह उपजाऊ नहीं है, परन्तु किसानोंके श्रमसे पैदावार अच्छी होती है. इस मुल्कमें ज़रा भी ज़मीन खेतीसे ख़ाली नहीं है. पहाड़ोंपर भी जहां बैल नहीं जासक्ते, आदमी हाथोंसे ज़मीन खोदकर बोते हैं. एक वर्ष पर्यन्त जो ज़मीन बिना बोई रहजावे, तो ख़ालिसह होजाती है. यहांकी खानोंसे चांदी, सोना, लोहा, रांगा, सीसा, तांबा, पारा, गंधक और हीरा, निकलते हैं. समुद्रके किनारेपर मोती, मूंगा, और अंबर मिलता है.

आदमी वहांके चालाक, मिहनती, निष्कपटी, उदार, सच्चे, सन्तोषी, और मिलनसार होते हैं, और चुग़लीको बड़ा भारी ऐब समझते हैं. ये लोग विदेशी आदमीका एतिबार नहीं करते और अदबके साथ रहते हैं. बदन उनका भराहुआ, लेकिन् कम मोटा होता है; आंखें छोटी, गर्दन तंग, सिर बड़ा, नाक छोटी और फैली हुई, बाल काले और मोटे, तैलसे चमकते हुए होते हैं. इन लोगोंकी ख़ुराक बहुधा चावल और मांस है, जिसकी उनके धर्ममें मनाई है. ये लोग उम्र भरमें तीन बार नाम पल्टते हैं. औरतें अक्सर पतिव्रता होती हैं, और बीस बीसतक ऊपर तले गौनें पहिनती हैं. वे मर्दोंके समान पढ़ी लिखी भी होती हैं.

रेशमी और सूती कपड़ा, फ़ौलादी चाक़ू, तलवार, और चीनीके बर्तन यहां अच्छे बनते हैं

हिन्दुस्तान.

यह मुल्क एशियाके दक्षिणमें ८°–४′ से ३६° उत्तर अक्षांश, और ६६°–४४′ से ९१° पूर्व देशान्तरके बीचमें वाके है. लम्बाई इसकी हिमालयसे कन्याकुमारीतक १९०० मील, और चौड़ाई भी इतनी ही है. क्षेत्रफल इसका अनुमान १५५३९२५ वर्ग मील, और आबादी २८७२८९७८३ मनुष्योंकी है (१).

सीमा – इसके उत्तरमें, हिमालय पर्वत; पश्चिममें, सुलैमान और हाला पहाड़; दक्षिणमें, हिन्द महासागर; और पूर्वमें आसामका पहाड़ है.

पर्वत – हिन्दुस्तानके उत्तरमें, हिमालय पर्वत दुन्याके सब पहाड़ोंसे ज़ियादह ऊंचा है, जिसकी सबसे ऊंची चोटी माउएट एवेरेस्ट समुद्रके सतूहसे २९००२ फ़ीट ऊंची है; मध्यमें विंध्याचल नामक पहाड़ीश्रेणी है, जिसकी ऊंची चोटी जाम घाट है; राजपूतानहमें अर्वली; दक्षिणमें पूर्वी किनारेपर पूर्वी घाट; और पश्चिमी किनारेकी ओर पश्चिमी घाट या सह्याद्रि पहाड़ है. इन दोनों घाटोंके दक्षिणमें, नीलगिरि पर्वत; और नीलगिरिसे दक्षिण कन्याकुमारीतक कर्दमन् पर्वत है.

द्वीप – मद्रास इहातेके मदूरा ज़िलेके दक्षिण पूर्वमें सिलोन (सिंहल द्वीप); मलाबारके किनारेके पश्चिममें लकद्वीप और मालद्वीप; और बंगालके आखातमें अन्डमान, और निकोबार द्वीप हैं.

अन्तरीप – पालमेरास, कटकके दक्षिणमें; कालीमीर, कावेरीके मुहानेपर; मुंज, सिन्धमें; जगत पॉइंट और दीव गुजरातमें; और कन्याकुमारी हिन्दुस्तानके दक्षिणमें है.

समुद्र, मुहाने व खाड़ी – हिन्दुस्तानके पूर्वकी ओर बंगालकी खाड़ी हिन्दुस्तान और बर्ह्माके बीचमें; मनारकी खाड़ी और पाक मुहाना, सिंहलद्वीप और हिन्दुस्तानके बीचमें हैं; पश्चिमकी तरफ़ कच्छकी खाड़ी, गुजरातके पश्चिममें; और खंभातकी खाड़ी गुजरातके दक्षिणमें है.

नदी – उत्तरमें, गङ्गा नदी (२) हिमालयके दक्षिण गङ्गोत्री स्थानसे निकलकर बंगालेकी खाड़ीमें गिरती है; और जमुना, रामगङ्गा, गोमती, कर्मनाशा, घाघरा, सोन, गंडक, वाग्मती और कोसी ये सब उसकी सहायक नदियां हैं.

---

(१) यह संख्या ईसवी १८९१ के अनुसार है.
(२) इस नदीकी लम्बाई १५०० मील है.

पूर्वमें, ब्रह्मपुत्र नामी नदी हिमालयके उत्तरसे निकलकर गङ्गाके साथ मिलनेके बाद बंगालेकी खाड़ीमें गिरती है. गङ्गा और ब्रह्मपुत्रकी मिली हुई धाराको मेग्ना कहते हैं.

पश्चिममें, सिन्धु नदी हिमालयके उत्तरसे निकलकर अरबके समुद्रमें गिरती है. झेलम, रावी, चिनाब, सतलज और व्यासा इसकी सहायक नदियां हैं.

दक्षिणमें, महानदी, कृष्णा, गोदावरी, और कावेरी बंगालेकी खाड़ीमें, और नर्मदा व तापी, खंभातकी खाड़ीमें गिरती हैं.

झील– मानसरोवर, हिमालयमें; डल और उलर, कश्मीरमें; चिल्का, उड़ीसा में; कोलेर, उत्तरी सर्कारमें; और सांभर राजपूतानहमें है.

स्वाभाविक विभाग– कुल हिन्दुस्तानके तीन स्वाभाविक विभाग हैं, जिनमें १– उत्तर हिन्दुस्तान, जो हिमालयके पास है; २– मध्य हिन्दुस्तान, जो हिमालय और विन्ध्याचलके बीचमें वाक़े है; और ३– दक्षिण हिन्दुस्तान, जो विन्ध्याचलके दक्षिणमें वाक़े है.

देश विभाग– १–ब्रिटिश इण्डिया याने वह मुल्क जिसमें ख़ास सर्कार अंग्रेज़ीका क़ब्ज़ह है; २– रक्षित देश, जो सर्कार अंग्रेज़ीको कर देते हैं; ३– स्वाधीन राज्य; और ४– अन्य देशीय राज्य.

---

१ – ब्रिटिश इण्डिया.

ब्रिटिश इण्डियामें इहातह बंगाल, मद्रास, बम्बई, और वह मुल्क, जो सुप्रीम गवर्मेण्टके तहतमें है, शामिल हैं. इनमेंसे इहातह बम्बई और मद्रास, गवर्नरोंके आधीन हैं.

बंगाल इहातहके तीन भाग हैं– १– बंगाल; २– पश्चिमोत्तर देश व अवध; और ३– पंजाब. ये तीनों भाग लेफ़्टिनेण्ट गवर्नरोंके आधीन हैं.

जो मुल्क, कि सुप्रीम गवर्मेण्टके आधीन हैं, उनमें कमिश्नर रहते हैं, और वे गवर्नर जेनरलके इज्लाससे मुक़र्रर होते हैं.

कुल ब्रिटिश इण्डियाके १२ हिस्सह हैं, जिनके नाम मए आबादी व क्षेत्रफल वग़ैरहके नीचे लिखे जाते हैं:–

ब्रिटिश इंडियाके सूबोंका नक़्शह.

नम्बर.	नाम सूबा	आबादी.	क्षेत्रफल	क़िस्मत.	ज़िला	कैफ़ियत.
१	बंगाल	७१२७०३०२	१६३९०२	९	५२	
२	पश्चिमोत्तर देश व अवध	४६९०३१०२	१०६१०४	११	४९	ये लेफ़्टिनेण्ट गवर्नरोंके आधीन हैं.
३	पंजाब	२०८६६८४७	१०७९८९	६	३१	
४	बम्बई	१५९८५२७०	१२४१२२	४	२३	ये गवर्नरोंके आधीन हैं.
५	मद्रास	३५६३०४४०	१३९६९८	०	२२	
६	ब्रिटिश बर्ह्मा	४६५८६२७	८७२२०	३	१९	
७	आसाम	५४७६८३३	४६३४१	१	११	
८	मध्य हिन्द	१०७८४२८७	८४४४५	४	१८	
९	अण्डमान व निकोबार द्वीप	३००००	३२८५	०	२	ये चीफ़ कमिश्नरोंके आधीन हैं.
१०	अजमेर	५४२३५८	२७१०	०	२	
११	बरार	२८९७४९१	१७७११	२	६	
१२	कुर्ग	१७३०५५	१५८३	०	१	

(गवर्मैंएट बंगाल)

सीमा - इसके उत्तरमें, नयपाल, सिक्किम और भूटान; पूर्वमें, आसाम; दक्षिणमें, बंगालेका उपसागर, और मद्रास इहातह; और पश्चिममें, मध्य प्रदेशके ज़िले हैं.

क़िस्मत और ज़िले - बंगाल लेफ़्टिनेएटीमें सूबा उड़ीसा, छोटा नागपुर, बंगाल, और बिहार शामिल हैं, जिनमें नीचे लिखी हुई ९ क़िस्मतें और ५२ ज़िले हैं. राजधानी इस सूबेकी कलकत्ता है.

(१)- क़िस्मत बर्दवानमें, बर्दवान, बांकोड़ा, बीरभूमि, मेदनापुर, हुगली, और हवड़ा नामके ६ ज़िले हैं.

(२)- क़िस्मत प्रेज़िडेन्सीमें, कलकत्ता, खोलना, चौबीसपर्गनह, नदिया, जैसोर और मुर्शिदाबाद है.

(३)- क़िस्मत राजशाही व कूचबिहारमें, दीनाजपुर, राजशाही, रंगपुर, बोगरा, पबना, दार्जिलिंग, जलपाईगोड़ी और कूचबिहार.

(४)- क़िस्मत ढाकामें, ढाका, फ़रीदपुर, बाक़रगंज, और मैमनसिंह.

(५)- क़िस्मत चटगांवमें, चटगांव, नवाखोली, प्रदेश चटगांव पहाड़ी, टिपरा, प्रदेश टिपरा पहाड़ी.

(६)- क़िस्मत पटनामें, पटना, गया, शाहाबाद, दर्भंगा, मुज़फ़्फ़रपुर, सारन, और चम्पारन.

(७)- क़िस्मत भागलपुरमें, मुंगेर, भागलपुर, पुर्निया, माल्दा, और सन्थाल पर्गनह.

(८)- क़िस्मत उड़ीसामें, कटक, जगन्नाथपुरी, बालासोर, अंगोल, बांकी, और बाजगुज़ार महाल.

(९)- क़िस्मत छोटा नागपुरमें, हज़ारी बाग़, लुहारडिग्गा, सिंहभूमि, मानभूमि, और बाजगुज़ार महाल.

मश्हूर शहर व क़स्बे - इस सूबहमें बर्दवान बड़ा रौनक़दार शहर है, और यहां महाराज बर्दवान रहते हैं. कलना और कटवा व्यापारकी जगह हैं. रानीगंजमें कोयलेकी खान है. बंकोड़ामें रेशमी और टसरी थान अच्छे होते हैं. बैजनाथ (ज़िला

वीरभूमिमें) महादेवजीका प्रसिद्ध मन्दिर है. कलकत्ता, हुगली नदीपर हिन्दुस्तानकी राजधानी है; यह बहुत बड़ी सौदागरीकी जगह, और बहुत बड़ा आबाद शहर है; इसमें फ़ोर्ट विलिअम नामी क़िला है; मिटिया बुर्जमें लखनऊके पदभ्रष्ट नव्वाब वाजिद-अ़लीशाह रहते थे. अलीपुर, जो फ़ोर्ट विलिअमसे चार मीलके फ़ासिलहपर है, लेफ्टिनेण्ट गवर्नर बंगालके रहनेकी जगह है. दमदम और बारकपुर पल्टनोंके रहनेकी जगह हैं. हवड़ामें, जो कलकत्ताके पास है, ईस्ट इंडिया रेलवेका एक बड़ा कारख़ानह है.

नदिया - भागीरथी नदीपर वाके़ है; संस्कृतके पण्डितोंमें यहांके न्यायशास्त्री प्रसिद्ध हैं. शान्तिपुरमें सूती कपड़ा अच्छा होता है. किशननगर, झिलंगी नदीपर प्रसिद्ध जगह है. प्लासीमें सिराजुद्दौलहने लार्ड क्लाइवसे शिकस्त पाई थी.

मुर्शिदाबाद - भागीरथी नदीपर नव्वाब नाज़िम बंगालाका सद्र मक़ाम था; और बहरामपुरमें सर्कारी कचहरियां हैं. दार्जिलिंगमें बंगालाके हाकिम हवाख़ोरीके लिये जाते हैं. ढाकाकी मलमल और चिकन प्रसिद्ध हैं.

चटगांव - यह बहुत अच्छा बन्दर है, और यहांसे लकड़ी और चावल बाहिरको भेजे जाते हैं.

मालदा - रेशमी कपड़ा और आमके लिये प्रसिद्ध है. भागलपुरमें रेशमी और टसरी कपड़ा अच्छा होता है.

मुंगेर - यहांकी छुरी और पिस्तौल प्रसिद्ध हैं. जमालपुर, ईस्ट इंडिया रेलवेका सद्र मक़ाम है. राजमहल बंगालेके नव्वाबोंकी राजधानी था.

गया - फल्गू नदीपर हिन्दुओंका तीर्थ स्थान है.

पटना या अ़ज़ीमाबाद - गङ्गाके किनारेपर एक बहुत बड़ा शहर है, जो पहिले बिहार की राजधानी था. बांकीपुरमें सर्कारी कचहरियां हैं. दानापुरकी छावनी प्रसिद्ध है.

आरा - शाहआबादके ज़िलेमें प्रसिद्ध स्थान है. बक्सरमें अन्नकी बड़ी मंडी और सहसराममें शेरशाहका मक़्बरा है.

सोहनपुर - मुज़फ़्फ़रपुरके ज़िलेमें है, जहां कार्तिकी १५ को हरिहर क्षेत्रका मेला बहुत अच्छा होता है.

बालासोर - यहां फूलके बर्तन बहुत अच्छे होते हैं. कनारकमें सूर्यका एक बहुत बड़ा मन्दिर है.

कटक - उड़ीसाके सब शहरोंमें बड़ा है. जगन्नाथपुरी हिन्दुओंके तीर्थकी जगह है. हज़ारी बाग़की आबोहवा अच्छी है.

(पश्चिमोत्तर देश व अवध).

सीमा - इस देशके उत्तरमें, हिमालय पहाड़ व नयपाल; पश्चिममें, राजपूतानह व पंजाब; दक्षिणमें, एजेण्टी मध्य हिन्द; और पूर्वमें, गवर्मेण्ट बंगाल है.

क़िस्मत और ज़िले - इस सूबेमें नीचे लिखी हुई ११ क़िस्मतें और ४९ ज़िले हैं, और इसकी राजधानी इलाहाबाद है.

(१)- क़िस्मत मेरटमें, देहरादून, सहारनपुर, मुज़फ़्फ़रनगर, मेरट, बुलन्दशहर और अलीगढ़ नामके ६ ज़िले हैं.

(२)- क़िस्मत रुहेलखण्डमें, बिजनौर, मुरादाबाद, बदायूं, बरेली, शाहजहांपुर, और पीलीभीत.

(३)- क़िस्मत आगरामें, मथुरा, आगरा या अक्बराबाद, एटा, फ़र्रुख़ाबाद, मैनपुरी, और इटावा.

(४)- क़िस्मत इलाहाबादमें, कानपुर, हमीरपुर, फ़त्हपुर, बांदा, इलाहाबाद और जौनपुर.

(५)- क़िस्मत बनारसमें, मिर्ज़ापुर, बनारस, ग़ाज़ीपुर, आज़मगढ़, गोरखपुर, बस्ती, और बलिया.

(६)- क़िस्मत झांसीमें, जालौन, झांसी, और ललितपुर.

(७)- क़िस्मत कमाऊंमें, तराई पर्गनह, कमाऊं, और गढ़वाल.

(८)- क़िस्मत लखनऊमें, उन्नाव, बारहबंकी और लखनऊ.

(९)- क़िस्मत सीतापुरमें, सीतापुर, हरदोई, और खेरी.

(१०)- क़िस्मत फ़ैज़ाबादमें, फ़ैज़ाबाद, गौंडा, और बहरायच.

(११)- क़िस्मत रायबरेलीमें, रायबरेली, सुल्तानपुर, और प्रतापगढ़.

मश्हूर शहर व क़स्बे- देहरादूनकी चाय मश्हूर है. लन्धोरा और मन्सूरीमें अंग्रेज़ी हाकिम हवाख़ोरीके लिये जायाकरते हैं. सहारनपुरका कम्पनी बाग़ अच्छा है; यहां सर्कारी घुड़साल है, और सिफ़ेद लकड़ीके सन्दूक़ और क़लमदान अच्छे बनते हैं. हरद्वार, हिन्दुओंके तीर्थकी जगह है. रुड़कीका कॉलिज और धुएंकी कलोंका कारख़ानह प्रसिद्ध है.

मेरटमें चेतके महीनेमें नौचन्दीका मेला होता है. बरौतमें लोहेके बर्तन अच्छे बनते हैं.

अलीगढ़में मुसल्मानोंका कॉलेज है. हातरसमें चाकू अच्छे बनते हैं.

मुरादाबादमें क़लईके वर्तन और देशी कपड़े अच्छे बनाये जाते हैं.

अमरोहामें मिट्टीके वर्तन अच्छे बनते हैं. चंदौसी व्यापारकी जगह है. ठाकुर द्वाराकी छींट अच्छी होती है.

बदायूंमें दिल्लीका बादशाह अलाउद्दीन राज्य छोड़कर रहा था.

बरेलीमें मेज़ और कुर्सियां, और पीलीभीतके चावल अच्छे होते हैं.

शाहजहांपुरमें चाकू और सरौते अच्छे होते हैं, और वहांका रौज़ा फ़ैक्टरी (रम शराब और क़न्द बनानेका कारख़ानह) प्रसिद्ध है; और तिलहरमें तीर और कमान अच्छे बनते हैं.

मथुरा, वृन्दावन, नन्दगांव, बरसाना, गोकुल और गोवर्द्धन ये सब श्री कृष्णके रास विहारके स्थान होनेके कारण हिन्दुओंके पवित्र स्थान हैं.

आगरेमें क़िला, ताजमहल, आराम बाग़; और सिकन्दरेमें अक्बर बादशाहका मक़्बरा देखनेके योग्य है, यहांकी दरी और पच्चीकारीका काम प्रसिद्ध है.

फ़त्हपुर सीकरीमें अक्बर बादशाह और उसके वज़ीरोंके महल हैं.

फ़र्रुख़ाबाद व्यापारका स्थान है.

कानपुरमें चमड़ेका काम अच्छा बनता है.

महोबाके पान मश्हूर हैं.

इलाहाबाद (प्रयाग), गंगा और यमुनाके संगमपर वाक़े होनेसे हिन्दुओंका मुख्य तीर्थ है; और पश्चिमोत्तर व अवध देशकी राजधानी है.

मिर्ज़ापुरमें पीतलके वर्तन अच्छे बनते हैं.

चुनारगढ़का क़िला और वहांके मिट्टीके वर्तन मश्हूर हैं.

बनारस (काशी), हिन्दुओंका तीर्थ स्थान है. यहां संस्कृत विद्याका प्रचार सबसे बढ़कर है.

नैनीतालपर ज़िले कमाऊंमें अंग्रेज़ लोग हवाख़ोरीके लिये आते हैं.

लखनऊ, गोमती नदीपर बादशाही समयमें अवध देशकी राजधानी था. यहां पर काग़ज़ अच्छे बनते हैं.

फ़ैज़ाबादमें लकड़ीकी चीज़ें अच्छी बनती हैं. इसके नज़्दीक अयोध्या हिन्दुओंके तीर्थकी जगह है. यहांपर पुराने मकानातके चिन्ह अबतक दिखाई देते हैं.

(गवर्मेंएट पंजाब).

सीमा- इस सूबेके उत्तरमें, कश्मीरका राज्य; पश्चिममें, सुलैमान पर्वत; दक्षिणमें, राजपूतानह; और पूर्वमें, जमुना नदी है.

क़िस्मत व ज़िले- इस विभागमें नीचे लिखी हुई छः क़िस्मतें और ३१ ज़िले हैं, राजधानी इसकी लाहौर है.

(१)- क़िस्मत दिल्लीमें, दिल्ली, गुड़गांवा, करनाल, हिसार, रुहतक, अंबाला, और शिमला नामके ७ ज़िले हैं.

(२)- क़िस्मत जालंधरमें, लुधियाना, फीरोज़पुर, जालंधर, होश्यारपुर, और कांगड़ा.

(३)- क़िस्मत लाहौरमें, लाहौर, अमृतसर, गुरदासपुर, मुल्तान, झंग और माउंटगोमरी.

(४)- क़िस्मत रावलपिंडीमें, रावलपिंडी, झेलम, गुजरात, शाहपुर, गूजरांवाला, और सियालकोट.

(५)- क़िस्मत देहराजातमें, देरह इस्माईलखां, देरह ग़ाज़ीख़ां, बन्नू, और मुज़फ़्फ़रगढ़.

(६)- क़िस्मत पिशावरमें, पिशावर, हज़ारा, और कोहाट.

मशहूर शहर व क़स्बे- दिल्ली, बादशाही समयमें भारतवर्षकी राजधानी था. करनाल और पानीपत ये दोनों लड़ाईके प्रसिद्ध स्थान हैं. कुरुक्षेत्र, पांडव और कौरवोंके महाभारत युद्धकी जगह है. थानेश्वर, हिन्दुओंके तीर्थका स्थान है.

लुधियाना- यहां सूती और रेशमी कपड़ा अच्छा बनता है.

शिमला- यहां गर्मीके मौसममें गवर्नरजेनरल हिन्द रहते हैं. अमृतसरमें गुरुगोविन्दका मन्दिर है.

रावलपिंडी- यहां सर्कारी फ़ौज रहती है.

अटक - यहांका क़िला मशहूर है.

मरी - अंग्रेज़ोंके लिये हवाख़ोरीका स्थान है.

मुल्तान - यहां रेशमी कपड़ा अच्छा बनता है.

पिशावर - हिन्दुस्तानकी पश्चिमी सीमापर वाक़े है, यहां अंग्रेज़ी फ़ौज रहती है.

(गवर्मेंएट बम्बई).

सीमा - इसके उत्तरमें, पंजाब व बिलोचिस्तान; पश्चिममें, बिलोचिस्तान व अरबका समुद्र; दक्षिणमें, मैसोर और इहातह मद्रास; और पूर्वमें, राजपूतानह व मध्य हिन्दका मुल्क है.

क़िस्मत व ज़िले - इस इहातेमें चार क़िस्मतें और २३ ज़िले हैं:-

(१)- उत्तरी क़िस्मतमें, अहमदाबाद, खेड़ा, पंचमहाल, भड़ोच, सूरत, थाना या उत्तरी कोकण और कोलाबा.

(२)- क़िस्मत मध्यमें, ख़ानदेश, नासिक, अहमदनगर, पूना, शोलापुर और सितारा,

(३)- क़िस्मत दक्षिणीमें, बेलगांव, धारवाड़, कलाडगी, कनाड़ा, रत्नागिरी या दक्षिणी कोकण.

(४)- क़िस्मत सिन्धमें, किरांची, हैदराबाद, थर और पार्कर, शिकारपुर उत्तरी सिन्ध सर्हद.

मशहूर शहर व क़स्बे - अहमदाबाद, साबरमती नदीपर गुजरातकी पुरानी राजधानी था.

भड़ोच - नर्मदा नदीपर, और सूरत तापी नदीपर व्यापारके शहर हैं.

बम्बई - इस इहातेकी राजधानी और व्यापारकी प्रसिद्ध जगह, और बड़ी आबादीका शहर व बन्दर है.

अहमदनगर - निज़ामशाही बादशाहोंकी राजधानी था.

नासिक - गोदावरीके तटपर हिन्दुओंका प्रसिद्ध तीर्थ है.

पूना - पेश्वाओंकी राजधानी था.

पंढरपुर - हिन्दुओंका तीर्थ स्थान है.

शोलापुर - व्यापारका शहर है.

सितारा - पहिले मरहटोंकी राजधानी था. महाबलेश्वर - अंग्रेज़ोंके लिये हवाख़ोरीकी जगह है.

बीजापुर - आदिलशाही बादशाहोंकी राजधानी था.

किरांची - सिन्धका नामी बन्दर और व्यापारकी जगह है.

हैदराबाद - दस्तकारीके लिये मश्हूर है. ठठा और शिकारपुर व्यापारकी जगह हैं.

मियानीमें लॉर्ड नेपिअरने सिन्धके अमीरोंको शिकस्त दी थी.
अमरकोटमें अक्बर बादशाहका जन्म हुआ था.

(गवर्मेंएट मद्रास).

सीमा- इस सूबेके उत्तरमें, उड़ीसा, और हैदराबाद; पूर्व और दक्षिणमें, समुद्र; पश्चिममें, इहातह, बम्बई, और समुद्र है. इस विभागमें कुल २२ ज़िले हैं, जो नीचे लिखे जाते हैं:-

१- गंजाम, २- विज़िगापट्टन, ३- गोदावरी, ४- कृष्णा, ५- कर्नोल, ६- बेलारी, ७- कड़ापा, ८- नेलोर, ९- चिंगलेपट, १०- मद्रास, ११- उत्तरी आर्कट, १२- तंजौर, १३- त्रिचिनापल्ली, १४- मदूरा, १५- तिनावली, १६-सालम, १७- कोयंबाटूर, १८- नीलगिरी, १९- मलाबार, २०- दक्षिणी कनारा, २१- दक्षिणी आर्कट, और २२- अनन्तपुर है.

मश्हूर शहर व क़स्बे- मद्रास, इस इहातेकी राजधानी है.

ब्रह्मपुर- यहां रेशमी कपड़ा अच्छा होता है. विज़िगापट्टन एक बड़ा बन्दर है.

राजमंद्री- ज़िले गोदावरीका सद्र मक़ाम है. मछलीपट्टन-यह एक बन्दर है, और यहां छींटें अच्छी बनती हैं. गूटीका क़िला मश्हूर है.

कांजीवरम- यहांके मन्दिर मश्हूर हैं.

आर्कट- कर्नाटकके नव्वाबोंकी राजधानी थी.

तंजौर- यह व्यापारकी जगह है.

त्रिचिनापल्ली- इस बड़े शहरके पास श्रीरंगजीका प्रसिद्ध मन्दिर है.

मदूरा- यहां बहुतसे उत्तम उत्तम मन्दिर हैं.

उटाकमन्ड- अंग्रेज़ोंके लिये हवाख़ोरीका स्थान है.

कालिकट- समुद्रके किनारेपर है.

मंगलोर- दक्षिणी कनाराका सद्र मक़ाम है.

रामेश्वर- इस छोटेसे द्वीपमें शिवका एक बड़ा प्रसिद्ध मन्दिर है.

(सुप्रिम गवर्मेंएटके मातहत मुल्क).

इस विभागमें नीचे लिखेहुए मुल्क हैं, और वे चीफ़ कमिश्नरोंके अधिकारमें हैं.

१- ब्रिटिश बर्ह्मा; २- आसाम; ३- मध्य देश; ४- अन्डमान और निकोबार द्वीप; ५- अजमेर; ६- बरार; और ७- कुर्ग.

(ब्रिटिश बर्ह्मा) (१).

सूबह ब्रिटिश बर्ह्मा, बंगालेकी खाड़ीके पूर्वी किनारेपर चटगांवके ज़िलोंसे आसामतक फैला हुआ है.

क़िस्मत व ज़िले- इसमें तीन क़िस्मतें और १९ ज़िले हैं; रंगून इस सूबहकी राजधानी है.

(१)- क़िस्मत पेगूमें रंगून, हंथावाड़ी, थँाका, बेसीन, हेनूज़ादा, थिरावाडी, प्रोम, और थेएटम्यो हैं.

(२)- क़िस्मत आराकानमें अक्याब, उत्तरी अराकान, क्यूकप्यू और सैएडवे हैं.

(३)- क़िस्मत तनासरिममें मोलमीन, एम्हर्स्ट, टेवाय, मरगुई, श्यूगेंग, टौंगू और साल्वीन हैं.

मश्हूर शहर व क़स्बे- रंगून, ब्रिटिश बर्ह्माकी राजधानी है; श्यूडिगोन बौद्ध-मतवालोंका पवित्र स्थान है; पेगू पहिले समयमें टालैंग घरानेकी राजधानी था; प्रोममें बौद्धमतवालोंका बड़ा मन्दिर है; अक्याब एक बन्दर है; जहांसे चावल बाहिर भेजे जाते हैं, और यहांके मकानात व मद्रसह अच्छे हैं; भीलोंगमें मन्दिर बहुत हैं, जो अशोक राजाके नामसे प्रसिद्ध हैं.

(गवर्मेंएट आसाम).

सीमा- इसके उत्तरमें भूटान; दक्षिण व पूर्वमें बर्ह्मा व मनीपुर; और पश्चिममें, गवर्मेंएट बंगाल व कूचविहार हैं.

---

(१) लॉर्ड डफ़रिनके वक्तमें बर्ह्मा देशका जो विभाग जीतकर हिन्दुस्तानमें मिलाया गया, वह इससे अलग है, यह वही है जो पहिलेसे अंग्रेज़ोंके तह्तमें है.

ज़िले– इस मुल्कमें सिल्हट, कछार, ग्वालपाड़ा, कामरूप, दरंग, नौगांव, शिवसागर, लखिमपुर, नागा, खासी, और गारू नामके ११ ज़िले हैं, और गोहाटी इसकी राजधानी है.

मुख्य शहर व क़स्बे– सिल्हटकी नारंगियां और सीतलपाटी अच्छी होती है.
गोलाघाटमें चावलोंका व्यापार बहुत होता है.
चेरापूंजीमें छः सौ इंचतक पानी बरसता है.
शिलांग, चीफ़ कमिश्नरके रहनेकी जगह है.

(गवर्मेंएट मध्य हिन्द).

सीमा– उत्तरमें, एजेएटी मध्य हिन्द; पूर्वमें, गवर्मेंएट बंगाल; दक्षिणमें, मद्रास इहातह और हैदराबादका राज्य; और पश्चिममें बरार है.

क़िस्मत और ज़िले–इस देशमें ४ क़िस्मतें और १८ ज़िले हैं. इस सूबेकी चीफ़-कमिश्नरीका सद्र मक़ाम नागपुर नाग नदीपर वाक़े है.

(१)– क़िस्मत जबलपुरमें सागर, दमोह, जबलपुर, मण्डला, और सिउनी नामके ज़िले हैं.

(२)– क़िस्मत नर्मदामें नृसिंहपुर, हौशंगाबाद, नीमार, बेतूल, और छिंदवाड़ा.

(३)– क़िस्मत नागपुरमें नागपुर, भण्डारा, बरदा, चान्दा, और बालाघाट.

(४)– क़िस्मत छत्तीसगढ़में रायपुर, बिलासपुर, और सम्भलपुर.

मुख्य शहर व क़स्बे– सागर, सर्कारी पल्टनके रहनेकी जगह है. हंडिया मुसल्मानोंका पुराना शहर है. बुर्हानपुर, तापी नदीपर ख़ानदेशका सद्र मक़ाम है. कामटीमें सर्कारी छावनी है. हिंगनघाटमें रूईकी मंडी है. जबलपुर व्योपारका शहर है. हौशंगाबाद, हौशंगशाहका बसाया हुआ है, इसके पासकी धरती बहुत उपजाऊ है. नागपुर, चीफ़ कमिश्नरीका सद्र मक़ाम है, जो मरहटोंके राज्यमें भी घोंसला राजाओंकी राजधानी था. वीरागढ़ और सम्भलपुरमें हीरेकी खान है.

(अण्डमान और निकोबार द्वीप).

ये द्वीप बंगालेकी खाड़ीमें हैं, इनमें पोर्ट ब्लेअर बड़ा आबाद शहर है. यहांपर हिन्दुस्तानके जन्म क़ैदी भेजेजाते हैं.

(अजमेर व मेरवाड़ा).

यह ज़िला जोधपुर, उदयपुर और कृष्णगढ़से घिरा हुआ है. चीफ़ कमिश्नरी का सद्र मक़ाम अजमेर है, जहां ख्वाजिह मुईनुद्दीन चिश्तीकी दर्गाह है. नसीराबादमें सर्कारी छावनी है. पुष्कर हिन्दुओंका तीर्थ स्थान है.

(वरार).

सीमा - इसके उत्तरमें तापी नदी; पूर्वमें वरदा; दक्षिणमें पैनगंगा; और पश्चिममें ख़ानदेश है.

क़िस्मत व ज़िले - इसमें दो क़िस्मतें और ६ ज़िले हैं. इसका सद्र मक़ाम अमरावती है.

(१)- क़िस्मत पूर्वी वरारमें अमरावती, एलिचपुर, और वन नामके तीन ज़िले हैं.

(२)- पश्चिमी वरारमें अकोला, वल्डाना और वेसिम.

मुख्य शहर व क़स्बे - अमरावती सद्र मक़ाम है. मुर्तज़ापुरमें रूईकी वड़ी मंडी है, ग्वालगढ़का क़िला प्रसिद्ध है. ख़ामगांवमें रूईकी मंडी है. आरगांवमें जेनरल वेलेज़्ली साहिबने मरहटोंको शिकस्तदी थी.

(कुर्ग).

कुर्ग, मलावार और मैसोरके वीचमें है. इसमें जंगल और पहाड़ वहुत हैं और छोटी इलायची और क़हवा वहुत होता है. इसका प्रवन्ध साहिव कमिश्नर वरारके सुपुर्द है. मरकाड़ा इसका सद्र मक़ाम है.

(रक्षित राज्य).

हिन्दुस्तानके रक्षित राज्योंकी आवादी विक्रमी १९३८ [हि० १२९८ = ई० १८८१] में क़रीवन् साढ़े पांच करोड़ थी, जिनके नाम मए क्षेत्रफल व आमदनी वग़ैरहके नीचे लिखे हुए नक़्शहमें दर्ज हैं:-

हिन्दुस्तानके रक्षित राज्योंका नक्शह (१).

नम्बर.	नाम रियासत.	कहां वाके़ है.	रईसका लक़ब.	क़ौम रईस.	तोप सलामी.	क्षेत्रफल व हिसाब मीलमुरब्बा	तादाद आमदनी अन्दाज़न.	ख़िराज वग़ैरह.		कैफ़ियत.
								ख़िराज.	कंटिंजेएट फ़ौज ख़र्च.	
१	अजयगढ़	बुंदेलखंड	महाराजा	बुंदेला राजपूत	११	८०२	२२५०००	७०१०	०	०
२	अलवर	राजपूताना	महाराजा	कछवाहा नरूका राजपूत	१५	३०२४	२३२४३१०	०	०	यह रियासत सर्कार अंग्रेज़ीको ख़िराज नहीं देती, लेकिन् ज़रूरतके वक़्त फ़ौज देती है.
३	अली-राजपुर	सेन्ट्रल इण्डिया	महाराणा	सीसोदिया राजपूत	९	८३६	९५०००	११०००	१५००	११०००) रुपये ख़िराजमें से१००००) रुपया धारको दिया जाता है.
४	इन्दौर	सेन्ट्रल इण्डिया	महाराजा	मरहटा	१९	८४००	७०७४४००	०	०	२३८१५२०) रुपया ब्रिटिश गवर्मेण्ट (अंग्रेज़ी सर्कार) को सन् १८६५ ई०के इक़ारके मुताबिक़ देदिये हैं, जिसके व्याजकी आमदनी मालवा भील कॉर्प्स और महीदपुर कंटिन्जेण्टमें ख़र्च होती है.
५	ईडर	मही कांठा (गुजरात)	महाराजा	राठौड़ राजपूत	१५	४९६६	६०००००	३०३४०	०	ख़िराज गायकवाड़को देते हैं.

(१) इन राज्योंके क्षेत्रफल और आमदनी वग़ैरह सब किताबोंमें एकसे नहीं मिलते, इसलिये यह नक़्शह हंटर साहिबके गेज़ेटिअरसे बनाया गया है.

नम्बर.	नाम रियासत.	कहां वाके है.	रईसका लक़ब.	क़ौम रईस.	तोप सलामी.	क्षेत्रफल ब हिसाब मीलमुरब्बा	तादाद आमदनी अन्दाज़न.	ख़िराज वग़ैरह.		कैफ़ियत.
								ख़िराज.	कंटिंजेएट फ़ौज ख़र्च.	
६	उदयपुर (मेवाड़)	राजपूतानह	महाराणा	सीसोदिया	१९	१२६७०	२६४६९१०	२००००००	५००००	ये फ़ौज ख़र्चके रुपये भील कॉर्प्सके लिये दियेजाते हैं.
७	उदयपुर छोटा	रेवाकांठा (गुजरात)	राजा	चहुवान राजपूत	९	८७३	१६००००	१०१४०	०	एक दस हज़ार एक सौ चालीस रुपया ख़िराजका गायकवाड़को देते हैं.
८	ओर्छा	बुंदेलखण्ड	महाराजा	बुंदेला राजपूत	१५	२०००	९०००००	०	०	०
९	कच्छ	बम्बई	मिर्ज़ा महाराव	जाड़ेचा राजपूत	१७	६५००	१६०३०५०	१८६९५०	०	०
१०	कपूरथला	सतलजपार	राजा	सिक्ख	११	१३२०	१८०००००	०	१३१०००	०
११	क़रौली	राजपूतानह	महाराजा	यादव राजपूत	१५	१२०८	४८३८१०	०	०	ज़रूरतके वक़् मांगे जानेपर फ़ौज देते हैं.
१२	कारोंड (कालाहांडी)	सेन्ट्रल इण्डिया	राजा	गङ्गावंशी राजपूत	९	३७४५	१०००००	३६००	०	०
१३	काहलूर (बिलासपुर)	सतलजके इस तरफ़	राजा	राजपूत	११	४४८	८६०००	०	०	०
१४	काश्मीर	पंजाब	महाराजा	डोगरा राजपूत	२१	८०९००	८०७५७८२	०	०	०

नम्बर.	नाम रियासत.	कहां वाके है.	रईसका लक़ब.	क़ौम रईस.	तोप सलामी.	क्षेत्रफल व हिसाब मीलमुरब्बा	तादाद आमदनी अन्दाज़न.	ख़िराज वग़ैरह.		कैफ़ियत.
								ख़िराज.	कौंटिंजेएट फ़ौज ख़र्च.	
१५	कृष्णगढ़	राजपूतानह	महाराजा	राठौड़ राजपूत	१५	७२४	२७५११०	०	०	०
१६	कूचविहार	बंगाल	महाराजा	राजवंशी राजपूत	१३	१३०७	१३२०४००	६७७००	०	०
१७	कोचीन	मद्रास	राजा	चेतियरराजपूत	१७	१३६१	१४४९२८०	२०००००	०	०
१८	कोटा	राजपूतानह	महाराव	चहुवान हाड़ा राजपूत	१७	३७९७	२९४१९७०	१८४७२०	२०००००	०
१९	कोल्हापुर	वम्बई	महाराजा	मरहटा	१९	२८१६	२२१९७६०	०	०	०
२०	खम्भात	वम्बई	नव्वाब	पठानमुसल्मान	११	३५०	४२६१३०	२५९५०	०	०
२१	ख़िल्चीपुर	भोपाल	राव	खीची राजपूत	९	२७३	१७५०००	१३१३०	०	अंग्रेज़ी सर्कारकी मारिफ़त सेंधियाको ख़िराज देते हैं.
२२	ख़ैरपुर	सिन्ध	नव्वाब	विलोची	१५	६१०९	५७२५००	०	०	ज़रूरतके वक्त फ़ौज देते हैं.
२३	गढ़वाल (टेहरी)	पश्चिमोत्तर देश	राजा	राजपूत	११	४१८०	८००००	०	०	०

नम्बर.	नाम रियासत.	कहां वाके है.	रईसका लक़ब.	क़ौम रईस.	सलामी तोप	क्षेत्रफल व हिसाब मीलमुरब्बा	तादाद आमदनी अन्दाज़न.	ख़िराज वगैरह.		कैफ़ियत.
								ख़िराज.	कंटिंजेंट फ़ौज ख़र्च.	
२४	गोंडल	काठियावाड़	ठाकुर	जाड़ेचा राजपूत	९	६८७	१२५८१५०	११०७२०	०	ब्रिटिश गवर्मेंट, जूनागढ़ और गायकवाड़को शामिल ख़िराज देते हैं.
२५	ग्वालियर	सेन्ट्रल इण्डिया	महाराजा	मरहटा	१९	२९०४०	१२००००००	०	११६५६	०
२६	चम्बा	पंजाब	राजा	राजपूत	११	३१८०	२४००००	५०००	०	०
२७	चरखारी	बुंदेलखण्ड	महाराजा	बुंदेलाराजपूत	११	७८७½	५०००००	८५८३	०	०
२८	छत्रपुर	ऐजन	राजा	पंवार राजपूत	११	११६९	२५००००	०	०	गद्दीनशीनीके वक़ एक वर्ष की आमदनीका चौथा हिस्सह देते हैं, और दत्तक बैठता है, तो आधा हिस्सह देते हैं.
२९	जयपुर	राजपूतानह.	महाराजा	कछवाहा राजपूत	१७	१४४६५	४९५८७६०	४०००००	०	०
३०	जयसलमेर	राजपूतानह	महारावल	यादव भाटी राजपूत	१५	१६४४७	११८५४०	०	०	०

नम्बर.	नाम रियासत.	कहां वाके है.	रईसका लक़ब.	क़ौम रईस.	तोपसलामी.	क्षेत्रफल व हिसाब मीलमुरब्बा	तादाद आमदनी अन्दाज़न.	ख़िराज वग़ैरह.		कैफ़ियत.
								ख़िराज.	कंटिंजेएट फ़ौज ख़र्च.	
३१	जावरा	मालवा	नव्वाब	पठान मुसल्मान	१३	८७२	७९९३००	०	१६१८१	यह २०००० रुपये हुल्कर को गद्दी नशीनीके वक़ नज़ानहके देते हैं.
३२	जूनागढ़	काठिया-वाड़	नव्वाब	बाबी मुसल्मान	११	३२८३	२००००००	६५६०४	०	अंग्रेज़ी सर्कारको व गायकवाड़को शामिल ख़िराज देते हैं.
३३	जोधपुर (मारवाड़)	राजपूतानह	महाराजा	राठौड़ राजपूत	१७	३७०००	४००००००	९८०००	११५०००	फ़ौज ख़र्चके रुपये ऐरनपुर कॉर्प्सके लिये दिये जाते हैं.
३४	जंजीरा	बम्बई	नव्वाब	सीदीमुसल्मान	९	३२५	३७६०००	०	०	०
३५	झाबुआ	सेन्ट्रल इण्डिया	राजा	राठौड़ राजपूत	११	१३३६	१४७१००	०	१४७४	०
३६	झालावाड़	राजपूतानह	महाराज-राणा	झाला राजपूत	१५	२६९४	१५२५२३०	८००००	०	०
३७	झींद	सतलजके उरली तरफ़	राजा	सिक्ख	११	१२३२	६५००००	०	०	पच्चीस घोड़े सवार सर्कार की नौकरीमें भेजते हैं.
३८	टिपरा	उत्तर पूर्वी सहद्द	राजा	क्षत्री	१३	४०८६	७५००००	६७७००	०	०
३९	टोंक	राजपूतानह	नव्वाब	पठान	१७	२५०९	१२८५२६०	०	०	०

नम्बर	नाम रियासत.	कहां वाके़ है.	रईसका लक़ब.	क़ौम रईस.	तोपसलामी	क्षेत्रफल ब हिसाब मीलमुरब्बा	तादाद आमदनी अन्दाज़न.	ख़िराज वग़ैरह.		कैफ़ियत.
								ख़िराज.	कंटिंजेण्ट फ़ौजख़र्च.	
४०	डूंगरपुर	राजपूतानह	महारावल	सीसोदिया राजपूत	१५	१०००	२०९३१०	३५०००	०	०
४१	त्रावणकोर	मद्रास इहातह	महाराजा	राजपूत	२१	६७३०	६०२२५४०	०	८०००००	०
४२	दतिया	बुंदेलखंड	महाराजा	बुंदेला राजपूत	१५	८३६	१००००००	१५०००	०	यह पन्द्रहहज़ार रुपया सर्कार अंग्रेज़ीकी मारिफ़त सेन्धियाको देते हैं.
४३	देवास	सेन्ट्रल इंडिया	राजा	पंवार राजपूत	१५	२८९	६०२८९०	०	३५६००	०
४४	धर्मपुर	सूरत	राजा	सीसोदिया राजपूत	९	७९४	२५००००	७०००	०	०
४५	धरौल	काठियावाड़	ठाकुर	जाड़ेचा राजपूत	९	४००	११७०००	१०२३१	०	यह ख़िराज जूनागढ़ तथा गायकवाड़को देते हैं.
४६	धार	मालवा	महाराजा	पंवार राजपूत	१५	१७४०	७४३१२०	०	१९६५०	ये रुपये मालवा भील कोर्प्सके लिये दियेजाते हैं.
४७	धौलपुर	राजपूतानह	महाराजराणा	जाट	१५	१२००	११०५७२०	०	०	०

नम्बर.	नाम रियासत.	कहां वाके है.	रईसका लक़ब.	क़ौम रईस.	तोप सलामी.	क्षेत्रफल ब हिसाब मीलमुरब्बा	तादाद आमदनी अन्दाज़न.	ख़िराज वग़ैरह.		कैफ़ियत.
								ख़िराज	कंटिंजेण्ट फ़ौज ख़र्च.	
४८	ध्रांगधड़ा	काठिया-वाड़	राजा	झाला राजपूत	११	११४२	४०००००	४४६७७	०	यह ख़िराज जूनागढ़ और अंग्रेज़ी सर्कारको शामिल देते हैं.
४९	नरसिंहगढ़	भोपाल	ऐज़न	ऊमट राजपूत	११	६२३	५०००००	८५०००	०	ख़िराज अंग्रेज़ी सर्कारकी मारिफ़त हुल्करको देते हैं.
५०	नवानगर	काठिया-वाड़	जाम	जाड़ेचा राजपूत	११	१३७९	२३१८५१०	१२०११०	०	सर्कार अंग्रेज़ी, गायकवाड़ और जूनागढ़ नव्वाब, तीनों को शामिल ख़िराज देते हैं.
५१	नागोद	बघेल खंड	राजा	पडियार राजपूत	९	४५०	१५००००	०	०	०
५२	नाभा	सतलजके इस तरफ़	राजा	सिक्ख	११	९२८	६५००००	०	०	पचास सवार नौकरीमें देते हैं.
५३	पटियाला	ऐज़न	महाराजा	ऐज़न	१७	५८८७	४०८९५६०	०	०	सौ आदमीकी नौकरी देते हैं.
५४	पन्ना	बुंदेल खंड	महाराजा	बुंदेला राजपूत	११	२५६८	५०००००	९९५०	०	०
५५	पालनपुर	बम्बई	दीवान	अफ़ग़ान मुसल्मान	११	३१५०	४४५०००	४३७५०	०	ये रुपये गायकवाड़को दिये जाते हैं, और अंग्रेज़ी सर्कारको डेढ़सौ सवार और सौ पियादोंका ख़र्च देते हैं.

नम्बर.	नाम रियासत.	कहां वाके है.	रईसका लक़ब.	क़ौम रईस.	तोप सलामी.	क्षेत्रफल ब हिसाब मीलमुरब्बा	तादाद आमदनी अन्दाज़न.	ख़िराज वग़ैरह.		कैफ़ियत.
								ख़िराज.	कंटिंजेएट फ़ौज ख़र्च.	
५६	पालीताना	काठिया-वाड़	ठाकुर	गुहिलराजपूत	९	२८८	२०००००	१०३६४	०	यह ख़िराज गायकवाड़ और जूनागढ़ नव्वाबको दिया जाता है.
५७	प्रतापगढ़	राजपूता-नह	महारावल	सीसोदिया राजपूत	१५	१४६०	३५००००	५६८८०	०	०
५८	पोरबन्दर	काठिया-वाड़	राणा	जेठवा राजपूत	११	६३६	४०००००	४८५०४	०	ख़िराज अंग्रेज़ी सर्कार, गायकवाड़ और जूनागढ़ नव्वाब, तीनोंको शामिल देते हैं.
५९	फ़रीदकोट	सतलजके इसतरफ़	राजा	जाट	११	६१२	३०००००	०	०	०
६०	बड़वानी	सेन्ट्रल इण्डिया	राणा	सीसोदिया राजपूत	९	१३६२	१३००००	०	४०००	ये रुपये हाली सिक्केके मालवा भील कम्पनीके लिये देते हैं.
६१	बड़ौदा	गुजरात	महाराजा	मरहटा	२१	८५७०	१११८२३२०	०	०	०
६२	बनारस	पश्चिमोत्तर देश	महाराजा	ब्राह्मण गोतम	१३	९८५	८०००००	०	०	३०००००) रुपये हासिलके तौरपर अंग्रेज़ी सर्कारको देते हैं.
६३	बहावलपुर	पंजाब	नव्वाब	दाऊद पोत्रा मुसलमान	१७	१५०००	१६०००००	०	०	०
६४	बेरोंदा	बुंदेलखण्ड	राजा	रघुवंशी राज-पूत	९	२३८	२८०००	०	०	०

नम्बर.	नाम रियासत.	कहां वाके है.	रईसका लक़ब.	क़ौम रईस.	सलामी तोपें.	क्षेत्रफल ब हिसाब मीलमुरब्बा	तादाद आमदनी अन्दाज़न.	ख़िराज वग़ैरह. ख़िराज.	ख़िराज वग़ैरह. कंटिंजेण्ट फ़ौजख़र्च.	कैफ़ियत.
६५	बढ़वान	काठिया-वाड़	ठाकुर	झाला राजपूत	९	२३७	४०००००	२८६९१ $\frac{१}{२}$	०	सर्कार अंग्रेज़ी और नव्वाब जूनागढ़, इन दोनोंको शामिल ख़िराज देते हैं.
६६	बावनी	बुंदेलखंड	नव्वाब	पठान	११	१२७	१०००००	०	०	जब गोद लिया हुआ गद्दीपर बैठता है, तब एक सालकी आधी आमदनी सर्कारको नज़रानहमें देते हैं.
६७	बारिया	रेवाकांठा	महारावल	चहुवान राजपूत	९	८१३	१८२३७०	९३३०	०	०
६८	बाला-सिनोर	ऐजन	नव्वाब	ईरानी मुसल्मान	९	१८९	११००००	१४६८०	०	११०८०) सर्कार अंग्रेज़ीको और ३६००) रुपया गाइकवाड़को देते हैं.
६९	बांसदा	सूरत	महारावल	सोलंखी राजपूत	९	३८४	१६८६१०	७३५०	०	जब गोद रखते हैं तब रु० ३००००) नज़रानहके अंग्रेज़ी सर्कारको देते हैं.
७०	बांसवाड़ा	राजपूता-नह	महारावल	सीसोदिया राजपूत	१५	१३००	२८००००	३८०००	०	०
७१	बांकानेर	काठिया-वाड़	राजा	झाला राजपूत	९	३७६	१६२४२०	१८८७९	०	सर्कार अंग्रेज़ी और जूनागढ़के नव्वाबको ख़िराज देते हैं.

नम्बर.	नाम रियासत.	कहां वाक़े है.	रईसका लक़ब.	क़ौम रईस.	तोपसलामी.	क्षेत्रफल व हिसाब मीलमुरब्बा	तादाद आमदनी अन्दाज़न.	ख़िराज वग़ैरह.		कैफ़ियत.
								ख़िराज.	कंटिंजेण्ट फ़ौज ख़र्च.	
७२	बिजावर	बुंदेलखण्ड	सवाई महाराजा	बुंदेला राजपूत	११	९७३	२२५०००	०	०	०
७३	बीकानेर	राजपूताना	महाराजा	राठौड़ राजपूत	१७	२२३४०	१२५००००	०	०	०
७४	बूंदी	राजपूताना	महाराव-राजा	हाड़ा राजपूत	१७	२३००	१०१४०००	१२००००	०	०
७५	भरतपुर	राजपूताना	महाराजा	जाट	१७	१९७४	२८०००००	०	०	०
७६	भावनगर	काठियावाड़	ठाकुर	गोहिल राजपूत	१५	२८६०	२३०००००	१५२२११	०	जूनागढ़, गायकवाड़, और सर्कार अंग्रेज़ी, इन तीनों को शामिल ख़िराज देते हैं.
७७	भोपाल	सेन्ट्रल इण्डिया	बेगम	मिरासी खेल अफ़गान	१९	६८७३	४००००००	२०००००	०	०
७८	मणिपुर	उत्तर-पूर्वी हिन्दुस्तान	महाराजा	क्षत्री	११	८०००	५०००००	०	०	०
७९	मालेर-कोटला	सतलजके इस पार	नव्वाब	अफ़गान मुसल्मान	११	१६४	२८४०००	०	०	पच्चीस घोड़े सवार नौकरी में भेजते हैं.

नम्बर.	नाम रियासत.	कहां वाके है.	रईसका लकब.	कौम रईस.	तोप सलामी.	क्षेत्रफल ब हिसाब मीलमुरब्बा	तादाद आमदनी अन्दाज़न.	ख़िराज वगैरह.		कैफ़ियत.
								ख़िराज.	कंटिंजेएट फ़ौज ख़र्च.	
८०	मेहर	बघेल खंड	राजा	जोगी	९	४००	७०९६०	०	०	०
८१	मैसोर	मद्रास	महाराजा	यादव राजपूत	२१	२४७२३	१०६३५५७०	०	२४५००००	०
८२	मोरवी	काठिया-वाड़	ठाकुर	जाड़ेचा राजपूत	११	८२१	८३५८५०	६१५६०	०	यह ख़िराज सर्कार अंग्रेज़ी, जूनागढ़के नव्वाब, और गायकवाड़, तीनोंको दियाजाता है.
८३	मंडी	सतलज पार	राजा	चन्द्र वंशी राजपूत	११	१०००	३६००००	१०००००	०	०
८४	रतलाम	सेन्ट्रल इण्डिया	राजा	राठौड़ राजपूत	१३	७२९	१३०००००	८४०००	०	चौरासी हज़ार रु० सालिमशाही सेंधियाको देते हैं.
८५	राधनपुर	गुजरात	नव्वाब	ईरानी	११	११५०	६०००००	०	०	०
८६	राजगढ़	भोपाल	नव्वाब	मुसल्मान	११	६५५	५०००००	८६१७०	०	८५१७०) सेंधियाको और १०००) झालावाड़को देते हैं.
८७	राज-पीपलां	रेवाकांठा	राजा	गोहिल राजपूत	११	१५१४	६७००००	६५०००	०	सर्कार अंग्रेज़ीकी मारिफ़त गायकवाड़को ख़िराज देते हैं.

नम्बर.	नाम रियासत.	कहां वाके है.	रईसका लक़ब.	क़ौम रईस.	तोप सलामी	क्षेत्रफल व हिसाब मीलमुरब्बा	तादाद आमदनी अन्दाज़न.	ख़िराज वग़ैरह. ख़िराज.	ख़िराज वग़ैरह. कंटिंजेण्ट फ़ौज ख़र्च.	कैफ़ियत.
८८	राजकोट	काठिया-वाड़	ठाकुर	जाड़ेजा राजपूत	९	२८३	१७२७८०	२१३२०	०	सर्कार अंग्रेज़ीकी ओर से नव्वाब जूनागढ़को शामिल ख़िराज देते हैं.
८९	रामपुर	रुहेलखण्ड	नव्वाब	पठान	१३	८९९	१५८६५७०	०	०	०
९०	रीवां	बघेलखण्ड	महाराजा	बघेला राजपूत	१७	१००००	१११२५८०	०	०	०
९१	लींबड़ी	काठिया-वाड़	ठाकुर	झाला राजपूत	९	३४४	२२१३७०	४५५३३	०	सर्कार अंग्रेज़ी और जूनागढ़के नव्वाब को शामिल ख़िराज दिया जाता है.
९२	लूणावाड़ा	रेवाकांठा (गुजरात)	महाराणा	सोलंखी राजपूत	९	३८८	१६२१६०	१८०००	०	अंग्रेज़ी सर्कार और गायकवाड़को शामिल ख़िराज देते हैं.
९३	समथर	बुंदेलखंड	राजा	बुंदेला राजपूत	११	१७४	४०००००	०	०	०
९४	सावंतवाड़ी	बम्बई	सर देसाई	मरहटा	९	९००	३२५०००	०	०	फ़ौज ख़र्च देते हैं
९५	सिरोही	राजपूता-नह	महाराव	देवड़ा चहुवान राजपूत	१५	३०२०	१४९२४०	६८८०	०	०
९६	सिरमोर (नाहन)	सतलजके इस तरफ़	राजा	क्षत्री	११	१०७७	२१००००	०	०	०

नम्बर.	नाम रियासत.	कहां वाके है.	रईसका लकब.	कौम रईस.	तोपसलामी.	क्षेत्रफल वहिसाब मीलमुरब्बा	तादाद आमदनी अन्दाज़न.	ख़िराज वग़ैरह.		कैफ़ियत.
								ख़िराज.	कंटिंजेएट फ़ौजख़र्च.	
९७	सिक्किम	हिमालय	राजा	टिपिहार	१५	१५५०	७०००	०	०	०
९८	सीतामऊ	सेन्ट्रल इण्डिया	राजा	राठौड़ राजपूत	११	३५०	१९५८७०	५०००	०	ख़िराज अंग्रेज़ी सर्कारकी मारिफ़त सेंधियाको दिया जाता है.
९९	सुकेत	सतलज पार	ऐजन	क्षत्री	११	४७४	१०००००	११०००	०	०
१००	सेलाना	मालवा	ऐज़न	राठौड़ राजपूत	११	११४	१४८०००	४२०००	०	०
१०१	सोंठ	रेवाकांठा	ऐज़न	पंवार राजपूत	९	३९४	९००००	७०००	०	०
१०२	हैदराबाद	दक्षिण	नव्वाब	पठान मुसलमान	२१	८००००	३१००००००	०	०	कंटिंजेएट फ़ौजख़र्चमें बरारका प्रांत देदिया है.
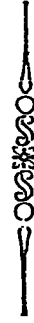
स्वाधीन राज्य.

१-नयपाल - इसके उत्तरमें हिमालय पर्वत; पूर्वमें सिकिम व भूटान; दक्षिणमें अवध, और बंगालेके ज़िले; और पश्चिममें काली नदी है. राजधानी इस रियासतकी काठमांडू है. ललितपट्टन और गोरखा अच्छे शहर हैं.

२-भूटान- इसके उत्तरमें हिमालय पहाड़; पूर्वमें चीन; दक्षिणमें आसाम; और पश्चिममें सिक्किम वाके है. इसकी राजधानी तासीसूदन है.

अन्य देशीय राज्य.

हिन्दुस्तानमें फ़रांसीसियोंके राज्यकी राजधानी चन्द्रनगर हुगली नदीपर वाके है. इसके अलावह पांडीचेरी और कालीकट कर्नाटकके किनारेपर, माही मलाबारके किनारेपर, और येनाम गोदावरीके ज़िलेमें हैं.

पुर्त्तगाल वालोंकी अमल्दारीका मुख्य नगर गोआ है; और इसके सिवा दमन बम्बईके उत्तरमें, और ड्यू नामक द्वीप काठियावाड़के समुद्री तटपर है.

वर्तमान समयके देशी राज्योंका सूक्ष्म वृत्तान्त ऊपर नक़्शहमें दर्ज करनेके बाद हमको उचित हुआ, कि प्राचीन समयके सूर्य, चन्द्र और अग्निवंशी राजाओंके हालसे भी पाठक लोगोंको किसीक़द्र सूचित करें, और इसी ग़रज़से सामग्री एकत्र करनेमें बहुत कुछ परिश्रम किया गया, परन्तु शृंखलाबद्ध इतिहास सिवाय संस्कृत ग्रन्थोंके और कहीं नहीं मिला, तब लाचार महाभारत, भागवतादि ग्रन्थोंमें लिखी हुई सूर्य व चन्द्र वंशकी वंशावलियोंपर ही भरोसा करना पड़ा; परन्तु उनका इतिहासमें लिखना अवश्य नहीं जाना, क्योंकि प्रसिद्ध पुराणोंमें लिखेजाने और छापेकी हिकमत ईजाद होनेसे उन पुस्तकोंके हर जगह पाईजानेके कारण उनका प्रचार मज़्हबी तरीक़ेसे पठित और अपठित लोगोंके घरोंमें हमेशहसे चला आता है; और कुछ वंश ऐसे भी वर्णन हुए हैं, जो सूर्य और चन्द्र वंशसे जुदे हैं; याने नाग, तक्षक, शक, शुंग, मित्र, चालुक्य, चहुवान, परमार, परिहार, डोडिया, मकवाणा और टांटेड वग़ैरह, जिनका हाल उन ग्रन्थोंमें नहीं है. ऐसा मालूम होता है, कि उन्हीं प्राचीन वंशोंमेंसे कई कारण पाकर ये नई शाख़ें प्रगट होगई हैं; जैसे कि बौद्ध मज़्हब प्रबल होनेसे वेदके माननेवाले ब्राह्मण और क्षत्रिय अर्बली पहाड़में जाछुपे, और जब उस मज़्हबको ज़वाल आने लगा, तब ब्राह्मणोंने मौक़ा पाकर आबूपर एक यज्ञ किया, जिसमें उन क्षत्रियोंको बुला-

या, जो अर्वली पहाड़में भीलोंके शामिल रहकर आचारहीन होगये थे, और जंगलोंमें फिरनेसे अपनी वंशशृंखला भी भूलगये थे, और उन लोगोंसे ब्राह्मणोंने प्रायश्चित्त करवाकर नवीन संस्कार होनेके कारण उन्हें अग्नि वंशी प्रसिद्ध किया. उनके आचार विचार शुद्ध हुए, तब उनको धनुर्वेद वगैरह विद्या पढ़ाई, और उन्हीं लोगोंको सेनापति बनाया, जिन्होंने आबूके चारों तरफ़ अपनी राजधानियां क़ाइम करके आहिस्तह आहिस्तह बौद्ध मज़्हबको ग़ारत करदिया, केवल जैन मत वाले, जो वीरताको छोड़कर साधु वृत्तिमें रहते थे, बचे, और कुछ समयतक शास्त्र विद्याका अभिमान छोड़कर शस्त्रविद्याके द्वारा लड़ते भिड़ते रहे. प्राचीन सूर्य और चन्द्रवंशी शाखा वालोंने भी जहां कहीं क़ाबू पाया, अपना अपना दख़्ल जमाया, लेकिन् उस समयका हाल केवल अनुमानसे मालूम होसक्ता है, परीक्षित प्रमाणोंसे नहीं मिलता. इसलिये लाचार होकर हमको इससे भी हटना पड़ा, और आधुनिक प्राचीन शोधकारक लोगोंके लेखसे प्रयोजन लेकर अपने चित्तको सन्तुष्ट करलिया. हमारे यहां अभीतक देश काल और विद्याकी उन्नति ऐसी नहीं हुई है, कि स्वतंत्रताके साथ कोई पुरुष इतिहास लिखसके, अल्बत्तह वह समय समीप आता जाता है, जिसमें हमारे इतिहासकी ज़ुरूर क़द्र होगी.

अब हम आधुनिक विद्वानोंकी तह्क़ीक़ातके मुताबिक़ पाटलीपुत्र (पटना) के राजा चन्द्रगुप्तका हाल लिखते हैं, जो यूनानी किताबोंसे तस्दीक़ होचुकनेके अलावह अलेग्ज़ेंडर (सिकन्दर) के सेनापति नियार्कस और गवर्नर सेल्यूकसके सफ़रनामहमें विस्तारके साथ लिखागया है.

चन्द्रगुप्त राजा मोरी ख़ानदानका चन्द्रवंशी राजा था, जिसकी गद्दीनशीनी सन् .ईसवी से पूर्व ३१७ से ३१२ वर्षके बीचमें हुई थी. इसका पोता अशोक हुआ, जिसकी आज्ञाएं अनेक जगह पर्वत और स्तंभोंमें खुदी हुई मिली हैं, उन स्थानोंके नाम नीचे लिखे जाते हैं:-

शाबाज़गिरि, जो पिशावरके क़रीब है; ख़ालसी, पश्चिमोत्तर देशमें; मेरट, विराट, प्रयाग, लोरिया, सहसराम, और गिरनारके सिवा और भी कई स्थान हैं.

राजा अशोकका समय सन् .ईसवी से पूर्व २६४ से २२३ वर्षतक माना गया है. यह राजा बड़ा नामवर और बौद्ध धर्मका प्रचारक था. इस ख़ानदानके बाद बाक्ट्रिया ख़ानदान के राजा हुए, उनका समय .ईसवी सन्से पहिले २५० से १२० वर्षतक दर्याफ्त हुआ है, और उनका हाल एशियाटिक सोसाइटी वगैरहके जर्नलोंमें लिखा है. इन राजाओंको

मध्य एशियाके सिथियन क़ौमके राजाओंने जीतलिया, और ये भी बौद्ध मज्हबके प्रचारक होगये थे. इनके नाम कनिष्क, हुष्क, युष्क, वग़ैरह पाये गये हैं. इनका राज्य कश्मीर वग़ैरह उत्तरी हिन्दुस्तानमें था. ईसवी सन्के पहिले व दूसरे शतकमें क्षत्रप नामके एक ख़ानदानका अमल सौराष्ट्रतक फैलगया था. इसके बाद गुप्त ख़ानदानका राज्य चमका, जो सूर्य वंशियोंमेंसे था. हमारे अनुमानसे ये राजा वही हैं, जो रामचन्द्रकी औलादमेंसे पश्चिमको आये थे, परन्तु इस ख़ानदानका पहिला राज्य हिन्दुस्तानके कई हिस्सोंमें था. इनका संवत् ईसवी सन् ३१९ से शुरू हुआ, जो गुप्त संवत् और वल्लभी संवत् कहा जाता है. नाम इन राजाओंके ये हैं, १- महाराज गुप्त, २- घटोत्कच, ३- चन्द्रगुप्त, ४- समुद्रगुप्त, ५- चन्द्रगुप्त दूसरा, ६-कुमारगुप्त, और ७- स्कन्दगुप्त. स्कन्दगुप्तका आख़री गुप्त संवत् १४९ पायागया है. इसके बाद बुधगुप्तके लेख गुप्त संवत् १६५ से १८० तकके मिले हैं, और संवत् १९१ के लेखमें भानुगुप्तका नाम है. इस ख़ानदानका सविस्तर हाल "कॉर्पस इन्स्क्रिप्शनं इंडिकेरं" ग्रन्थकी तीसरी जिल्दमें लिखा है. इनके पीछे वल्लभी ख़ानदानका हाल निश्चय हुआ है, जिसका हाल आगे लिखा जायेगा, क्योंकि मेवाड़का ख़ानदान इसी ख़ानदानसे निकला मानते हैं. इसके बाद हिन्दुस्तानमें जुदे जुदे ख़ानदानके जुदे जुदे राजा राज्य करते रहे, जो आपसमें कभी लड़ते और कभी मेलमिलाप करलेते थे, लेकिन् तमाम हिन्दुस्तानका एक महाराजाधिराज कोई न हुआ. इनमें काबुल और पंजाबके राजा, तथा कश्मीरके उत्पल वंशी राजा, कांगड़ाके महाराजा, अजमेरके चहुवान राजा, ग्वालियरके कछवाहा, मेवाड़के गुहिलोत, मालवा और आबूके परमार, गुजरातके चापोत्कट (चावड़ा), और चालुक्य (सोलंखी), कन्नौजके राठौड़, मारवाड़के परिहार, बंगाल और बिहारके पाल और सेन वग़ैरह कई ख़ास ख़ास ख़ुद मुरूतार राजा थे. ये राजा नर्मदा नदीके उत्तर तरफ़ राज्य करते थे, और दक्षिणमें अशोकके ज़मानहके बाद आंध्रभृत्य या शातवाहन वंशके राजा और उनके बाद चालुक्य, राष्ट्रकूट, फिर चालुक्य, कलचुरी, यादव और शिलारा वंशके राजा क्रम क्रमसे अपनी हुकूमत चलाते रहे, जिसका सविस्तर हाल दक्षिणकी प्राचीन तवारीख़में रामकृष्ण गोपाल भांडारकरने लिखा है. ये लोग अपने अपने राज्यमें स्वतंत्रताके साथ राज्य करते थे परन्तु कभी कभी कोई प्रबल राजा निर्बलको दबादेता या नष्ट भी करडालता था, जिसकी कोई हार पुकार सुनने वाला न था.

यह भारत तीन तरफ़ समुद्रसे घिरा हुआ है, परन्तु उस समय जलयात्राकी विद्या प्रबल न होनेके कारण जहाज़ किनारों किनारोंपर ही घूमते थे, जिससे इस देशको समुद्रकी

तरफ़ कोई भय नथा, और उत्तर तरफ़से हिमालयको उल्लंघन करके कोई नहीं आसक्ता था, बाहिरके शत्रुओंको केवल काबुल और कन्धारके रास्ते हिन्दुस्तानमें घुसनेके लिये सुगम थे.

इस देशमें पहिला हमलह यूनानके बादशाह अलेग्जैंडर (सिकन्दर) का हुआ था, जिसका तवारीख़ी हाल मेगस्तनी, टॉलोमी, नियार्कस, और एरियन वगैरह मुवर्रिख़ोंकी किताबोंके छपेहुए खुलासोंसे लिया गया है. सन् ईसवी से ३३४ वर्ष और विक्रमी संवत्से २७७ वर्ष पहिले सिकन्दर अपने मुल्कसे ४५०० सवार और ३४५०० पियादे साथ लेकर देश विजय करनेके लिये निकला, और हिल्ज़पोंटके किनारेपर पहुंचा, वहांसे किश्ती के रास्ते पार होकर उस मुल्कके राजाओंको, जो एक लाख दस हज़ार फ़ौज लेकर मुक़ाबले को तय्यार थे, पराजय किया. इसीतरह अन्यदेशियोंको पराजय करता हुआ सारे एशिया कोचक (एशिया माइनर) का मालिक बनगया. जब वह आगे बढ़ा, तो ईरानका शाह दारा बड़ी भारी सेना लेकर उसे रोकनेको आया, लेकिन् उसे ज़बर्दस्त पाकर आधा राज्य देदेनेको तय्यार हुआ, परन्तु सिकन्दरने दाराकी यह दर्ख्वास्त कुबूल न करके आसीस नदीके पास उसको जीत लिया; इसके बाद मिस्रको फ़त्ह किया, और उसके बाद पूर्वी तरफ़ फिरकर मिसोपोटेमियाको जीता, और अरबिला स्थानमें ईरानके बादशाह दारासे फिर मुक़ाबलह हुआ और दारा भागते वक्त अपने एक सर्दारके हाथसे मारागया. सिकन्दरने ईरानका मालिक बननेके बाद फिर हिन्दुस्तान और अफ़्गानिस्तान लेनेका इरादह किया, और हिरात, काबुल, बुख़ारा, व समरक़न्दको फ़त्ह करता हुआ हिन्दुस्तानमें आया. उस समय झेलम नदीके किनारेपर राजा पोरससे लड़ाई हुई, और पोरसको भी जीतलिया, परन्तु उसका मुल्क वापस देदिया. फिर आगे बढ़कर गुजरातके मार्गसे चिनाब नदीके पार उतरकर लाहौरमें पहुंचा. उस वक्तके ग्रन्थकार स्ट्रेबो, व एरियन वगैरहने कलानूस, मंडनीस वगैरह विद्वानोंका हाल इस तरहपर लिखा है:-

मेगस्तनी लिखता है, कि हिन्दुस्तानी लोग आत्मघातको बुरा समझते हैं, लेकिन् कभी कभी शस्त्रसे मरने, अग्निमें जलने, और पहाड़परसे गिरनेसे आत्मघात करते भी हैं. वह कलानूसके लिये इस तरहपर लिखता है, कि वह लोभमें आकर नौकरकी तरह सिकन्दरके साथ चलागया, और कुछ अरसह बाद बीमार होनेपर मक़्दूनिया के लश्करके सामने आगमें जलमरा, और अग्निके तापसे कुछ तक्लीफ़ ज़ाहिर नकी. मंडनीसके हालमें वह इस तरह लिखता है, कि सिकन्दरके दूत उसको बुलानेके लिये आये और कहा, कि अगर तुम सिकन्दरके पास आजाओगे, तो इन्आम मिलेगा, और न आओगे, तो सज़ा पाओगे; परन्तु उसने जानेसे इन्कार किया, और कहा, कि जिस आदमीकी तृष्णा कभी पूरी नहीं होती उससे मैं इन्आम लेना नहीं चाहता, और न मैं उससे

डरता हूं, अगर ज़िन्दह रहा तो हिन्दुस्तानमें मुझे खानेको मिलजायेगा और मरगया, तो इस मांसके शरीरसे मुक्त होकर इससे अच्छा जन्म पाऊंगा. सिकन्दरने यह सुनकर उसकी प्रशंसा की और उसको अपने पास न बुलाया, जिसपर लोगोंने उसकी तारीफ़ की.

मेगस्तनी हिन्दुस्तानके विषयमें लिखता है, कि हिन्दुस्तानके लोगोंमें निम्न लिखित ७ विभाग हैं:-

पहिले, फ़िलॉसफ़र (तत्ववेत्ता) जो दरजहमें सबसे अव्वल हैं, परन्तु संख्या में कम हैं. लोग इनके द्वारा यज्ञ या धर्म सम्बन्धी कार्य करते हैं, और राजा लोग नये सालके प्रारम्भमें सभा करके उनको बुलाते हैं, और वहां वे लोग अपने कियेहुए उत्तम कामोंको प्रगट करते हैं.

दूसरा वर्ग काश्तकारों याने उन लोगोंका है, जो ज़मीनको जोतते बोते हैं, और शहरमें नहीं रहते. इनका रक्षण लड़ने वाली क़ौमें करती हैं.

तीसरा वर्ग ग्वाल और शिकारियोंका है, जो चौपाये रखते और शिकार करते हैं, और बोये हुए बीजोंको खाने वाले जानवरोंको मारते हैं, जिसके एवज़में उनको राजाकी तरफ़से नाज मिलता है.

चौथे वर्गमें वे लोग हैं जो व्यापार करते, बर्तन बनाते, और शारीरक मिह्नत करते हैं. इनमेंसे कितनेएक लोग अपनी आमदका कुछ भाग राजाको देनेके अलावह मुक़र्रर कीहुई नौकरी भी करते हैं. शस्त्र और जहाज़ बनाने वालोंको राजाकी तरफ़से तनख्वाहें मिलती हैं. सेनापति सिपाहियोंको शस्त्र देता है, और जहाज़ी सेनापति मुसाफ़िरों और व्यापारकी चीज़ोंको एक जगहसे दूसरी जगह पहुंचानेमें जहाज़ किरायेपर देता है.

पांचवां वर्ग लड़नेवालोंका है. जब लड़ाई नहीं होती तब ये लोग अपना वक़्त नशे और सुस्तीमें गुज़ारते हैं. उनको कुल ख़र्च राजाकी तरफ़से मिलता है, जिससे वे हरवक़् लड़ाईपर जानेको तय्यार रहते हैं.

छठा वर्ग निगरानी रखने वालोंका है. ये लोग सब जगह निगरानी रखकर राजाको गुप्त रीतिसे ख़बर देते हैं, अर्थात् इनमेंसे कोई शहरकी और कोई फ़ौजकी निगरानी रखता है. सबसे लाइक़ और भरोसे वाला आदमी इन ओहदोंपर रक्खा जाता है.

सातवें वर्गमें राजाके सलाहकार या सभासद होते हैं, जो न्याय आदिके बड़े कामोंपर नियत रहते हैं.

इन फ़िक़ोंमेंसे कोई अपनी जातिके बाहिर शादी नहीं करसक्ते, और न अपना पेशह छोड़कर दूसरेका पेशह इख़्तियार करते, और न एकसे ज़ियादह काम करसक्ते हैं, परन्तु फ़िलॉसफ़रों (तत्ववेत्ताओं) के लिये यह पाबन्दी नहीं है, उनको सद्गुणोंके लिये इतनी आज़ादी है.

सिकन्दरका इरादह था, कि पंजाबसे निकलकर पूर्वी हिन्दुस्तानकी यात्रा करे, लेकिन् उसकी सेनाने, जो देशाटन और लड़ाईसे थकी हुई थी, उधर जाना स्वीकार न किया, इससे लाचार होकर उसको पीछा फिरना पड़ा; और उसने ठठा नगरमें आकर अपनी सेनाके तीन भाग किये, जिनमेंसे दो भाग अफ़्ग़ानिस्तान और बिलोचिस्तानकी तरफ़ और एक भाग जहाज़ी सेनापति नियार्कसके द्वारा सिन्धु नदीके मार्गसे रवानह किया. सिकन्दर अपने देशमें चले जानेके बाद भी हिन्दुस्तानकी तरफ़ आनेका इरादह रखता था, परन्तु ज्वरकी बीमारीसे वह १३ वर्ष राज्य करके ३२ वर्षकी अवस्थामें परलोकको सिधार गया.

अब हम बीचका हाल अंधेरेमें छोड़कर मुसल्मानोंकी उन चढ़ाइयोंका हाल लिखते हैं, जो हिन्दुस्तानपर हुईं.

हिन्दुस्तानकी तरफ़ पहिली चढ़ाई दूसरे ख़लीफ़ा उमरने की थी, लेकिन् उसे कोई बड़ी फ़त्ह नसीब नहीं हुई, और उसका सेनापति मारागया. उसके बाद ख़लीफ़ा अलीने फिर फ़ौज भेजकर सिन्धके किनारेवाले मुल्कपर अपनी कुछ अमल्दारी जमाई, लेकिन् अलीके मारेजानेसे मुसल्मान लोग उसको छोड़कर चलेगये. फिर ख़लीफ़ा वलीदने हिज्री ८६ [वि० ७६२ = ई० ७०५] में क़ासिमके बेटे महमूदको फ़ौज देकर हिन्दुस्तानकी तरफ़ रवानह किया. उसने सिन्ध देशको जीतकर चित्तौड़की तरफ़ अपनी सेना बढ़ाई, लेकिन् चित्तौड़के राजा बापारावलसे शिकस्त पाकर भागना पड़ा (१). इसके बाद ख़लीफ़ा हारूंरशीदके बेटे मामूंरशीदने फिर चित्तौड़पर चढ़ाई की. इतिहास तिमिरनाशक (२) में लिखा है, कि मामूंने राजा खुमाणसे २४ लड़ाइयां लड़ीं, लेकिन् अख़ीरमें शिकस्त पाकर भागगया. इसके बाद ख़ुरासानके हाकिम नासिरुद्दीन सुबुक्तगीनने हिन्दुस्तानमें आकर पंजाबपर चढ़ाई की, और सिन्धके कई क़िले फ़त्ह करके वापस लौटगया. यह सुनकर लाहौरके राजा जयपालको बड़ा क्रोध आया और वह हिन्दुस्तानके कई राजाओंकी मदद लेकर ख़ुरासानपर चढ़ दौड़ा, लेकिन् ईश्वरकी कुद्रतसे उसे वहां पहुंचकर परास्त होना पड़ा, और सुबुक्तगीनको ख़िराज देना क़बूल करके पीछा लाहौरमें आया; लेकिन् सुबुक्तगीनके जो लोग नज़ानह लेनेके लिये आये, उनको क़ैद करलिया,

---

(१) इस हालमें साल संवत्का फ़र्क़ मालूम होता है.

(२) टॉड राजस्थान वग़ैरह अंग्रेज़ी किताबोंमें भी ऐसा ही लिखा है.

और कुछ न भेजा, तब सुबुक्तगीनने फिर चढ़ाई की, और लमग़ानके पास राजा जयपालसे लड़ाई शुरू हुई. इस लड़ाईमें भी मुसलमानोंकी फ़त्ह हुई. सुबुक्तगीन लड़कर वापस अपने मुल्कको लौटगया. हिज्री ३८७ [वि० १०५४ = ई० ९९७] में सुबुक्तगीन बल्ख़के ज़िलेमें मरगया. इसवक्त उसके बेटोंमेंसे बड़ा महमूद नेशापुरकी तरफ़ था, इसलिये उससे छोटा इस्माईल बल्ख़में अपने बापकी गद्दीपर बैठा, और इस्माईलसे छोटा नसीरुद्दीन महमूदका मददगार बना. महमूदने अपनी इताअत क़बूल करानेके लिये काग़ज़के ज़रीएसे इस्माईलको बहुत समझाया, लेकिन् उसपर कुछ असर नहुआ. आख़िर-कार महमूदने लड़ाई करके अपने भाईको क़ैद करलिया, जो जुज़ानके क़िलेमें मरगया, और आप ग़ज़नीका बादशाह बना. उन दिनों ख़िलाफ़त क़ादिरबिल्लाह अब्बासीका ज़मानह था, उसने भी इसको ज़बर्दस्त जानकर एक बड़ा भारी ख़िल्अ़त मए अल्क़ाब " यमीनुल् मिल्लत यमीनुद्दौलह " के भेजदिया.

हिज्री ३९० के अख़ीर ज़िल्क़ाद [वि० १०५७ मार्गशीर्ष शुक्ल १ = ई० १००० ता० ३१ ऑक्टोबर] को महमूद बल्ख़से हिरात और वहांसे सीस्तान होता हुआ ग़ज़नीको आया. उसी ज़मानहमें उसने हिन्दुस्तानकी तरफ़ चढ़ाई करनेका इरादह किया और सिन्ध पारके ज़िलोंमें लूट खसोट करके पीछा लौटगया.

दूसरी दफ़ा वह हिज्री ३९१ शव्वाल [वि० १०५८ भाद्रपद = ई० १००१ सेप्टेम्बर] में १०००० सवार लेकर हिन्दुस्तानको चला और पिशावरमें आ पहुंचा. इधरसे लाहौरका राजा जयपाल भी १२००० सवार, ३०००० पैदल और ३०० हाथी लेकर मुक़ाबलेको तय्यार हुआ. हिज्री ३९२ ता० ८ मुहर्रम [वि० १०५८ मार्गशीर्ष शुक्ल ९ = ई० १००१ ता० २७ नोवेम्बर] सोमवारको दोनों फ़ौजोंका मुक़ाबलह हुआ. बहादुरीके साथ ख़ूब लड़ाई होनेके बाद महमूदने फ़त्ह पाकर जयपालको मए उसके भाई बेटोंके क़ैद करलिया, बहुतसी हिन्दुस्तानी रिआयाको लौंडी गुलाम बनाया और दूसरी लूटके सिवा कई जड़ाऊ माला राजाके कुटुम्बियोंसे महमूदके हाथ लगीं, जिनमेंसे एक मालाकी क़ीमत १८०००० दीनार (१) थी. और वहांसे चलकर क़िले भटिंडाको फ़त्ह किया. फिर सालियानह ख़िराज देते रहनेकी शर्तपर राजा जयपाल और उसके रिश्तेदारोंको छोड़कर आप ग़ज़नीको चलागया. राजा जयपाल इस शर्मिन्दगीसे अपने बेटे आनन्दपालको राज्य सौंपकर आप अग्निमें जलमरा.

तीसरी दफ़ा हिज्री ३९५ [वि० १०६२ = ई० १००५] में वह भटनेरपर

(१) यह सिक्का तोलमें ३२ रत्ती सोने का होता है.

चढ़ा, जहांका राजा विजयराज (१) था, वहां भी फ़त्ह हासिल की, जिससे विजयराज अपनेको खंजर मारकर मरगया.

चौथी दफ़ा उसने मुल्तानके मुसल्मान हाकिम अबुल्फ़त्हपर चढ़ाई की, और रास्तेमें आनन्दपालको हटानेके बाद अबुल्फ़त्हको भगाकर उसका मुल्क छीनलिया.

पांचवीं दफ़ा महमूदने नवासाशाह (२) पर चढ़ाई की, और फ़त्ह पाई.

छठी दफ़ा क़िले भीमनगरपर चढ़ दौड़ा, और आनन्दपालके बेटे ब्रह्मपालको फ़त्ह करके क़िला लेलिया, यहांपर उसको बेशुमार ख़ज़ानह हाथ लगा.

सातवीं दफ़ा उसने हिन्दके राजा नारायणपर फ़त्ह पाकर उसे अपना मातह्त बनाया.

आठवीं दफ़ा हिज्री ४०४ [वि० १०७० = ई० १०१३] में नारदीनपर चढ़ाई की, लेकिन् बर्फ़की शिद्दतसे पीछा ग़ज़नीको लौटना पड़ा, और बर्फ़ कम होनेपर फिर हमलह करके उस मुल्कको लेलिया; लेकिन् एक बात तारीख़ यमीनीमें तअ़ज्जुबकी यह लिखी है, कि वहांके मन्दिरोंमेंसे एक पत्थर खुदा हुआ मिला, जिसका संवत् देखने से वह ४०००० वर्ष पहिलेका साबित हुआ.

नवीं दफ़ा महमूदने थानेसरपर हमलह किया, और वहांपर भी फ़त्ह पाई.

दसवीं दफ़ा हिज्री ४०९ [वि० १०७५ = ई० १०१८] में उसने क़न्नौज पर चढ़ाई की, और रास्तेमें कई राजा लोगोंके क़िले फ़त्ह करता हुआ मथुरामें पहुंचा, वहांके कई मन्दिरोंको नष्ट करके बेशुमार ख़ज़ानह लूटा, और वहांसे क़न्नौजके राजा राजपालपर फ़त्ह पाकर कई दूसरे क़िलोंको जीतता हुआ ग़ज़नीको लौटगया. इस सफ़रमें यमीनी वग़ैरह तवारीख़ वालोंने बड़े बड़े मारिके और बेशुमार लूटके मालका हाल लिखा है.

ग्यारहवीं दफ़ा उसने राजा बरोचारपर हमलह किया, और फ़त्ह पाई. यह मारिका हिज्री ४१० [वि० १०७६ = ई० १०१९] में हुआ था.

यहांतकका हाल हमने तारीख़ यमीनीसे दर्ज किया है, जो महमूदकी ज़िन्दगीमें बनी थी. अब आगे तबक़ाति नासिरी व तबक़ाति अक्बरी वग़ैरहसे दर्ज करते हैं.

---

(१) तारीख़ यमीनीमें इस शहरका नाम भाटिया और राजाका नाम बछरा व बजरा लिखा है, और तारीख़ फ़िरिश्तह वग़ैरह पिछली किताबोंमें शहर भटनेर और राजा विजयराव लिखा है, और जयसल्मेरकी तवारीख़में विजयराजके बेटे देवराजका क़िले देवरावलको अपनी राजधानी बनाना लिखा है, पहिली राजधानी लोद्रवा था, और भटनेरमें भी रहते होंगे.

(२) मालूम होता है, कि यह कोई हिन्दुस्तानी राजा था, जिसको मुसल्मान बनाकर महमूदने इस मुल्कका हाकिम बनाया, फिर यह बदलगया, तब उसपर चढ़ाई की होगी.

राजा बरोचारको शिकस्त देनेके बाद महमूदने राजा नंदापर हमलह किया, और उसपर फ़त्ह पाई.

बारहवीं दफ़ा वह कश्मीरकी तरफ़ चला, लेकिन् लोकूटका क़िला मज़्बूत होनेके सबब उसे फ़त्ह न करसका, तब दूसरे मुल्कोंको लूटता हुआ वापस ग़ज़्नीको चलागया.

तेरहवीं दफ़ा वह हिज्री ४१३ [वि० १०७९ = ई० १०२२] में क़िले ग्वालियरको फ़त्ह करके कालिंजरके राजा नंदासे नज़ानह लेकर वापस चलागया.

चौदहवीं दफ़ा हिज्री ४१५ [वि० १०८१ = ई० १०२४] में उसने गुजरातकी तरफ़ चढ़ाई की, और सोमनाथके बड़े प्रसिद्ध मन्दिरको आघेरा. इसवक़्त कई राजाओंने मुक़ाबलह किया, लेकिन् उसने सबको शिकस्त देकर मन्दिरको लूटलिया, और महादेव की मूर्तिको तोड़कर उसका एक टुकड़ा ग़ज़्नीको लेगया, जिसे मस्जिदमें लगवाया.

पन्द्रहवीं दफ़ा हिज्री ४१७ [वि० १०८३ = ई० १०२६] में उसने मुल्तान के जाटोंपर चढ़ाई की, जिन्होंने सोमनाथकी चढ़ाईसे लौटते वक़्त रास्तेमें इसकी फ़ौजको तक्लीफ़ दी थी, और इन लोगोंको शिकस्त देकर वह ग़ज़्नीको चलागया.

महमूदका जन्म हिज्री ३७१ ता० १० मुहर्रम बृहस्पतिवार [वि० १०२८ श्रावण शुक्ल ११ = ई० ९७१ ता० १५ जुलाई] को हुआ था, और तपेदिक़की बीमारीसे वह हिज्री ४२१ ता० २३ रबीउस्सानी [वि० १०८७ ज्येष्ठ कृष्ण ९ = ई० १०३० ता० २८ एप्रिल] बृहस्पतिवारको मरगया.

हमने बहुतेरा चाहा, कि महमूदका हाल हिन्दुस्तानी पुस्तकोंसे लिखाजावे, लेकिन् इसका ज़िक्र कहीं नहीं मिला, क्योंकि हिन्दुस्तानमें पहिले तवारीख़ लिखनेका क़ाइदह नहीं था, और फ़ार्सी तवारीख़ोंमें इसका हाल मुफ़स्सल तौरपर लिखा है, इसलिये तारीख़ यमीनी, और तबक़ाति नासिरी वग़ैरह पुरानी किताबोंसे चुनकर यह हाल दर्ज कियागया है. अगर्चि ये किताबें भी रिआयत और तअस्सुबसे ख़ाली नहीं हैं, क्योंकि महमूदके हिन्दुस्तानमें इतने हमले हुए, परन्तु उनमेंसे किसीमें भी उसकी शिकस्त नहीं लिखी, जो एक असम्भव बात है; मगर दूसरा सहारा न मिलनेके सबब जहांसे जैसा हाल मिला वैसा ही लिखदिया गया.

इसके बाद सुल्तान नासिरुद्दीन मसऊदने अपने भाई जलालुद्दौलह मुहम्मदको गिरिफ़्तार करके अंधा बनाया, और आप गद्दीपर बैठगया. इसने भी हिन्दुस्तानपर कई हमले किये, जिनका सिल्सिलेवार हाल तारीख़ मसऊदीमें लिखा है. आख़िरकार हिज्री ४३२ ता० ११ जमादियुल्अव्वल [वि० १०९७ माघ शुक्ल १२ = ई० १०४१ ता० १६ जैन्युअरी] को वह अपने बाग़ी सर्दारोंके हाथ क़ैद होकर मारागया, और उसका

अंधा भाई जलालुद्दौलह मुहम्मद तरूतपर बिठाया गया, लेकिन् मसऊदके बेटे मौदूदने जलालुद्दौलहको मए बालबच्चोंके मारडाला, और खुद भी हिज्री ४४१ [वि० ११०६ = .ई० १०४९] में फ़ौत होगया, तब तुर्कोंने मसऊदके बेटे अली और मौदूदके बेटे मुहम्मद दोनों चचा भतीजोंको गद्दीपर बिठादिया, लेकिन् दो महीनेके बाद इन दोनोंको क़िलेमें क़ैद करके महमूदके बेटे अब्दुर्रशीदको बादशाह बनाया, परन्तु अढ़ाई वर्षके बाद उसके बापके गुलाम तुग़रलने बाग़ी होकर उसको मारडाला, और ४० दिन बाद तुग़रलको भी नोश्तगीन नामी तुर्कने मारडाला, तब मसऊदके बेटे फ़र्रुख़ज़ादको सर्दारोंने तरूतपर बिठाया, जो हिज्री ४५१ [वि० १११६ = .ई० १०५९] में मरगया, और उसका भाई इब्राहीम गद्दीपर बिठाया गया. हिज्री ४९२ [वि० ११५६ = .ई० १०९९] में इब्राहीमके मरनेपर उसका बेटा अलाउद्दीन मसऊद तरूत नशीन हुआ, और हिज्री ५०९ [वि० ११७२ = .ई० १११५] में जब वह फ़ौत होगया, तो उसके बाद उसका बेटा मलिक अर्सलाम बादशाह हुआ, जो दो वर्षतक सल्तनत करके हिन्दुस्तानमें भाग आया, और हिज्री ५११ [वि० ११७४ = .ई० १११७] में मरा. मलिक अर्सलामके बाद उसका भाई बहरामशाह गद्दीपर बैठा, जिसने अलाउद्दीन ग़ौरीसे तीन बार शिकस्त पाई, और अख़ीरमें जब ग़ज़नीको ग़ौरियोंने लेलिया, तो यह हिन्दुस्तानको भाग आया, और ग़ौरियोंके निकलजाने बाद वापस ग़ज़नीको जाकर हिज्री ५४७ [वि० १२०९ = .ई० ११५२] में मरगया. फिर इसका बेटा खुस्रौशाह गद्दीपर बैठा; ग़ौरियोंने उसकी सल्तनत बिगाड़ रक्खी थी, और उसके कई मुल्क लेलिये थे, इस सबबसे यह अपने मुल्कका पूरा बन्दोबस्त न करसका, और खुरासानके ग़ज़ोंने चढ़ाई करके ग़ज़नीको छीनलिया, तब यह हिन्दुस्तानमें चलाआया. बारह वर्ष पीछे ग़यासुद्दीन मुहम्मद शाम ग़ौरीने ग़ज़ोंसे ग़ज़नीका मुल्क छीनलिया, और अपने भाई सुल्तान मुइज़्ज़ुद्दीन मुहम्मद शाम ग़ौरीको, जो शहाबुद्दीनके नामसे भी प्रसिद्ध था, तरूतपर बिठाया.

खुस्रौशाह हिज्री ५५५ [वि० १२१७ = .ई० ११६०] में लाहौर मक़ामपर मरा, और उसका बेटा खुस्रौ मलिक लाहौरमें उसकी जगह गद्दीपर बैठा, लेकिन् यह बहुत अय्याश था, इसलिये शहाबुद्दीन ग़ौरीने इसे ग़रजिस्तानके क़िले लरवानमें क़ैद करके मए बेटेके हिज्री ५९८ [वि० १२५९ = .ई० १२०२] में क़त्ल करडाला, और उसीके साथ ग़ज़नवी ख़ानदानका ख़ातिमह हुआ.

ग़यासुद्दीन और शहाबुद्दीन (मुइज़्ज़ुद्दीन) दोनों बहाउद्दीन मुहम्मदशाहके बेटे ग़ौरके .इलाक़ह फ़ीरोज़कोहके मालिक थे, हिज्री ५६९ [वि० १२३० = .ई० ११७३] में ग़यासुद्दीनने ग़ज़ोंको निकालकर ग़ज़नीका मुल्क फ़त्ह करलिया, और अपने छोटे

भाई शहाबुद्दीनको तख़्तपर बिठाकर आप फ़ीरोज़कोहको लौटगया. शहाबुद्दीनने पहिले ग़ज़नीके आसपास मुल्कोंका बन्दोबस्त करके हिज्री ५७० [वि० १२३१ = ई० ११७४] में कुर्देज़का मुल्क फ़त्ह किया. हिज्री ५७१ [वि० १२३२ = ई० ११७५] में उसने मुल्तानपर चढ़ाई करके करामितहसे मुल्क छुड़ालिया और इसी वर्षमें सनक़रान वालोंने सर्कशी की, जिनके साथ हिज्री ५७२ [वि० १२३३ = ई० ११७६] तक लड़कर उनपर फ़त्ह पाई. फिर हिज्री ५७४ [वि० १२३५ = ई० ११७८] में मुल्तानको फ़त्ह करता हुआ नेहरवालेतक पहुंचा. वहांके राजा भीमदेव सोलंखीसे मुक़ाबलह हुआ, जिसमें शहाबुद्दीनको शिकस्त खाकर भागना पड़ा. हिज्री ५७५ [वि० १२३६ = ई० ११७९] में उसने फिर चढ़ाई करके पिशावरको फ़त्ह किया; हिज्री ५८० [वि० १२४१ = ई० ११८४] में देवलकी तरफ़ चढ़ाई की, जिसमें समुद्रके किनारेका मुल्क अपने क़बज़हमें लाकर इसी सन्में सियालकोटका क़िला बनवाया; हिज्री ५८२ [वि० १२४३ = ई० ११८६] में खुस्रौमलिकको गिरिफ़्तार करके लाहौरपर क़बज़ह किया, और अली क़िर्माख़को वहांका हाकिम बनाया. फिर क़िला सरहिन्द् फ़त्ह करके क़ाज़ी तोलकको सौंपा. इसी अरसहमें राजा कोला पिथोरा (पृथ्वीराज चहुवान) बहुतसे हिन्दुस्तानी राजाओंकी भीड़भाड़ लेकर आपहुंचा. शहाबुद्दीन गौरीने भी ग़ज़नीकी तरफ़ लौटना मौक़ूफ़ रखकर मुक़ाबलह किया; तरायनके पास लड़ाई शुरू हुई. शहाबुद्दीन बर्छा लेकर चला, और दिल्लीके राजा गोविन्दरायपर, जो हाथीपर सवार था, चलाया, जिसकी चोटसे राजाके दो दांत गिरपड़े, और उसने भी सुल्तानपर बर्छेका वार किया, जिससे बादशाहके बाज़ूपर सख़्त चोट आई. वह घोड़ेसे गिरनेको था, कि इतनेमें एक ख़िल्जी सिपाहीने बादशाहके घोड़ेपर सवार होकर बादशाहको संभाललिया, और घोड़ेको मोड़कर लेनिकला. इस लड़ाईमें शहाबुद्दीनको शिकस्त और राजा पृथ्वीराज चहुवानको फ़त्ह नसीब हुई. १३ महीनेतक क़ाज़ी तोलक सरहिन्द्के क़िलेमें राजा पृथ्वीराजकी फ़ौजसे लड़तारहा, लेकिन् अख़ीरमें राजाने क़िलेको फ़त्ह करलिया. इसी अरसहमें १२०००० जंगी सवार लेकर शहाबुद्दीन तरायन (तलावड़ी) के क़रीब आपहुंचा, जहां तर्फ़ैनमें बड़ी भारी लड़ाई हुई, और दस दस हज़ार सवारोंके गिरोह बांधकर चारों तरफ़से लड़ने लगे, जिसमें राजा पृथ्वीराज सरस्वतीके किनारेपर मारागया, और दिल्लीका राजा गोविन्दराय भी काम आया. हमने यह कुल हाल तबक़ाति नासिरीसे लिया है, जो इस लड़ाईके ७० वर्ष पीछे बनाई गई थी, और जिसका बनाने वाला लिखता है, कि जो लोग लड़ाईमें शामिल थे उनके ज़बानी हालात सुनकर हमने यह लिखा है. पृथ्वीराजकी राजधानी अजमेर, सवालक,

हांसी, सरस्वती वगैरहको शहाबुद्दीनने फ़त्ह करलिया. यह लड़ाई हिज्री ५८८ [वि० १२४९ = ई० ११९२] में हुई थी. इसके बाद सुल्तान शहाबुद्दीन क़िले कुहरामपर अपने सर्दार क़ुतुबुद्दीन ऐबक (१) को मुक़र्रर करके आप ग़ज़नीको लौटगया, और क़ुतुबुद्दीनने दिल्ली, कोयल, व मेरट, वगैरह मक़ामात फ़त्ह करलिये. सुल्तान शहाबुद्दीन हिज्री ५९० [वि० १२५१ = ई० ११९४] में फिर हिन्दुस्तानकी तरफ़ चला, जहां उसने बनारस, चन्दवाल और क़न्नौजको फ़त्ह करके राजा जयचन्द राठौड़को शिकस्त दी, और ३०० हाथी और बहुतसा माल लेकर ग़ज़नीको लौटगया. आख़रकार हिज्री ६०२ ता० १ शअ्बान [वि० १२६३ चैत्र शुक्ल २ = ई० १२०६ ता० १३ मार्च] को शहाबुद्दीन ग़ज़नीके इलाक़ह दमयकमें खक्खरोंके हाथसे मारागया. इसके बाद क़ुतुबुद्दीन ऐबक, जो शहाबुद्दीन ग़ोरीका ग़ुलाम था, हिन्दुस्तानका पहिला मुसल्मान बादशाह बना. शहाबुद्दीनके गुज़रजाने बाद ग़यासुद्दीनके बेटे ग़यासुद्दीन महमूदने फ़ीरोज़कोहसे क़ुतुबुद्दीन ऐबकके लिये बादशाहतका लवाज़िमह और सुल्तानका ख़िताब भेजदिया, और हिज्री ६०२ ता० १८ ज़िल्क़ाद [वि० १२६३ श्रावण कृष्ण ५ = ई० १२०६ ता० २७ जून] को वह लाहौरमें तख़्तपर बैठकर ४ साल बादशाहत करनेके बाद हिज्री ६०७ [वि० १२६७ = ई० १२१०] में गेंद खेलते वक्त घोड़ेसे गिरकर मरगया.

क़ुतुबुद्दीनके गुज़रजानेपर अमीरों और सर्दारोंने उसके बेटे आरामशाहको लाहौर में तख़्तपर बिठाया, लेकिन् वह एक साल भी सल्तनत न करने पाया था, कि उसके अमीर अली इस्माईलने कई अमीरोंको मिलाकर क़ुतुबुद्दीनके दामाद शम्सुद्दीन अल्तिमशको बदायूंसे बुलाकर दिल्लीमें तख़्तपर बिठादिया, और आरामशाह शिकस्त खाकर भाग गया. अल्तिमशने हिज्री ६०७ [वि० १२६७ = ई० १२१०] में दिल्लीके तख़्तपर बैठकर "सुल्तान शम्सुद्दीन" अपना लक़ब रक्खा. इसके वक्तमें ताजुद्दीन यल्दोज़ (२) लाहौरमें आकर क़ाबिज़ होगया. शम्सुद्दीनने हिज्री ६१२ [वि० १२७२ = ई० १२१५] में उसको शिकस्त देकर क़ैद करलिया, और बदायूंके क़िलेमें भेजदिया. हिज्री ६२२ [वि० १२८२ = ई० १२२५] में वह लखनौती और बिहारकी तरफ़ लश्कर लेगया. वहां सुल्तान ग़यास ख़िल्जी मुख़्तार बन बैठा था, उसको शिकस्त देकर वह मुल्क अपने बेटे नासिरुद्दीनके सुपुर्द किया, और हिज्री ६२३ [वि० १२८३ = ई० १२२६] में रणथम्भोर, और हिज्री ६२४ [वि० १२८४ = ई० १२२७] में क़िला मांडू फ़त्ह करके दिल्लीको

---

(१) इसकी एक हाथकी चट्टी अंगुली टूटी हुई थी, और ऐसे आदमीको लोग ऐबक बोलते हैं, इससे इसका लक़ब ऐबक हुआ.

(२) यह क़ुतुबुद्दीनके ग़ुलामोंमेंसे अव्वल था और ग़ज़नीके तख़्तपर भी बैठगया था.

लौट आया, और हिज्री ६२७ [वि० १२८७ = ई० १२३०] में इसका बड़ा बेटा नासिरुद्दीन मरगया, तब उसने अपने छोटे बेटेका नाम नासिरुद्दीन रक्खा, जिसके बादशाह होने बाद तबक़ाति नासिरी नामी किताब बनी है, और हिज्री ६२९ [वि० १२८९ = ई० १२३२] में ग्वालियरपर एक वर्षतक घेरा डालकर हिज्री ६३० [वि० १२९० = ई० १२३३] में उसे फ़त्ह किया. हिज्री ६३१ [वि० १२९१ = ई० १२३४] में मालवेपर चढ़ाई करके क़िला भेल्सा और शहर उज्जैनपर क़ब्ज़ह किया, और महाकालके मन्दिरको तोड़ा, जिसके तय्यार होनेमें ३०० वर्ष लगे थे. आख़िरकार हिज्री ६३३ ता० २० शश्रबान [वि० १२९३ ज्येष्ठ कृष्ण ६ = ई० १२३६ ता० २९ एप्रिल] को यह बादशाह फ़ौत होगया. इसी सालमें उसका बेटा रुक्नुद्दीन फ़ीरोज़शाह तख़्तपर बैठा, लेकिन् वह ऐय्याश, ग़ाफ़िल और बद्चलन था, इसलिये ६ महीने ही न गुज़रे थे, कि जब वह पंजाबकी तरफ़ गया, तो पीछेसे सर्दारोंने उसकी बहिन रज़िया बेगमको तख़्त पर बिठादिया. रुक्नुद्दीन लौट आया, और रज़िया बेगमकी फ़ौजसे केलूगढ़ीके पास लड़ाई हुई. वह शिकस्त खाकर अपनी बहिनका क़ैदी बना, और उसी हालतमें मरगया. यह बेगम हिज्री ६३५ [वि० १२९४ = ई० १२३७] में तख़्तपर बैठी. यह बहुत होश्यार, अक्लमन्द, और नेकचलन थी. इसके बाप (शम्सुद्दीन अल्तिमश) ने भी अपने बाद इसी लड़कीको तख़्तपर बिठानेकी वसिय्यत की थी. इसने नये आईन व क़ानून बनाकर इन्साफ़से काम लिया, विरोधियोंको सज़ा दी, और रणथम्भोरके क़िलेमें जो मुसल्मान हिन्दू राजाकी क़ैदमें थे उनको छुड़ाया, लेकिन् क़िला राजपूतोंके क़ब्ज़हसे न निकला. यह औरत मर्दानह लिबास पहिनकर आम लोगोंके [illegible] तख़्तपर बैठती थी. हिज्री ६३७ [वि० १२९६ = ई० १२३९] में इसने [illegible] पर चढ़ाई की, उसवक्त तुर्क अमीरोंने रास्तेमें बग़ावत करके उसे क़ैद करलिया, और सुल्तान शम्सुद्दीनके बेटे मुइज़ुद्दीन बहरामशाहको बादशाह बनाकर दिल्लीके तख़्तपर बिठादिया. इस बेगमने दो दफ़ा दिल्लीपर चढ़ाई की, लेकिन् दोनों बार शिकस्त पाई. मुइज़ुद्दीन बहरामशाह हिज्री ६३७ ता० २८ रमज़ान [वि० १२९७ द्वितीय वैशाख कृष्ण १४ = ई० १२४० ता० २३ एप्रिल] को दिल्लीमें तख़्तपर बैठा (१), जिसको आख़िरमें उसीके वज़ीर निज़ामुल्मुल्कने अमीरोंको मिलाकर हिज्री ६३९ ता० ६ ज़िल्क़ाद [वि० १२९९ ज्येष्ठ शुक्ल ७ = ई० १२४२ ता० ७ मई] के दिन क़ैद करके मारडाला, और सुल्तान शम्सुद्दीनके बेटे पोते जो क़ैद थे, उनको छोड़कर उनमेंसे सुल्तान रुक्नुद्दीनके बेटे सुल्तान अलाउद्दीन

(१) इसके वक्तमें हिज्री ६३९ [वि० १२९९ = ई० १२४२] में चंगेज़ख़ानी मुग़लोंने लाहौरमें आकर लूटमार मचाई.

मसऊदशाहको तख़्तपर बिठाया (१), जिसको अख़ीरमें उसीके सर्दारोंने क़ैद करके शम्सुद्दीनके बेटे नासिरुद्दीन मह्मूदको हिज्री ६४४ [वि० १३०३ = ई० १२४६] में उसकी जगह तख़्तपर बिठादिया, और अलाउद्दीन क़ैदकी हालतमें मरगया. इसने मलिक ग़यासुद्दीन बल्बनको अपना वज़ीर बनाया, जो इसके बापका दामाद और ग़ुलाम था. इसने हिज्री ६४६ [वि० १३०५ = ई० १२४८] में रणथम्भोरपर चढ़ाई की, और वहांके राजपूतोंको धमकाकर पीछा चला आया. हिज्री ६४९ [वि० १३०८ = ई० १२५१] में ग्वालियर, चंदेरी, और मालवाकी तरफ़ उसने चढ़ाई की और उधर राजपूतोंको शिकस्त देकर क़िला नरवर लेता हुआ पीछा दिल्लीको आगया. इस बाद-शाहकी तारीफ़ तवारीख़ोंमें बहुत कुछ लिखी है. यह क़ुर्आन लिखकर उसीकी आमदनीसे अपना गुज़ारा करता था, और एक ही बीबी रखता था, जो ख़ुद अपने हाथसे उसे खाना पकाकर खिलाती थी. आख़रकार यह बादशाह हिज्री ६६४ ता० ११ जमादियुल्अव्वल [वि० १३२२ फाल्गुन शुक्ल १२ = ई० १२६६ ता० १९ फ़ेब्रुअरी] को बीमारीसे मरगया. नासिरुद्दीनके कोई औलाद न थी, इसलिये इसके वज़ीर ग़यासुद्दीन बल्बनको सर्दारोंने मिलकर तख़्तपर बिठाया. यह शख़्स नेक आदत और अच्छा इन्तिज़ाम करने वाला था. इस के दो बेटे थे, बड़ा महमूद सुल्तान, जो चंगेज़ख़ानी मुग़लोंके हमलोंमें लाहौरके पास हिज्री ६८३ ता० ३ ज़िल्हिज [वि० १३४१ फाल्गुन शुक्ल ४ = ई० १२८५ ता० १० फ़ेब्रुअरी] को मारागया, और दूसरा बग़राख़ां, जो लखनौतीका हाकिम बना. जब ग़यासुद्दीनकी उम्र ८० बरससे ज़ियादह होगई तो उसने ज़ईफ़ीकी हालतमें अपने बड़े बेटेका बहुत रंज किया और बग़ [illegible] दिल्लीमें बुलाया, लेकिन् वह अपने बापको बीमार छोड़कर पीछा लखनौतीकी तरफ़ चला [illegible] पीछेसे हिज्री ६८५ [वि० १३४३ = ई० १२८६] में बादशाह मरगया, तब उसके सर्दारोंने बग़राख़ांके बेटे कैकुबादको तख़्तपर बिठाया, जो उसवक़्त १८ वर्षका था, और उसका नाम "मुइज़्ज़ुद्दीन कैकुबाद" रक्खा. यह लड़कपनकी उम्रके सबब बड़ा बदचलन होगया. इसने केलूखेड़ीमें एक बड़ा बाग़ और महल बनाया, और बहुतसी रंडियां और गवय्ये रक्खे. इसने महमूद सुल्तानके बेटे कैख़ुस्रोको भी मरवा-डाला. आख़रकार तीन वर्ष और कई महीने सल्तनत करके लक़्वा (फ़ालिज) की बीमारीमें गिरिफ़्तार हुआ; उसी हालतमें उसका सर्दार जलालुद्दीन ख़िल्जी हिज्री ६८८

(१) इसके वक़्में हिज्री ६४२ [वि० १३०१ = ई० १२४४] में चंगेज़ख़ानी मुग़ल लखनौती तक आये थे, लेकिन् इसके लश्करसे शिकस्त खाकर चले गये. मालूम होता है, कि वे लोग तिब्बतकी तरफ़से आये होंगे. दूसरी दफ़ा फिर मुग़लोंने उझेलेकी तरफ़ आकर उसका मुहासरह किया, और बादशाहने ख़ुद जाकर उन्हें शिकस्त दी.

[वि० १३४६ = ई० १२८९] में (१) उसको मरवाकर आप तख्तपर बैठगया. यहांसे गुलामोंकी बादशाहतका खातिमह हुआ और कुछ अरसहतक खिल्जियोंका इक़्बाल चमका. जलालुद्दीनको भी उसके भतीजे और दामाद अलाउद्दीन खिल्जीने हिज्री ६९५ ता० १७ रमज़ान [वि० १३५३ भाद्रपद कृष्ण ४ = ई० १२९६ ता० २० जुलाई] को दग़ासे मारडाला, और अलाउद्दीन आप तख्तपर बैठगया. उसका पूरा लक़ब "सिकन्दर सानी सुल्तान आज़म अलाउद्दीन मुहम्मदशाह खिल्जी" हुआ. पहिले इसने हिज्री ६९७ [वि० १३५५ = ई० १२९८] में गुजरातको फ़त्ह किया और सोमनाथकी मूर्त्ति जो महमूदके बाद नई स्थापन कीगई थी, उसको दिल्लीमें लाकर ज़मीनमें गड़वादिया. इसने हिज्री ६९९ [वि० १३५७ = ई० १३००] में रणथम्भोरके राजा हमीरदेव चहुवानपर चढ़ाई की, और बहाना यह था, कि मीरमुहम्मदशाह वग़ैरह लोग जालौरसे भागकर रणथम्भोरमें हमीरदेवके पास आ रहे हैं, जो बादशाहके विरोधी थे. फ़िरिश्तह लिखता है, कि बाज़ लोगोंने एक वर्षमें और बाज़ने तीन वर्षके मुहासरेमें इस क़िलेका फ़त्ह होना बयान किया है. इस लड़ाईकी बाबत ऐसा मश्हूर है, कि जब अलाउद्दीनने क़िलेका मुहासरह किया उस समय राजपूतोंने क़िलेके भीतरसे निकल निकलकर कई हमले किये; और आख़रको हमीरदेवने यह सोचा, कि अब ऐसा हमलह कियाजावे, कि जिसमें या तो मुसल्मानोंपर फ़त्ह हासिल हो या हम लोग मर मिटें. यह विचार दृढ़ करके क़िलेके भीतर बारूद बिछाकर उसके ऊपर एक लम्बा चौड़ा फ़र्श बिछादिया, जिसपर क़िलेकी कुल औरतें बिठादी गईं और अपनी तरफ़ वाले लोगोंको समझादिया, कि अगर अपनी फ़त्ह हुई, तो पचरंगी निशानकी झंडियां आगे होंगी और मुसल्मानोंकी हुई तो नीली झंडियां आगेको दिखाई देंगी; यदि नीली झंडियां आगेको दिखाई देवें तो बारूदमें आग डाल देना. ईश्वरकी कुद्रतसे इस बड़े भारी हमलहमें हमीरदेवकी फ़त्ह हुई और राजपूत लोग पीछे क़िलेकी तरफ़ लौटे, उसवक़्त ग़लतीसे मुसल्मानोंसे छीनी हुई नीली झंडियां आगे करदी गईं, जिनको देखकर क़िलेके लोगोंने बारूदमें आग डालदी. जिससे क़िलेकी कुल औरतें जल मरीं. हमीरदेवने यह देखकर अपना जीना भी बे फ़ायदह समझा, और दोबारह अलाउद्दीनकी फ़ौजपर टूट पड़ा. उसवक़्त किसी कविने एक दोहा कहा था, जिसके दो मिस्रे इस तरहपर मश्हूर हैं- "तरियां तैल हमीर हट चढ़ै न बीजी वार". मुसल्मानोंने

---

(१) ज़ियावरनीकी फ़ीरोज़शाही किताबके पृष्ठ १७५ के नोटमें अमीर खुस्रौकी किताब मस्नवी मिफ्ताहुल् फ़ुतूहका हवाला देकर इसका सन् हिज्री ६८९ ता० ३ जमादियुस्सानी लिखा है.

भी बड़ी मज़्बूती और बहादुरीके साथ हमीरदेवका मुक़ाबलह किया, और अख़ीरमें हमीरदेवके मारे जानेपर अ़लाउद्दीनको फ़त्ह नसीब हुई.

तारीख़ फ़िरिश्तहमें लिखा है, कि जब मीर मुहम्मदशाह जालौरी ज़ख़्मी होनेपर अ़लाउद्दीनके पास लायागया, तो बादशाहने उसे पूछा, कि अगर इलाज मुआ़लजा करके तुझको अच्छा करें, तो तू हमारे साथ क्या सुलूक करे ? उसने जवाब दिया, कि अगर मैं ज़िन्दह रहूं, तो तुझे मारकर हमीरदेवके बेटेको गद्दीपर बिठाऊं. बादशाहने इस कलामसे गुस्सेमें आकर उसे हाथीके पैरसे मरवाडाला. रणथम्भोरको फ़त्ह करके अ़लाउद्दीन दिल्लीको चलाआया.

हिज्री ७०३ मुहर्रम [वि० १३६० भाद्रपद = ई० १३०३ ऑगस्ट] में उसने क़िले चित्तौड़पर चढ़ाई की, जिसमें वहांके रावल रत्नसिंहने उसका ख़ूब मुक़ाबलह किया. लड़ाईसे यह क़िला बादशाहके हाथ न आया, लेकिन् सामानकी कमीके सबब जब राजपूत लोग दर्वाज़ह खोलकर बहादुरीके साथ लड़मरे, और हज़ारहा स्त्रियां आगमें जलमरीं उस समय ख़ाली क़िला अ़लाउद्दीनके क़ब्ज़हमें आया. इस लड़ाईका मुफ़स्सल हाल मौक़ेपर लिखा जायेगा.

हिज्री ७०४ [वि० १३६२ = ई० १३०५] में अ़लाउद्दीनने अपने सेनापति ऐनुल्मुल्क मुल्तानीको बड़ी भारी फ़ौजके साथ मालवेकी तरफ़ भेजा, और उसने वहां जाकर उज्जैन, चन्देरी, मांडू, धारा, और जालौर वग़ैरहको फ़त्ह किया. इस बादशाहने अपने अ़हदमें हिन्दुओंके हज़ारों मन्दिरोंको तोड़ने और लाखों आदमियोंको क़त्ल करनेके अ़लावह ख़ज़ानह भी बहुतसा एकठ्ठा किया, और हिज्री ७१६ ता० ६ शव्वाल [वि० १३७३ पौष शुक्ल ७ = ई० १३१६ ता० २१ डिसेम्बर] को जलंधरकी बीमारीसे मरगया.

अ़लाउद्दीनके बाद उसके नौकर मलिक नायक ख़ोजाने, जो अ़लाउद्दीनके सामने ही कुल कामका मुख़्तार बनगया था, और जिसने बादशाहके बड़े बेटे ख़िज़्रख़ांको पहिले ही क़ैद करके ग्वालियरके क़िलेमें भेजदिया था, इसवक़ उसको अंधा बनाकर अ़लाउद्दीनके ७ वर्षकी उ़म्र वाले छोटे बेटे शहाबुद्दीन उ़मरको गद्दीपर बिठा दिया, और आप कुल कामका मुख़्तार बना. क़रीब तीन महीनेके बाद वहांके अमीरोंने मलिक ख़ोजाको मारकर उस लड़के बादशाहको अंधा करवा डाला, और क़ैद करके क़िले ग्वालियरमें भेजनेके बाद अ़लाउद्दीनके तीसरे बेटे मुबारकख़ांको हिज्री ७१७ ता० ८ मुहर्रम [वि० १३७४ चैत्र शुक्ल ९ = ई० १३१७ ता० २४ मार्च] के दिन "कुतुबुद्दीन मुबारकशाह" का ख़िताब देकर तख़्तपर बिठादिया; लेकिन् हिज्री ७२१ ता० ५ रबीउ़ल्अव्वल [वि० १३७८ वैशाख शुक्ल ७ = ई० १३२१ ता०

५ एप्रिल] को उसका ख़िद्मतगार खुस्रोख़ां कुतुबुद्दीनको भी मारकर, जो उसी का बढ़ाया हुआ ख़ुद्सर होगया था, आप तख़्तपर बैठगया, और अपना लक़ब "नासिरुद्दीन खुस्रोशाह" रक्खा. इसने हिन्दुस्तानमें बहुतसे ज़ुल्म और ज़ियादतियां कीं, जिससे देपालपुरका हाकिम ग़ाज़ियुल्मुल्क मुख़ालिफ़ बनकर इसपर चढ़दौड़ा. इसने भी उसका मुक़ाबलह किया, लेकिन् आख़िरको ग़ाज़ियुल्मुल्कने फ़त्ह पाई, और वह खुस्रोशाहको उसके मददगारों समेत क़त्ल करके उसी सन् की ता० १ शव्वाल [वि० भाद्रपद शुक्ल २ = ई० ता० २५ ऑगस्ट] को "ग़ाज़ियुल्मुल्क ग़ियासुद्दीन तुग़लक़शाह" के नामसे तख़्तपर बैठगया. यह बादशाह बहुत नेक और सादा मिज़ाज था, हिज्री ७२५ रबीउल्अव्वल [वि० १३८१ फाल्गुन = ई० १३२५ फ़ेब्रुअरी] में एक मकानके गिरनेसे दबकर मरगया, और उसका बेटा फ़ख़ुद्दीन "मुहम्मद तुग़लक़शाह" के ख़िताबसे तख़्तपर बैठा. यह बादशाह फ़य्याज़, आलिम, और ज़ालिम भी था. इसके बहुत बड़े बड़े इरादे थे, लेकिन् वे पूरे नहीं होने पाये. इसने दक्षिणमें देवगढ़को अपनी राजधानी बनाया. आख़िरी चढ़ाई इसने मुल्क सिन्धमें ठट्टा मक़ाम पर की थी, लेकिन् वहां पहुंचनेसे पहिले ही रास्तेमें १४ कोस इस तरफ़ तपकी बीमारीसे हिज्री ७५२ ता० २१ मुहर्रम [वि० १४०८ प्रथम वैशाख कृष्ण ७ = ई० १३५१ ता० २० मार्च] को मरगया. इसके बाद उसका भतीजा मलिक फ़ीरोज़ बार्बक उसीकी वसिय्यतसे हिज्री ता० २४ मुहर्रम [वि० वैशाख कृष्ण १० = ई० ता० २३ मार्च] को तख़्तपर बिठाया गया, और उसका लक़ब "अबुल्मुज़फ़्फ़र सुल्तान फ़ीरोज़शाह" रक्खा. इसने बहुतसे आईन व क़ानून बनाये, गंगा व जमुनासे नहरें निकालीं, सड़कोंपर वृक्ष लगाये, और मद्रसे, शिफ़ाख़ाने व सरायें बनवाईं. अगर्चि इस बादशाहके नेक होनेमें कुछ शक नहीं है, लेकिन् मज़्हबी तअस्सुबके सबबसे इसने ज़ुल्म भी बड़े बड़े किये, याने सुन्नत जमाअतके सिवा मुसल्मानोंके ग़ैर फ़िर्क़े और हिन्दू व जैनोंके हज़ारों पेश्वाओंको क़त्ल करवाडाला. इन बातोंको इस बादशाहने ख़ुद अपनी ही क़लमसे फ़ुतूहाति फ़ीरोज़ शाहीमें लिखा है. यह बादशाह ३८ वर्षतक सल्तनत करके ८३ वर्षकी उम्रमें हिज्री ७९० ता० १८ रमज़ान [वि० १४४५ कार्तिक कृष्ण ४ = ई० १३८८ ता० २० सेप्टेम्बर] को मरगया. इसके बाद उसका पोता ग़ियासुद्दीन तुग़लक़शाह तख़्तपर बैठा, जिसको बाद फ़ीरोज़शाहके ख़ानदानने मारडाला था; लेकिन् इसके भतीजे ज़फ़रख़ांका बेटा अबूबक्र हिज्री ७९१ ता० २१ सफ़र [वि० १४४५ चैत्र कृष्ण ८ = ई० १३८९ ता० १९ फ़ेब्रुअरी] को इसे मारकर बादशाहतका मालिक बना, जिसका लक़ब "अबूबक्रशाह" था. हिज्री ७९२,

ता० २० ज़िल्हिज [वि० १४४७ पौष कृष्ण ७ = ई० १३९० ता० २९ नोवेम्बर] को फ़ीरोज़शाहका बेटा नासिरुद्दीन मुहम्मदशाह, जिसको उसके बापने ख़ारिज करदिया था, अबूबक्रको मारकर तख़्तपर बैठा. इस बादशाहने मेवातियोंको सज़ा देनेके लिये चढ़ाई की, लेकिन् रास्तेमें बीमार होकर पीछा जलेसरमें आगया, और हिज्री ७९६ ता० १७ रबीउ़ल्अव्वल [वि० १४५० फाल्गुन कृष्ण ४ = ई० १३९४ ता० २० जैन्युअरी] को वहीं मरगया. इसका बेटा हुमायूंख़ां "अलाउद्दीन सिकन्दरशाह" के लक़बसे तख़्तपर बैठा, लेकिन् वह भी सख़्त बीमार होकर उसी सन्की ता० ५ जमादियुल्अव्वल [वि० १४५१ चैत्र शुक्ल ६ = ई० ता० ८ मार्च] को मरगया. इसके बाद नासिरुद्दीन मुहम्मदशाहका दूसरा बेटा नासिरुद्दीन महमूदशाह तख़्तपर बैठा. इसके वक़्में बहुतसी ख़राबियां पेश आईं. इसने पूर्वकी तरफ़ जौनपुर वग़ैरहपर "सुल्तानुलशर्क" का ख़िताब देकर ख़्वाजह जहानको ख़ुदमुख़्तार बनाकर भेजदिया. हिज्री ७९७ रबीउ़ल्अव्वल [वि० पौष = ई० १३९५ जैन्युअरी] में उसके एक सर्दार सआदतख़ां नामीने फ़ीरोज़शाहके बेटे नुस्रतशाहको "नासिरुद्दीन नुस्रतशाह" का ख़िताब देकर फ़ीरोज़ाबादमें तख़्तपर बिठादिया, जिसने तमाम हिन्दुस्तानपर अपना क़ब्ज़ह करलिया, और महमूदशाहके क़ब्ज़हमें सिवा दिल्लीकी शहरपनाहके भीतर वाली ज़मीनके और कुछ न रहा. बहुतसी लड़ाइयां होनेके बाद महमूदशाहके सर्दार ग़ालिब आये, और नुस्रतशाह फ़ीरोज़ाबादमें जा छुपा. यहां इस तरहकी छीना झपटी होरही थी, कि हिज्री ८०१ [वि० १४५६ = ई० १३९९] में अमीर तीमूर दिल्लीतक आया, और बहुतसी लूटमार और क़त्ल करके पीछा तुर्किस्तानको लौटगया. फिर मालवा, गुजरात, पंजाब व जौनपुर वग़ैरहके जुदे जुदे हाकिम ख़ुदमुख़्तार बनबैठे. इसी अब्तरीकी हालतमें नासिरुद्दीन महमूदशाह हिज्री ८१५ ज़िल्क़ाद [वि० १४६९ फाल्गुन = ई० १४१३ फेब्रुअरी] में फ़ौत होगया. अब यहां तुग़्लक़ोंकी बादशाहत ख़त्म होकर सय्यदोंकी बादशाहत क़ाइम हुई.

हिज्री ८१६ मुहर्रम [वि० १४७० वैशाख = ई० १४१३ एप्रिल] के महीने में सब सर्दारोंने मिलकर दौलतख़ां लोदीको तख़्तपर बिठाया, लेकिन् यह हिज्री ८१७ रबीउ़ल्अव्वल [वि० १४७१ ज्येष्ठ = ई० १४१४ मई] में ख़िज़रख़ांका क़ैदी बनकर फ़ीरोज़ाबादमें मरगया, और ख़िज़रख़ां तख़्तपर बैठा. इसका लक़ब "रायाते आला ख़िज़रख़ां" रक्खा गया. इसने सिक्का और ख़ुत्बह अमीर तीमूरके नामका रक्खा. जब हिज्री ८२४ ता० १७ जमादियुल्अव्वल [वि० १४७८ आषाढ़ कृष्ण ४ = ई० १४२१ ता० १९ मई] को यह भी मरगया,

तो उसके बेटे मुबारकखांने तख़्तपर बैठकर अपना लक़ब "मुइज़्ज़ुद्दीन अबुल् फ़त्ह मुबारकशाह" रक्खा. यह बादशाह नेक था, लेकिन् इसके वज़ीर सरुरुल मुल्कने इसे हिज्री ८३७ ता० ९ रजब [वि० १४९० फाल्गुन शुक्ल ११ = .ई० १४३४ ता० २० फ़ेब्रुअरी] को दग़ासे मरवाडाला. इसके बाद फ़रीदख़ांका बेटा और ख़िज़रख़ांका पोता मुहम्मदशाह तख़्तपर बैठा. इस बादशाहको तारीख़ वाले डरपोक और जाहिल बतलाते हैं. इसने अपने सर्दार बहलोल लोदीको बहुत कुछ बढ़ादिया था, जो पीछे बाग़ी होगया था. हिज्री ८४९ [वि० १५०२ = .ई० १४४५] में मुहम्मदशाह अपनी मौतसे मरगया. उसके मरनेपर उसका बेटा सुल्तान अलाउद्दीन तख़्तपर बिठाया गया, जो अपने बापसे भी ज़ियादह ख़राब था. इसने अपने बापके सर्दार बहलोल लोदीको लिखभेजा, कि मैं नाताक़त हूं, आप दिल्लीके तख़्तपर बैठ जाइये, और मेरे ख़र्चके लिये बदायूं नियत करदीजिये. बहलोलने वैसाही किया, याने हिज्री ८५५ ता० १७ रबीउल्अव्वल [वि० १५०८ ज्येष्ठ कृष्ण ४ = ई० १४५१ ता० २१ एप्रिल] को सुल्तान बहलोल लोदीके ख़िताबसे तख़्तपर बैठकर अलाउद्दीनको बदायूं भेजदिया, जहां वह हिज्री ८८३ [वि० १५३५ = .ई० १४७८] में मरगया.

अब सय्यदोंकी बादशाहतका ख़ातिमह होकर लोदियोंके इक़्बालका सितारा चमका. तवारीख़ वाले बहलोल लोदीकी बहुत तारीफ़ लिखते हैं. उसने बादशाहत मिलने परभी ख़ज़ानह और माल कुल पठानोंमें बांटदिया. यह पठानोंके गिरोहमें फ़र्शपर बैठता, हर एक सर्दारके घर खाना खानेको चलाजाता, और हर एक की सवारीपर चढ़लेता था. यह बादशाह हिज्री ८९४ [वि० १५४६ = .ई० १४८९] में मरा. इसके बाद इसका बेटा निज़ामख़ां "सुल्तान सिकन्दर" के लक़बसे इसी हिज्रीके शअ्बान [वि० श्रावण = .ई० जुलाई] में तख़्तपर बैठा, और हिज्री ९२३ [वि० १५७४ = .ई० १५१७] में आगरेमें मरगया. तब इसका बेटा इब्राहीम लोदी "सुल्तान इब्राहीमशाह" के लक़बसे इसी हिज्रीकी ता० १५ ज़िल्हिज [वि० माघ कृष्ण २ = .ई० ता० २९ डिसेम्बर] को तख़्तपर बैठा. इस बादशाहके वक़्में सल्तनतमें बहुत कुछ गड़बड़ रही. यह कुछ उम्दह इन्तिज़ाम नहीं करसका था; आख़िरकार हिज्री ९३२ ता० ८ रजब [वि० १५८३ वैशाख शुक्ल १० = .ई० १५२६ ता० २१ एप्रिल] को पानीपतमें बाबर बादशाहसे मुक़ाबलह करके मारागया, जिसका मुफ़स्सल हाल मुग़लोंके बयानमें लिखाजावेगा.

अब हम यूरोपिअन लोगोंके हिन्दुस्तानमें आनेका हाल लिखते हैं:-

पुराने समयमें हिन्दुस्तानी चीज़ोंका व्यापार अरब और मिस्र वालोंकी मारिफ़त

यूरोप वालोंके साथ होता था, जिससे हिन्दुस्तानी चीज़ोंके व्यापारका फ़ायदह मिस्र वाले उठाते थे. यूरोप वाले चाहते थे, कि हिन्दुस्तानको जानेके लिये कोई जहाज़ी रास्तह दर्याफ्त होजावे, तो हिन्दुस्तानी चीज़ें खुद वहां जाकर ख़रीद लावें, जिससे बहुत कुछ नफ़ा हासिल हो, क्योंकि कई व्यापारियोंके हाथमें होकर माल ख़रीदनेसे दरजे ब दरजे क़ीमत बढ़ती जाती है, और जगह जगहके लोग उसी मालसे अपना फ़ायदह उठाते जाते हैं. इस विचारसे यूरोपके साहसिक पुरुष अपने अपने अनुमानके मुताबिक़ हिन्दुस्तानमें आनेके मन्शासे समुद्रका रास्तह दर्याफ्त करने लगे; परन्तु हिन्दुस्तानका हाल पूरा पूरा मालूम न होनेके सबब और और मुल्कोंमें जा निकलते, जैसा कि कोलम्बस हिन्दुस्तानकी तलाशमें निकला और अमेरिकामें जा पहुंचा. पुर्त्तगालका बार्थोलोमियो नामक एक नाविक हिन्दुस्तानको आफ़्रिक़ाके पूर्वमें समझकर .ईसवी १४८६ [वि० १५४३ = हि० ८९१] में लिस्बन शहरसे निकला और आफ़्रिक़ाके दक्षिणी अन्तरीपतक आया, परन्तु समुद्रमें तूफ़ान अधिक होनेके कारण आगे न बढ़सका.

.ईसवी १४९७ [वि० १५५४ = हि० ९०२] में इसी मुल्कका दूसरा जहाज़ी वास्कोडिगामा अपने बादशाहके हुक्मसे ३ जहाज़ लेकर पुर्त्तगालसे आफ़्रिक़ाकी परिक्रमा करता हुआ मलाबारके किनारे कलिकट बन्दरपर आ पहुंचा. वहांके राजाने जहाज़ोंको उतरनेदिया, और उन लोगोंको सत्कारके साथ व्यापार करनेकी इजाज़त दी, परन्तु मुसलमान व्यापारियों (अरबों) ने राजाको बहकाकर यूरोपिअन व्यापारियोंके साथ नाइत्तिफ़ाक़ी करादी, जिससे कुछ महीनों बाद वास्कोडिगामा तो अपने मुल्कको वापस चलागया, और पुर्त्तगालके बादशाहने दूसरी मर्तबह १३ जहाज़ और १२०० सिपाही पेड्रोकेब्रल नामी सेनापतिकी मातहतीमें भेजे, जो .ईसवी १५०० के सेप्टेम्बर [वि० १५५७ भाद्रपद = हि० ९०६ सफ़र] में कलिकटमें पहुंचे. केब्रलको व्यापारके लिये कोठी बनानेका हुक्म राजाकी तरफ़से मिलगया, लेकिन् मुसल्मानोंके साथ नाइत्तिफ़ाक़ी यहांतक बढ़ी, कि वह कोठी उड़ादी गई. केब्रलने १० जहाज़ मुसल्मानोंके लूटकर जलादिये, और शहरपर गोलन्दाज़ी शुरू की. आख़रकार वह कोचीनको चलागया, और वहां कोठी बनानेके लिये कुछ आदमी नियत करके आप कानानोरको गया, जो कलिकटके उत्तरमें है, और वहांसे यूरोपको चलागया.

इसके पहुंचनेसे पहिले ही पुर्त्तगाल वालोंने तीसरी बार जुएन्डी न्यूवा सेनापतिकी मातहतीमें फ़ौज रवानह करदी थी. यह सेनापति कोचीनमें आया, तो कलिकटके राजा

ज़ामोरिनने इसके मुक़ाबलहके लिये एक जहाज़ी क़ाफ़िलह भेजा, परन्तु जुफ़्न्डी न्यूवाने उसको बखेरदिया, और बहुतसा क़ीमती माल लेकर यूरोपको वापस चलागया.

इन तीन चढ़ाइयोंसे पुर्तगाल वालोंको यह मालूम होगया, कि हिन्दुस्तानमें अपने व्यापारकी तरक़ी फ़ौज और हथियारोंकी ताक़तसे होसक्ती है, और ईसवी १५०२ [वि० १५५९ = हि० ९०७] में वास्कोडिगामा पूरी फ़ौजके साथ फिर हिन्दुस्तानको भेजागया. इसने विचार किया, कि हिन्दुस्तानका बहुत बड़ा व्यापार, जो अरब और दक्षिणी ईरानके साथ होता है, वह बिल्कुल मुसल्मानोंसे उठाकर अपने क़बज़हमें करलेवे, इस मुराद्से वह कई जहाज़ोंको जलाने, लूटने, और लोगोंको मारने और हाजियोंको तक्लीफ़ देनेलगा. कलिकटके पास उसने कई जहाज़ियोंको पकड़ा, और राजाको धमकी दी, कि हमारा कहा न मानोगे, तो हम इन सब क़ैदियोंको मारडालेंगे; लेकिन् जब राजाने उसकी बातपर ख़याल न किया तब उसने उन पकड़े हुए लोगोंको फांसी देदी, और उनके हाथ पांव काटकर राजाके पास भेजदिये. कलिकटके राजासे कई लड़ाइयां करके उसने कोचीन और कानानोरके राजाओंसे मज़्बूत दोस्ती पैदा की, और ईसवी १५०३ [वि० १५६० = हि० ९०८] में वहां एक हाकिम मुक़र्रर करके ख़ुद वापस चलागया. इसके बाद दिन बदिन ज़मीन और समुद्र दोनों पर इन लोगोंकी तरक़ी होती गई. वास्कोडिगामाके जाने बाद ज़ामोरिनने कोचीनपर चढ़ाई की, परन्तु इस मौक़ेपर पुर्तगालसे अल्फ़ान्ज़ो आल्बुकर्क फ़ौज लेकर आपहुंचा, इस कारण उसे फ़त्ह नसीब नहीं हुई, और हारकर संधि करनी पड़ी. आल्बुकर्क के वापस चलेजानेपर ज़ामोरिन ५०००० फ़ौज लेकर कोचीनपर चढ़ा, परन्तु १३ जहाज़ इस मौक़ेपर पुर्तगालसे आगये, जिससे पुर्तगाल वालोंको फ़त्ह हुई, और कलिकट बर्बाद कियाजाकर १७ जहाज़ ज़ामोरिनके पकड़ेगये. ईसवी १५०६ [वि० १५६३ = हिज्री ९१२] में पुर्तगालका जहाज़ी सेनाधिपति सोअरेज़ लूटका बहुतसा माल अस्बाब लेकर पुर्तगालको चलागया. दूसरे साल डोम्फ़्रान्सिस अल्मीडा १५०० क़वाइदी सिपाही लेकर आया, और उसने अंजिदिव टापूपर क़िला बनाया, और कोचीनमें जाकर वहांके राजाको एक रत्नजटित मुकुट दिया. इस समय मुसल्मानोंके व्यापारको नुक़्सान पहुंचनेके सबब मुसल्मान और पुर्तगाल वालोंके बीच दुश्मनी होगई. बीजापुरका बादशाह और गुजरातका बादशाह महमूदशाह दोनों आपसमें मिलगये, और मिस्रके बादशाहने भी इनकी मददके लिये जहाज़ भेजे. लड़ाई होनेपर पुर्तगाल वालोंका बहुतसा नुक़्सान हुआ, परन्तु अल्फ़ान्ज़ो आल्बुकर्क फिर मदद लेकर आया, जिससे उनका टिकाव होगया, और दोबारह मदद पहुंचनेपर लालसमुद्र व ईरानके आखातमें

मुसल्मानोंपर हमलह किया, जहां ओर्मज़ व मस्क़त नामके दो स्थान लेलिये, और लड़ाइयां होतीरहीं. इसके बाद बीजापुरके बादशाह इब्राहीमने आदिलशाहसे गोआ छीनलिया, जो इसवक़ हिन्दुस्तानमें पुर्त्तगाल वालोंकी राजधानी है. इसी तरह हिन्दुस्तानके पश्चिमी किनारेका कुछ मुल्क इनके क़ब्ज़हमें आगया. ईसवी १५२१ [वि० १५७८ = हि० ९२७] में पुर्त्तगाल वालोंने दीवपर क़िला बनाना चाहा, लेकिन् गुजरातके लश्करसे हारकर भागना पड़ा. अहमदनगरके लश्करकी मददसे थाणा और सालसेटीका टापू इनके क़ब्ज़हमें आगया. फिर गुजरातके अन्दर आपसकी लड़ाइयोंमें मौक़ेपर मदद देकर दीव और बसईको इन्होंने अपने हाथमें लेलिया. ईसवी १५३७ [वि० १५९४ = हि० ९४३] में टर्कीके बादशाहने दीव बन्दरपर फ़ौज भेजी, लेकिन् पुर्त्तगालसे ज़ियादह फ़ौज आजानेके सबब ८ महीने बाद घेरा उठाकर फ़ौजको वापस लौटना पड़ा. उस समयके बाद डच, फ्रेंच और अंग्रेज़ व्यापारियोंके हिन्दमें आनेसे इन लोगोंका समुद्री बल कम होगया, और देशी राजाओंके बखेड़ोंसे पश्चिमी किनारेका मुल्क भी इनके हाथसे चलागया, सिर्फ़ गोआ, दम्मन, और दीव नामके तीन स्थान इनके हाथमें रहे, जो आजतक इन्हींके क़ब्ज़हमें चले आते हैं.

ईसवी १५९६ [वि० १६५३ = हि० १००४] में कार्नेलियस होटमन नामके एक डच जहाज़ीने आफ़्रिक़ाके दक्षिणी अन्तरीपकी प्रदक्षिणा की, और ईसवी १६०२ [वि० १६५९ = हि० १०१०] में व्यापारके लिये एक कम्पनी खड़ी हुई, जिसका नाम "डच ईस्ट इंडिया कम्पनी" रक्खा, और ५० वर्षके भीतर इस कम्पनीने हिन्दुस्तान, सीलोन (लंका), सुमात्रा, ईरानी आखात, और लाल समुद्र वग़ैरहके स्थानोंमें अपनी कोठियां जमाईं, और कुछ समयतक दिन ब दिन तरक़ी करतेरहे. ईसवी १७५९ [वि० १८१६ = हि० ११७२] में अंग्रेज़ोंके साथ बखेड़ा होनेपर लॉर्ड क्लाइवने चिन्सुरा नामी स्थानमें डच लोगोंपर हमलह करके चिन्सुरा ख़ाली करवालिया और उन्हें ऐसी शिकस्त दी, कि इस समय हिन्दुस्तानमें डच लोगोंका निशानतक बाक़ी न रहा.

ईसवी १६०४ [वि० १६६१ = हि० १०१३] में फ़्रेंच लोगोंने भी हिन्दुस्तानमें व्यापार करनेके लिये फ़्रांसमें "ईस्ट इंडिया" नामकी एक कम्पनी खड़ी की. फिर ईसवी १६११ [वि० १६६८ = हि० १०२०] में इसी नामकी एक दूसरी कम्पनी क़ाइम हुई, और ईसवी १६१५ [वि० १६७२ = हि० १०२४] में तीसरी, ईसवी १६४२ [वि० १६९९ = हि० १०५२] में चौथी, ईसवी १६४४ [वि० १७०१ = हि० १०५४] में पांचवीं, और अख़ीरमें सब कम्पनियां मिलकर एक कम्पनी होगई, जिसने हिन्दुस्तानमें आकर रफ़्तह रफ़्तह कलकत्ताके पास चन्द्रनगर पाया, और दिन ब दिन ऐसी तरक़ी

की, कि अंग्रेज़ोंके हरीफ़ होगये. इन लोगोंका बाक़ी हाल अंग्रेज़ोंके इतिहासके साथ मौक़ेपर दर्ज किया जायेगा.

ईसवी १६१२ [वि० १६६९ = हि० १०२१] में डेन्मार्कके लोगोंने भी एक कम्पनी क़ाइम की जो "डैनिश ईस्ट इण्डिया कम्पनी" के नामसे प्रसिद्ध हुई, और दूसरी कम्पनी ईसवी १६७० [वि० १७२७ = हि० १०८०] में खड़ी हुई.

ईसवी १६१६ [वि० १६७३ = हि० १०२५] में ट्रंक्वार और सीरामपुर बसायेगये, जो ईसवी १८४५ [वि० १९०२ = हि० १२६१] में सर्कार अंग्रेज़ीने क़ीमत देकर मोल लेलिये.

ईसवी १५९९ [वि० १६५६ = हि० १००७] में इंग्लिस्तानमें ईस्ट इण्डिया कम्पनी क़ाइम होकर उसने वहांकी मलिका क्वीन एलिज़ाबेथसे इस मज़्मूनकी एक सनद हासिल की, कि १५ वर्षतक इंग्लिस्तानका कोई आदमी बिना इजाज़त कम्पनीके पूर्वी मुल्कोंमें तिजारत न करे. ईसवी १६०९ [वि० १६६६ = हि० १०१८] में सर हेनरी मिडल्टन ३ जहाज़ लेकर सूरतमें आया, परन्तु वहांके हाकिमसे खटपट होजानेके सबब कोठी खोलनेकी इजाज़त न मिली, तब कप्तान हॉकिन इंग्लैण्डके बादशाह जेम्स अव्वल और ईस्ट इण्डिया कम्पनीकी तरफ़से वकीलके तौरपर दिल्लीके बादशाह जहांगीरके पास गया, और ३ वर्षतक वहीं ठहरा रहा. ईसवी १६११ [वि० १६६८ = हि० १०२०] में सर हेनरी मिडल्टन खम्भातको गया, और वहां पुर्तगाल वालोंसे लड़ा. ईसवी १६१३ [वि० १६७० = हि० १०२२] में सूरत, घोघा, खम्भात और अहमदाबादमें इनको व्यापार करनेकी इजाज़त मिली. ईसवी १६१५ [वि० १६७२ = हि० १०२४] में पुर्तगाल वालोंने सूरत बन्दरके पास कम्पनीके जहाज़ों पर हमलह किया, परन्तु अंग्रेज़ फ़त्हयाब हुए. इसी सालमें इंग्लैण्डके बादशाहकी तरफ़से सर टॉमस रो जहांगीरके दर्बारमें वकील बनकर गया, और उसने बादशाही मुल्कमें व्यापार करनेकी इजाज़त हासिल की. ईसवी १६१९ [वि० १६७६ = हि० १०२८] में डच लोगोंसे संधि की, और इक़ार किया, कि अंग्रेज़ और डच आपसमें न लड़ें, परन्तु इस संधिका अमल दरामद न हुआ. ईसवी १६२२ [वि० १६७९ = हि० १०३१] में इन्होंने मछलीपट्टनमें कोठी जमाई. ईसवी १६२५-२६ [वि० १६८२-८३ = हि० १०३४-३५] में आरमागांवमें, जो कारोमंडलके किनारेपर है, कोठी खोलीगई. ईसवी १६३४ [वि० १६९१ = हि० १०४३] में इनको दिल्लीके बादशाहने बंगालेमें कोठी खोलनेकी इजाज़त दी. ईसवी १६३९ [वि० १६९६ = हि० १०४९] में इन्होंने चन्द्रगिरिके राजाकी इजाज़तसे मद्रास शहर बसाया, और वहां

सेंट ज्यॉर्ज नामका क़िला वनाया. ईसवी १६४०[वि० १६९७ = हि० १०५०]में कारवाड़ और हुगलीमें कोठियां खोलीं. ईसवी १६४२ [वि० १६९९ = हि० १०५२] में वालासिनोरमें कोठी खोलीगई. ईसवी १६४५ [वि० १७०२ = हि० १०५५] में मिस्टर गेब्रियल वोगटन डॉक्टरने शाहजहां वादशाहकी खिदमत की और उसके एवज़में उसने कम्पनीके लिये कुछ ज़ियादह हक़ हासिल किये. ईसवी १६५८ [वि० १७१५ = हि० १०६८] में क़ासिम वाज़ारमें कोठी खोलीगई. ईसवी १६६८ [वि० १७२५ = हि० १०७८] में इंग्लैण्डके वादशाह चार्ल्स दूसरेने वम्बईका शहर, जो पुर्त्तगाल वालोंसे जिहेज़में पाया था, १००) रुपया सालानह खिराजपर कम्पनीको देदिया, जिसको कम्पनीने पश्चिमी हिन्दुस्तानमें व्यापारका मुख्य स्थान वनाया. इसके वाद उक्त कम्पनीने कलकत्ताको ज़ियादह आवाद करके उसमें फ़ोर्ट विलिअम नामी एक क़िला वनाया. ईसवी १७१५ [वि० १७७२ = हि० ११२७] में कलकत्ताके प्रेसिडेण्टने दो अंग्रेज़ी एल्ची दिल्लीके वादशाह फ़र्रुख़सियरके पास भेजे. इस समय वादशाह वीमार था, जिसको इन एल्चियोंके साथ वाले डॉक्टर हैमिल्टनने आराम किया. वादशाहने खुश होकर डॉक्टरसे कहा, कि तुम्हारी इच्छा हो सो मांगो, परन्तु उस नेक शख़्सने अपने लिये कुछ न मांगा, और कम्पनीका फ़ायदह सोचकर दो वातोंकी दर्ख्वास्त की, याने एक तो कम्पनीको वंगालेमें ३८ गांव खरीदनेकी इजाज़त, और दूसरे यह, कि जो माल कलकत्तेके प्रेसिडेण्टके दस्तख़त होकर रवानह हो उसका महसूल न लियाजावे. वादशाहने उक्त डॉक्टरकी दोनों वातें क़ुबूल करलीं, लेकिन् वंगालेके सूबेदारने ज़मींदारोंको मनादी करादी, जिससे ज़मींदारी तो हाथ न लगी, लेकिन् महसूल मुआफ़ होगया.

ईसवी १७०७ [वि० १७६४ = हि० १११९] में वादशाह औरंगज़ेवके मरनेपर दक्षिणका मुल्क स्वतन्त्र होगया. निज़ामुलमुल्क हैदरावादका मालिक वना, और आर्कटका नव्वाव हैदरावादकी मातह्तीमें करनाटकका राज्य करने लगा; उस समय तंजावर व मैसोरमें हिन्दू राजाओंका राज्य था, और फ्रांस वालोंने ईसवी १६७४ [वि० १७३१ = हि० १०८५] से पौंडिचेरीमें अपना अधिकार जमा रक्खा था.

ईसवी १७४४ [वि० १८०१ = हि० ११५७] में जब यूरोपमें अंग्रेज़ और फ्रांसीसियोंमें लड़ाईकी आग भड़की, तो उसकी चिनगारियां हिन्दुस्तानमें भी फैलने लगीं. ईसवी १७४६ [वि० १८०३ = हि० ११५९] में फ्रांस वालोंने पौंडिचेरीसे फ़ौज लेजाकर मद्रासको जाघेरा, और ५ दिनतक घेरा रखकर उसे अंग्रेज़ोंसे ख़ाली करवालिया. क्लाइव वग़ैरह अंग्रेज़ लोग यहांसे निकलकर फ़ोर्ट सेंट डेविडमें जाठहरे. इस

समय आर्कटका नव्वाब अंग्रेज़ोंकी मददके लिये १०००० दस हज़ार आदमी लेकर मद्रासको आया, परन्तु उसने फ़्रांसीसियोंसे शिकस्त पाई. .ईसवी १७४८ [वि० १८०५ = हि० ११६१] में विलायतसे फ़ौज आई, और पौंडिचेरीपर अंग्रेज़ोंने घेरा डाला, परन्तु .फ्रांस वालोंने बराबर लड़ाई ली, और इसी सालमें .फ्रांस और अंग्रेज़ोंके दर्मियान संधि होजानेके कारण फिर मद्रास अंग्रेज़ोंके क़बज़हमें आगया.

इस समय .फ्रांसका गवर्नर डुप्ले अपने राज्यकी जड़ दक्षिणमें जमाना और अंग्रेज़ोंको वहांसे उखेड़ना चाहता था, कि इसी अरसहमें तंजावरके राजा प्रतापसिंहके नाबालिग़ होनेके सबब उसके भाई साहूजीने अंग्रेज़ोंको देवीकोटाका मुल्क देना क़ुबूल करके अपने भाईसे गद्दी छीनलेनेमें मदद चाही. इसपर लेफ़्टिनेण्ट क्लाइवने मदद देकर साहूजीको तंजावरका मालिक बनादिया, जिससे देवीकोटा मए क़िलेके कम्पनीके हाथमें आगया.

.ईसवी १७४८ [वि० १८०५ = हि० ११६१] में जब दक्षिणके सूबेदार आसिफ़जाह की मृत्यु हुई, तो उसके बेटे पोते गद्दीके लिये आपसमें तक़ार करने लगे. इस मौक़ेपर डुप्लेने उसके पोते मुज़फ़्फ़रजंगको गद्दी नशीन करके उसके एवज़में कृष्णा नदीसे कुमारी अन्तरीप तकका मुल्क हासिल करलिया, और जब आर्कटकी गद्दीके लिये भी वारिसोंमें तक़ार हुई, तो .फ्रांस वालोंने चन्दा साहिबको आर्कटकी गद्दीपर बिठादिया. अंग्रेज़ोंने चन्दा साहिबके विरोधी मुहम्मदअ़ली (वालाजाह) की मदद की, जोकि इस वक्त त्रिचिनापल्लीका हाकिम था. चन्दा साहिबने भी .फ्रांसीसियोंकी मददसे त्रिचिनापल्लीपर हमलह किया. अंग्रेज़ोंने यह मौक़ा ग़नीमत समझकर आर्कटको लेलिया, तब चन्दा साहिबके आदमियोंने आर्कटको घेरलिया, और .फ्रेञ्चोंकी भी पूरी मदद हुई, लेकिन् क्लाइवने क़िला न छोड़ा. चन्दा साहिब मुहम्मदअ़लीके किसी मददगारके हाथसे मारागया, और अंग्रेज़ोंने मुहम्मदअ़लीको गद्दीपर बिठाकर उसे सारे करनाटकका नव्वाब बनादिया. इस तरहपर दक्षिणमें अंग्रेज़ और फ़्रांसीसियोंने देशी राजाओंको मदद दे देकर अपना मत्लब निकाला. आर्कटकी फ़त्हसे अंग्रेज़ोंका ज़ोर दक्षिणमें बढ़गया, और .फ्रांसवालोंने उत्तर सर्कारपर अपना क़बज़ह जमालिया. .फ्रांस वालोंने डुप्लेकी क़द्र न की, और उसको .फ्रांसमें बुलाकर उसकी जगह दूसरा हाकिम मुक़र्रर करके यहां भेजदिया. डुप्ले जैसे बहादुर हाकिमके चले जानेसे अंग्रेज़ोंको और भी सुभीता मिला, और .ईसवी १७६०[वि० १८१७ = हि० ११७३] में कर्नेल् कूट (सर आयर कूट) वोंदी वाशकी लड़ाईमें .फ्रेंच जेनरल लालीको शिकस्त देकर वहांसे पौंडिचेरीपर हमलह करनेको निकला. .ईसवी १७६१ [वि० १८१८ = हि० ११७४] में उसने गिंजीका क़िला .फ्रांसवालोंसे लेलिया.

.ईसवी १७५६ [वि० १८१३ = हि० ११६९] में अलहवर्दीख़ां मरा तो उसके भतीजेका बेटा सिराजुद्दौलह बंगाला, बिहार और उड़ीसाका हाकिम बना. यह बद मिज़ाज और अंग्रेज़ोंसे ज़ियादह नफ़त रखने वाला था. इसका कोई आदमी अपने बचावके लिये अंग्रेज़ोंकी हिफ़ाज़तमें कलकत्ते चलागया था, जिसको मंगवानेके लिये उसने एक आदमी अंग्रेज़ोंके पास भेजा, परन्तु अंग्रेज़ोंने उसको नहीं सौंपा. इस बातसे नाराज़ होकर उसने कलकत्ताके क़िलेकी मज्बूती जो उसवक़ अंग्रेज़ कर रहे थे, उसके बन्द करनेका हुक्म भेजा, परन्तु इसपर भी अंग्रेज़ोंने कुछ ध्यान न दिया, तब सिराजुद्दौलहने अंग्रेज़ोंकी क़ासिम बाज़ारकी कोठी लेली और कलकत्ताके क़िलेको जाघेरा. बहुतसे अंग्रेज़ किश्तीमें सवार होकर निकल भागे और कितनेएक उसकी क़ैदमें आये. रातके वक़ १४६ क़ैदी अंग्रेज़ोंको १८ फ़ुट लम्बे और १४ फ़ुट चौड़े कमरेमें बन्द किया, जिनमेंसे १२३ तो मकानके भीतर हवाके आने जानेका रास्तह न होनेके सबब रातभर में ही मरगये, और २३ ज़िन्दह सुब्हके वक़ बाहिर निकाले गये, उनमेंसे हॉलवेल साहिब और दूसरे दो अंग्रेज़ तो पैरोंमें बेड़ियां डालीजाकर मुर्शिदाबादको भेजदिये गये, और बाक़ी छोड़दियेगये. ये तीन अंग्रेज़ अलहवर्दीख़ांकी बेगमकी सिफ़ारिशसे छूटे. इस हालकी ख़बर मद्रास पहुंचनेपर क्लाइव ९०० अंग्रेज़ व १५०० सिपाही लेकर वहांसे रवानह हुआ, और .ईसवी १७५७ ता० २ जेन्युअरी [वि० १८१३ पौष शुक्ल १३ = हि० ११७० ता० १२ रबीउस्सानी] को कलकत्ते पहुंचा. ता० ३ फ़ेब्रुअरी [वि० माघ शुक्ल १५ = हि० ता० १४ जमादियुल्अव्वल] को सिराजुद्दौलह ४०००० आदमियोंकी फ़ौज लेकर कलकत्तेपर चढ़ा, क्लाइव भी बड़ी बहादुरीसे लड़ा, और सिराजुद्दौलहने अपने बहुतसे आदमी मारे-जानेके कारण सुलह करली, इससे अंग्रेज़ोंका जो माल अस्बाब गया था वह वापस मिलगया, और क़िला मज्बूत करने व टकशाल क़ाइम करनेके अलावह पहिले जो जो सनदें हासिल होचुकी थीं उन सबके बदस्तूर बहाल रहनेकी इजाज़त मिली; परन्तु सिराजुद्दौलह अंग्रेज़ोंसे दिली नफ़त ज़ियादह रखने, और .फ्रेंचोंको नौकर रखने लगा. यह बात अंग्रेज़ोंको ना-पसन्द होनेसे अलहवर्दीख़ांके दामाद मीर जाफ़रको सिराजुद्दौलहकी गद्दीपर क़ाइम करने का विचार हुआ, और जाफ़रसे पोशीदह तौरपर एक अह्दनामह भी लिखा लिया, जिसमें सिराजुद्दौलहके साथ क़ाइम कीहुई शर्तोंके अलावह यह भी लिखवालिया, कि .फ्रांसीसी बंगालसे निकालदिये जावें, कलकत्तेसे दक्षिण कालपीतककी ज़मीन कम्पनीकी समझीजावे, और नुक्सानके एवज़ १००००००० एक करोड़ रुपये कम्पनीको और कई लाख कलकत्ताके अंग्रेज़, हिन्दू वग़ैरह लोगोंको देना क़रार पाया. अमीचन्द सेठको, जो इस जालमें शरीक था, ५) रुपया सैकड़ा देनेका

क़रार किया; लेकिन् क्लाइवकी दग़ाबाज़ीसे सबको रुपया मिलनेपर भी सेठको न मिला. इस तरहपर खूब जाल गूंथकर क्लाइव ३००० आदमी साथ लेकर कलकत्तेसे निकला, और सिराजुद्दौलह भी ५०००० आदमियोंके समूहसे लड़ाईके लिये पलासी मक़ामपर आया, और अंग्रेज़ोंसे लड़ाई शुरू हुई, तो मीर जाफ़र अंग्रेज़ोंसे मिलगया, जिससे सिराजुद्दौलह भागा, और अंग्रेज़ोंकी फ़तह हुई. सिराजुद्दौलह राजमहलके पास गिरिफ्तार होकर मुर्शिदाबाद लायागया. वहांपर मीरजाफ़रके बेटे मीरनने उसे क़त्ल करवादिया. मीर जाफ़र गद्दीपर बिठायागया और उसके बाद अह्दनामहके मुताबिक़ रुपये चुकाये गये. हिन्दुस्तानमें अंग्रेज़ोंके राज्यका प्रारम्भ पलासीकी लड़ाईसे ही समझना चाहिये. यह लड़ाई .ईसवी १७५७ ता० २३ जून [वि० १८१४ आषाढ़ शुक्ल ८ = हि० ता० ७ शव्वाल] को हुई थी. इसके बाद क्लाइव कम्पनीकी तरफ़से बंगाल इहातेका गवर्नर मुक़र्रर हुआ.

दक्षिणमें अंग्रेज़ों और .फ्रांसीसियोंके बीच लड़ाई होती रही, और .ईसवी १७६१ [वि० १८१८ = हि० ११७४] तक .फ्रेंचोंका कुल मुल्क अंग्रेज़ोंने लेलिया, सिर्फ़ कलिकट और सूरतकी कोठियां उनके क़बज़हमें बाक़ी रहीं, जिससे फ्रेंचोंने हिन्दुस्तानमें अपना राज्य जमानेकी उम्मेद छोड़दी.

.ईसवी १७५९ [वि० १८१६ = हि० ११७२] में दिल्लीके शाहज़ादह आलीगुहरने अवधके सूबेदारकी बहकावटसे अपने बाप बादशाह आलमगीर सानीसे नाराज़ होकर मीर जाफ़रपर हमलह किया, परन्तु क्लाइवने शाहज़ादहको भगादिया. बादशाहने ३००००० रुपयोंकी जागीर देकर क्लाइवको अपने अमीरोंमें शामिल किया. .ईसवी १७६० [वि० १८१७ = हि० ११७३] में क्लाइवने इंग्लिस्तानमें जाकर लॉर्डका ख़िताब पाया.

जब दिल्लीका बादशाह मरगया, तो उसका शाहज़ादह "शाह आलम" के नामसे बादशाह बना, और उसने मीर जाफ़रपर दोबारह हमलह किया, लेकिन् फिर भी हारकर भागनापड़ा. मीर जाफ़रके दामाद क़ासिमअलीख़ांने बर्दवान, मेदिनीपुर और चटगांवके ज़िले और कई लाख रुपया अंग्रेज़ोंको देना क़बूल करके यह चाहा, कि मीर जाफ़रको गद्दीसे ख़ारिज करवाकर आप वहांका सूबेदार बनजावे, जिसपर अंग्रेज़ोंने मीर जाफ़रको ख़ारिज करके उसको बंगालेका सूबेदार बनादिया.

अब कम्पनीके नौकरोंने अपना घरू व्यापार शुरू किया और अपने व्यापार का मह्सूल न देनेके अलावह वे नौकरोंका माल भी बिना मह्सूल निकालने लगे, जिससे क़ासिमअलीकी आमदमें बड़ा घाटा होने लगा; तब उसने कौन्सिलको लिखा,

लेकिन् कौन्सिलके मेम्बर ख़ुद व्यापार करते थे, इसलिये उसके लिखनेका कुछ असर न हुआ, तब उसने सब व्यापारियोंका महसूल मुआफ़ करदिया, जिससे अंग्रेज़ोंका नफ़ा जातारहा. इसपर अंग्रेज़ोंने उसको कहा, कि हम लोगोंके अ़लावह सब लोगों से महसूल लिया करो, लेकिन् उसने न माना, तब अंग्रेज़ोंने पीछा मीर जाफ़रको बंगाल इहातेका सूबेदार बनानेके लिये इश्तिहार जारी किया, और उसके पाससे एक अ़हदनामह इस मज़्मूनका लिखालिया, कि ३००००००) रुपया अंग्रेज़ोंको देवे और १२००० सवार व १२००० पियादोंका ख़र्च दियाकरे. फिर अंग्रेज़ी फ़ौजने मुर्शिदाबाद पर हमलह किया और क़ासिमअ़लीख़ां पटनाकी तरफ़ चलागया. अंग्रेज़ोंने उसका पीछा किया और दो लड़ाइयां लड़ीं, जिनमें अंग्रेज़ोंकी फ़त्ह हुई, लेकिन् क़ासिमअ़लीख़ांने पटनामें दोसौ अंग्रेज़ोंको क़ैद करके क़त्ल करवाडाला, तब अंग्रेज़ोंने उसका फिर पीछा किया. इसपर वह अवधके सूबेदार शुजाउद्दौलहको अपनी मददपर चढ़ालाया, लेकिन् पटनाके पास शिकस्त खाकर फिर भागना पड़ा. इस वक्त भी अंग्रेज़ोंने पीछा किया, और बक्सर मक़ामपर शुजाउद्दौलहको पूरी शिकस्त हुई. इस फ़त्हसे दिल्लीका बादशाह बहुत ख़ुश हुआ और अपने वज़ीरकी क़ैदसे छूटकर अंग्रेज़ोंके रक्षणमें आया. ई॰ सवी १७६५ [वि॰ १८२२ = हि॰ ११७८] में मीर जाफ़र मरगया और उसके भाई नज्मुद्दौलहको अंग्रेज़ोंने गद्दीपर बिठाकर उससे यह इक़ार लिखवालिया, कि नाइबसूबा अंग्रेज़ोंकी सलाहसे मुक़र्रर कियाजावे, और बिना उनकी मन्ज़ूरीके वह मुआफ़ न होसके.

ई॰ सवी ता॰ ३ मई [वि॰ चैत्र शुक्ल १३ = हि॰ ता॰ १२ ज़िल्क़ाद] को लॉर्ड क्लाइव विलायतसे कलकत्ते आया और इसी रोज़ कोडेकी लड़ाईमें शुजाउद्दौलह अंग्रेज़ोंसे शिकस्त पाकर उनका ताबे बना. अंग्रेज़ लोगोंने इलाहाबाद, व कोडा स्थान और ५००००००) रुपया फ़ौज ख़र्चका लेकर उससे सुलह करली. लॉर्ड क्लाइवने नज्मुद्दौलह से यह लिखवालिया, कि ५००००००) रुपया सालानह लेलिया करे, और मुल्कसे कुछ सरोकार न रक्खे. इस तरह बिहार, बंगाल, और उड़ीसा अंग्रेज़ोंके तह्तमें आगये, और नज्मुद्दौलह केवल नामका सूबेदार बनारहा. जब ई॰ सवी १७६६ [वि॰ १८२३ = हि॰ ११८०] में नज्मुद्दौलह मरगया, तो उसका भाई सैफ़ुद्दौलह गद्दीपर बैठा, और ई॰ सवी १७७० [वि॰ १८२७ = हि॰ ११८४] में सैफ़ुद्दौलहके मरजानेपर उसका नाबालिग़ भाई मुबारकुद्दौलह सूबेदार हुआ. इसके गद्दी नशीन होनेपर कम्पनीने इसकेलिये १६०००००) रुपया सालानह ख़र्च मुक़र्रर करके बाक़ी रुपयां बचतमें रखलिया.

ई॰ सवी १७६३ [वि॰ १८२० = हि॰ ११७६] में जब इंग्लिस्तान और फ़्रांस

के आपसमें सुलह हुई, तो यह क़रार पाया, कि .ईसवी १७४९ [वि० १८०६ = हि० ११६२] में .फ्रांसीसियोंकी जो जो कोठियां थीं वे तो उनको वापस देदी जावें, परन्तु सूबे बंगालके अन्दर वे क़िला न बनावें और न लश्कर रक्खें.

ईसवी १७६५ [वि० १८२२ = हि० ११७८] में दक्षिणके सूबेदार निज़ामअ़लीने करनाटकके नव्वाब मुहम्मदअ़लीपर हमलह किया, परन्तु अंग्रेज़ोंने मुहम्मदअ़लीकी मदद की, जिससे वह पीछा लौटगया; और लॉर्ड क्लाइवने मुहम्मदअ़लीको करनाटककी सनद दिलाकर कम्पनीके लिये उत्तर सर्कारकी सनद लिखवाली. इस समय हैदरअ़लीने मैसोरपर अपना क़बज़ह करलिया था. .ईसवी १७६७ [वि० १८२४ = हि० ११८१] में निज़ामअ़ली मैसोरपर चढ़ा और इक़ारके मुवाफ़िक़ अंग्रेज़ भी इसके मददगार बने. जब अंग्रेज़ी फ़ौजने हैदरअ़लीको परास्त किया, तो वह निज़ामअ़लीसे जामिला और दोनोंने अंग्रेज़ी फ़ौजपर हमलह किया, परन्तु शिकस्त पाई. इसके बाद निज़ामअ़ली ने तो पीछी अंग्रेज़ोंसे संधि करली, और हैदरअ़ली कुछ समयतक लड़ताही रहा, परन्तु .ईसवी १७६८ [वि० १८२५ = हि० ११८२] में हैदरअ़लीने भी अंग्रेज़ोंके साथ सुलह करली. तर्फ़ैनने एक दूसरेकी छीनी हुई जगह वापस देदी, और आपसमें मदद देनेका इक़ार किया.

ईसवी १७७३ [वि० १८३० = हि० ११८७] में पार्लिएमेण्ट वालोंने हिन्दुस्तानके लिये एक गवर्नर जेनरल मुक़र्रर करना ज़ुरूरी समझकर २५००००) रुपये सालानह्कर इस उ़ह्दहके लिये एक बड़ा अफ़्सर भेजेजानेका क़ाइदह जारी किया, और वारन हेस्टिंग्ज़ने हिन्दुस्तानका पहिला गवर्नर जेनरल मुक़र्रर हुआ. इसने इन्तिज़ामकी दुरुस्तीके लिये दीवानी अ़दालतें मुक़र्रर कीं, महसूलका भी अच्छा बन्दोबस्त किया, और कौन्सिल क़ाइम की.

ईसवी १७७१ [वि० १८२८ = हि० ११८५] में तुक्काजी राव हुल्कर और महादजी सेंधियाने शाह आ़लमको दिल्लीकी गद्दीपर बिठादिया, और इलाहाबाद व कोडेका इलाक़ह अपने नाम लिखवालिया, और अंग्रेज़ोंने बादशाहपर यह दोष लगाकर, कि तुम मरहटोंसे मिलगये हो, ये दोनों .इलाक़े ज़ब्त करके अवधके नव्वाब शुजाउद्दौलहको ५०००००० रुपये में बेचदिये. ईसवी १७७४ [वि० १८३१ = हि० ११८८] में इन्होंने शुजा-.उद्दौलहकी मददपर चढ़कर रुहैलोंको ताबे बनाया. ईसवी १७७५ [वि० १८३२ = हि० ११८९] में शुजाउद्दौलह मरगया, और उसका बेटा आसिफ़ुद्दौलह गद्दीपर बैठा, उस समय कौन्सिल वालोंने इसके बापके वक्तके अ़हद व पैमान जारी रखनेके लिये बनारसका .इलाक़ह और २६००००) रुपया माहवार फ़ौज ख़र्चके लिये लेना चाहा, जो आसिफ़ुद्दौलहको मज्बूरन् मन्ज़ूर करना पड़ा.

वाला बाजीराव पेश्वाके मरने बाद नारायणराव पेश्वाको मारकर उसका चचा रघुनाथराव पेश्वा गद्दीपर बैठा, और बम्बईमें अंग्रेज़ोंको साल्सेटीका टापू और बसईका बन्दर देकर उनसे मदद चाही, परन्तु कलकत्तेकी कौन्सिल वालोंने मदद देना कुबूल न किया, तब ईसवी १७७६ [वि० १८३३ = हि० ११९०] में साल्सेटीका टापू रखकर बसईका दावा छोड़दिया. पेश्वाओंके सम्बन्धका हाल मरहटोंकी तवारीख़में लिखा जावेगा.

ईसवी १७७८ [वि० १८३५ = हि० ११९२] में फ़्रांस और इंग्लैण्डके दर्मियान लड़ाई होजानेके कारण फ़्रांसीसियोंके स्थान चन्द्रनगर, पौंडिचेरी, करिकल, मछली बन्दर और माही कुछ समयके लिये अंग्रेज़ोंने छीन लिये.

जब मरहटोंने हैदरअ़लीपर चढ़ाई की, तो उसने अगली शर्तोंके मुताबिक़ अंग्रेज़ोंसे मदद चाही, परन्तु मदद न मिलनेपर ईसवी १७८० [वि० १८३७ = हि० ११९४] में बड़े लश्करके साथ मद्रासके पास चढ़ाई की, और अंग्रेज़ोंको शिकस्त दी, लेकिन् कलकत्ता व बम्बईकी मदद आजानेसे लड़ाई दूर होगई, और अख़ीरमें हैदरअ़लीकी पूरी हार हुई. इसी सालमें हैदरअ़ली गुज़रगया, और उसका बेटा टीपू गद्दीपर बैठा. इस समय फिर अंग्रेज़ोंसे कुछ दिनोंतक लड़ाई हुई, परन्तु अख़ीरमें अ़हद्‌नामह होगया, और इसी अ़रसहमें फ़्रांस और इंग्लिस्तान वालोंमें भी सुलह होगई.

बनारसके राजा चेतसिंहसे बाईस लाख रुपया सालानह लेना ठहराकर अंग्रेज़ोंने इलाक़ह बनारसकी बहालीका अ़हद्‌नामह करदिया, लेकिन् उसके दीवान बाबू औसानसिंहके बहकानेसे ख़ज़ानहके लालचमें आकर वारन हेस्टिंग्ज़ने चेतसिंहको तंग करके अ़हद्‌नामहके अ़लावह बहुतसा रुपया लेनेपर भी सन्तोष न किया, और फ़ौज लेकर बनारसपर चढ़ाई की, परन्तु राजाने कुछ भी सामना न किया. इसपर भी वह उसके साथ बुरी तरहसे पेश आया, तब राजाके नौकरोंने नाराज़ होकर कई अंग्रेज़ी सिपाहियोंको क़त्ल करडाला, और अख़ीरमें अपने लश्करकी हार देखकर चेतसिंह ग्वालियरको भागगया. वारन हेस्टिंग्ज़ने बनारसकी गद्दीपर उसके भान्जे महीप नारायणसिंहको बिठाया.

वारन हेस्टिंग्ज़को द्रव्यका इतना लालच था, कि वह भले बुरे और इन्साफ़ की ओर कुछ भी निगाह नहीं रखता था, और धनके लिये लोगोंको दुःख देनेमें कमी नहीं करता था. अवधकी बेगमपर उसने यह दोष लगाकर, कि उसने चेतसिंहको मदद दी थी, क़रीबन् १०००००००) रुपया बेगमसे लिया.

ईसवी १७८६ [वि० १८४३ = हि० १२००] में जब वारन हेस्टिंग्ज़ इस्तेफ़ा देकर विलायतको गया, तो वहां उसपर पार्लिएमेण्टसे रअ़य्यतके साथ ज़ुल्म और

बेरहमीका बर्ताव करने वग़ैरहका दोष लगाया गया, और क़रीब ७ वर्षतक मुक़द्दमह चलता रहा, जिसमें उसका सब धन बर्बाद होकर वह ग़रीबीकी हालतको पहुंचगया, और कोर्ट ऑफ़ डाइरेक्टर्सकी तरफ़से उसका गुज़ारा चला.

.ईसवी १७८६ [वि० १८४३ = हि० १२००] में लॉर्ड कॉर्नवालिस हिन्दुस्तान का गवर्नर जेनरल होकर कलकत्तेमें आया. .ईसवी १७८९ [वि० १८४६ = हि० १२०३] में टीपूने त्रावणकोरके राजापर चढ़ाई की, तब अहदनामहके मुताबिक़ अंग्रेज़ोंने हैदराबादके नव्वाब निज़ामुल्मुल्क, और पेश्वाओंसे आपसमें मदद देनेका क़ौल क़रार करके मैसोरपर चढ़ाई की. कई जगह लड़ाइयां होते होते .ईसवी १७९२ [वि० १८४९ = हि० १२०६] में मैसोरकी राजधानी श्रीरंगपट्टनमें पहुंचकर उन्होंने टीपूपर हमलह किया. अख़ीरमें टीपूने हारकर अपने दो बेटोंको ओलमें अंग्रेज़ोंके हवाले किया, और लड़ाई ख़र्चके तीन करोड़ तीस लाख रुपये और आधा मुल्क अंग्रेज़ों, नव्वाब और मरहटोंको देकर सुलह करली.

.ईसवी १७९३ [वि० १८५० = हि० १२०७] में अंग्रेज़ों और फ़्रांसीसियोंमें फिर लड़ाई शुरू हुई, तो पौंडिचेरी वग़ैरह .इलाक़ोंपर अंग्रेज़ोंने क़बज़ह करलिया. लॉर्ड कॉर्नवालिसने बंगाल और बनारसमें ज़मींदारोंको इस्तमरारी पट्टा करके अदालतोंका उम्दह इन्तिज़ाम किया.

.ईसवी १७९३ [वि० १८५० = हि० १२०७] में सर जॉन शोर हिन्दुस्तान का गवर्नर जेनरल नियत हुआ. .ईसवी १७९७ [वि० १८५४ = हि० १२११] में नव्वाब वज़ीर आसिफ़ुद्दौलह मरगया, और वज़ीरअली गद्दीपर बैठा, परन्तु पीछेसे मालूम हुआ, कि यह अस्ली बेटा नहीं है, तब सर्कारने उसको ख़ारिज करके आसिफ़ुद्दौलह के भाई सआदतअलीख़ांको उसकी गद्दीपर बिठादिया, और उससे ७६००००० रुपया सालानह फ़ौज ख़र्च और इलाहाबादका क़िला देनेका इक़्रार लिखवालिया.

.ईसवी १७९८ [वि० १८५५ = हि० १२१२] में अर्ल ऑफ़ मॉर्निंग्टन (मार्किस ऑफ़ वेलेज़्ली) हिन्दुस्तानका गवर्नर जेनरल होकर आया.

मैसोरके नव्वाब टीपूने अंग्रेज़ोंसे संधि करली थी, परन्तु वह .फ़्रांसीसियोंसे पोशीदह तौरपर ख़त किताबत रखता था, इसलिये गवर्नर जेनरलने इस बातसे नाराज़ होकर टीपूको लिखा, कि आगेके लिये एक अहदनामह इस मज़्मूनका लिखदो, कि .फ़्रांसीसियोंसे किसी बातका सम्बन्ध नहीं रक्खेंगे, और जो .फ़्रेंच लोग तुम्हारे मुल्कमें हैं उनको एक दम निकाल दो; परन्तु टीपूने उसका कुछ ख़याल न किया, तब अंग्रेज़ोंने उसके मुल्कपर हमलह किया, और हैदराबादका नव्वाब भी अंग्रेज़ोंका

मददगार बना रहा, ईसवी १७९९ ता० ४ मई [वि० १८५६ वैशाख कृष्ण ऽऽ = हि० १२१३ ता० २८ ज़िल्क़ाद] को क़िला श्रीरंगपट्टन लेलिया, और टीपू लड़ाईमें मारागया. यहांपर बहुतसी बन्दूकें, तोपें, और ख़ज़ानह अंग्रेज़ोंके हाथ लगा. उसका मुल्क कुछ तो अंग्रेज़ोंने अपने क़बज़हमें रखलिया, और कुछ मैसोरके पुराने ख़ानदानके किसी वारिसको गद्दीपर बिठाकर उसके सुपुर्द करदिया, और उसके मुल्कमें अंग्रेज़ी फ़ौज रखने और ज़ुरूरतके वक्त अंग्रेज़ोंकी तरफ़से इन्तिज़ाम करनेका अह्दनामह लिखवालिया.

तंजावर वाले राजाके निःसन्तान मरनेपर जब उसके दत्तक पुत्र और भाईके बीचमें गद्दीकी बाबत् लड़ाई शुरू हुई, तो अंग्रेज़ोंने गद्दी तो उसके बेटेको देदी, परन्तु कुछ पेन्शन मुक़र्रर करके मुल्क अपने क़बज़हमें करलिया.

सूरतका नव्वाब मरा, तो वहांपर भी इसीतरह पेन्शन देना क़बूल करके मुल्कको अपने तह्तमें लेलिया.

ईसवी १८०१ [वि० १८५८ = हि० १२१६] में करनाटकपर भी इसीतरह अंग्रेज़ोंका दख़्ल होगया.

अवधका नव्वाब सआदतअलीख़ां फ़ौज ख़र्च न देसका, इस सबबसे इन्होंने दबाव डालकर रुहेलखण्डपर क़बज़ह करलिया.

फ़र्रुख़ाबादके नव्वाबको भी पेन्शनदार बनालिया, और पेश्वाओंसे अंग्रेज़ी फ़ौज अपने मुल्कमें रखनेका अह्दनामह लिखवालिया.

सेंधिया और नागपुरके राजासे भी ऐसाही अह्दनामह कराना चाहा, परन्तु उनके नामन्ज़ूर होनेसे दोनों मुल्कोंपर ईसवी १८०३ [वि० १८६० = हि० १२१८] में चढ़ाई हुई, इसमें अहमदनगर और भड़ोच अंग्रेज़ोंके क़बज़हमें आये. उधर लॉर्ड लेकने अलीगढ़में सेंधियाकी फ़ौजको शिकस्त दी. लसवारी मक़ाममें मरहटोंकी ऐसी शिकस्त हुई, कि सेंधियाकी ताक़त टूटगई. अहमदनगर छीन लेनेके बाद दक्षिणमें भी मरहटोंकी शिकस्त होती रही, और बुर्हानपुर, आसीरगढ़ और गाविलगढ़ अंग्रेज़ोंके क़बज़हमें आये. नागपुरके राजाका बाईका क़िला भी ज़ब्त करलिया, और कटकका इलाक़ह लेकर उससे सुलह करली. अहमदनगर और भड़ोच खोकर सेंधियाने फ़्रांसीसियोंको न रखनेका इक़ार करलिया. इन्दौरका राजा जशवन्तराव हुल्कर सर्कारी इलाक़हमें लूटमार करता था, इसलिये उसपर भी चढ़ाई की. कर्नेल् मॉनूसनने टोंकका क़िला फ़त्ह करलिया, परन्तु मुकन्दरा घाटेमें अंग्रेज़ोंकी हार होनेसे हुल्करने बहुत जोशमें आकर २०००० सेनासे दिल्लीको जाघेरा, मगर ऑक्टरलोनीने मरहटोंको पराजय किया, और ऐसी ही डीगमें भी अंग्रेज़ोंकी फ़त्ह हुई. लॉर्ड लेकने

फ़र्रुख़ाबादके पास हुल्करको ऐसी शिकस्त दी, कि उसको भरतपुरकी राजधानी डीगमें जाकर शरण लेनी पड़ी. अंग्रेज़ोंने पीछा किया, और हुल्करको पनाह देनेके कारण भरतपुर वालोंको सज़ा देनेके लिये डीगका क़िला फ़त्ह करके लेलिया. ईसवी १८०५ ता० ३ जैन्युअरी [वि० १८६१ पौष शुक्ल २ = हि० १२१९ ता० १ शव्वाल] को लेकने भरतपुर पर घेरा डाला, और चार दफ़ा बड़ी बहादुरीके साथ हमलह किया, परन्तु ३००० से ज़ियादह आदमी मारेगये और क़िला फ़त्ह न हुआ, तब वापस लौटना पड़ा. इसके बाद खुद राजा रणजीतसिंहने अपने बेटे रणधीरसिंहको क़िलेकी कुंजी देकर लॉर्ड लेकके पास भेजदिया, जिसने बड़ी ख़ातिरदारीके साथ कुछ फ़ौज ख़र्च लेकर सुलहका अह्दनामह करलिया. लॉर्ड वेलेज़्लीकी यह पॉलिसी थी, कि देशी राजाओंको कमज़ोर करके कम्पनीका मुल्क बढ़ाया जावे, परन्तु लड़ाइयोंका ख़र्च ज़ियादह होनेके सबब कम्पनीके मेम्बर इस कार्रवाईसे कुछ नाराज़ होगये.

ईसवी १८०५ [वि० १८६२ = हि० १२२०] में लॉर्ड कॉर्नवालिस दूसरी दफ़ा हिन्दुस्तानका गवर्नर जेनरल नियत होकर आया. इसकी पॉलिसी लड़ाई करनेसे विरुद्ध थी, परन्तु वह इसी साल ग़ाज़ीपुरमें मरगया, तब उसकी जगह सर ज्यॉर्ज बार्लो हिन्दुस्तानका गवर्नर जेनरल नियत होकर आया, जिसने सेंधियासे सुलह करली, हुल्करसे भी अह्दनामह किया, और जयपुर व बूंदीकी रक्षा करना छोड़कर उनको मरहटोंका शिकार बनादिया.

ईसवी १८०६ [वि० १८६३ = हि० १२२१] में मद्रासके सिपाहियोंने वेलूरमें ग़द्र किया, और कितनेएक अंग्रेज़ मारेगये.

ईसवी १८०७ [वि० १८६४ = हि० १२२२] में लॉर्ड मिन्टो गवर्नर जेनरल नियत होकर आया, और ईसवी १८१२ [वि० १८६९ = हि० १२२७] में कालिंजरका क़िला उसके हाथ लगा.

इस समय जबकि फ्रांसके नामी बादशाह नेपोलियन बोनापार्टने अपना वकील ईरानके बादशाहके पास भेजा, तो अंग्रेज़ोंने भी पंजाब, अफ़्ग़ानिस्तान, और ईरानके बादशाहोंसे संधि करना मुनासिब समझा, और पंजाबके राजा रणजीतसिंहसे ईसवी १८०९ [वि० १८६६ = हि० १२२४] में दोस्तीका अह्दनामह होगया. अफ़्ग़ानिस्तानके अमीर शुजाउल्मुल्कके पास लॉर्ड मिन्टोने मॉन्स्टुअर्ट एलिफ़िन्स्टनको भेजा, और ईरानके बादशाहके पास भी विलायतका वकील गया.

ईसवी १८१४ [वि० १८७१ = हि० १२२९] में लॉर्ड मॉइरा (मार्किस ऑफ़ हेस्टिंग्ज़) हिन्दुस्तानका गवर्नर जेनरल होकर आया. जब नयपाली लोग

अपना मुल्क बढ़ाते बढ़ाते अंग्रेज़ी सर्हदकी तरफ़ आने लगे, तो अंग्रेज़ोंको उनसे लड़ाई करना फ़र्ज़ हुआ, और इसी वर्षमें जेनरल जिलेस्पीने कलंगा नामी क़िलेपर हमलह किया, परन्तु वह तो वहीं मारागया, और फ़ौज शिकस्त खाकर वापस आई. इसी तरह जेतक और पालपा नामके क़िलेपर फ़ौज गई, उसको भी शिकस्त मिली. फिर जेनरल मारलो काठमांडूपर हमलह करनेको गया, परन्तु वह भी पीछा चला आया. यह हाल देखकर जेनरल ऑक्टरलोनीने नयपालियोंपर चढ़ाई की, और नालागढ़का क़िला ख़ाली करवाकर कई जगह नयपालियोंको शिकस्त दी, और अख़ीरमें अ़ह्दनामह होकर अंग्रेज़ोंका गयाहुआ मुल्क वापस उनके हाथमें आनेके अ़लावह काठमांडूमें सर्कारी रेज़िडेण्टका रहना क़रार पाया.

इस समय पिंडारी नामके लुटेरोंने मध्य हिन्दुस्तानमें ऐसा उपद्रव मचाया, कि सर्कार को इन लोगोंकी सज़ादिहीके लिये फ़ौज भेजनी पड़ी. इन पिंडारियोंके सर्दार अमीरख़ां ने भी बहुतसी सेना व तोपख़ानह एकट्ठा करलिया था, जिससे गवर्मेण्टने अपनी फ़ौज के १२०००० आदमियोंसे दो तर्फ़ा हमलह किया, और उनको ऐसा दबाया, कि अमीरख़ांने अपनी लुटेरी फ़ौजको दूर करनेका अ़ह्दनामह इस शर्तपर लिखदिया, कि टोंकका .इलाक़ह उसका बना रहे; और बाक़ी दो सर्दारों याने करीम और चीतूमेंसे करीम तो अंग्रेज़ोंकी पनाहमें चला आया, और चीतू जंगलमें शेरके हाथसे मारागया.

ईसवी १८१७ [वि० १८७४ = हि० १२३२] में मरहटोंने फिर सिर उठाया. इस वक़ भी अंग्रेज़ोंको मरहटोंसे लड़ना पड़ा और महीदपुरकी लड़ाईमें उन्हें शिकस्त देकर उनके क़बज़हका मुल्क अंग्रेज़ी मुल्कके साथ मिलालिया, और पेश्वाको ८००००० आठ लाखकी पेन्शनपर बिठूरमें रक्खा.

इन्हीं दिनों राजपूतानहमें भी कई अ़ह्दनामे हुए.

.ईसवी १८२३ [वि० १८८० = हि० १२३८] में मार्किस ऑफ़ हेस्टिंग्ज़ विलायतको गया, और उसकी जगह लॉर्ड एम्हर्स्ट आया. इस समय ब्रह्मा वालोंने अराकान, मणिपुर (मनीपुर) और आसामका मुल्क दबाकर कछारपर हमलह किया, इससे अंग्रेज़ोंको कछारकी मददपर जाना पड़ा. दो बरसतक लड़ाई होनेके बाद यंडाबूमें सुलहनामह हुआ; जिससे आवाके राजाने आसामका दावा छोड़दिया और अराकान व तनासरिम भी अंग्रेज़ोंके क़बज़हमें आगये.

.ईसवी १८२५ [वि० १८८२ = हि० १२४०] में भरतपुरके राजा बलवन्त-सिंहको उसके चचेरे भाई दुर्जनशालने गद्दीकी बाबत बखेड़ा डालकर ख़ारिज करादिया,

और आप गद्दीपर बैठकर डीगमें फ़ौज एकट्ठी करने लगा, तब अंग्रेज़ोंने ईसवी १८२७ ता० १८ जैन्युअरी [वि० १८८३ माघ कृष्ण ५ = हि० १२४२ ता० १९ जमादियुस्सानी] में सुरंगोंसे भरतपुरका क़िला तोड़कर उसे क़ैद कर बलवन्तसिंहको गद्दीपर बिठादिया.

लॉर्ड एम्हर्स्टके विलायत चलेजानेपर लॉर्ड बेंटिंक गवर्नर जेनरल नियत होकर आया. इसके समयमें सतीका रवाज बन्द हुआ, कुडक (कुर्ग) का मुल्क अंग्रेज़ी अमल्दारीमें मिलाया गया, और सर्कारी ख़र्चमें कमी कीगई.

ईसवी १८३५ [वि० १८९२ = हि० १२५१] में जब लॉर्ड बेंटिंकने अपना काम छोड़दिया, तो लॉर्ड मेट्कॉफ़ थोड़े रोज़तक गवर्नर जेनरलके कामपर रहा, जबतक कि लॉर्ड ऑक्लैंड गवर्नर जेनरल नियत होकर हिन्दुस्तानमें नहीं आया.

ईसवी १८३७ [वि० १८९४ = हि० १२५३] में लखनऊकी गद्दीकी बाबत् बेगमने फ़साद खड़ा किया. इसलिये अंग्रेज़ोंने हक़दारको गद्दीपर बिठाकर बेगमको क़ैद करके चुनारगढ़में भेजदिया. इसी अरसहमें सिताराके राजाने अंग्रेज़ोंके बर्ख़िलाफ़ कार्रवाई शुरू की, जिससे वह क़ैद कियाजाकर बनारसको भेजदिया गया, और उसका भाई सितारेका मालिक बनाया गया.

इन्हीं दिनोंमें शाह शुजाअको अफ़ग़ानिस्तानकी गद्दीसे उतारकर उसका भाई महमूद मालिक बन बैठा, और शुजाअ अंग्रेज़ोंकी पनाहमें आया. कुछ अरसहके बाद महमूदको गद्दीसे ख़ारिज करके उसके वज़ीरका बेटा दोस्त मुहम्मदख़ां काबुलपर क़ाबिज़ होगया, और रूसके साथ मेल मिलाप रखने लगा; तब अंग्रेज़ोंने रूसका अन्दरूनी मत्लब हिन्दुस्तानकी तरफ़ बढ़नेका समझकर शाह शुजाअको पीछा काबुलकी गद्दीपर बिठाना चाहा, और रणजीतसिंहको साथ लेकर अफ़ग़ानिस्तानपर चढ़ाई की. ईसवी १८३९ ता० ८ मई [वि० १८९६ ज्येष्ठ कृष्ण १० = हि० १२५५ ता० २३ सफ़र] को कंधारमें पहुंचकर शुजाअको गद्दीपर बिठादिया. ईसवी ता० २३ जुलाई [वि० आषाढ़ शुक्ल १२ = हि० ता० ११ जमादियुल्अव्वल] को ग़ज़्नी लेकर ईसवी ता० ७ ऑगस्ट [वि० श्रावण कृष्ण १३ = हि० ता० २६ ज़मादियुल्अव्वल] के दिन अंग्रेज़ी फ़ौज काबुलमें दाख़िल हुई, दोस्त मुहम्मद भागकर तुर्किस्तानको चलागया और शाह शुजाअको काबुलकी गद्दी हासिल हुई. यहांपर मददके लाइक़ फ़ौज छोड़कर बाक़ी अंग्रेज़ी सेना हिन्दुस्तानको चली आई. अफ़ग़ानिस्तानकी रअय्यत शाह शुजाअसे नाराज़ थी, इसलिये कई एक लोगोंने ग़द्र मचाया और दोस्त मुहम्मदका बेटा अक्बरख़ां भी बलवाइयोंके शामिल होगया. इस ग़द्रने बड़ा ज़ोर पकड़ा, यहांतक कि अंग्रेज़ी एल्ची बार्निस और सर विलिअम मेक्नॉटन

वगैरह कई अंग्रेज़ लोग क़त्ल करडाले गये. इसके बाद अंग्रेज़ोंने अक्बरख़ांसे ६ तोपके सिवा सब तोपख़ानह और ख़ज़ानह काबुलमें छोड़कर हिन्दुस्तानमें चले जानेका इक़्रार करके सुलह करली. जब अंग्रेज़ी फ़ौज वहांसे रवानह हुई तो अक्बरख़ां उनकी हिफ़ाज़तके लिये साथ चला. इस दग़ाबाज़ने रास्तेमें बलवाइयोंको इशारह करदिया, जिससे अंग्रेज़ोंपर गोलियां चलने लगीं. यह निर्दई ज़ाहिरदारीमें तो बलवाइयोंको रोकता रहा, लेकिन् काबुली बोलीमें यह कहता रहा, कि अंग्रेज़ोंका एक आदमी भी जीता न छोड़ो. आख़रकार नतीजह यह हुआ, कि उन १६५०० आदमियोंमेंसे, जो काबुल से निकले थे, सिर्फ़ एक डॉक्टर ब्रैडन जीता बचकर जलालाबादमें पहुंचा. जलालाबाद नें रॉबर्ट सेल नामी एक अफ़्सर था उसने क़िला ख़ाली न किया और अक्बरख़ांकी ६००० सेनासे न डटा. क़न्धारमें जेनरल नॉटने बाग़ियोंके दांत खट्टे किये, परन्तु ग़ज़नीमें कर्नेल् पामरके पास रसद वगैरह सामान पूरा न होनेके सबब अख़ीरमें उसे क़िला छोड़ना पड़ा और कुल लश्कर पिशावर आता हुआ रास्तेमें मारागया.

ईसवी १८४२ [वि० १८९९ = हि० १२५८] में लॉर्ड ऑक्लैंड विलायतको चलागया, और लॉर्ड एलम्बरा गवर्नर जेनरल नियत होकर हिन्दुस्तानमें आया. इसके समयमें जलालाबादके लश्करकी मदद को और अफ़ग़ानोंको सज़ा देनेके लिये अंग्रेज़ी सेना काबुलकी तरफ़ रवानह हुई और एप्रिलके महीनेमें जलालाबादको पहुंची, और ऑगस्ट में वहांसे आगे बढ़कर अक्बरख़ांकी सेनाके साथ, जिसकी संख्या १६००० थी, मुक़ाबलह किया. इसमें अंग्रेज़ोंकी फ़त्ह हुई, और सेप्टेम्बर महीनेमें अंग्रेज़ी लश्कर काबुलमें दाख़िल हुआ. शाह शुजाअ़ तो मार्च महीनेमें माराही गया था, अब अंग्रेज़ी क़ैदियों (औरत व बच्चों) को छुड़ाना बाक़ी था, जो पहिली चढ़ाईमें अक्बरख़ांके हाथ पड़गये थे. कुछ फ़ौज जो क़न्धारको गई थी वह भी ग़ज़नीका क़िला तोड़कर महमूद ग़ज़नवीके मक्बरे से सोमनाथके चन्दनके किंवाड़ (१) लेकर इसवक़ काबुलके लश्करमें आमिली, और अंग्रेज़ लोग अपने क़ैदी बाल बच्चों और मेमोंको छुड़ाकर हिन्दुस्तानमें चले आये.

ईसवी १८४३ [वि० १९०० = हि० १२५९] में जब सिन्धके अमीरोंने सिर उठाया, तो सर चार्ल्स नेपीअरने मियानी स्थानपर अमीरोंकी २०००० फ़ौजको शिकस्त देकर मीरपुरमें अपना दख़्ल जाजमाया, और अमरकोटका क़िला लेलिया. इसके बाद आहिस्तह आहिस्तह अमीर लोग भी सर्कारी क़ैदमें चलेआये और सिन्धपर सर्कारी अधिकार होगया.

इसी समय ग्वालियरमें गद्दीकी बाबत् बखेड़ा खड़ा होकर आपसमें लड़ाई

(१) हंटर साहिब लिखते हैं, कि ये किंवाड़ सोमनाथके नहीं हैं, पीछेसे नये बनाये गये हैं.

होनेलगी, तब अंग्रेज़ लोग ग्वालियर महाराजाके बचावका इश्तिहार देकर अपना लश्कर ग्वालियरमें लाये, और महाराजपुर और पनीयरकी लड़ाईमें सेंधियाके लश्करको शिकस्त देकर इस मज़्मूनका नया अह्दनामह लिखवालिया, कि महाराजा १८ वर्षके होजावें तबतक राजका काम अंग्रेज़ी रेज़िडेण्टकी सलाहसे होता रहे, और कंटिन्जेंट फ़ौज बढ़ाई जाकर उसके खर्चके लिये कुछ मुल्क अंग्रेज़ी सर्कारको देदियाजावे.

इसी सालमें लॉर्ड एलम्बराको पीछा विलायत बुलालिया, और उसकी जगह सर लॉर्ड हार्डिंग गवर्नर जेनरल नियत हुआ.

जब सिक्खोंका राजा रणजीतसिंह मरा, तो गद्दीकी बाबत् बड़ा बखेड़ा फैला, और लश्करकी ताक़त ख़ूब बढ़गई, कितनेएक राजा और सर्दार फ़ौजी आदमियोंके हाथसे मारेगये, और अख़ीरमें दिलीपसिंह गद्दीपर बैठा. ई॰ १८४५ [वि॰ १९०२ = हि॰ १२६१] में राजा लालसिंह और सर्दार तेजासिंह ६०००० आदमी और १५० तोप लेकर सतलज नदीके पार उतरे, और अंग्रेज़ी फ़ौजपर हमलह किया. सर ह्यूज़ गॉफ़ अंग्रेज़ी फ़ौजका सेनापति, और ख़ुद गवर्नर जेनरल सिक्खोंसे मुक़ाबलह करनेके लिये गये और तीन हफ्तहमें मुडकी, फ़ीरोज़ शहर, अलीवाल और सोब्राउन इन चार स्थानोंमें बड़ी बड़ी लड़ाइयां हुईं. इसमें अंग्रेज़ोंका बहुतसा नुक्सान हुआ, परन्तु अख़ीरमें अंग्रेज़ोंकी फ़त्ह होनेसे सिक्ख लोग पीछे हटगये और अंग्रेज़ी फ़ौज लाहौरमें दाख़िल हुई. अह्दनामह लिखानेके बाद दिलीपसिंहको गद्दीपर बिठाया, और जालंधर दुआब, अर्थात् सतलज और रावीके बीचका मुल्क अंग्रेज़ी ख़ालिसहमें आगया. ई॰ १८४८ [वि॰ १९०५ = हि॰ १२६४] में सर लॉर्ड हार्डिंग विलायतको गया, और उसकी जगह लॉर्ड डल्हाउसी गवर्नर जेनरल नियत होकर हिन्दुस्तानको आया.

पंजाबके इन्तिज़ाममें ख़लल होनेके सबब वहां गद्र मचगया, और दो अंग्रेज़ दग़ासे मारेगये. फिर अंग्रेज़ोंसे लड़ाई शुरू हुई. ई॰ १८४९ ता॰ १३ जैन्युअरी [वि॰ १९०५ माघ कृष्ण ५ = हि॰ १२६५ ता॰ १८ सफ़र] को चिलियांवालाकी लड़ाईमें २४०० आदमी अंग्रेज़ोंके मारेगये, लेकिन् लॉर्ड गॉफ़ने गुजरातकी लड़ाईमें सिक्खोंको पूरी शिकस्त दी, और पंजाब अंग्रेज़ी राज्यके शामिल कियाजाकर महाराजा दिलीपसिंहके लिये ५८००००) रुपया सालानह देना मुक़र्रर करके वह विलायत भेजदिया गया.

ई॰ १८५२ [वि॰ १९०९ = हि॰ १२६८] में रंगूनके अंग्रेज़ी व्यापारियोंपर ब्रह्माके राजाने ज़ियादती की, जिसपर अंग्रेज़ोंको फ़ौज भेजनी पड़ी; मर्तबान

और रंगून फ़तह करके ईसवी १८५२ ता० २८ डिसेम्बर [वि० १९०९ पौष कृष्ण २ = हि० १२६९ ता० १६ रबीउल्अव्वल] को पेगूका सूबा भी ज़ब्त करलिया गया.

ईसवी १८४८ [वि० १९०५ = हि० १२६४] में सिताराका राजा लावलद मरगया और उसका मुल्क ख़ालिसहमें शामिल कियागया. ईसवी १८५३ [वि० १९१० = हि० १२६९] में झांसीका, और इसी सालमें नागपुरका मुल्क भी अंग्रेज़ी अमल्दारी में आगया. ईसवी १८५६ [वि० १९१३ = हि० १२७२] में बद इन्तिज़ामीका वृथा दोष लगाकर अवधका मुल्क भी ख़ालिसह करलिया.

इसी साल लॉर्ड डल्हाउसीकी जगह लॉर्ड केनिंग गवर्नर जेनरल होकर हिन्दुस्तानमें आया.

ईसवी १८५७ [वि० १९१४ = हि० १२७३] में सूबे बंगालकी पल्टनको राइफ़ल नामकी बन्दूकें दीगईं, जिनके कार्तूसोंपर चरबी लगाई गई थी. कई लोगों ने यह अफ़्वाह मश्हूर करदी, कि इनपर गाय और सूअरकी चरबी लगी है. यह बात सुनकर हिन्दुस्तानकी फ़ौजने कार्तूसोंको मुंहमें लेनेसे इन्कार किया, और बहुतसा समझानेपर भी उनका सन्देह दूर न हुआ, तब बारकपुरमें १९ वीं पल्टनका नाम गवर्नर जेनरलके हुक्मसे काटदिया गया, जिससे दूसरी पल्टनवालोंके दिलमें अधिक सन्देह पैदा हुआ, और ३४ वीं पल्टनके एक सिपाहीने अपने अफ़्सरपर हथियार चलाया, जिसको दूसरे सिपाहियोंने गिरिफ़्तार न किया. इस जुर्ममें ७ कम्पनियोंके नाम एकदमसे काटदिये गये. गवर्मेंगटको यह भरोसा था, कि इस तरहपर सज़ा देनेसे ये लोग दबजायेंगे, परन्तु वे ज़ियादह बिगड़े और मेरटमें ईसवी ता० १० मई [वि० ज्येष्ठ कृष्ण १ = हि० ता० १५ रमज़ान] को ग़द्र शुरू होगया, लाइन जलादी गई, बाग़ियोंने अंग्रेज़ोंको मारना शुरू किया, और जेलख़ानेसे क़ैदियोंको छुड़ादिया; वहांसे रवानह होकर बाग़ी लोग दिल्लीको गये, वहांकी सेना भी बाग़ियोंके शामिल होगई और हज़ारहा क़ैदियोंको छुड़ादिया. इसवक़ मुसल्मानोंके दिलमें मुसल्मानी बादशाहत फिरसे क़ाइम करनेका इरादह पैदा हुआ और जगह जगह बलवा शुरू होकर कई अंग्रेज़ मए औरत व बाल बच्चोंके क़त्ल करडाले गये, ख़ज़ाने लूटे गये, क़ैदी रिहा कियेगये, छावनियां जलादी गईं, और बाग़ी लोग दिल्लीकी तरफ़ एकट्ठे होतेगये. मगर सिक्ख लोग अंग्रेज़ोंके फ़र्मांबर्दार बनेरहे, और बम्बई व मद्रासकी फ़ौज सर्कारकी मददगार बनी रही. जब कानपुरमें ग़द्र हुआ, तो बाला बाजीराव पेश्वाका पुत्र धंडुपंथ, जिसको नाना साहिब भी कहते हैं बिठूरसे आकर बाग़ियोंका सर्दार बनगया, और जेनरल ह्वीलरको जाघेरा. बाईस रोज़तक लड़नेके बाद बारूद, गोला वग़ैरह

सामान ख़त्म होजानेके सबब ह्वीलर साहिबने नाना साहिबसे बचन लेकर मोर्चा छोड़दिया, परन्तु इसने विश्वासघात करके क़रीब ७०० अंग्रेज़ों व उनके बाल बच्चों वगैरह को मारडाला. अलावह इसके फ़तहगढ़की तरफ़से जो १०० या २०० अंग्रेज़ कानपुरकी तरफ़ आते थे उनको भी क़त्ल करडाला. अवधमें वाजिदअलीशाहके बेटेने बादशाहत क़ाइम करदी, अवधके तअल्लुक़ेदार भी बाग़ियोंके शामिल होगये. इसी तरह रुहेलखण्ड भी बिगड़ा और नीमच व नसीराबादमें (१) भी ग़द्र खड़ा हुआ, हुल्कर व सेंधियाकी फ़ौजें बिगड़ी, और झांसीकी राणी भी अपना राज्य फिरसे क़ाइम करनेको उद्यत हुई.

जब इसतरह उत्तरी हिन्दुस्तानमें ग़द्र फैला, तो गवर्मेंएटने फ़ौजकशी करने का हुक्म दिया, और पांच सात हज़ार सेना दिल्लीमें .ईसवी ता० ८ जून [वि० आषाढ़ कृष्ण १ = हि० ता० १५ शव्वाल] को आपहुंची. बाग़ियोंसे लड़ाई शुरू होकर ईसवी ता० १४ सेप्टेम्बर [वि० आश्विन कृष्ण ११ = हि० १२७४ ता० २४ मुहर्रम] को शहरपर हमलह हुआ, तीन रोज़तक गली कूचोंमें लड़ाई होती रही, जिसमें हज़ारहा आदमी मारेगये. सर्कारी फ़ौजके क़िलेमें दाख़िल होते ही बादशाह वहांसे निकल भागा, परन्तु जान बचानेकी शर्तपर मए बेगम और बेटोंके क़ैदमें आगया. बादशाह वहांसे रंगूनमें भेजदिया गया और शाहज़ादोंको हडसन साहिबने गोलियोंसे मारडाला.

जेनरल हेवलॉक साहिबकी मातह्तीमें इलाहाबादसे फ़ौज रवानह हुई, और उसने .ईसवी ता० १६ जुलाई [वि० श्रावण कृष्ण १० = हि० १२७३ ता० २३ ज़िल्क़ाद] को कानपुरके पास नाना साहिबको शिकस्त दी. कानपुरसे फ़ुर्सत पाकर अंग्रेज़ी सेना लखनऊ की तरफ़ रवानह हुई, और शहरको जाघेरा. नयपालकी तरफ़से जंगबहादुर भी सात आठ हज़ार गोरखा सिपाहियोंके साथ अंग्रेज़ी दुश्मनोंको काटता हुआ लखनऊमें आपहुंचा. जो बाग़ी लोग अंग्रेज़ोंके हाथसे बचे वे तराईमें जाकर जंगली जानवरोंका शिकार बने. दिल्ली और लखनऊका शहर टूटनेसे बाग़ियोंकी हिम्मत टूटगई, और .ईसवी १८५८ [वि० १९१५ = हि० १२७४] में तमाम जगह ग़द्र दबगया, और पहिले की बनिस्बत ज़ियादहतर सर्कारी इन्तिज़ाम होगया. ग़द्र रफ़ा होनेके बाद हिन्दुस्तान का राज्य कम्पनीके हाथसे निकलकर मलिकह के आधीन होगया, और मलिकहकी तरफ़से एक इश्तिहार जारी हुआ, जिसकी नक़्ल मेवाड़के हालमें लिखेंगे.

---

(१) राजपूतानहका कुछ और मेवाड़के ग़द्रका मुफ़स्सल हाल महाराणा स्वरूपसिंहके हालमें लिखा जायेगा.

.ईसवी १८६२ के मार्च [वि० १९१८ फाल्गुन = हि० १२७८ रमज़ान] में लॉर्ड केनिंग विलायतको गया, और वहां एक महीनेके भीतर मरगया. उसकी जगह लॉर्ड एल्जिन मुक़र्रर हुआ, और वह भी .ईसवी १८६३ के नोवेम्बर [वि० १९२० कार्तिक = हि० १२८० जमादियुस्सानी] में मरगया और उसकी जगह सर (लॉर्ड) जॉन लॉरेन्स नियत हुआ.

.ईसवी १८६४ [वि० १९२१ = हि० १२८१] में भूटानसे लड़ाई हुई, .ईसवी १८६६ [वि० १९२३ = हि० १२८३] में उड़ीसामें बड़ा दुष्काल पड़ा, और अफ़ग़ानिस्तानमें दोस्त मुहम्मदके बेटोंमें लड़ाइयां हुईं, तो लॉर्ड लॉरेन्सने शेरअलीको अफ़ग़ानिस्तानका अमीर क़ुबूल किया.

.ईसवी १८६९ के जैन्युअरी [वि० १९२५ माघ = हि० १२८५ शव्वाल] में लॉर्ड लॉरेन्स विलायतको रवानह हुआ, और उसकी जगह लॉर्ड मेयो आया. इसने अम्बालामें दर्बार करके शेरअलीको अफ़ग़ानिस्तानका अमीर क़रार दिया. .ईसवी १८६९ के डिसेम्बर [वि० १९२६ मार्गशीर्ष = हि० १२८६ रमज़ान] में श्री मती मलिकह का द्वितीय पुत्र ड्यूक ऑफ़ एडिम्बरा हिन्दुस्तानकी यात्राके लिये आया.

लॉर्ड मेयोके समयमें राज्य सम्बन्धी कारोबारका कई विभागोंमें सुधारा हुआ, खेतीका महकमह जारी हुआ, और सड़क, रेल, व नहरें बढ़ाई गईं.

.ईसवी १८७२ [वि० १९२९ = हि० १२८९] में वह ऐण्डमानके टापू (कालापानी) को गया, और वहां शेरअली नामके एक अफ़ग़ान क़ैदीके हाथसे मारागया.

इसके बाद लॉर्ड नॉर्थब्रुक हिन्दुस्तानका गवर्नर जेनरल हुआ.

.ईसवी १८७५ [वि० १९३२ = हि० १२९२] में बड़ौदाका गाइकवाड़ मल्हारराव राज्य पदसे ख़ारिज कियागया.

.ईसवी १८७५-७६ [वि० १९३२ = हि० १२९२-९३] के शीत कालमें महाराणीके ज्येष्ठ पुत्र श्रीमान् प्रिन्स ऑफ़ वेल्सने हिन्दुस्तानकी यात्रा की.

.ईसवी १८७६ [वि० १९३३ = हि० १२९३] में लॉर्ड नॉर्थब्रुककी जगह लॉर्ड लिटन हिन्दुस्तानका गवर्नर जेनरल हुआ.

.ईसवी १८७७ ता० १ जैन्युअरी [वि० १९३३ माघ कृष्ण २ = हि० १२९३ ता० १५ ज़िल्हिज] को श्रीमती मलिकहके "क़ैसर हिन्द" पद धारण करनेका दिल्ली में दर्बार हुआ, जिसका पूरा हाल महाराणा सज्जनसिंह साहिबके हालमें लिखा जायेगा. इन दिनोंमें अफ़ग़ानिस्तानका अमीर शेरअली रूसवालोंसे मेल मिलाप रखनेलगा

और उसने अंग्रेज़ी वकीलको अपने मुल्कमें आनेसे रोका, जिससे उसपर फ़ौजकशी करनी पड़ी. खैबर, कुर्रम और बोलान इन तीन रास्तोंसे फ़ौज भेजी गई. शेरअली भागकर अफ़्ग़ान तुर्किस्तानको चलागया; उसके बेटे याकूबख़ांसे अहदनामह हुआ, और एक अंग्रेज़ी अफ़्सर काबुलमें रहना क़रार पाया; लेकिन थोड़े ही महीनोंमें अंग्रेज़ी रेज़िडेण्ट सर लुइस कैवग्नेरी दग़ासे मारागया, इसपर दूसरी बार फ़ौज कशी करनेकी ज़रूरत हुई.

ईस्वी १८८० [वि० १९३७ = हि० १२९७] में मार्किस ऑफ़ रिपन हिन्दुस्तानका गवर्नर जेनरल नियत हुआ. इसी सालमें क़न्धार और हेल्मण्ड नदी के बीचमें अय्यूबख़ांसे अंग्रेज़ी लश्करको हार हुई, परन्तु सेप्टेम्बर महीनेमें जेनरल सर फ़्रेडेरिक रॉबर्ट्सने अय्यूबख़ांको पूरी शिकस्त दी, और अब्दुर्रहमानख़ांको अंग्रेज़ोंकी तरफ़ से काबुलका अमीर मुक़र्रर किया, और याकूबख़ांको क़ैदी बनाकर अंग्रेज़ी लश्कर वापस लौटआया. थोड़े दिनोंमें अय्यूबख़ांने अब्दुर्रहमानख़ांको शिकस्त देकर क़न्धारपर क़बज़ह किया, परन्तु अब्दुर्रहमानने फिर लड़ाई करके दुबारह क़न्धारपर अपना क़बज़ह जमाया. ईस्वी १८८१ [वि० १९३८ = हि० १२९८] में मैसोरका राज्य, जहांका कारोबार ईस्वी १८३१ [वि० १८८८ = हि० १२४६] से अंग्रेज़ों के तअल्लुक़में था, वापस वहांके हिन्दू राजाको देदिया गया.

अलावह इसके देशी अख़्बारोंके लिये राज्य विरुद्ध मज़्मून न लिखनेका जो बन्धन था वह तोड़दिया गया. ईस्वी १८८२ [वि० १९३९ = हि० १२९९] में विदेशी मालका दाण अक्सर मुआफ़ हुआ. इस वाइसरॉयने हिन्दुस्तानियोंके फ़ायदह केलिये जितना कुछ किया उतना दूसरे किसी वाइसरॉयने नहीं किया, और यह ऐसा लोकप्रिय हुआ, कि आजतक भारतवर्षके लोग बड़े हर्षके साथ इसका स्मरण करते हैं.

ईस्वी १८८४ [वि० १९४१ = हि० १३०१] में इसकी जगह अर्ल ऑफ़ डफ़रिन हिन्दुस्तानमें आया. ईस्वी १८८५ [वि० १९४२ = हि० १३०२] में ब्रह्मामें अंग्रेज़ी व्यापारियोंसे कुछ बखेड़ा उठनेपर फ़ौजकशी हुई, और आख़िरमें ब्रह्मापर सर्कारी क़बज़ह होकर राजा थीबा गिरिफ़्तार कियाजाकर हिन्दुस्तानमें लाया-गया. इसके बाद लॉर्ड डफ़रिन भी ख़ुद ब्रह्माको गया था. ईस्वी १८८८ के डिसेम्बर [वि० १९४५ मार्गशीर्ष = हि० १३०६ रबीउस्सानी] में इसकी जगह मार्किस ऑफ़ लैन्सडाउन हिन्दुस्तानके गवर्नर जेनरल नियत हुए.

हिन्दुस्तानकी रीति भांति, ज्ञाति, और धर्म आदि विषय मेवाड़से जुदे नहीं हैं.

इसलिये यह हाल मेवाड़के जुग्राफ़ियेमें लिखनेके लिये छोड़कर अब हम संक्षेपसे राजपूतानहका जुग्राफ़ियह शुरू करते हैं:–

राजपूतानहका जुग्राफ़ियह.

सीमा–राजपूतानहके उत्तरमें पंजाब; पश्चिममें, सिन्ध व गुजरात; दक्षिणमें, महीकांठा व मालवा; और पूर्वमें, ग्वालियर व रुहेलखंड है. लम्बाई इसकी ५३० मील, चौड़ाई ४६० मील, क्षेत्रफल १३२४६१ मील मुरब्बा, और आबादी ईसवी १८८१ की गणनाके अनुसार १०७२९११४ मनुष्योंकी है.

पहाड़– अर्वली पहाड़ राजपूतानहमें सबसे बड़ा और मुख्य है. यह पहाड़ी सिल्सिलह ईशान कोणसे शुरू होकर नैऋत कोणतक चलागया है; आबू स्थानपर इसकी सबसे बड़ी चोटी गुरुशिखर है, जो समुद्रके सतहसे ५६५३ फ़ीट ऊंची है. इस पहाड़के बीचमें वाके होनेसे राजपूतानहके दो भाग होगये हैं, याने एक उत्तर-पश्चिमी और दूसरा दक्षिण-पूर्वी. उत्तर-पश्चिमी विभागके दक्षिणी प्रान्तमें कहीं कहीं छोटी छोटी पहाड़ियां हैं.

अर्वली पहाड़से दक्षिण तरफ़ विकट झाड़ियां और पहाड़ फैलकर दक्षिणमें विन्ध्याचलतक पहुंचगये हैं, और पूर्व तरफ़ छोटी छोटी पहाड़ियां हैं. अर्वलीके सिवा राजपूतानहमें दूसरा कोई पहाड़ वर्णन करनेके योग्य नहीं है.

नदियां–राजपूतानहके पश्चिमोत्तरी भागमें प्रसिद्ध नदी लूनी है, जो प्राय: २०० मील दक्षिण और पश्चिममें बहकर कच्छके रणमें चली जाती है; और सबसे बड़ी नदी चम्बल है, जो शहर कोटाके पास बहती हुई जमुनासे जामिलती है. चम्बलसे घटकर प्रसिद्ध नदी बनास है. यह मेवाड़में बहकर चम्बलमें जागिरती है. मेवाड़की दक्षिण-पश्चिम पहाड़ियोंके बीचमें पश्चिमी बनास और साबरमती निकलती हैं, लेकिन् राजपूतानहको पार करनेके पहिले यह बड़ी नहीं होतीं, इसलिये यहां ज़ियादह प्रसिद्ध नहीं हैं. माही जो गुजरातमें बड़ी नदी है, वह कुछ दूरतक प्रतापगढ़ और बांसवाड़ाके राज्योंमें बहती है.

झीलें– राजपूतानहमें बड़ी झील सांभर है, जो सांभरकी खारी झीलके नामसे प्रसिद्ध है. ढेबर (जयसमुद्र), राज समुद्र, और उदयसागर ये तीनों मेवाड़में हैं, और इनके सिवा कई एक छोटी छोटी कृत्रिम झीलें इस मुल्कमें और भी बहुतसी हैं.

क़िले – राजपूतानहमें लड़नेके लाइक़ क़िले बहुतसे हैं, जिनमें मुख्य चित्तौड़-

गढ़ और कुम्भलगढ़ मेवाड़में; रणथम्भोर जयपुरमें; और नागौर व जालौर जोधपुरमें हैं. ये पुराने और मज्बूत समझे जाते हैं.

राजपूतानहमें १८ खुद मुरूतार रियासतें याने उदयपुर, जयपुर, जोधपुर, बीकानेर, कोटा, बूंदी, टौंक, भरतपुर, करौली, जयसलमेर, सिरोही, कृष्णगढ़, डूंगरपुर, बांसवाड़ा, प्रतापगढ़, अलवर, झालरापाटन, और धौलपुर हैं, जिनमेंसे हरएकका जुग्राफ़ियह उनकी तवारीख़के शुरूमें मुफ़स्सल तौरपर दियाजायेगा, इसलिये राजपूतानहके जुग्राफ़ियहको अधिक न बढ़ाकर अब हम मेवाड़का जुग्राफ़ियह शुरू करते हैं.

रियासत मेवाड़का जुग्राफ़ियह.

इस देशकी सीमा पहिले जुदे जुदे समयोंमें जुदे जुदे ढंगसे गिनी जाती थी, जैसे किसी समयमें, पूर्वमें भेलसा व चन्देरी; दक्षिणमें रेवाकांठा व महीकांठा; पश्चिममें वीरपुर; पश्चिमोत्तरमें मंडोवर व रूण; उत्तरमें बयाना; पूर्वोत्तरमें रणथम्भोर व ग्वालियर तक थी; और किसी ज़मानहमें इससे न्यूनाधिक थी, परन्तु मरहटोंके ग़द्रमें मेवाड़के बहुतसे ज़िले मत्लबी लोगोंने दग़ाबाज़ीसे दबालिये, याने किसीने फ़ौज देनेके बहानेसे, किसीने गिरवीके तौरपर, किसीने नौकरीके एवज़ और किसीने आपसकी फूटका मौक़ा देखकर भी दबाये, जिनको छोड़कर अब हम वर्त्तमान राज्यके अधिकारमें जितना देश है उसीका वर्णन करते हैं. इससे यह नहीं जानना चाहिये, कि मेवाड़से जुदे होने वाले ज़िलोंका दावा छोड़दिया गया हो, बल्कि गवर्मेंएट अंग्रेज़ीने भी वादा किया है, कि रियासतोंके अह्दनामे बदलेजावें उस वक़्त मेवाड़का दावा सुननेके योग्य है.

(वर्त्तमान देशकी भूमिका आम तौरपर वृत्तान्त).

मेवाड़का राज्य, जो हिन्दुस्तानमें सबसे अव्वल दरजहका गिनाजाता है, राजपूतानहके दक्षिणी विभागमें वाक़े है. यह उत्तर अक्षांश २५°-५८′ से २३°-४९′-१२″ तक और पूर्व देशान्तर ७५°-५१′-३०″ से ७३°-७′ तक फैला हुआ है. इसकी लम्बाई उत्तरसे दक्षिणको १४७.६० मील और चौड़ाई पूर्वसे पश्चिम १६३.०४ मील है; और कुल विस्तार १२९२९.९ मील मुरब्बा है.

(देशका आकार).

इस रियासतकी सूरत कुछ टेढ़ी बांकी है, परन्तु यह कहाजा सक्ता है, कि यह

देश उत्तरमें अजमेरके सर्कारी ज़िलोंसे; वायव्य कोणमें अजमेरके कुछ हिस्से व मारवाड़से; पश्चिममें मारवाड़ व सिरोहीसे; नैर्ऋत्य कोणमें दांता और ईडरसे; दक्षिणमें डूंगरपुर और थोड़ासा बांसवाड़ासे; अग्नि कोणमें प्रतापगढ़ और थोड़ासा ग्वालियरसे; पूर्वमें टौंक, ग्वालियर, इन्दौर, कुछ झालावाड़ और थोड़ासा कोटा व बूंदीसे; ईशान कोणमें बूंदी और कुछ जयपुरसे घिरा हुआ है.

कोटा सिर्फ़ भैंसरोड़के पास इस राज्यके एक निकले हुए ज़मीनके टुकड़ेसे स्पर्श करता है, जिसके दक्षिणमें हुल्करका ज़िला रामपुरा है. अग्नि कोणमें कई रियासतोंके हिस्से हैं, और टौंक (१), ग्वालियर व इन्दौरकी अमल्दारीके छोटे छोटे टुकड़े चारों तरफ़ मेवाड़की भूमिसे घिरेहुए हैं. सेंधियाके थोड़ेसे गांव जो एक दूसरेसे भिन्न भिन्न दूरीपर हैं, और जिनसे गंगापुरका पर्गनह बनता है, मेवाड़के बीचो बीच हैं; सिर्फ़ पालसोड़ाका छोटा पर्गनह जो नीमचसे १२ मील अग्नि कोणमें वाके है, मेवाड़का एक ऐसा हिस्सह है, जो देशके मुख्य भागसे बिल्कुल अलग है, और इसी तरह पीपलियाका पर्गनह भी है.

रियासतके उत्तर व पूर्वी हिस्सोंमें एक ऊंचा टीला अच्छी खुली हुई नाहमवार (ऊंची नीची) ज़मीनका बहुत दूरतक फैला हुआ है, जिसका ईशान कोणका विभाग किसीक़द्र ढालू है, जैसाकि बनास और उसकी सहायक नदियोंसे मालूम होता है, जो सब नदियां अर्वली पहाड़से निकलकर पहिले चम्बल और अन्तमें जमुना व गंगाके साथ मिलकर समुद्रका रास्तह लेती हैं. इस देशमें पहाड़ियां अकेली अकेली या समूहोंमें बहुतसी हैं, और भिन्न भिन्न चौड़ाईकी छोटी छोटी पहाड़ी पंक्तियां समस्त देशमें पाई जाती हैं.

हिन्दुस्तानका बड़ा ऊंचा भाग जो बंगालेकी खाड़ीमें गिरने वाली नदियोंके बहावको खंभातकी खाड़ीमें जानेवाली नदियोंके बहावसे अलग करता है, क़रीब क़रीब मेवाड़के बीचमें होकर गुज़रता है, और एक ऐसी रेखासे दिखलाया जासक्ता है, जो पूर्वमें नीमचसे बड़ी सादड़ी होती हुई उदयपुरको, और वहांसे गोगूंदाके आस पासकी ऊंची ज़मीन व बनासके निकासों, और पश्चिममें कुंभलगढ़के बड़े पहाड़ी क़िलेके निकट होकर अर्वलीपरसे अजमेरको खेंचीजावे. ईशान कोणकी ओर झुकाव साधारण है,

---

(१) टौंकका नींबाहेड़ा तीन तरफ़ मेवाड़ और एक तरफ़ सेंधियासे मिला है; मेवाड़का कणेरा तीन तरफ़ सेंधिया और एक तरफ़ मेवाड़से मिला है; और सेंधियाका भींचोर चारों तरफ़ मेवाड़से घिराहुआ है. इसी तरह हुल्करका नंदवास और सेंधियाका जाठ, सिंगोली, और खेड़ी स्थान ज़ियादहतर मेवाड़के भीतर आगये हैं; और झालावाड़का एक गांव रूपापुर भी मेवाड़के भीतर है. इसी तरह मेवाड़का कुआखेड़ा सेंधियाकी अमल्दारीसे मिला है. मत्लब इसका यह है, कि हुल्कर, सेंधिया व टौंकके ये ज़िले अस्लमें मेवाड़के ही हिस्से हैं.

परन्तु वरावर एकसा है. उदयपुर नगर समुद्रके सत्‌हसे १९५७ फ़ीट और देवली स्थान, जो ईशान कोणके सिरेपर है, ११२२ फ़ीट ऊंचा है.

इस ऊंचे हिस्से को पार करनेके पश्चात् देशकी सूरत व शक्ल बहुत बदली हुई है, अर्थात् अच्छे खुलेहुए ऊंचे नीचे मैदानके एवज़ दक्षिण और पश्चिमका हिस्सह बिल्कुल चटानों, पहाड़ियों और घने जंगलोंसे ढकाहुआ है.

अर्वली पहाड़ जो पश्चिमी किनारेपर मेरवाड़ामें होकर गुज़रता है, रियासतके बिल्कुल नैऋत्य कोण व दक्षिणी हिस्सोंमें याने नैऋत्य कोणकी तरफ़ डूंगरपुरके किनारेपर सोमकी तराईतक, और दक्षिण तरफ़ महीकी तराईतक फैला हुआ है, और अख़ीरमें उन पहाड़ियोंके साथ मिलजाता है, जो अग्नि कोणकी ओर जाकुम नदीकी तराईके निकट विन्ध्याचलका हिस्सह बनाती हैं. देशके दक्षिणी हिस्सेका सब बहाव सिवा उसके कि, जो ढेबर (जयसमुद्र) तालाबमें रुकजाता है, जाकुम और सोम नदीमें होकर महीमें जाता है, और वहांसे खंभातकी खाड़ीमें पहुंचता है. इस तरफ़ देश बहुत नीचा होता चलागया है. सोमकी ऊंचाई, जो समुद्रके सत्‌हसे ६५० फ़ीट है उसमें ऊपर बयान कियेहुए टीलेसे २५ मीलमें ९५० फ़ीटका झुकाव है, अर्थात् एक मील पीछे क़रीब ४० फ़ीटका है; और बानसीसे धरियावदतक १७ मीलके फ़ासिलेमें ८५० फ़ीट याने फ़ी मील ५० फ़ीटका झुकाव है. इस प्रकार झुकावका एक-बारगी बढ़जाना बेशक मुल्कके इस पेचीदह पहाड़ी टुकड़ेका कारण है. पहिले यह हिस्सह १० या १२ मीलतक थोड़ा बहुत जंगलसे ढकाहुआ है, और पहाड़ियां क़रीब क़रीब बराबर ऊंचाईकी हैं, लेकिन् दक्षिणकी तरफ़से पहाड़ी सिल्सिले ऊंचे होते चलेगये हैं, या यह कि घाटियां नीची होती जाती हैं, और ऊपरी हिस्सेकी अपेक्षा जंगल अधिक सघन है. इस नाहमवार (ऊंचे नीचे) हिस्सेको पार करने और सोमके पासवाली धरतीमें पहुंचनेके बाद धरती बहुत खुलीहुई है, जिसमें बहुतसे गांव हैं, और खेती वाड़ी भी भली भांति होती है. रियासतके दक्षिणका यह जंगली भाग "छप्पन" के नामसे प्रसिद्ध है.

मेवाड़के पश्चिम तरफ़की समस्त पहाड़ी भूमि, दक्षिणमें डूंगरपुरकी सीमासे उत्तरमें सिरोही व मारवाड़की हद्‌तक मगरा कहलाती है. इस हिस्सेमें अर्वली का सबसे चौड़ा भाग आगया है, और यद्यपि दक्षिणी पंक्तिकी चोटी उत्तरकी चोटियोंसे बहुत कम ऊंची हैं तिसपर भी इस तरफ़ धरतीके एकबारगी नीची होजा-नेके कारण घाटियोंके ऊपरकी पहाड़ियोंकी ऊंचाईमें अधिक भेद नहीं है.

गोगूंदा जो उदयपुरसे वायव्य कोणमें क़रीब १६ मील दूर और समुद्रके सत्‌हसे

२७५० फ़ीट ऊंचा है, इससे अग्नि कोणकी तरफ़ आते हुए उदयपुर १९५७ फ़ीट उसके बाद ढेबर झील ९६० फ़ीट, और सोमके पासवाला हिस्सा समुद्रसे ६५० फ़ीट ऊंचा पायाजाता है. गोगूंदासे सोमतक लगभग ६५ मीलका अंतर है, जिसमें फ़ी मील ३२ फ़ीटका ढाल है.

इसके बाद ठीक दक्षिण तरफ़ खैरवाड़ाकी छावनीतक, जो १००० फ़ीटके लगभग समुद्रसे ऊंची है, ५३ मीलमें फ़ी मील ३३ फ़ीटका ढलाव है. कोटड़ाकी छावनीसे (१) नैर्ऋत्य कोणकी ओर ईडरमें केरके बंगलेतक, जो साबरमतीकी एक शाखापर है, फ़ी मील ३५ फ़ीटसे अधिक ढाल है. पश्चिम और वायव्य कोणका ढाल फिर भी बे ठिकाने है, क्योंकि वीरवाड़ा गांव, जो सिरोहीमें पिंडवाड़ाके पास है वह गोगूंदासे सिर्फ़ ३३ मील दूर और १५२५ फ़ीट नीचे है, जिससे फ़ी मील ४६ फ़ीटका ढाल साबित है; और गोड़वाड़के गांव बेड़ातक २८ मीलमें १६३५ फ़ीटका ढाल है, जो फ़ी मील ५८ फ़ीटसे अधिक है. मेवाड़के पश्चिमी हिस्सहका बहाव दक्षिण की ओर है, जिसमें खम्भातकी खाड़ीमें गिरने-वाली साबरमती नदीके मुख्य सोते हैं.

पश्चिमी पहाड़ियोंमेंसे दो नदियां निकलती हैं, याने पहिली गोराई जो वायव्य कोणकी तरफ़ ऐरनपुरसे बढ़कर लूनीमें गिरती है, और दूसरी छोटी बनास, जो नैर्ऋत्य कोणकी ओर चलकर कच्छके रणमें गिरती है.

(भूमि रचना).

कप्तान सी० ई० येट् साहिब राजपूतानहके गज़ेटिअरमें लिखते हैं, कि मध्य अर्वलीका विस्तार केवल संक्षेपमें शीघ्रता पूर्वक देखागया है, और इसके विषयमें इतना कम जानागया है, कि बनावटका बयान विधिपूर्वक नहीं होसक्ता. इस पहाड़ी श्रेणीकी सामान्य प्रकृति इसकी अस्ल बनावट है, ग्रेनिट (कड़ा पत्थर) गहरे नीले रंगके स्लेट (२) पत्थरके गढ़े और भारी चटानोंके ऊपर भिन्न भिन्न झुकावोंपर ठहरा हुआ है; (झुकाव नीचेको प्रायः पूर्वकी ओर है). भीतरी घाटियोंमें कई प्रकारके क्वार्ट्ज़ (Quartz) (३) पत्थर और प्रत्येक रंगके स्लेट बहुत कस्रत से हैं; बीच बीचमें नीस (Gneiss) (४) और साइनाइट (Syenite) के चटान

(१) यहांकी ऊंचाई १०३३ फ़ीट है.

(२) इस पत्थरकी तख़्तियां आसानीसे अलग अलग होसक्ती हैं. यह पत्थर छतके काममें अधिक लायाजाता है.

(३) यह बिल्लौरी याने चमकीला पत्थर है. इसमें सब क़िस्मके बिल्लौरी पत्थर गिनेजाते हैं.

(४) यह एक क़िस्मका बिल्लौरी पत्थर है, जो अभ्रक वग़ैरह कितनेएक पदार्थोंका बनाहुआ होता है.

मालूम होते हैं. इस पहाड़ी सिल्सिलेमें गहरी घाटियों वाली चटानोंकी पंक्ति है, जहांपर सबसे नीचेवाले चटान बहुधा नीसके पाये जाते हैं, और छोटी पहाड़ियोंपर केवल ऊपरी चटान पायेजाते हैं. जो तह खैरवाड़ाके दक्षिणसे आरंभ होता है उसमें रेतीला पत्थर, हौर्न स्टोन (१) पौरफ़िरी (२) (Hornstone Porphyry) जो खैरवाड़ामें देखागया है, ग्रेनिट, नीस, जावरके निकट अभ्रककी मिट्टी और क्लोराइट स्लेट, (अर्थात् ऐसा स्लेट जिसमें क्लोरिनका अंश पायाजाता है.) और फिर उदयपुरके पास ग्रेनिट क्रमसे पायाजाता है. खैरवाड़ाके निकट और जावरके आस पास नीले और लाल मार्ल (Marls) (३) और सड़ी मिट्टीके पत्थर बहुत पाये जाते हैं.

मेवाड़में मकान बनानेके लिये नीचे लिखे प्रकारके पत्थर निकाले जाते हैं:-

ज्वालामुखीकी चटानोंमेंसे सामान्य डोलेराइट (Dolerite) और बासाल्ट (Basalt) उदयपुरके निकट बहुत पाये जाते हैं. २० फ़ीटकी पट्टियां मटांटकी खानसे और १४ फ़ीटतक बांसदरा पहाड़ (सज्जनगढ़) की खानसे निकलती हैं. राजधानीकी बहुतसी .इमारतें इसीसे बनती हैं; ट्रैपिअन चटान देवी माताके निकट थोड़ीसी पुरानी खानोंमें पाये जाते हैं, जो उदयपुरसे कुछ मील दूर है. पुरोहितजीके तालाबका बंध, जो एकलिङ्गजीकी सड़कपर चीरवाके घाटेके निकट इस पत्थरका बना है, इस पत्थरकी दृढ़ताका सुबूत है. नीमचकी सड़कपर उदयपुरसे १६ मील दूर ग्रेनिटका एक पेटा ६ मील लम्बा और एक मील चौड़ा है, परन्तु वहांकी खानें इस कारणसे छोड़दी गई हैं, कि पत्थर जो ठोस और नीले रंगका है, उसके निकालनेमें अधिक व्यय और कठिनता पड़ती है. पानीसे बने हुए चटानोंमें रेतीले पत्थरके ढोंके हैं, जो ढेबरकी पालमें भरे गये हैं. यह रेतीला पत्थर दो रंगका है, एक तो गुलाबी और दूसरा हल्के हरे रंगका याने सब्ज़ा; और पहिला दूसरेकी अपेक्षा अधिक सरलतासे टूटता है. इसमें क्वार्ट्ज़के कंकर मटरके बराबरसे लेकर अंडेके बराबर होते हैं; मेवाड़में रेतीला पत्थर बहुतायतसे पाया जाता है, मुख्य करके ढेबरके नज़्दीक और देबारीकी पहाड़ियोंमें, परन्तु देबारीका इतना नरम होता है, कि बहुत कामका नहीं है. मांसके समान गुलाबी रंगका पत्थर जिससे चक्की बनाईजाती है, महुवाड़ा और ढीकली गांवोंमें पायाजाता है, और उसके बनानेमें बहुत लोगोंकी रोटियां चलती हैं.

---

(१) यह चमककी क़िस्मका जल्दी टूटने वाला पत्थर है.

(२) संग समाक़ (एक क़िस्मका कड़ा पत्थर).

(३) यह पत्थर मिट्टी व रेत वग़ैरहसे बना हुआ होता है.

कंकर पहाड़ोंमें नहीं पायाजाता, परन्तु मेवाड़के मैदानोंमें बहुत मिलता है. कुछ आस्मानी और सिफ़ेद रंगका ठोस पत्थर जिससे चूना बनता है, उदयपुरसे क़रीब क़रीब दो मील के फ़ासिलेपर मिलता है, और उसपर अच्छी घुटाई होसक्ती है. अच्छा सिफ़ेद रंगका पत्थर राजनगरमें बहुत निकलता है. इसी संगमरमरसे वहां राजसमुद्रकी पाल बंधी है, और उसको जलानेसे चूना बनता है, जो बहुत चमकदार होता है, और राजधानीमें बहुतसे कामोंमें लगाया जाता है. संग मूसा (काला पत्थर) चित्तौड़में पायाजाता है और वैसाही अच्छा होता है.

हलके पीले रंगके पत्थर पहाड़ोंमें बहुत मिलते हैं. कार्ट्ज़ समस्त रियासतमें बहुतसा मिलता है. जिस पहाड़ी चटानके ऊपर राजधानीके महल बने हैं उसके भीतर उसकी एक गहरी तह है. परसाद और उदयसागरकी पहाड़ियां भी कार्ट्ज़की हैं.

मिट्टीका स्लेट पत्थर बहुत मिलता है, यह काले रंगका और एक चौथाईसे एक इंच तक मोटा होता है. ऋषभदेव और खैरवाड़ाके बीचमें मैला, सब्ज़ा और सर्पके बदन-पर जैसे दाग़ होते हैं वैसे दाग़वाला पत्थर निकलता है, जिसकी मूर्त्तियां और पियाले आदि बनाये जाकर यात्रियोंके हाथ बेचेजाते हैं, और इसीसे खैरवाड़ेका नया गिरजाघर बना है. शिस्ट पत्थर (Schist) मेरवाड़ा और खैराड़के पहाड़ी ज़िलोंमें बहुत मिलता है. मगरोंमें नीस बहुत हैं. जावरके पांच मन्दिर और तालाब इस नीस पत्थरके ही बने हैं, जो टीड़ीकी खानोंसे लायागया था; इसके सिवा जयसमुद्र (ढेबर) की पाल तथा ऋषभदेवके मन्दिर भी इसी पत्थरसे बने हैं, जो जयसमुद्र से १६ मील दूर बरोड़ाकी खानसे लायागया था.

(पहाड़ और पहाड़ियोंकी पंक्ति).

अर्व्वली पहाड़ मेवाड़में बहुत दूरतक फैलाहुआ है. यह अजमेरसे मेरवाड़ा होकर दिवेरके (१) निकट आ निकला है. यहां समुद्रके सत्हसे २३८३ फ़ीट ऊंचा, और थोड़े ही मील चौड़ा है, और वहांसे नैर्ऋत्य कोणमें मारवाड़के किनारे किनारे जाकर धीरे धीरे बड़ा होगया है, कुम्भलगढ़पर ३५६८ फ़ीट ऊंचा होगया है, और जर्गा पहाड़ीपर, जो गोगूंदासे १५ मील उत्तरको है, ४३१५ फ़ीटकी ऊंचाईको पहुंच-जाता है. फिर वह रियासतके नैर्ऋत्य कोण और दक्षिणी हिस्सोंके अन्ततक फैला हुआ है, जहां उसकी चौड़ाई ६० मीलके लगभग है, और ऐसा कहा जासक्ता है, कि २४° उत्तर अक्षांशसे कुछ दक्षिण तरफ़ समाप्त होजाता है. जब देशकी

(१) दिवेरके उत्तर अक्षांश २५°-२४′ है.

भूमिका रूप बिल्कुल बदल गया, अर्थात् बहुत खुला होगया है, और ठीक अर्व्वलीकी सकड़ी समानान्तर (बराबर फ़ासिले वाली) पंक्तियोंके बदले पानीके बहावसे परस्पर रगड़ खाकर चिकने और गोल बने हुए पाषाणोंकी पहाड़ियां अलग अलग पाई जाती हैं. ये समानान्तर पहाड़ी पक्तियां पश्चिम और प्रायः ईशान कोणको चली गई हैं, और धीरे धीरे दक्षिणकी ओर वहांतक मुड़गई हैं, जहांसे कि क़रीब क़रीब अग्नि कोणको चली-जाती हैं, और वहां वे अधिक टूटी हुई और प्रथक प्रथक हैं.

पश्चिमी ढालोंमें यद्यपि जंगल बहुत है, परन्तु पानी बहुत ही कम है. जीलवाड़ाकी नालमें परलोकवासी श्री महाराणा शम्भुसिंह साहिबकी बाल्यावस्थामें सड़क बननेके पहिले बड़ से (जो ब्यावर नयाशहरके निकट है) ईडरतक अर्थात् इस पूर्व और पश्चिमकी तरफ़ २५० माइलकी दूरीतक अर्व्वलीमें गाड़ियोंपर जो सौदागरी होती थी उसको एक बड़ी रोक थी.

जीलवाड़ाकी नाल जिसको लोग "पगल्या नाल" भी कहते हैं, अनुमान ४ मील लम्बी और बहुत सकड़ी है, परन्तु जीलवाड़ा गांवके पास वाले टीलेकी चोटीसे नीचेकी तरफ़, सिवा पहिले आध मीलके उतार बहुत सरल है. देसूरी (जो मारवाड़में नालके नीचे है) एक छोटी चटानी पहाड़ीके निकट गांव है, जिसके चारों ओर एक दीवार है. इस दीवारके ऊपर एक गढ़ समुद्रके सतहसे १५८७ फ़ीट ऊंचा है. देसूरीसे कुछ मील उत्तर तरफ़ "सोमेश्वर नाल" है; यह बहुत लम्बी और विकट है, इसलिये देसूरीकी नालके खुलजानेपर लोगोंने इसका अवागमन वन्द करदिया.

देसूरीसे दक्षिण ५ मीलके लगभग दूरीपर " हाथी गुड़ाकी नाल" (१) है. जो नीचेकी ओर रास्तहको क़रीब १/३ हिस्सहतक रोके हुए है, और जिसके ऊपर एक मोरचा बन्ध फाटक है, जहां मेवाड़के सिपाहियोंका एक पहरा रहता है. कुम्भलगढ़का पहाड़ी क़िला इस नालके ठीक ऊपर है, और उसको दावे हुए है, और कैलवाड़ाका क़स्बह उसके सि[illegible]रे. यह नाल कुछ मील लम्बी है, इसका पहिले ३ मीलतक झुकाव बहुत है, और दोनों तरफ़ पहाड़ियां नदीके पेटेसे क़रीब क़रीब सीधी उठी हुई हैं, किनारोंपर बहुत जंगल है, और देखनेमें अति रमणीय स्थान है. कोठारबड़से नीचला आधा हिस्सह, जहां एक कुआं और थोड़ासा खुलाहुआ मैदान है, गाड़ियोंके जानेके लाइक़ है. नालमें जो लोग लड़ाईमें मारे गये उनके बहुतसे

---

(१) ऐसा भी प्रसिद्ध है, कि महाराणा कुम्भा जब कुम्भलगढ़पर रहते थे तो उनके हाथी इस नालके नीचे रहाकरते थे, जहांपर एक छोटा गांव था जो हाथी गुड़ाके नामसे मश्हूर होगया और उसीके नामसे हाथी गुड़ाकी नाल मश्हूर हुई.

चबूतरे बने हैं, और उन मोरचोंका निशान भी कुछ कुछ अभीतक है, जिन्हें घाणेरावके ठाकुरने मेवाड़की तरफ़से बनवाया था (१), जब कि इस (उन्नीसवीं) सदी के आरम्भमें जोधपुरके महाराजा मानसिंहने उसको घाणेरावसे निकालदिया था.

भाणपुराकी नाल, जो घाणेरावसे ६ मील दक्षिणमें है, ख़ासकर राणपुरके जैन मन्दिरोंके लिये प्रसिद्ध है, और लोग ऐसा कहते हैं, कि प्राचीन नगरके स्थानमें ये बने हैं. नालसे आधी दूर ऊपरकी तरफ़ एक प्राचीन पत्थरके बन्धका कुछ भाग बचा हुआ है, जो वहां नदीके आरपार बंधाया गया था, जिसकी चोटीपरसे प्राचीन वृक्षोंके बीचके मन्दिर बड़े शोभायमान दीख पड़ते हैं.

सादड़ीके आगे और कोई अच्छी नाल नहीं है. पहाड़ियोंके बीचमें केवल पगडंडियां और बैलोंके जाने आनेके रास्ते हैं. उदयपुरसे जो सीधा मार्ग गोगूंदा होकर आबूको जाता है वह रियासत सिरोहीमें रोहेड़ा गांवके पास जानिकलता है, और पोसीनासे और कोटड़ासे भी सड़क इसकी तरफ़ आती है. रियासतके दक्षिणकी ऊंची ज़मीनसे नीचेकी ओर केवल दोही मार्ग ऐसे हैं, कि जिनका वर्णन करना अवश्य है; एक तो बानसीसे क़रीब क़रीब दक्षिणमें धरयावद होकर बांसवाड़ाको जाता है; दूसरा उदयपुरसे सलूंबर होकर डूंगरपुरको (२). गाड़ियां इनमें नहीं जासक्तीं, परन्तु सब प्रकारके लद्दू जानवर बोझा लादे हुए आसानीसे जासक्ते हैं. धरयावद और सलूंबर के बीचमें भी एक रास्तह है, जिसमें लद्दू जानवर आसानीसे जासक्ते हैं.

रियासतके पूर्वी किनारेपर पहाड़ियोंका एक समूह है, जो उत्तर और दक्षिणको समानान्तर (बराबर फ़ासिले वाली) सकड़ी घाटियां बनाता हुआ चलागया है, जिनमेंसे सबसे बड़ी घाटीमें विजयपुरका एक छोटा क़स्बह है. सबसे ऊंची दो पहाड़ियां ठीक २००० फ़ीट से कुछ ज़ियादह ऊंची हैं, परन्तु औसत ऊंचाई पहाड़ियोंकी १८५० फ़ीटके लग भग है.

यहांका बहाव अक्सर उत्तर और दक्षिणको है. उत्तरकी तरफ़का बहाव सीधा बेड़चमें जाता है, और दक्षिणका बहाव गंभीरी नामकी छोटी नदीमें जामिलता है, जो पश्चिमको बहकर पहाड़ियोंको घेरती हुई उनके पश्चिमी किनारेपर मुड़कर चित्तौड़के पास बेड़चमें मिलजाती है.

चित्तौड़से पश्चिमकी भूमि खुली हुई है, परन्तु इसके आरपार चलनेमें पड़त ज़मीनके बड़े बड़े टुकड़े पायेजाते हैं, और अकेली पहाड़ियां और छोटे छोटे ढूहे (३) उसपर

---

(१) उन दिनों घाणेरावका ठाकुर मेवाड़की नौकरीमें रहता था.

(२) वर्त्तमान महाराणा साहिबने एक सड़क उदयपुरसे जयसमुद्रतक बनवाई है, जिसमें बग्घी, गाड़ी अच्छी तरह जासक्ती है.

(३) ढूहे, याने ऊंची ज़मीन जो बहुत दूरतक चलीगई हो.

फैले हुए हैं. चित्तौड़के नैर्ऋत्य कोणमें पहाड़ियां अधिक ऊंची और जंगलसे ढकी हुई हैं, जिनकी पंक्तियोंके पश्चिममें भदेसर है. इन पहाड़ियोंकी शोभा अति रमणीय है, विशेषकर उन निकले हुए सिफ़ेद चटानोंके कारणसे है, जिनकी बड़ी बड़ी ऊंची चोटियां जंगलके ऊपर दिखाई देती हैं. भदेसरकी पहाड़ीके दक्षिणकी भूमि फिर अधिक खुली हुई है, परन्तु कम ऊंचाईकी पहाड़ी पंक्तियां इसको भी काटती हैं.

बड़ी सादड़ी से एक बड़ी भारी, ऊंची और पेचीदा पहाड़ियोंकी पंक्ति अग्नि कोणको जाती है, और जाकुमके ऊपर एक बारगी पूरी होजाती है. ये पहाड़ियां एक बड़े चौड़े और सघन जंगलसे ढकी हुई ज़मीनवाली एक बड़ी घाटीकी पश्चिमी सीमा हैं, जहांकी ज़मीन नीची है. उसकी औसत ऊंचाई समुद्रके सत्‌हसे १२५० फ़ीटसे अधिक नहीं है, परन्तु वह उत्तरकी तरफ़ धीरे धीरे ऊंची होती गई है, और कहीं ज़ियादह ढाल नहीं है. निस्सन्देह ये पहाड़ियां विंध्याचलकी शाखा हैं, परन्तु ये अर्व्वलीमें मिलजाती हैं, इसलिये पहाड़ोंकी प्रथक पंक्ति जो वे देशके आरपार बनाती हैं, पूर्वकी तरफ़ कुछ लुप्त होजाती है, और अधिक पश्चिममें वे बिल्कुल नष्ट होजाती हैं, और अर्व्वलीकी समानान्तर शाखा अकेली रहजाती हैं. पहाड़ोंकी एक और पंक्ति वायव्य कोणको जाती हुई जहाज़पुरको चली गई है, जो उस पहाड़ी भागके पश्चिममें है, जिसको मीनोंका मुल्क "खैराड़" कहते हैं. इसपर मांडलगढ़का क़िला वाक़े है और उसके दक्षिणमें वह पहाड़की पंक्ति आरम्भ होती है जो रियासत बूंदीके मध्यमें होकर ईशान कोणको चली गई है.

(धातु और क़ीमती पत्थर).

टॉड साहिबके बयान और हमारे अनुमानसे मेवाड़में पहिले धातु बहुत पैदा होती थी, और जावर व दरीबाकी सीसेकी खानोंसे ३००००० से अधिककी सालियानह आमदनी थी, परन्तु बहुत वर्षोंसे वे छोड़दी गईं, इससे अब वे पानीसे भरगई हैं. जावर (१) उदयपुरसे ठीक दक्षिण तरफ़ क़रीब १८ मीलके अन्तरपर है, और अब यह खण्डहर की हालतमें है, परन्तु अभीतक खण्डहरके भीतर व बाहिरी स्थानोंमें चन्द मन्दिर अच्छे अच्छे हैं, और पासवाली एक पहाड़ीपर एक बड़े गढ़की दीवारका निशान भी पाया-जाता है. शहरके पश्चिम तरफ़ एक छोटी नदी बहती है, जिसके तीरपर एक बहुत अच्छा कुआं है, और पत्थरसे बनेहुए एक बन्धका कुछ हिस्सह है. पूर्व समयमें

(१) इसका नाम प्राचीन प्रशस्तियोंमें जोगिनीपुर लिखा है, और इस नामकी बुनयाद एक देवीके स्थानसे है, जिसको लोग जावरकी माताके नामसे पुकारते हैं.

यह बहुत पानी रोकता रहा होगा, परन्तु अब बिल्कुल फूटगया है. प्रत्यक्षमें मालूम होता है, कि यहां पहिले समयमें धातु बहुत गलाई जाती थी, क्योंकि प्राचीन स्थनोंकी बहुतसी दीवारें केवल प्राचीन घरियों (१) से बनी हुई हैं, जिनसे उनका एक अद्भुत आकार होगया है. ईसवी १८७३ [वि० १९३० = हि० १२९०] में खानोंको फिर जारी करनेकी कोशिश कीगई थी, और बहुतसा व्यय भी हुआ, परन्तु नतीजह उसका कुछ न निकला. एक मुख्य दरारमें सुरंग बनाया गया, और उसमेंसे ११ फ़ीट पानी निकाला गया, परन्तु यह मालूम हुआ, कि पहिले जो खानकी तह सोची जाती थी, वह हक़ीक़तमें पत्थर और मिट्टीका एक ढेर है, और एक दूसरा सुरंग बहुत नीचे बनाना आवश्यक है. फिर खोदनेके समय पांच ढेर या ढेले जिनमें सबसे बड़ा १० $\frac{1}{2}$ सेरका था, पाये गये. धातु निकालिस गैलिना (खानसे निकाला हुआ अशोधित सीसा) पाई गई, जिसमें ७१ सैंकड़ासे अधिक पापाण मय अंश न था, परन्तु चांदीके हेतु इम्तिहान करनेसे एक टन (२८ मन) सीसेमें १० औंस (२), १२ पेनीवेट, ८ ग्रेन चांदी पाईगई, तब काम रोक दियागया; क्योंकि बिना कलके सब पानी दूर करना असंभव था, जिसका ख़र्च दर्बार नहीं देना चाहते थे, क्योंकि चांदी बहुत कम मिलती थी. इसका इम्तिहान बुशल साहिबने हमारे सामने किया था.

मांडलगढ़ ज़िलेके गुंहली गांवमें, जहाज़पुर ज़िलेके मनोहरपुरमें, गंगारमें रेलवे लाइनपर और पारसोलामें भी, जो बड़ी सादड़ीसे कुछ मील दक्षिणकी ओर है, लोहेकी खानोंका अभीतक काम जारी है, परन्तु वर्तमान समयमें बहुत कम लोहा निकाला जाता है. खानमें काम करने वाले लोग कच्ची धातुको गलानेके लिये हवासे तप्त होने वाली भट्टियां रखते हैं, और यह एक विचित्र बात है, कि मैल साफ़ करनेके लिये नमकको काममें लाना, जो हालकी तर्कीब समझी जाती है, पारसोलामें पीढ़ियोंसे चला आता है.

सादड़ी, हमीरगढ़ और अमरगढ़के ज़िलोंमें पुरानी खानें हैं, जिनका काम बहुत अरसहसे बन्द करदिया गया है. रियासतकी दक्षिणी पहाड़ियोंमें बेदावलकी पाल और अनूजेनीके बीचमें भी बहुतसा लोहा और फिर कुछ पश्चिममें तांबा पाया जाता है, परन्तु आज कल काम नहीं होता. देलवाड़ामें भी तांबा पाया गया है और उदयपुरके निकट केवड़ाकी नालमें भी बहुतसी प्राचीन खानें हैं.

पोटलां और दरीबामें सीसेकी खानें बहुत दिनोंसे बन्द हैं. तामड़ा (रक्तमणि)

---

(१) घरिया मिट्टीका एक पात्र है, जिसमें धातु गलाई जाती है.

(२) अंग्रेज़ी सोने चांदीके तोलके हिसाबसे एक पाउण्ड ३२ रुपये भर होता है. पाउण्डका १२ वां हिस्सह औंस, औंसका २० वां हिस्सह पेनीवेट और पेनीवेटका २४ वां हिस्सह ग्रेन कहलाता है.

जो बहुमूल्य पाषाण है, मेवाड़में बहुत पाया जाता है; मांडल, पुर और भीलवाड़ाके ज़िलोंमें तथा दरीबामें जिन खानोंसे वह निकाला जाता है, अभीतक काम करनेके लाइक़ है.

(जंगल).

अर्व्वली पहाड़ प्रायः बांस और छोटे छोटे वृक्षोंसे ढकाहुआ है, परन्तु नदियोंके किनारोंपर ऊगनेवाले वृक्षोंके सिवा और वृक्ष बहुत छोटे और निरर्थक हैं. बानसी और धरयावदके जंगल, जो रियासतके अग्नि कोणमें हैं, सबसे बड़ी और बहुमूल्य लकड़ीके हैं, और वहांसे बहुतसी सागवानकी लकड़ी काट २ कर मेलोंमें बेची जाती है. घाटियोंमें महुवा और आम बहुत होते हैं. रियासतके बहुतेरे हिस्सोंमें बहुतसे झाड़ और छोटे छोटे पेड़ोंसे ढकेहुए बड़े बड़े भूमि विभाग हैं, और बहुधा छोटी छोटी पहाड़ियां भी अच्छी तरहसे ढकी हुई हैं.

(नदियां).

चम्बल जो यथार्थमें मेवाड़की नदी नहीं है, इसका लम्बा बहाव इस रियासतमें थोड़े ही मीलतक बहता है, और वह भी सिर्फ़ कोटाके निकट भैंसरोड़के एक निकले हुए हिस्सेपर है.

सालभर बहने वाली नदियां मेवाड़में बहुत कम हैं; बनासमें भी उष्ण कालके समय कई जगहोंपर खड्डोंमें पानी भरा रहता है. प्रायः इस नदीमें चटान और बालू है, और पानी सत्हके नीचे बहुत अरसहतक बहता है, जो नदीके दोनों तरफ़के किनारोंके कुओंमें जाता है. बनासका सिरा अर्व्वली पहाड़ोंमें कुम्भलगढ़से नैऋत्य कोणको ३ मीलकी दूरीपर २५°–७′ उत्तरांशमें है, और यह प्रथम १५ मीलतक नैऋत्य कोणकी तरफ़ जर्गाकी श्रेणीसे समानान्तर रेखापर बहती है; फिर वह एक बारगी पूर्वमें मुड़कर पहाड़के दक्षिण किनारेकी ओर घूमकर ५–६ मीलके पीछे पहाड़ी श्रेणीमें होकर बहती है, और २० मीलतक इस प्रकार बहनेके बाद खुले मैदानमें पहुंचजाती है, फिर थोड़ीसी दूर ईशान कोणके मैदानमें नाथद्वाराके पास बहकर मांडलगढ़के समीप पहुंचती है. वहां पर दाहिनी ओरसे आकर बेड़च इसमें मिलती है, और उसी स्थानपर मेंनाली नदी भी इसमें मिलगई है, जिससे उस स्थानको त्रिवेणी तीर्थ मानते हैं. फिर ठीक उत्तरकी तरफ़ बहनेके बाद थोड़ी दूरपर बाईं तरफ़से कोटेशरी भी आमिली है, वहांसे जहाज़पुरकी पहाड़ियोंमें होकर उनके पश्चिमी आधारके समीप होती हुई ईशान कोणको बहकर अन्तमें देवलीके निकट रियासतसे जुदी होती है. फिर अजमेर

और जयपुरकी सीमामें पहुंचती है, वहां ३०० मीलके लगभग बहकर चम्बलमें जागिरती है.

खारी, जो मेवाड़की नदियोंमें सबसे उत्तरमें है, मेवाड़के दिवेर ज़िलेकी पहाड़ियोंमेंसे निकलती है, और देवगढ़के पास ईशान कोणको बहती हुई अजमेरकी सीमामें क़रीब ११५ मील बहकर जयपुरकी हदमें बनाससे जामिलती है. इसके दक्षिणमें कुछ मीलके अन्तरपर इसकी सहायक नदी मानसी भी ६० मीलतक इससे समानान्तर रेखापर बहती है, और अजमेरकी हदपर फूलियाके समीप इसमें जा मिलती है. इसके सिवा दो और छोटी नदियां भी बनेड़ाके पाससे निकलकर शाहपुराके समीप होती हुई ४० मील बहकर सावरके पास इसी में आमिलती हैं.

खारीके दक्षिण कोटेशरी (कोठारी) बहती है, जो अर्व्वली पहाड़ोंसे निकलकर दिवेरकी दक्षिण तरफ़से ९० मील बहनेके बाद ठीक पूर्व ओर नन्दरायसे एक कोसकी दूरीपर बनासमें जामिलती है. बनासके दक्षिणमें बेड़च बहती है, जो उदयपुरके पश्चिमकी पहाड़ियोंसे निकलती है, लेकिन् उदयसागर तालाबमें गिरनेसे पहिले आहड़की नदी कही जाती है. इसके बाद चन्द मीलतक उदयसागरका नाला कहाजाकर आगे कुछ दूरीपर बेड़च कही जाती है. फिर यह पूर्वको बहती हुई चित्तौड़ पहुंचती है और वहांसे उत्तरकी तरफ़ ईशान कोणको झुकती हुई बनासमें जागिरती है.

जाकुम, छोटी सादड़ीके समीप रियासतके नैर्ऋत्य कोणसे निकलती है, और दक्षिण तरफ़ प्रतापगढ़के नैर्ऋत्य कोणमें बहती है, जहांपर उसमें बाईं तरफ़से करमरी आमिलती है. फिर वहांसे मेवाड़में धरयावदके पास होकर नैर्ऋत्य कोणको बहती हुई सोममें जा मिलती है. यह क़रीब क़रीब अपना समस्त बहाव चटान और जंगलोंमें रखती है, इसकारण बहुधा स्थानोंमें बहुत सुन्दर दीखती है.

रियासतके समस्त नैर्ऋत्य कोणके हिस्सेका और जयसमुद्रके निकासका पानी सोममें जाता है, जो वहां पश्चिमसे पूर्वको बहती है, फिर वह दक्षिणको बबराना गांवके पास मुड़कर महीमें जागिरती है.

(झील).

जयसमुद्र तालाब उदयपुरसे ३२ मील दक्षिणको है. कप्तान येट् साहिब लिखते हैं, कि यह तालाब संसारमें मनुष्यका बनाया हुआ कदाचित् सबसे बड़ा जलाशय है. यह ९ मील लम्बा और ६ मील चौड़ा है, जिसके .८ मील मुरब्बा

विस्तारमें द्वीप हैं और ६९० मील मुरब्बाका पानी इसमें जाता है. इसकी सबसे बड़ी गहराई ८० फ़ीट है. यह तालाब, जो समुद्रके सत्हसे ९६० फ़ीट ऊंचा है, महाराणा जयसिंहने विक्रमी १७४४ से १७४८ [ई० १६८७ से १६९१ = हि० १०९८ से ११०२] तक एक सुन्दर संग मरमरका बन्ध पहाड़ोंके बीचकी नालमें बांधकर बनाया है; उसकी पिछली दीवार समान लम्बाई और ऊंचाईकी बनवाई गई थी, परन्तु मध्यकी ख़ाली जगह भरी नहीं गई, और दोनों भींतें अलग अलग खड़ी रहीं, क्योंकि संग मरमरका बन्ध ऐसा दृढ़ बंधवायागया था, कि वह अकेला अपने सामनेके सब पानीके दबावको रोक सक्ता था. जब ईसवी १८७५ [वि० १९३२ = हि० १२९२] के जल प्रवाहमें उसके टूटजानेका भय हुआ, तो वैकुण्ठवासी महाराणा सज्जनसिंह साहिबने बन्धकी मरम्मत करवाकर बीचके खड्डेको २०००००, से अधिक रुपया खर्च करके भरवाया, और बन्ध तथा पहाड़परके महलोंका भी जीर्णोद्धार करवाया. जलकी तरफ़ वाला पुश्तह १००० फ़ीट लम्बा, ९५ फ़ीट ऊंचा, और ५० फ़ीट चौड़े आधारपर है, जिसका ऊपरी भाग १५ फ़ीट चौड़ा है. इसके पूर्वी किनारोंपर गुम्बजदार महल और मध्यमें एक बड़ा मन्दिर है, जिसके दोनों ओर बन्धपर छतरियां और पानीकी तरफ़ पत्थरके हाथी बने हैं. बन्धके एक किनारेपर वर्त्तमान महाराणा साहिबने भी महल बनवाये हैं. पीछेकी दीवार १३०० फ़ीट लम्बी है, क्योंकि पहाड़ियोंका दरार बढ़ताजाता है. अबतक इसका पानी कम ख़र्च कियागया है. इस तालाबके अग्नि कोणपर पानीका निकास है, जहांसे एक धारा सोम नदीमें जामिलती है.

राजसमुद्र तालाब, जो राजधानीसे क़रीब ४० मील उत्तरको है, ४ मील लम्बा और १ ३/४ मील चौड़ा है. इसमें १९४ मील मुरब्बाका पानी जाता है. इसका आरंभ महाराणा राजसिंहने ईसवी १६६२ [वि० १७१८ = हि० १०७२] में किया और १४ वर्षमें बनकर तय्यार हुआ. यह तालाब एक मैदानके गढ़ेमें है, जहांपर वर्षभर जल धारण करनेवाली गोमती नामकी एक छोटी नदी तीन मीलके लम्बे अर्द्धवृत्ताकार बन्धसे रोकदी गई है. इसके दक्षिणको क़स्बह राजनगर है, और अग्नि कोणमें कांकड़ोली नामका क़स्बह है, जिसमें द्वारिकानाथका एक प्रसिद्ध मन्दिर बन्धपर बना है. यह बन्ध राजनगरकी पहाड़ीसे निकाले हुए संग मरमरका बना है, और ऊपरसे लेकर पानीके किनारेतक इसी पाषाणकी सीढ़ियां बनी हैं और बन्धके ऊपर सुन्दर मण्डपदार [illegible] गृह हैं, जिनको नौ चौकियां कहते हैं. इस तालाबकी नाप, व लागत वग़ैरहका सविस्तर वृत्तान्त महाराणा राजसिंहके हालमें लिखा जायेगा.

इसके बाद एक दूसरा तालाव उदयपुरसे क़रीब ६ मील पूर्वमें उदयसागरके नामसे प्रसिद्ध है. इसकी लम्बाई २ १/२ मील, चौड़ाई २ मील है, और १७९ मील मुरब्बा भूमिका पानी उसमें जाता है. इसका पानी एक बड़े ऊंचे बन्धसे रुका है, जो बड़े चटानोंसे एक पहाड़ीकी नालके आरपार देवारीके दर्वाज़ेसे २ मील दक्षिणको बनायागया है, जो उदयपुर जानेके लिये पूर्वी दर्वाज़ह है. मुख्य करके इस तालाबमें अहाड़की नदीका पानी आता है और इसके निकाससे बेड़च निकली है. इसके आस पासकी पहाड़ियां बड़े जंगलसे ढकी हुई हैं, और किनारोंकी पहाड़ियोंपर महाराणाके आखेट गृह बने हैं, जो बड़े शोभायमान दृष्टिगत होते हैं.

राजधानी उदयपुरमें पीछोला तालाब २ १/४ मील लम्बा, और १ १/२ मील चौड़ा है. इसमें ५६ मील मुरब्बा भूमिका वहाव आता है. इस तालाबके बनानेके लिये जो धारा रोकी गई है, वह पहिले अहाड़की नदीमें मिलती थी, जो उदयसागरमें जाती है. यह तालाब १५ वीं सदी विक्रमीके बीचमें महाराणा लाखाके समय किसी बणजारेने बनवाया था. बांध इसका ३३४ गज़ लम्बा और इसका ऊपरी भाग ११० गज़की मोटाईका है, जो आधारकी ओर बढ़ता जाता है. विक्रमी १८५२ [हि० १२१० = ई० १७९५] में यह बांध टूटगया था, जिससे आधा शहर डूबगया, और वैसी ही विपत्तिका भय ईसवी १८७५ [वि० १९३२ = हि० १२९२] की घोर वर्षामें भी हुआ, परन्तु ईश्वरकी कृपासे कुछ हानि न हुई. इस तरह इन चार तालाबोंमें १११९ मील मुरब्बा भूमिका पानी जाता है. दूसरे दो तालाव ग्राम बड़ी और देवालीके हैं, जो १५ मील मुरब्बा ज़मीनका पानी खींचते हैं. ये भी उदयसागरमें जानेवाले पानीका कुछ भाग रोकते हैं. इनके अतिरिक्त और भी तालाब रियासतके उत्तरी और पूर्वी हिस्सोंमें बहुत हैं, जिनमें मुख्यकर घासा, सैंसरा, कपासन, लाखोला, गुरलां, मांडल, दरौली, भटेवर, और भूताळा वगैरह स्थानोंमें हैं. इनका पानी बांधके नीचेके खेतोंको सींचनेके काममें लाया जाता है.

(जानवरोंका बयान).

मेवाड़में मांसाहारी, तृणचर, और उड़नेवाले जानवर अनेक प्रकारके हैं, जिनमेंसे कुछ जानवरोंका हाल यहांपर लिखाजाता है.

सिंह अर्वली पहाड़, खैराड़, और ऊपरमाल वगैरहमें पहिले बहुत थे, जिनसे पहाड़ी गांवोंके सिवा समान भूमिके गांवोंमें भी हर जगह चौपायोंको ख़तरह रहता था, लेकिन् मेरे (कविराजा श्यामलदासके) देखते ही देखते वे इतने कम होगये, कि वर्त्तमान महाराणा साहिब पश्चिमी और पूर्वी पहाड़ोंमें हर जगह बन्दोबस्त व तलाश रखवाते हैं, तब बड़ी मिह्नतके साथ उनका शिकार प्राप्त होता है, जिनका हाल वर्त्तमान महाराणा साहिबके हालमें लिखाजायेगा.

बघेरा जिसको अधवेसरा शेर भी कहते हैं और टीमरया चौफूल्या आदि नामोंसे इसके और भी भेद प्रसिद्ध हैं, हर एक जगहकी पहाड़ियोंमें अधिक मिलता है. यह जानवर बछड़ा, बकरी, भेड़, सूअरके बच्चे व हरिण वगैरह छोटे छोटे जानवरोंको मारकर अपना गुज़ारा करलेता है, और कभी कभी बैल गाय आदिको भी मारता है; और दबाया हुआ या ज़रूमी होनेकी हालतमें आदमीपर भी हमलह करता है. चीते, जो राजा लोगोंके शिकारी कारख़ानोंमें हरिणके शिकारके लिये रहते हैं, मेवाड़में हुरड़ा, भीलवाड़ा, और चित्तौड़के ज़िलोंमें पहिले मिलते थे, परन्तु अब नज़र नहीं आते. भेड़िया जिसको संस्कृतमें वृक और मेवाड़ी भाषामें वरघड़ा और ल्याळी बोलते हैं, ज़ियादह ख़ूंख़ार नहीं होता. यह बकरी, भेड़ी वगैरह छोटे जानवरोंको मारकर पेट भरता है, और सब जगह पाया जाता है. बन्दर, ये जानवर यहां काले मुंह और सिफ़ेद रंगका होता है, और फल फूल व पत्तोंसे अपना पेट भरलेता है. कूदनेमें २० या २५ फ़ीट ज़मीनको या इतने ही फ़ासिलेके एकसे दूसरे वृक्षको अच्छी तरह छलांग जाता है, और दरख़्तोंपर रहता है. इनके झुंडमें एक नर अपने सिवा दूसरे नरको नहीं आने देता. रींछ, यह जन्तु तृणमूलचर है, परन्तु इसपर शेर वगैरह जानवर हमलह नहीं करते, और न यह औरोंसे बोलता है. अक्सर बाज़ीगर लोग इनके बच्चोंको पहाड़ोंसे पकड़कर नाचना सिखाते और शहरों व गांवोंमें उनसे अपना रोज़गार करते हैं. शिकारी लोग बन्दूक़से इसका शिकार करते हैं. यह पूर्वी, पश्चिमी और दक्षिणी पहाड़ोंमें अक्सर मिलता है, यह जानवर तंग होनेकी हालतमें या ज़रूमी होनेपर इसके नज़्दीक जा निकलनेसे आदमीके ऊपर ज़रूर हमलह करता है. सांभर एक तृणचर पशु और बड़े महिषकी बराबर होता है, जिसके बहुत बड़े बड़े शाख़दार सींग होते हैं. यह किसीको दुःखदायी नहीं है. सिंह अक्सर इन्हीं जानवरोंसे अपनी क्षुधा शान्त करता है. इसीका दूसरा भेद चीतला सांभर है, जिसके बदनपर सुनहरी रंगमें सिफ़ेद धब्बे होते हैं. यह भी देखनेमें बड़ा सुन्दर होता है. मेवाड़के दक्षिण जयसमुद्रकी तरफ़ व पश्चिमी पहाड़ोंमें इन जानवरोंके झुंडके झुंड मिलते हैं, शिकारी लोग मार मारकर इनका मांस भक्षण करते और इनके क़ीमती चमड़ेको तय्यारकर अपने काममें लाते हैं. हरिण, यह भी एक प्रसिद्ध तृणचर और ग़रीब जानवर है, अक्सर चौड़े मैदानोंमें इसके झुंडके झुंड रहते हैं. दौड़ने और छलांग मारनेकी शक्ति इस जन्तुमें अधिक होती है. यह जानवर कई प्रकारका होता है, अर्थात् कोई काला और छीकला और कोई चौसींगा, जिसके चार सींग होते हैं; इसको भेड़ला और कहीं कहीं बूटाड़ भी कहते हैं, जो हरिणकी एक क़िस्म है. सियाहगोश, इस जानवरका क़द कुत्तेसे कुछ छोटा होता है, और यह मांसाहारी है. यह जानवर

दो दो शामिल रहते हैं, और बाज़ बाज़ अकेले भी मिलते हैं, लेकिन् बहुत थोड़े हैं. जंगली कुत्ते, जो कुत्तेकी बराबर और मांसाहारी हैं, दश दश पन्द्रह पन्द्रहका झुंड बनाकर रहते हैं. ये सूअर वगैरहको अच्छीतरह मारते हैं, और इनसे शेर भी डरता है. बाज़े बाज़े लोग इन्हींको करु कहते हैं, क्योंकि करु भी ऐसा ही होता है. गीदड़ (सियाल), यह मांसाहारी और कन्दमूल फलाहारी जन्तु मेवाड़में बहुत पायाजाता है. लोमड़ी, यह भी सियालकी क़िस्मका एक छोटा जंगली जानवर है. जरख भी मेवाड़में बहुतायतसे मिलता है. इसकी बाबत् देहाती लोगोंमें मश्हूर है, कि इस जन्तुपर डाकिन सवारी करती है, इसीसे इसको यहां डाकिनका घोड़ा भी कहते हैं. सूअर, यह जानवर तृण और कन्द चर है, परन्तु मिलनेपर मांस भी खाजाता है; गुस्सेकी हालतमें यह शेरसे बराबरीका मुक़ाबलह करता है, और बहादुरीमें सबसे बढ़कर है. राज्यके आखेटके रक्षित जंगलोंमें तथा सर्दारोंके कितनेएक इलाक़ोंमें तो अधिक और बाक़ी हरएक जगह पायाजाता है. राजपूत लोग इसका शिकार बड़े उत्साहके साथ बन्दूक़से अथवा घोड़ेपर सवार होकर बर्छेसे करते हैं. रोझ, यह तृणचर जानवर मेवाड़के पूर्वी दक्षिणी जंगलोंमें कहीं कहीं मिलता है. इसका क़द घोड़ेके समान होता है, इत्यादि.

घरेलू जानवरोंमें हाथी, उत्तराखंडकी तरफ़ नयपालकी तराईमें, आसामके जंगलोंमें और दक्षिणी हिन्दुस्तानके जंगलोंमें होते हैं, जिन्हें सौदागरोंकी मारिफ़त राजा लोग ख़रीद ख़रीदकर अपने काममें लाते हैं. बाज़ वक़्त महाराणा साहिबके फ़ीलख़ानहमें ५० से कम और ३० से ज़ियादह हाथी रहते हैं, लेकिन् इसवक़्त ४५ मौजूद हैं (१). सुनते हैं, कि पहिले ज़मानहमें १०० हाथी ख़ास फ़ीलख़ानहमें रहते थे. उदयपुरके हाथियोंकी लड़ाई प्रसिद्ध है, और हक़ीक़तमें यहांके हाथी लड़ते भी अच्छे हैं. ये शेरका शिकार करनेके वक़्त मज़्बूत और दिलेर होते हैं; सवारीके काममें भी यहां ज़ियादह लाये जाते हैं. मुझको हाथीकी सवारीका ज़ियादह मुहावरा रहा है, अगर हाथी पाठा हो, तो आरामके लिये पालकीकी सवारीसे कम नहीं है, और बड़ी जुलूसी सवारियोंमें अथवा शिकारके वक़्त महाराणा साहिब भी अक्सर हाथी हीपर सवार होते हैं. गजनायक नामका एक हाथी नयपालके महाराजा राजेन्द्रविक्रमशाहने महाराणा जवानसिंहको तुह्फ़ेमें भेजा था, वह ऊंचाई, लम्बाई, चौड़ाई और ख़ूबसूरतीमें ऐसा था, कि अगर्चि मैंने हज़ारों हाथी देखे, लेकिन् वैसा कोई दूसरा हाथी देखनेमें नहीं आया. वह महाराणा शम्भुसिंहके समयमें मरगया. वर्तमान समय के हाथियोंमें विजयशृंगार नामी हाथी ऊंचाई, लम्बाई, और मोतबरीमें मश्हूर है.

(१) देवस्थानों और उमरावोंके हाथियोंकी संख्या इससे अलग है.

घोड़े, ये जानवर महाराणा स्वरूपसिंहके अख़ीर समयतक मेवाड़में वहुत थे, याने चौथा बांटा देने वाले हरएक राजपूतके घरमें १ या २ घोड़े, घोड़ी अवश्य मिलते थे, और बड़े ठिकानेदार तो अच्छे राजपूत और ज़ियादह घोड़े, घोड़ी रखनेमें अपनी .इज़्ज़त जानते थे, परन्तु वर्त्तमान समयमें सिवा महाराणा साहिब के तवेलेके (१) दूसरे सर्दारोंमें यह शौक़ कम होगया है. ऊंट, यह जानवर मेवाड़में अधिकतर वारवर्दारीके काममें लाया जाता है, किन्तु सवारीमें कम. केवल रियासतके शुतरख़ानहमें ३० या ४० .उम्दह सांडिये सवारीके लिये मेरे तअ़ल्लुक़में हैं, उनमें से कितनेएक पचास पचास कोसका धावा एक एक दिनमें करसक्ते हैं. इसके सिवा ठिकानेदारोंके यहां भी रहते हैं, परन्तु ऊंटकी सवारी इस देशमें अधिक नहीं कीजाती, मारवाड़ और शैख़ावाटीमें इसकी सवारीका अधिक प्रचार है. गधे इस देशमें छोटे होते हैं. इस जानवरको यहां धोबी और कुम्भार व ओड़ आदि अधिकतर मिट्टी और पत्थर ढोहनेके काममें लाते हैं. इस देशमें अपराधीको सज़ा देनेके वक़ गधेपर विठाकर शहरके बाहिर निकालदेते हैं. इसी सववसे यहां गधेकी सवारीकी बड़ी हिक़ारत है, वर्नह धर्मशास्त्रमें तो ऊंट और गधेकी सवारीका बराबर दोष लिखा है, परन्तु यहां ऊंटकी सवारीका दोष नहीं समझते. गाय और भैंस मेवाड़में वहुतायतसे हैं. सव लोग इनको पालते, हैं, वहुतसे लोगोंका ख़ास इन्हींके ज़रीएसे गुज़ारा होता है, और किसान लोगोंके यहां तो गाय भैंसके झुंडके झुंड रहते हैं. भैंसका दूध मीठा और गाढ़ा, गायका दूध (२) कुछ फीका और पतला होता है. बनिस्बत गायके भैंसके दूधसे घी अधिक निकलता है. 'भैंसका मूल्य मेरे वचपनमें २०)से २५) रुपये और गायका ५) व ८) रुपये से अधिक नथा, परन्तु वर्त्तमान समयमें भैंसकी क़ीमत ५०) या ६०) और गायकी २५) ३०) रुपयेतक वढ़गई है. भैंसके नरवच्चे याने पाड़ेका मोल १०) १२) रुपयेसे ज़ियादह नहीं लगता और गायके नर वच्चे याने बैलका मोल ८०) रुपये तक, या इससे अधिक भी होता है. आसूदह हाल किसानोंके यहां ५० से लेकर १०० तक गाय भैंस रहती हैं. यहांकी भैंस और गाय न वहुत छोटी और न वहुत बड़ी, अक्सर मंझले क़दकी होती हैं. बकरी और भेड़ मेवाड़में वहुत होती हैं. अव्वल दरजह गूजर, गाडरी, और दूसरे दरजह रैबारी व भील वग़ैरह क़ौमें इन जानवरोंके झुंडके झुंड रखते हैं. इस मवेशीके पालनेमें

---

(१) महाराणा साहिबके तवेलेमें अ़रबी वग़ैरह सब क़िस्मके घोड़े सौदागरोंसे ख़रीदे जाते हैं.
(२) यहांकी गाय दूध कम देती है.

केवल आदमीकी ज़रूरत है, और किसी क़िस्मका ख़र्च नहीं होता. अकालमें इस मवेशी के रखने वाले निर्भय रहते हैं. कुत्ता, बिल्ली वग़ैरह जानवरोंको यहां कोई नहीं पालता, शहर और गांवोंमें बहुतसे लावारिस फिरा करते हैं. कहीं कहीं बकरी, भेड़ी और खेतीकी रक्षा करनेके लिये अथवा शिकारके वास्ते कुत्ते पालेजाते हैं. परिन्द जानवरोंमें सिफ़ेद बतक़, मुर्ग़ा, और कबूतर हरएक जगह पालतू मिलते हैं. तोता आदमीकी बोली बोलनेमें चतुर होता है. साधारण तोता हरएक जगह मिलसक्ता है, लेकिन् गागरौनी सूआ, जो क़दमें भी बड़ा और जिसके पंखोंपर लाल दाग़ होते हैं, आदमीकी ज़बान अच्छी तरहसे बोलसक्ता है. इस पक्षीको बेगम पट्टेके धामण-घाटी गांवसे लाते हैं, और उदयपुरके दक्षिणी पहाड़ोंमें भी यह मिलता है. जंगली परिन्द गीध, ढींच, चील, शिकरा, कव्वा, तोता, कबूतर, मोर, जंगली मुर्ग़े, कोयल, पपीहा, तीतर, बटेर, और हरियल आदि हज़ारों पक्षी हैं, और कितनेही शिकारी परिन्द ख़ास मौसममें बाहिरसे यहां चले आते हैं, जिनकी गिनती करनेसे एक बड़ी किताब बनसक्ती है. पानीके ऊपर रहने वाले परिन्द बक (बगुला), हंजा, घरट, सारस, टिटहरी, बतक़ (आड़), जलकुक्कुट, जलकाक वग़ैरह सैकड़ों क़िस्मके जानवर हैं. पानीके भीतर रहने वाले जानवर मगर, मच्छी, जलमानस (१), मेंडक, कछुआ, कर्कट (केंकड़ा), और जलसर्प (डिण्डू) वग़ैरह अनेक प्रकारके जन्तु होते हैं, लेकिन् मच्छी बहुत क़िस्मकी बहुतायतसे मिलती हैं. यहां देवस्थानोंमें व बहुतसे अन्य जलाशयोंमें मच्छी मारनेकी पूरी मनादी है. गूंछ जातिकी एक मच्छी, जो बेड़च और बनास नदीमें मिलती है, वज़नमें एक मनसे भी ज़ियादह होती है, उसके मुंहमें दांतोंकी लकीर, बड़ी मूछें, और उसका सिर बहुत कठोर होता है. उसका मांस देखनेमें बहुत अच्छा, लेकिन् खानेमें ज़ियादह स्वाद नहीं होता. विक्रमी १९३८ [हि० १२९८ = ई० १८८१] में एक बड़ी गूंछ मछली मारकर कहार लोग क़िले चित्तौड़पर लाये थे, जिसको हम लोगोंने वैकुण्ठवासी महाराणा साहिबके सामने हाथोंहाथ पकाया, लेकिन् वह खानेमें मज़ेदार न थी.

(कुए और सत्हके नीचे वाले जलकी सामान्य आकृति).

सत्हके नीचेकी धरती ऐसी कड़ी अर्थात् कठोर है, कि कुओंके बनानेमें बड़ा परिश्रम और व्यय होता है. सत्हके थोड़ेही फ़ीट नीचे कड़े चटानका एक तह है, जिससे नीचेका

---

(१) यह जानवर बिल्लीकी शक्लका होता है, लेकिन् यहां इसको जलमानस कहते हैं, शायद यह नाम बिल्लीके दूसरे नामसे पलटगया हो, क्योंकि राजपूतानहमें बिल्लीको मनखी बोलते हैं, यह शब्द भी जल मनखीका जलमानस होगया होगा.

पानी सुरंगकी सहायतासे मिलता है, परन्तु मुख्य सोता तो सुरंग लगानेपर भी मुश्किलसे निकलता है. कुए कम या अधिक तेज़ वहने वाले सोतेसे भरेजाते हैं; अति गहरे और अत्यन्त अधिक व्यय वाले कुए अक्सर थोड़ेही घंटोंतक पानी निकालेजानेसे सूख जाते हैं, और जबतक फिर नया पानी न निकले, किसानको ठहरजाना पड़ता है. इसलिये एक मौसममें हरएक कुएसे बहुत कम ज़मीन सींची जाती है, और सबसे उम्दह ज़मीन हो तोभी पांच बीघासे ज़ियादह तो थोड़े ही स्थलोंमें सींची जाती है, क़भी कभी दो बीघा अथवा एक एकड़से कुछ अधिक ज़मीन सींची जाती है. अकालके वर्षमें संभव है, कि इनसे जल बिल्कुल न निकले. इन कुओंके देखनेसे कहा जासक्ता है, कि नदियां ही यथार्थमें देशको सींचती हैं. नदियोंके दोनों तरफ़की ज़मीनमें पानी बहुत दूरतक चलाजाता है, जिससे सतहके पासही बहुत पानी रहता है, उसको सेजा कहते हैं. ऐसे मक़ामोंपर कुए बहुत होते हैं, और उनके बनानेमें व्यय भी बहुत कम लगता है, और खोदनेसे जल्दी पानी निकलआता है; परन्तु सदैव पानी रहना अधिक शीघ्र बहनेवाले सोतेका कारण है. अखारा एक दूसरी तरहका कुआ है, वह बहुत गहरा खोदा जाता है, इससे इन कुओंके खोदनेमें व्यय (ख़र्च) ज़ियादह पड़ता है, और पानी भी सेजे वाले कुओंकी बनिस्बत कम निकलता है. देशमें इस प्रकारके कुए बहुत हैं, और सेजा केवल नदियोंके किनारेपर है. सेजाकी औसत गहराई २५-३० फ़ीट तक और अखारेकी ४५ से ५० तक होती है. पहिलेमें २०० सौसे ३०० रुपये तक और दूसरेमें ४०० सौसे एक हज़ारतक रुपया ख़र्च होता है. पूर्वोत्तरी और मध्य पर्गनोंके कुओंमें एकसे ज़ियादह चरस चलते हैं, अर्थात् इसका कुछ मामूल नहीं है, परन्तु अधिक दक्षिणी ज़िलोंमें अक्सर एक कुएपर दो दो रहते हैं, और रहंटका ज़ियादह प्रचार है.

मेवाड़के पूर्वी तथा उत्तरी हिस्सेमें चरस और दक्षिणी तथा पश्चिमी हिस्सेमें रहंट चलते हैं; और यह भी याद रखनेकी बात है, कि क़रीब २०० वर्ष पहिले आबरेज़ी, याने खेतीको पानी पिलानेकी रीति बिल्कुल न थी, इसीलिये सिवा पानी पीने और बाग़ बगीचे सींचने वाले बावड़ी कुओंके ज़िराअतको सींचनेका एक भी पुराना कुआ नहीं मिलता, और तालाबोंमें भी पानी निकालनेकी नहरें न थीं, ख़ाली बर्सातके पानीपर दोनों फ़स्लोंका दार मदार था. इसीसे अकालके समय हज़ारहा आदमी मारे भूखके मरजाते थे, लेकिन् अब तालाब और कुओंके सहारेसे लाखों मन नाज पैदा करलेते हैं.

राजपूतानह गज़ेटिअरमें ५ वर्षके इम्तिहानसे, जो उदयपुरमें कियागया, सर्दी व गर्मीका नक़्शह बनाया गया है, उसकी नक़्ल हम पाठकोंके अवलोक-

नार्थ नीचे दर्ज करते हैं:–

माह.	जनुअरी.	फ़ब्रुअरी.	मार्च.	एप्रिल.	मई.	जून.	जुलाई.	ऑगस्ट.	सेप्टेम्बर.	ऑक्टोबर.	नोवेम्बर.	डिसेम्बर.	औसत.
गर्मी व शरदीका रौज़ानह औसत	५९°	६५°	७५°	८२°	८९°	८८°	८२°	७९°	७९°	७३°	६९°	६२°	७६°
रौज़ानह तब्दीली का औसत.	३२°	३२°	३३°	३२°	२४°	२०°	१७°	१३°	१३°	२६°	३३°	२९°	२५°
बारिश.	०	०	०	०	०	१. ६१"	१०.८५"	६. ८६"	८. ९०"	०	०	०	२८.४२"

यहां मुख्यकर विक्रमका संवत् मानाजाता है. ऐसा मालूम होता है, कि शुरू ज़मानहमें चान्द्र महीना और चान्द्रही वर्ष माना गया होगा, क्यौंकि चन्द्रोदयसे तिथिका ज्ञान गणित किये विना होसक्ता है. फिर गणित विद्याका प्रचार होनेपर सौर मास और सौर वर्षका प्रचार करना चाहा, परन्तु चान्द्र मासकी तिथियोंपर बहुतसे धर्म सम्बन्धी नई नियत होजानेसे चान्द्र मासका बदलना कठिन होगया. तब गणितकारोंने सौर मास बनाकर उसको १२ लग्न, अर्थात् १२ संक्रान्तिके नामसे जारी किया, परन्तु उसका प्रचार गणितकारों ही में रहा; तब लाचार चान्द्र मास साबित रखकर अनुमान ३२ (१) महीनोंके अनन्तर अधिक मास बनाकर चान्द्र वर्षको सौर वर्षके शामिल करलिया. हिन्दुस्तानमें आषाढ़ादि, कार्तिकादि, चैत्रादि, कई प्रकारसे संवत्का प्रारम्भ मानते हैं, परन्तु मेवाड़में मुख्य चैत्रादि संवत् गिनाजाता है, जो साहूकारों, गणितकारों, और प्रजागणमें प्रचलित है; अलबत्तह राज्यमें श्रावणादि संवत् मानाजाता है. पहिला चैत्र शुक्ल १ और दूसरा श्रावण कृष्ण १ (२) से प्रारम्भ होता है, और मौसम अधिक मासके कारण महीनोंपर आ मिलता है, याने चैत्रसे गर्मी, श्रावणसे वर्षा, और मार्गशीर्षसे शीत ऋतु गिनते हैं; परन्तु शास्त्रकारोंने एक वर्षके ६ ऋतु माने हैं, अर्थात् चैत्र, वैशाखमें वसन्त; ज्येष्ठ, आषाढ़में ग्रीष्म; श्रावण, भाद्रपदमें वर्षा; आश्विन, कार्तिकमें शरद;

(१) यह नियम सदाके लिये ऐसा नहीं रहता कभी कभी न्यूनाधिक होता रहता है.

(२) उन्नीसवें विक्रम शतकसे पहिले इसको आषाढ़ादिक मानते थे, और आषाढ़ शुक्ल १ को प्रारम्भ गिनते थे, परन्तु अब श्रावण कृष्ण १ से प्रारम्भ मानते हैं.

मार्गशीर्ष, पौष में हेमन्त; और माघ, फाल्गुन में,शशिर;परन्तु चान्द्र मास होनेके कारण कभी कभी मौसममें फ़र्क़ आजाता है, इसलिये विद्वान लोग संक्रांतिके हिसावसे ऋतु मानते हैं, जैसे मीन, मेष, वसन्त; वृष, मिथुन, ग्रीष्म; कर्क, सिंह, वर्षा; कन्या, तुला, शरद; वृश्चिक,धन, हेमन्त; मकर, कुंभ,शशिर; परन्तु इनमें भी अनेक मत हैं. कितनेएक अर्द्धमास और कितने-एक अर्द्ध संक्रान्तिसे ऋतुका पलटा मानते हैं, पर हमारे अनुमानसे तो यहां तीन ही ऋतु मुख्य हैं—ग्रीष्म,वर्षा और हेमन्त,याने गर्मी,वारिश और जाड़ा,और इन्हींके अनुसार आरोग्यता व अनारोग्यता माननी चाहिये; क्यौंकि ग्रीष्ममें, विसूचिका (हैज़े) का भय; वर्षामें, स्नायु (वाला)का भय,और हेमन्तके प्रारम्भमें ज्वरका प्रकोप होता है. हिन्दुस्तानके दूसरे देशों की अपेक्षा इस देशमें विसूचिका रोग कम आता है, परन्तु वाला याने नहरूकी वीमारी वहुत होती है; और ज्वरके प्रकोपमें गुजराती याने फेफड़ेका रोग, जिसको अंग्रेज़ीमें निमोनिया वोलते हैं, लोगोंको अक्सर होजाता है. यदि .इलाज जल्दी न कियाजाये, तो यह रोग मनुष्यको एक दम दवाकर मारडालता है. एक ज्वर २१ या २८ दिनका होता है, उसको मोतीज्वरा, या पानीज्वरा, कहते हैं. यह ज्वर भी मनुष्यका प्राणान्त करने वाला है.

इस देशमें मज़्हवी मेले व त्यौहार भी समयके अनुसार ही होते हैं, इसवास्ते राजधानीमें जो जल्से और उत्सव होते हैं उनका वयान यहांपर कियाजाता है.

विक्रमी चैत्र शुक्ल १ को नवीन वर्षका आरम्भ मानकर जितने ज्योतिषी लोग हैं वे उत्तम वस्त्र और आभूषणोंसे सज्जित होकर महाराणा साहिवकी सेवामें उपस्थित हो धन्यवादके आशीर्वादात्मक श्लोकों सहित नवीन पञ्चाङ्ग भेट करते हैं, इस दिन साधारण उत्सव होता है. चैत्र शुक्ल २ के दिन गणगौरका सिंझारा (१) मानकर शहरकी स्त्रियां अच्छे रंग रंग के कपड़े और गहने पहिनकर वाग़ वाड़ियोंमें जाती हैं और राज्यमें भी उत्सव होता है, परन्तु राज्यका उत्सव महाराणा साहिवकी मरज़ीके मुवाफ़िक़ होता है. चैत्र शुक्ल ३ को प्रथम गणगौरका उत्सव होता है. इसलिये राज्य और शहरमें वड़ी धूमधाम होती है. तीसरे पहरके वक़्त पहिला नक़्क़ारह, और वाद उसके दूसरा नक़्क़ारह होता है, तीसरा नक़्क़ारह वजनेपर महाराणा साहिव सवार होते हैं, और एकलिङ्गगढ़से १९ या २१ तोप सलामीकी चलती हैं. वड़ी पौलसे त्रिपौलिया घाटतक दोनों तरफ़ लकड़ीके खंभे गाड़ेजाकर उनमें लाल रस्सियां वांधदीजाती हैं, फिर खम्भोंके पास जगह जगह पुलिसके जवान खड़े रहते हैं. उस हद्दके भीतर राजकीय मनुष्योंके सिवा कोई तमाशाई मनुष्य नहीं फिरने पाता. जव महाराणा साहिव सवार होजाते हैं, और सवारी महलोंसे रवानह होती है, तो सवके आगे

(१) इसको दातणहेला भी कहते हैं.

निशानका हाथी रहता है, उसके पीछे दूसरे हाथियोंपर सर्दार, पासबान और मर्ज़ीके लोग चढ़े रहते हैं. फिर पल्टन व जंगी रिसाला मए अपने अफ्सरोंके और अंग्रेज़ी बाजा बजता हुआ निकलता है, जिसके पीछे तामजान और ख़ासा हाथी, जिनपर सोने चांदीके हौदे कसेहुए, निकलते हैं. फिर राज्यकीय बड़े बड़े प्रतिष्ठित लोग, उमराव, सर्दार, चारण, और अह्लकार अच्छे घोड़ोंपर चढ़ेहुए आते हैं, उनके पीछे ख़ासा घोड़े ज़रीके सामान व सोने चांदीके गहनोंसे सजेहुए, और मुख्य घोड़ोंके दुतर्फ़ा चंवर व मोरछल होतेहुए निकलते हैं. युवराज (वलीअ़ह्द) के सवारीमें चलनेकी दो जगह, याने ख़ासा हाथी घोड़ोंके आगे अथवा महाराणा साहिबकी पैदल जलेबके आगे रहती हैं. फिर अर्दलीके सिपाही व लवाज़िमहके लोग और रणकंकणका मधुर सुरीला बाजा बजता हुआ, उसके पीछे श्री महाराणा साहिब अच्छी पोशाक, याने अमर शाही, अरसी शाही, और स्वरूप शाही पघड़ियोंमेंसे एक क़िस्मकी पघड़ी, जामा और कभी डोढ़ी भी जो उससे छोटी होती है, और नाना प्रकारके हीरे मोतियोंके आभूषणोंको धारण कियेहुए, कमरबन्ध व ढाल, तलवार लगाये हुए अश्वारूढ (घोड़े चढ़े) रहते हैं; और दोनों तरफ़ चंवर होते हुए, छत्र, छहांगीर, किरणिया, अडाणी, छवा आदि लवाज़िमहके साथ पधारते हैं. पीछे ख़ासावाड़ामें दूसरे सर्दार, जागीरदार, पासबान व रिसालेके सवार, उनके पीछे सांडनी सवार, जागीरदार सर्दारोंके सवार और सबके पीछे नक़्क़ारेका हाथी रहता है. सवारीके दोनों तरफ़ छड़ीदारोंकी बुलन्द आवाज़ और आगे आगे वीरताके दोहोंका गायन करने वाले ढोलियोंकी आवाज़ें सवारीके आनन्दको बढ़ाती रहती हैं. इसी ठाठके साथ महाराणा साहिब घोड़ेको कुदाते हुए धीरे धीरे त्रिपोलिया घाटपर पहुंचते हैं और वहां घोड़ेसे उतरकर नाव सवार होते हैं, जहां दो बड़ी नावें मज़्बूत जुड़ी हुई रहती हैं. इनमेंसे एक नावके ऊंचे गोखड़ेपर अनुमान दो फ़ीट ऊंचा सिंहासन रहता है, उसपर चार खंभोंवाली लकड़ीकी एक छत्री होती है. छत्री और सिंहासनको पहिले कम्ख़ाब, ज़र्दोज़ी और ज़रीके वस्त्रोंसे सुशोभित करदेते हैं. छत्रीके चारों कोनों और गुम्बज़पर मुक़ैश (बादले) के तुर्रे और कलग़ी लगादिये जाते हैं. सिंहासनके चारों तरफ़ और नीचेके तख़्तोंपर अच्छी पोशाकें व गहनोंसे भूषित सर्दार, चारण, अह्लकार व पासबान अपने अपने दरजेके मुवाफ़िक़ बैठते और कितने ही खड़े रहते हैं. दूसरे नम्बरके सभ्यगण उसीके समीप जुड़ी हुई एक दूसरी नावमें और बाक़ी किश्तियोंमें सवार होते हैं. फिर नौकाकी सवारी धीरे धीरे दक्षिणकी तरफ़ बड़ी पालतक जानेके बाद पीछी घूमकर त्रिपोलिया घाटपर आती है. इसके बाद महलोंसे गणगौर माताकी सवारी

निकलती है, जिसके साथ नाना प्रकारकी सुन्दर पोशाकें और सोने चांदीके गहनोंसे भूपित दासियोंके झुंड रहते हैं. एक स्त्रीके सिरपर अनुमान ३ फ़ीट ऊंची गणगौर माताकी काष्ठकी बनी हुई मूर्त्ति सोने तथा मोतियोंके आभूषणों युक्त, जिसके दोनों तरफ़ दो दासियां हाथमें चंवर लियेहुए और आगे पीछे सवारीका लवाज़िमह हाथी, घोड़े, जिनपर पंडित व ज्योतिपी और ज़नानीड्योढ़ीके महता अह्लकार वगैरह लोग चढ़े रहते हैं. त्रिपोलिया घाटपर सवारीके पहुंचते ही महाराणा साहिब अपने सिंहासनसे खड़े होकर गणगौर माताको प्रणाम करते हैं, फिर गणगौर माताको फ़र्श युक्त वेदिकापर रखकर पंडित व ज्योतिपी लोग पूजन करके महाराणा साहिबको आशिका देते हैं. इसके बाद दासियां गणगौर माताके दोनों तरफ़ बराबर खड़ी होकर प्रणामके तौरपर झुकतीहुई लूहरें (एक तरहका गाना) गाती हैं. यह जल्सह देखनेके लाइक़ होता है. यहां राज्यमें काष्ठकी गणगौरकी बड़ी मूर्त्तिके सिवा मिट्टीकी बनी हुई गणगौर और ईश्वरकी छोटी मूर्त्तियां भी निकाली जाती हैं. बाक़ी शह्र और कुल मुल्कमें ईश्वर और गणगौरकी मूर्त्तियां साथ ही निकाली जाती हैं. राजपूतानहकी कुल रियासतोंमें इस त्यौहारपर बड़ा उत्सव माना जाता है. इस देशमें कहावत है, कि दशहरा राजपूतोंके लिये और गणगौर स्त्रियोंके वास्ते बड़ा त्यौहार है. यहां महादेवको ईश्वर और पार्वतीको गणगौर कहते हैं. फिर गणगौर माताको जिसतरह जुलूसके साथ लाते हैं उसीतरह महलोंमें पहुंचाते हैं, इसके बाद उसी फ़र्श पर रंडियोंकी घूमर और गाना होता है. रेज़िडेण्ट वगैरह साहिब लोग भी मए अपनी २ मेमोंके किश्तियोंमें सवार होकर इस जल्सहको देखनेके लिये आते हैं. फिर शुरूमें महाराणा साहिबकी नाव धीरे धीरे दक्षिणकी तरफ़ बढ़ती है और कई किश्तियां उसके आगे पीछे चलाकरती हैं. थोड़ी दूर जानेके बाद आतिशबाज़ी चलानेका हुक्म होता है और तालाबके परले किनारों तथा किश्तियोंपरसे तरह तरहकी रंगबरंगी आतिशबाज़ियां छूटती हैं. इस समयका आनन्द देखनेहीसे मालूम होता है. इस अवसरपर बहुतसे लोग दूर दूरसे देखनेको आते हैं, क्योंकि उदयपुरके गणगौरके जल्सेकी राजपूतानहमें बड़ी तारीफ़ है. तालाबके किनारोंपर देखने वाले स्त्री पुरुषोंकी बड़ी भीड़ रहती है, जिससे उनके भीतर घुसना बहुत कठिन होता है. अख़ीरमें महाराणा साहिब रूपघाटपर नौकासे उतरकर तामजानमें सवार हो महलोंमें पधारजाते हैं, जहां क़ीमती ग़ालीचे मख़मलका फ़र्श बिछा हुआ, और सोने चांदीकी चोबोंपर ज़र्दोज़ी शामियाने तने हुए, और ज़र्दोज़ी व ज़रबफ़्तके गद्दी तकिये लगे हुए, सोने चांदीके सिंहासन व कुर्सियां बिछी हुई, और झाड़ व फ़ानूस लगेहुए तय्यार रहते हैं. इस स्थानकी तय्यारी भी देखनेके योग्य होती है, परन्तु दूसरे लोग विदा होजाते हैं, और इस स्थानतक

सिर्फ़ वेही सर्दार पासबान लोग पहुंचते हैं, जो निरन्तर महाराणा साहिबके मर्जी पात्र हैं. फिर इन लोगोंको रुख्सत देकर महाराणा साहिब ज़नानहमें पधारजाते हैं. इसी तरह ४ दिनतक यह जल्सह इसी तरीकेपर होता है, मामूलसे दो या चार दिन अधिक रक्खाजाना महाराणा साहिबकी मर्ज़ीपर निर्भर है. हमने इस जल्से का बयान बहुत मुरूतसर तौरपर लिखा है, लेकिन् देखने वाले इस बयानसे बढ़कर देखेंगे.

चैत्र शुक्ल ८ को शतचण्डीका पाठ, होम, और देवीका पूजन होता है. चैत्र शुक्ल ९ को रामचन्द्रका जन्मोत्सव मानकर मध्यान्हके समय राजकीय तोपखानहसे तोपोंके फ़ाइर होते और कुल मन्दिरोंमें राग, रंग, नाच, गान आदि उत्सव होता है, दूसरे दिन पुजारी लोग राज्यमें और सेवकोंके घर पंजेरी, पंचामृत व प्रसाद पहुंचाते हैं.

वैशाख कृष्ण १ को राज्यमें श्री एकलिंगेश्वरका प्रागट्योत्सव (१) होता है. इस दिन क़ाइदह है, कि दर्बार श्री एकलिंगजी दर्शनार्थ पधारते हैं, परन्तु वहांका जाना इच्छापर निर्भर है. इस उत्सवमें शामके वक्त महाराणा साहिब दर्बार करते हैं, और मिष्टान्न भोजनकी गोठ भी होती है, बाद इसके हाथियोंकी लड़ाई और तोपोंकी सलामी कराईजाती है.

वैशाख कृष्ण ३ को धींगा गणगौरका त्यौहार मानाजाता है, जिसमें चैत्री गणगौरके मुवाफ़िक़ ही जल्सह होता है. यह त्यौहार उदयपुरके सिवा राजपूतानहकी किसी दूसरी रियासतमें नहीं होता. राजपूतानहमें धींगाई ज़बर्दस्तीको कहते हैं. उदयपुरके महाराणा राजसिंह अव्वलने अपनी छोटी महाराणीके प्रसन्नार्थ रीतिके विरुद्ध ज़बर्दस्ती यह त्यौहार प्रचलित किया था, जिससे इसका नाम धींगा गणगौर प्रसिद्ध हुआ.

वैशाख शुक्ल ३ को अक्षय तृतीयाका त्यौहार होता है. इस अवसरपर महाराणा साहिब जगन्निवास महलमें पधारकर गोठ आरोगते हैं. इस त्यौहारपर पहिले यह दस्तूर था, कि राज्यकी तरफ़से हाज़िरीन जल्सहके जामों और अंगरखियोंकी चोलियां केसरके रंगसे रंगी जाती थीं, लेकिन् वैकुण्ठवासी महाराणा सज्जनसिंह साहिबने उसके एवज़ केसर और कुसुम्भेके छींटोंसे सभ्यगणोंके सब वस्त्र वसंती बना देनेका हुक्म देदिया. दिनका जल्सह होचुकनेके बाद महाराणा साहिब सायंकालको जुलूसी नौकापर सवार होकर तालाब की सैर करते हैं और राग रंग होता रहता है, फिर महलोंमें पधार जाते हैं.

वैशाख शुक्ल १४, नृसिंह जयन्तिके दिन मन्दिरोंमें नृसिंहका जन्मोत्सव मानाजाता है.

---

(१) जन्म दिनका जल्सह.

ज्येष्ठ शुक्ल ११ को निर्जला एकादशी मानी जाती है. इस धर्मके दिन निर्जल उपवास अत्यन्त भावके साथ छोटे बड़े सब हिन्दू लोग करते हैं, और मन्दिरोंमें उत्सव होता है.

आषाढ़ शुक्ल १५ को गुरुपूर्णिमा होती है. इस दिन पठन पाठन करने वाले बालक अपने अपने गुरुका पूजन करते हैं, और एकलिंगेश्वरकी पुरी तथा सवीना-खेड़ामें महंत सन्यासियोंका पूजन होता है. यदि अवसर हो तो महाराणा साहिब भी सवीने खेड़े पधारते हैं.

श्रावण कृष्ण १ को राज्यमें नवीन वर्षका उत्सव होता है. इसदिन यदि महाराणा साहिबकी इच्छा हो, तो किसी स्थानको बाहिर पधारते हैं, वर्नह महलों ही में रहते हैं; इसदिन प्रधानकी तरफ़से गोठ (दावत) मए रंग राग वगैरह खुशीके साथ होती है, और अह्लकार लोग नज़्रें दिखलाते हैं.

श्रावण कृष्ण ऽऽ को हरियाली अमावास्या मानकर प्रजागण उत्सव करते हैं. इसदिन महाराणा साहिब अपने सभ्यगणों सहित बड़े पुरोहितके मकानपर पधारकर भोजन करते हैं, और शहरके आम लोग देवालीके पहाड़पर नीमच माताके दर्शनोंको जाते हैं.

श्रावण शुक्ल ३ को काजली तीजका त्यौहार मानाजाता है. इस त्यौहारको आम राजपूतानहमें राजा व प्रजा सब मानते हैं, और महाराणा साहिब जगन्निवास महलमें पधारकर गोठ जीमते हैं, और रंगीन रस्सोंके झूलोंपर वेश्याएं झूलतीं और गायन करती हैं. शामके वक्त महाराणा साहिब जुलूसके साथ नाव सवार होकर मए राग रंगके किनारेपर पहुंचते हैं. यदि इच्छा हो तो वहांसे हाथी या घोड़ेपर सवार होकर बाज़ारकी तरफ़ घूमते हुए, वर्नह तामजान सवार होकर सीधे महलोंमें पधार जाते हैं. बाज़ वक्त जगन्निवासमें और बाज़ वक्त बाड़ी महलमें वैसी ही तय्यारी होती है, जैसी कि गणगौरके उत्सवमें बयान कीगई.

श्रावण शुक्ल १५ को रक्षा बंधनका मुख्य त्यौहार मुहूर्त्तके अनुसार मानाजाता है. जब रक्षा वन्धन होता है उस समय राज्यके कुल ब्राह्मण, सर्दार, चारण व अह्लकार महाराणा साहिबके दाहिने हाथको राखी बांधते हैं. फिर आपसमें भी एक दूसरेके बांधता है, लेकिन् यह त्यौहार ख़ासकर ब्राह्मणोंके लिये है, जो हरएकके यहां जाते हैं और राखी बांधकर दक्षिणा लेते हैं. इस दिन बहिन बेटियां भी अपने पिता व भाइयोंके अवश्य राखी बांधती हैं और उसके एवज़ वे लोग पूहलीका दस्तूर देते हैं. नारियल और खोपरोंका इस त्यौहारपर बड़ा ही खर्च होता है.

भाद्रपद कृष्ण ३ को बड़ी तीजका त्यौहार मानाजाता है. यह त्यौहार भी अधिकतर उदयपुर ही में होता है. यदि राजपूतानहकी कितनी एक रियासतोंमें होता भी हो, तो यहांसे प्रचलित हुआ जानना चाहिये. मैंने सुना है, कि महाराणा राजसिंहने अपनी छोटी महाराणीके प्रसन्नार्थ श्रावण शुक्ल ३ को छोटी और इसको बड़ी कहकर प्रचलित किया था. इसका जल्सह भी श्रावणी तीजके मुवाफ़िक़ ही होता है.

भाद्रपद कृष्ण ८ को कृष्ण जन्माष्टमीका उत्सव होता है. यह मज़्हबी त्यौहार राज्यके व शहरके मन्दिरोंमें बड़ी धूमधामके साथ कियाजाता है, और आम लोग व्रत उपवास करते हैं. दूसरे रोज़ पुजारी लोग राज्यके तथा नगरके प्रतिष्ठित लोगोंके यहां प्रसाद भेजते हैं, और इसी दिन दधिकर्दमका उत्सव भी होता है.

भाद्रपद कृष्ण १२ को वत्सद्वादशी होती है. इस दिन स्त्रियां बछड़े सहित गायका पूजन करती हैं, उस वक़ लड़के लड़की अपनी माताकी साड़ी (ओढ़नी) का पल्ला पकड़ते हैं, तब वे अपने बालकोंको खोपरा देती हैं. राज्यके ज़नानहमें भी यही दस्तूर होता है, और हम लोगोंको क़ाइदेके मुवाफ़िक़ मुहर रुपया और नारियलका गोला मिलता है.

भाद्रपद कृष्ण १४ को श्री एकलिंगेश्वर तथा बाणनाथके अर्पण हुए पवित्रे महाराणा साहिब अपने हाथसे सभ्यगणोंको देते हैं. अव्वल नम्बरके लोगोंको सुनहरी, दूसरे नम्बरको रुपहरी और तीसरे दरजेवालोंको रेशमी पवित्रे दियेजाते हैं. इस पवित्रेका मिलना राज्यके लोग अपनी इज़्ज़त मानते हैं.

भाद्रपद कृष्ण अमावास्या को कुशोदकी अमावास्या बोलते हैं. इस दिन ब्राह्मण लोग जंगलसे नवीन दर्भ लाकर एक सालतक उसीसे अपना धर्म सम्बन्धी कार्य करते हैं.

भाद्रपद शुक्ल ४ को गणेश चौथका उत्सव होता है. इस दिन नगरके बालक दण्डा बजाते हुए शहरमें घूमते और दर्बारमें भी जाते हैं. महाराणा साहिब रात्रिके समय महलोंके बड़े चौकमें रुपये, नारियल और लड्डू फेंकते हैं, और समीपवर्ती लोग भी फेंका करते हैं, जिनको आम लोग बड़े उत्साहसे लूटते हैं; दिनको महाराणा साहिब गणपतिके प्रसिद्ध स्थानोंमें दर्शनार्थ पधारते हैं. इसी प्रकार शहरके धनवान लोग भी अपने पड़ोसियोंके घरों पर नारियल अथवा लड्डू फेंकते हैं, लेकिन् मूर्ख लोग इसके विरुद्ध पत्थर फेंककर अपना मनोर्थ पूर्ण करते हैं. इसकी बाबत् यह मश्हूर है, कि आजके दिन गालियां खाना अच्छी बात है.

भाद्रपद शुक्ल ७ को नागणेचीका पूजन होता है, और महाराणा साहिब दर्बार करते हैं. इसका कारण यह है, कि जोधपुरके राव मालदेवके साथ मंगनी कीहुई

झाला जैतसिंहकी कन्याको महाराणा उदयसिंह व्याह लाये, जिनके साथ राठौड़ोंकी कुल-देवीका डब्बा चला आया था, जिसका हाल महाराणा उदयसिंहके हालमें लिखाजावेगा.

भाद्रपद शुक्ल ११ को देवझूलनी एकादशीका उत्सव होता है. इस मज़्हवी त्यौहारका जल्सह राजा तथा प्रजा सबमें बराबर होता है. पुजारी लोग विष्णुकी धातुमयी, पाषाणमयी, अथवा चित्रमयी मूर्त्तिको विमान (रेवाड़ी) में बिठाकर किसी जलाशयपर लेजाकर स्नान करवाते हैं, और हज़ारों आदमी गाते बजाते विमानके साथ जाते हैं. इस दिन खुद महाराणा साहिब भी पीताम्बररायकी रेवाड़ीके साथ पीछोला तालावतक जाते हैं. लेकिन् बाज़ वक्त बीचहीसे पीछे लौटजाते हैं, और इस दिन सब लोग उपवास करते हैं.

भाद्रपद शुक्ल १२ को वामनद्वादशी होती है. इस दिन वामनावतारका जन्मोत्सव मानाजाता है.

भाद्रपद शुक्ल १४ को अनन्त चतुर्दशी मानीजाती है. इस दिन महाराणा साहिब व आम लोग एक भुक्त (एक बार भोजन) करते हैं, और अनन्तका पूजन करके महाराणा साहिब अपने हाथसे रेशमी अनन्त (१) अपने सब समीपवर्तियोंको देते हैं. इस अनन्तका मिलना भी यहां इज़्ज़तमें दाख़िल है.

भाद्रपद शुक्ल १५ से आश्विन कृष्ण अमावास्यातक श्राद्ध पक्ष माना जाता है. इसमें हिन्दू लोग अपने अपने पूर्वजों (दादा पिता) की मरण तिथिके दिन श्राद्ध, तर्पण और ब्राह्मण भोजन करते हैं. श्राद्ध पक्षमें सब हिन्दू लोग मांस मद्यका त्याग करदेते हैं, और मुसल्मान वग़ैरह दूसरी क़ौमोंको भी जीव मारनेकी मनादी होजाती है.

श्रावण महीनेमें जितने सोमवार आते हैं उनको सुखिया सोमवार कहते हैं. इसी-लिये प्रत्येक श्रावणी सोमवारको शहरके सब स्त्री पुरुष अच्छे वस्त्र आभूषणोंको पहिनकर बाग़बग़ीचोंमें जाते हैं, वहां स्त्रियां आनन्दके साथ गायन करती और सोमवारका व्रत खोलती हैं. इन दिनोंमें विशेषकर सज्जननिवास बाग़में बड़े भारी मेले होते हैं, सड़कों पर बाज़ार लगजाते, और जगह जगह डोलर व झूले वग़ैरह अनेक प्रकारके खुशीके सामान नज़र आते हैं.

भाद्रपद महीनेमें कभी कभी देवझूलनी एकादशीके दिन मुसल्मानोंके मुहर्रमके ताज़िये भी निकलते हैं, वे चान्द्र संवत्सर और मास होनेके कारण अनुमान ३२-३३ वर्षमें देवझूलनीके दिन आमिलते हैं. ताज़िये और रामरेवाड़ीके एकही दिन निकलनेके

---

(१) १४ सूत्रके तागोंसे चौदह गांठ देकर एक डोरा बनाया जाता है, उसको अनन्त कहते हैं, और व्रत करनेके बाद लोग उसे दाहिनी भुजापर बांधते हैं.

कारण हिन्दुस्तानके अक्सर नगरोंमें बड़े बड़े फ़साद होजाते हैं, परन्तु उदयपुरमें आजतक कभी फ़साद न हुआ. ख़ास उदयपुरमें बहुतसे अच्छे अच्छे ताज़िये निकलते हैं, लेकिन् भीम पल्टनका ताज़िया सबसे बड़ा होता है.

भाद्रपद कृष्ण ११ से भाद्रपद शुक्ल ४ पर्यंत जैन सितंबरी मतवालोंके पर्यूषण (पजूसन) होते हैं, जिनमें भी प्रजाकी ख़ातिरीके लिये राज्यसे क़साई लोगोंको जानवर मारनेकी मनादी होजाती है, इत्यादि.

आश्विन शुक्ल १ से नवरात्रिका प्रारम्भ होता है. पहिले दिन प्रातः कालके समय जुलूसी लवाज़िमह पल्टन, रणकंकणका बाजा, हाथी व घोड़ा वगैरहके साथ सवारी महलोंसे खड्ग लेकर कृष्णपोल दर्वाज़हके भीतर सज्जननिवास बाग़के पास "खड्ग स्थापन" मक़ामपर पहुंचती है. फिर खड्गको इ़ज़्ज़तदार सभ्यगण मन्दिरके भीतर लेजाते हैं. वहां लादूवासका आयस (नाथ महन्त) और पंडित ज्योतिषी व सभ्यगण एक गवाक्ष (गोखड़े) में खड्ग स्थापन करके एक नाथ (१) को उसके सामने बिठादेते हैं, जो अष्टमी पर्यंत निर्जल और निराहार वहीं बैठा रहता है. इस अ़र्सेमें राज्यके पहरे वगैरहसे उस मन्दिरका अच्छी तरह बन्दोबस्त रक्खाजाता है. और हज़ारहा हिन्दू लोग प्रतिदिन उसके दर्शनोंको वहां जाते हैं, और लादूवासका आयस कई नाथों सहित इस मन्दिरके गिर्द डेरा लगाकर रहता है. महलोंके भीतर अमरमहलके नीचेकी चौपाड़में देवी पूजनकी स्थापना होती है, जहां देवीकी मूर्ति और सर्व प्रकारके शस्त्र कलशादि स्थापन करके ब्राह्मणोंकी वरणी (मज़्हबी दुर्गापाठ) बिठाई जाती है. फिर महाराणा साहिब वहां दर्शनानन्तर बलिदान अर्पण करके किश्ती सवार हो अम्बिका भवानीके दर्शनोंके लिये पधारते हैं. इस दिनसे प्रायः देवी भक्त लोग नव दिनतक एक भुक्त व उपवास करते हैं. इस व्रतमें मद्य मांसका निषेध नहीं होता. सायंकालके समय महाराणा साहिब सवारी करके खड्ग स्थापनके दर्शनोंको पधारते हैं.

आश्विन शुक्ल २ को महाराणा साहिब बहुत सवेरे उठते हैं, और स्नानादि नित्य नियम से निवृत्त होनेके पश्चात् अमरशाही, अरसीशाही, अथवा स्वरूपशाही पघड़ी, जिसपर बहुमूल्य रत्न जटित भूषण और मुक़ैशके तुर्रा, कलग़ी व छोगा रहते हैं; बदनपर जामा, दुपट्टेका कमरबन्ध, और पाजामा वगैरह कुल पोशाक, तथा अनेक प्रकारके

---

(१) लादूवासका आयस, जो बड़ा इ़ज़्ज़तदार और मुआ़फ़ीदार मठधारी महन्त है, नवरात्रिके पूर्व नाथों (कनफटे सन्यासियों) की एक सभा करता है, जिसमें एक आदमी सुपारी लेकर सबके सामने फिरता है; फिर जिस साधूकी सामर्थ्य नौ दिनतक निरान्नजल खड्ग लेकर बैठनेकी हो वह उस सुपारीको ग्रहण करलेता है. फिर उसको जुह्लाव देकर शुद्ध करदेते हैं, और वही नाथ खड्ग लेकर नवरात्रि तक बराबर बैठता है.

सोने व रत्नोंके भूपण ओर ढाल, तलवार आदि शस्त्र धारण करते हैं. तीसरे नक़ारे की आवाज़ (१), तोपोंकी सलामी और बैंड बाजेका बजना और महाराणा साहिबका घोड़ेपर सवार होना, एकही साथ होता है. फिर महाराणा साहिब जुलूसकी सवारीके साथ हाथी पोल दर्वाज़हके बाहिर चौगानमें पधारते हैं, जहांपर अच्छे चढ़ैत सर्दारोंके साथ थोड़ी देर घोड़े दौड़ाकर दरीख़ानहमें पधार जाते हैं, जोकि दर्बारके लिये बनाया गया है. दरीख़ानह के नीचे एक तरफ़ हाथियोंकी लड़ाई, एक तरफ़ पहलवानोंकी कुश्ती, और सामने चौगानमें ख़रगोश, शियाल, व लौमड़ियोंका छोड़ाजाना और उनके पीछे कुत्तोंका दौड़ना वगैरह कई प्रकारके तमाशे होते हैं, और परिन्दोंपर बाज़, बहरी आदि छोड़े जाते हैं. पहिले हररोज़ शराब पिलायाहुआ एक मस्त महिप (भैंसा) छोड़ाजाकर किसी उमराव व सर्दारकी जमइयतके सवारोंको उसपर तलवार व बर्छोंके वार करनेका हुक्म होता था, मगर आजकल सिर्फ़ भलका ४ ही के दिन इस प्रकारसे चौगानिया वगैरह छूटता है. इसके अलावह हरएक दिन एक महिष दरीख़ानहके नीचे लाया जाता है, और जिस सर्दारको हुक्म होता है वही उसका सिर तलवारसे काट डालता है. फिर अगड़पर हाथियोंकी लड़ाई होकर दर्बार बर्ख़ास्त होता है, और सवारी महलोंमें पहुंचती है. महाराणा साहिबके महलोंमें दाख़िल होनेके समय मामूली तोपोंकी सलामी सर होती है. इसीतरह जुलूसी सवारीके साथ तीसरे पहरके वक़्त महाराणा साहिब अम्बिका भवानीके दर्शनोंको पधारते हैं, और वहां देवीके सामने दो बकरे और ५ महिषोंका बलिदान होता है. यहां खुद महाराणा साहिब व उमराव भी बलिदानके समय चक्र करते हैं, या महाराणा साहिब जिस किसीको हुक्म देते हैं वही सर्दार तलवारका वार करता है. मैंने हमेशह देखा है, कि महिपका सिर और पैर कटकर राजपूतोंकी तलवार ज़मीनतक पहुंचजाती है. बलिदान होनेके पश्चात् उसी सवारीके ठाठसे महाराणा साहिब किश्तियोंपर सवार होकर महलोंमें पहुंचते हैं.

आश्विन शुक्ल ३ के प्रातःकालको जुलूसी सवारीसे चौगानमें मामूली रस्में अदा करके महलोंमें प्रवेश करते हैं, और शामके वक़्त हरसिद्धि देवीके दर्शनोंको, जिसे लोग हस्तमाता बोलते हैं, पधारना होता है. वहां भी दो बकरे और पांच महिपोंका बलिदान करवाकर वापस महलोंमें प्रवेश करते हैं.

आश्विन शुक्ल ४ के प्रातःकालको चौगान, और शामको खड्ग दर्शनके लिये जुलूसी सवारी होती है. महाराणा साहिब खड्ग दर्शनोंके बाद हाथीपर सवार होकर, जिसको

(१) पुराने समयसे यह दस्तूर है, कि जब महाराणा साहिबके सवार होनेका इरादह होता है, तो ४ घड़ी से लेकर दोपहर पेश्तर नक़ारह बजाया जाता है. फिर कुछ अरसह बाद दूसरा नक़ारह होता है, जिसको सुनकर कुल रियासती लोग बे बुलाये हाज़िर होजाते हैं, और सवार होते समय तीसरा नक़ारह होता है.

हुक्म देते हैं वही एक महिषका सिर छेदन करता है. महाराणा भीमसिंहतक यह रीति थी, कि खुद महाराणा साहिब हाथीपर सवार होकर महिषपर तीर चलाते थे, जो उस के बदनको फोड़कर दूसरी तरफ़ ज़मीनमें जालगता था. यह मेरे पिताने अपनी आंखोंसे देखा था. इसी वास्ते इस दिनको भल्का चौथ कहते हैं, मगर महाराणा जवानसिंहने इस रीतिको बन्द करदिया. फिर सवारी उसी लवाज़िमहसे धीरे धीरे महलोंमें दाख़िल होती है.

आश्विन शुक्ल ५ के प्रातः काल चौगानको सवारी जाती है और शामको अन्नपूर्णाके दर्शनोंको पधारते हैं. अन्नपूर्णा देवीके सामने महिष व बकरोंका बलिदान नहीं होता.

आश्विन शुक्ल ६ के दिन प्रातःकाल चौगानकी सवारी होती है, और शामको कहीं पधारनेका आवश्यक दस्तूर नहीं है.

आश्विन शुक्ल ७ के प्रातः काल चौगान होकर श्यामलबाग़में करणी माताके दर्शन करनेको पधारते हैं वहां दो बकरे और एक महिषका बलिदान चढ़ानेके बाद महलोंमें प्रवेश करते हैं, और शामको इच्छा हो तो कालिकाके दर्शन करनेको पधारते हैं.

आश्विन शुक्ल ८ के दिन प्रातः काल मामूली कृत्य कर, भंडारके चौकमें पधार, पूर्णाहुति कर, अमरमहलकी चौपाड़में प्रवेशकर, देवीविसर्जनका दर्शनकर, स्थापन किये शस्त्रोंमेंसे तलवार (१) हाथमें लेकर बाहिर चौकमें पधारते हैं, और एक बकरेका बलिदान होता है. इसके बाद ज़नानी ड्योढ़ीके दर्वाज़ेपर आकर एक महिषका बलिदान कराते हैं, पश्चात् किश्तियोंमें सवार होकर अम्बिका भवानीके दर्शन (२) को पधारते हैं.

आश्विन शुक्ल ९ के दिन यदि महाराणा साहिबको अवकाश हो, तो समीनाखेड़ाके मठमें होमकी पूर्णाहुति करनेको जाते हैं; शामके वक्त प्रथम घोड़ोंका और पीछे हाथियोंका पूजन करनेके बाद नगीनाबाड़ीमें गद्दीपर विराजकर दर्बार करते हैं. फिर उस खड्गधारी नाथको जो (लवाज़िमह और सवारीके साथ मियानेमें सवार होकर आता है), सीढ़ियोंके पाससे उतारकर दर्बारके स्थानमें लाते हैं. उस वक्त खड्गधारी नाथका हाथ एक तरफ़से लादूवासका आयस और दूसरी तरफ़से धर्माध्यक्ष (धर्मखाताका दारोग़ह) थामे रहता है, और साथमें उसके बहुतसे नाथ (कनफटे सन्यासी) सींगी नाद बजाते हुए आते हैं.

---

(१) यह तलवार शार्दूलगढ़के राव जशकरण डोडियाको बेचरा माताने दी बतलाते हैं, और उसने महाराणा गढ़लक्ष्मणसिंहको नज़ की, जिसके प्रभावसे क़िला चित्तौड़ महाराणा हमीरसिंहने मुसल्मानोंसे वापस लिया, और इसी तलवारको कमरमें लगाकर महाराणा प्रतापसिंहने बादशाहोंसे बड़ी बड़ी लड़ाइयां लड़ीं और जय पाया.

(२) अम्बिका भवानीके दर्शन कभी होमकी पूर्णाहुति करनेके बाद और कभी पहिले करते हैं, इसमें कोई नियम नहीं है, और अम्बिकाके सामने २ बकरे व १ महिषका बलिदान करायाजाता है.

फिर महाराणा साहिब गद्दीपर खड़े होकर उस खड्गधारी नाथके हाथसे खड्ग और आशिका लेकर नाथोंको विदा करते हैं. तदनन्तर यहांसे ये लोग रसोड़े (कर्ण महलके चौक) में जाते हैं, और वहां धर्माध्यक्ष उस खड्गधारी नाथका खप्पर रुपये और अश्रफ़ियोंसे भरता है, और तमाम नाथ लोगों को भोजन कराया जाता है, इसके बाद सब नाथ सींगीनाद बजाते हुए अपने महन्तके साथ डेरोंको वापस जाते हैं.

आश्विन शुक्ल १० को दशहरेका बड़ा त्यौहार माना जाता है. यह वह दिन है कि जिस दिन रामचन्द्रने रावणपर चढ़ाई की थी. मेवाड़में इस दशहरेका सबसे बड़ा भारी उत्सव होता है और कुल उमराव, सर्दार व दूसरे जागीरदार, जिनको नौकरीके एवज़ जागीरें मिली हैं, उदयपुरमें हाज़िर होते हैं. इसके सिवा छोटे जागीरदार और कम हैसियत वाले व भोमिया लोग इस दिन अपने अपने हाकिमान ज़िलाके पास हाज़िर होजाते हैं. शामके ४॥ बजे तीसरा नक़ारह होते ही महाराणा साहिब जुलूसकी सवारीके साथ घोड़ेपर सवार होकर खेजड़ी (शमी) का पूजन करनेको पधारते हैं, जो खेजड़ीका वृक्ष हाथीपोल दर्वाज़हके बाहिर रेज़िडेन्सीके पश्चिम तरफ़ एक बड़े चबूतरेके किनारेपर है. इस चबूतरेके चारों तरफ़ सुर्ख़ रंगकी क़नातका बाड़ा खींचदिया जाता है, जिसके भीतर एक बड़ा शामियानह फ़र्श वग़ैरह अच्छी तय्यारीसे सज्जित रहता है; बाहिरकी तरफ़ ड्योढ़ीके सामने प्राचीन रीतिके अनुसार शोभा निमित्त तोरण लगाया जाता है. महाराणा साहिब तोरण याने द्वारवंदनका दस्तूर कर भीतर जाके खेजड़ीका पूजन करते हैं. इस समय वेद मंत्रोंसे अभिषेक कियेहुए ४ तीर चारों दिशाओंमें शहरके दर्वाज़ोंपर प्रस्थान निमित्त (१) भेजदिये जाते हैं. इसके बाद महाराणा साहिब गद्दीपर विराजकर चारण कवि लोगोंके मुंहसे अपने पूर्वजोंकी वीरतामयी कविता (शाइरी) सुनते हैं. फिर क्रमसे कुल मौजूदह सर्दार, पासवान, चारण (२), अह्लकार वग़ैरहकी नज़्रें लीजाती हैं. ताज़ीम वालोंकी नज़्रें खड़े खड़े और बे ताज़ीम वालोंकी बैठकर लेते हैं. जलेबी तोपख़ानहसे तोपोंके १०० या १५० फ़ाइर होते हैं. दर्बारका यह दस्तूर है, कि महाराणा साहिबके दाहिने हाथ वाली लाइनको बड़ी ओल (पंक्ति) और बाएं हाथ वालीको कुंवरोंकी ओल कहते हैं. बाज़ बाज़ सर्दारोंमें बैठकका झगड़ा रहता है, लेकिन् क़दीमसे दस्तूर यह है, कि किसी सर्दारको किसी नम्बरकी बैठक मिली, तो उस नम्बरपर पहिले बैठने वाले सर्दारको एक नम्बर नीचे हटकर बैठना पड़ेगा और नई बख़्शीहुई नशिस्त (बैठक) उसी

---

(१) इन तीरोंके प्रस्थान रखनेका प्रयोजन यह है, कि एक वर्ष पर्यन्त महाराणा साहिबको चारों दिशाओंकी यात्राका मुहूर्त होचुका, फिर दोबारह मुहूर्त देखनेकी आवश्यकता नहीं.

(२) चारण और ब्राह्मण वग़ैरह लोगोंकी नज़्रें मुआफ़ कीजाती हैं.

नम्बरकी मानी जायेगी, जिस नम्बरपर कि बख़्शी गई हो. दरीख़ानहका दारोग़ह हरएक दर्बारी शरूसको अपनी अपनी नशिस्त (बैठक)पर बिठा देता है. दर्बार बर्ख़ास्त होनेके वक्त तंबोलख़ानहका दारोग़ह और दर्बारका दारोग़ह दोनों मिलकर महाराणा साहिबके हाथसे ताज़ीमी लोगोंको बीड़ा दिलाते हैं, और जिनको हाथसे देनेका दस्तूर नहीं उनको दारोग़ह देता है. बीड़ा तक़्सीम होनेकी अ़र्ज़ होते ही दर्बार बर्ख़ास्त होकर महाराणा साहिब हाथीपर सवार होते हैं. सवारीके हाथीके दाईं बाईं तरफ़ ख़वासीके दो हाथी दूसरे अच्छी झूलें व चांदीके हौदोंसे कसेहुए रहते हैं, जिनपर एक एक सर्दार चंवर लेकर बैठता है. महाराणा साहिबकी ख़वासीमें क़दीम ज़मानहसे प्रधानके बैठनेका दस्तूर था, लेकिन् हालमें यह क़ाइदह है, कि पारसोली, आसींद, व सर्दारगढ़ वगैरह ठिकानोंके सर्दार बैठते हैं. एक चंवर ख़वासी वालेके हाथमें और दूसरा महावतके हाथमें रहता है, और दोनों इधर उधरके हाथियोंपरसे भी चंवर होते चलते हैं. यह सवारी बड़ी रौनक़ और जुलूसके साथ महलोंमें दाख़िल होती है. फिर नाहरोंके दरीख़ानहमें बड़ा दर्बार होता है, उस वक़्त चारण कवि लोग अपनी निजकृत कविता सुनाते हैं, और हाथी घोड़े नज़्र होते हैं. थोड़ी देरके बाद दर्बार बर्ख़ास्त होता है, उस वक़्त उमरावोंको रुख़सतके बीड़े देकर बिदा करते हैं. फिर महाराणा साहिब महलोंमें तश्रीफ़ लेजाते हैं, और सबके रुख़्सत होनेके बाद आतिश्बाज़ी छोड़ी जाती है, और रात्रिको कुल सर्कारी तोपोंसे एक एक फ़ाइर हाज़िरीके तौरपर होता है.

दशहरा और शरदकी पूर्णिमाके बीचमें एक दिन फ़ौजकी हाज़िरीके लिये मुहल्लाके नामसे नियत होता है. इस दिन भी कुल सवारी दशहरेके मुवाफ़िक़ ही होती है, लेकिन् महाराणा साहिब व कुल सर्दार, पासवान वगैरह लोग फ़ौजी लिबास पहिनते हैं, याने सिरपर लोहेका टोप, जिसपर तुर्रा कलग़ी लगे हुए, बदनपर कवच अथवा हज़ारमेख़ी अथवा कड़ीदार बक्तर, हाथोंमें दस्ताने, पैरोंमें कड़ीदार पाजामें; हाथोंमें बर्छे वा खाण्डे रखते हैं, घोड़ोंकी पीठोंपर पाखर, और मुंहपर बनावटी सूंडें लगी हुई होती हैं. इस सवारीका ठाठ भी देखने लाइक़ होता है. इस सवारीके देखनेको अंग्रेज़ लोग भी दूर दूरसे आते हैं. महाराणा साहिब महलोंसे सवार होकर दिल्ली दर्वाज़हके रास्तेसे सारणेश्वरगढ़के पास पहुंचते हैं, और वहां दर्बार होकर तोपख़ानह और फ़ौजकी हाज़िरी लीजानेके बाद हाथी सवार होकर वापस महलोंमें पधारते हैं. इस दिनका कुल दस्तूर दशहरेके मुवाफ़िक़ जानलेना चाहिये.

आश्विन शुक्ल १५को शरद पूर्णिमाकी ख़ुशी मानीजाती है. इस दिन शामके वक्त महाराणा साहिब सवारी करके हाथीपोलके बाहिर चौगानको पधारते हैं, और वहां हाथियोंकी लड़ाई वगैरह देखकर वापस आते हैं. रात्रिके समय सबसे ऊपरवाले प्रासाद (महल) पर सिफ़ेद बिछायत

बिछाई जाती है, गद्दी तकिया, पलंगकी बिछायत भी सब सिफ़ेद ही होती है, फ़र्शपर बिखरे हुए मुकैशकी चमक चांदनी रातमें बड़ी शोभा देती है. इस स्थानमें महाराणा साहिब और कुल सभ्यगण सिफ़ेद अथवा फ़ाख़्तह रंगकी पोशाकें पहिने हुए देखने वालोंके दिलोंको खुश करते हैं. सभ्यगणोंको विदा करनेके बाद महाराणा साहिब शयन करते हैं. इस दिन देव मन्दिरोंमें भी बड़े बड़े जलसे, और देव मूर्त्तियोंको चन्द्रमाकी चांदनीमें बिठाई जाकर पूजन वगै़रह होता है.

कार्त्तिक कृष्ण १३ को धन तेरस होती है. इस दिन यहांके आम लोगोंमें प्रचार है, किं सायङ्कालको अपने घरका कुल ज़ेवर व नक़्द एक जगह रखकर उसका पूजन करते हैं, जिसको लक्ष्मी पूजन बोलते हैं; और तीन दिनतक अखण्ड घृतका दीपक जलता हुआ रखते हैं. इन तीन दिनोंके भीतर रौप्य मुद्रा याने रुपया अपने घरसे कोई किसीको नहीं देता और दूसरेके यहांसे आवे तो उसको शुभ शकुन समझते हैं. महाराणा साहिब भी इस रोज़ लक्ष्मी देवीके मन्दिरमें दर्शनोंको पधारते हैं.

कार्तिक कृष्ण १४ को रूपचतुर्दशी होती है. यह दिन भी शुभ समझा जाता है. पुराने ज़मानहमें इस दिन जूआ खेलनेका दस्तूर था, लेकिन् अब नहीं.

कार्तिक कृष्ण अमावास्याको दीपमालिका बोलते हैं. दशहरेसे दीपमालिकातक आम लोग अपने अपने मकानोंको लींप पोतकर स्वच्छ करते हैं. इस त्यौहारको अमीर व ग़रीब सब मानते हैं. शामके वक़्त महाराणा साहिब नगीनाबाड़ीमें दर्बार फ़र्माकर कुल सरदार पासवान वगै़रह लोगोंको कालीगूंदगरीके सांठे बख़्शते हैं, बाद महाराणा साहिब नज़्दीकी भाई बेटों सहित ज़नाने महलोंमें हीड़ सिंचवानेको पधारते हैं. रात्रिके समय महलोंमें बहुतही अच्छी रौशनी होती है. अलावह इसके बाज़ार, गली, कूचे और आम लोगोंके मकान भी रौशनीसे ख़ाली नज़्र नहीं आते. देहातोंमें भी सब लोग अपनी अपनी हैसियतके मुवाफ़िक़ ज़ुरूर दीपक जलाते हैं. साहूकार लोग इस त्यौहारको बहुतही ज़ियादह मानते हैं, क्योंकि बाज़ बाज़ साहूकारोंका वर्ष इसी दिन ख़त्म होता है.

कार्तिक शुक्ल १ को खेंखरा बोलते हैं. इस रोज़ चौगानके क़रीब जलंधर दैत्यकी एक बड़ी मूर्त्ति बांसों व लकड़ियोंसे बनाई जाती है, जिसमें रंग और आतिशबाज़ी भरकर ऊपरसे काग़ज़ मंढदिया जाता है. यह तमाशा देखनेके लिये हज़ारहा तमाशाई लोग जमा होते हैं, और महाराणा साहिब भी शामके वक़्त चौगानमें पधारकर हाथियोंकी लड़ाई और दो दो घोड़ोंकी जोड़ियां दौड़ाकर देखते हैं. फिर दैत्यके कलेवर (शरीर) में आग लगाई जाकर वह उड़ाया जाता है. इसी दिन देव मन्दिरोंमें प्रसादके बड़े जल्से होते हैं, लेकिन् सबसे बड़ा जल्सह नाथद्वारेमें होता है, जिसको अन्नकूटोत्सव कहते हैं.

कार्तिक शुक्ल २ को यमद्वितीया होती है, इस दिन हरएक बहिन अपने भाईको

अपने घरपर बुलाकर जिमाती है. पुराणोंमें लिखा है, कि यमराजने आज अपनी बहिन जमुना नदीके घरपर भोजन किया था. और इसीदिन साहूकार लोग दवातपूजा करते हैं.

कार्तिक शुक्ल ३ को राज्यमें दवातपूजाका उत्सव होता है. दीपमालिकासे दवातपूजा तक कुल अदालतोंमें तातीलें रहती हैं.

कार्तिक महीनेमें अक्सर देव मन्दिरोंमें हमेशहकी बनिस्वत अधिक दीपक जलाये जाते हैं, परन्तु कार्तिकके सब दिनोंकी बनिस्वत कार्तिक शुक्ल १५ को, जिसे देवदीवाली बोलते हैं; अधिक रौशनी होती है. इस महीनेमें पुरुष और स्त्रियां पिछली रातको तालाव, नदी आदि जलाशयोंपर स्नान करनेको जाते और एक भुक्त करते हैं, याने दिनमें एक बार खाना खाते हैं, और रात्रिको कार्तिक माहात्म्यकी कथा सुनते हैं. इसी पूर्णिमाको ज़िले अजमेरमें पुष्करका बड़ा मेला होता है, जहां ऊंट, घोड़े और बैलोंका व्यापार बहुत होता है.

मार्गशीर्ष कृष्ण १ को मुहूर्त्तका शिकार होता है. इस रोज़ राज्यके सेवकोंको अमव्वा रंगके रूमाल दिये जाते हैं, और महाराणा साहिब सभ्यगणों सहित शिकारी रंगकी पौशाकसे नक़ारेकी जुलूसी सवारीके साथ, जिस दिशाका मुहूर्त्त होता है, उस दिशाको पधारते और सूअर वग़ैरह जानवरोंका शिकार करते हैं. यदि मुहूर्त्त ज़ियादह दिन चढ़ेका निकले, तो महलोंमें गोठ अरोगकर सवार होते हैं, और जल्दीका होता है, तो शिकार किये पीछे किसी रमणीक स्थानपर गोठ अरोगते हैं; सर्दारोंको फूलोंकी चौसरें बख़्शी जाती हैं, और शिकार होनेके पश्चात् दरीख़ानह होकर सर्दार, पासबान आदि कुल सेवकोंकी नज़्रें लीजाती हैं; बाद चारण कविलोग कविता सुनाते हैं, फिर शामके वक़् वापस महलोंमें पधारते हैं. इस दिनसे सूअरका शिकार शुरू होता है.

पौष शुक्ल २ को वर्तमान महाराणा साहिबका जन्मोत्सव होता है. इस दिन श्री पीताम्बररायके उत्तरी चौकमें महाराणा साहिब होमकी पूर्णाहुति अपने हाथसेकर नवग्रहके दान आदिक पुण्य करते हैं. सबसे बड़ा दान सुवर्णका है, जो महाराणा साहिब जितने वर्षके हों उतना तोला दिया जाता है; और गज, अश्व, रथ, गो, महिषी वग़ैरह दान सद्रूप होते हैं. फिर श्रीएकलिङ्गेश्वरके गोस्वामीके दर्शन व भेट करके सभ्यगणोंकी नज़्रें लेते हैं. इसके बाद तामजान सवार होकर जगदीशके दर्शनकरनेके पश्चात् सभाशिरोमणि स्थानमें दर्बार करते हैं; इस मौक़ेपर रेज़िडेण्ट मेवाड़ मुबारकबाद देनेको आते हैं. इस त्यौहारमें अधिक न्यून दस्तूर महाराणा साहिबकी प्रसन्नताके अनुसार होसक्ता है. पहिले यह दस्तूर था, कि कुल राजकीय मनुष्योंकी पोशाकें याने जामा, पघड़ी, दुपट्टा, वग़ैरह सब कुसुम्मल होते थे, परन्तु वर्त्तमान महाराणा साहिबने यह रीति बन्द करके हुक्म दिया, कि जिसको जैसी इच्छा हो वैसी उत्तम पोशाक पहिनकर

करे. पहिले उत्सवका जल्सह भी इसी प्रकार होताथा, परन्तु वर्तमान महाराणा साहिबने इस उत्सवका करना छोड़दिया, इससे वर्तमान समयमें यह जल्सह बन्द है.

पौष शुक्ल १५ को तुलादानका तमाशा होता है. याने बड़े महलके चौकमें सूतका एक हाथी बनाया जाकर काठके कठहेड़ेमें खड़ा कियाजाता है, और उसपर एक बनावटी महावत भी बिठादिया जाता है. यह हाथी सफ़ेद महावतके जैसा बनायाजाता है, कि मानो असली हाथी है. इसके बाद लड़ाईका हाथी लायाजाता है, जो उस बनावटी हाथीको देखते ही उसकदर उसे बिखेरडालता है. महाराणा साहिब महलोंमें दुर्बार करके यह तमाशा देखते हैं.

इन्हीं दिनोंमें मकर संक्रान्तिका प्रवेश होकर उस दिन मकर संक्रान्तिके, [illegible] त्यौहार मानाजाता है. महाराणा साहिब दानपुण्य करनेके बाद किसी बाग बगीचेमें गेंद खेलते हैं, और बाकी शहरके लोग गेंद खेलनेको शहरपनाहके बाहिर मैदानमें जाते हैं.

माघ शुक्ल ५ याने बसन्त पंचमीके दिन महाराणा साहिब सरदारों सहित बसन्ती पोशाक पहिनकर दुर्बार करते हैं, और मन्दिरोंमें भी गुलालका रंग उड़ायाजाता है.

माघ शुक्ल ७ को नागणेची (१) देवीके पूजनका जल्सह और दुर्बार होता है.

फाल्गुन कृष्ण १४ को शिवरात्रि कहते हैं, और इस दिन आम लोगोंमें उपवास तथा शिव पूजन होता है.

फाल्गुन शुक्ल ११ को आंवली एकादशी कहते हैं. इस दिन उपवास और आंवलेका पूजन होता है, और गोपालकृष्ण स्थानपर, जो शहरसे करीब ३ मील दूर है, मेलेका मेला होता है.

फाल्गुन शुक्ल १५ को होलीका त्यौहार होता है, जिसको हुताशनी भी कहते हैं. इस दिन प्रातःकालको महाराणा साहिब मामूली शस्त्रके पीछे गोठ करानेकर महलोंमें सरदारोंपर गुलाल डालते, और सरदार लोग दिल्लगीकर, कदहके साथ महाराणा साहिबपर भी गुलाल डालते हैं. फिर महाराणा साहिब और सरदार हाथियोंपर सवार होकर महलोंके चौकमें गुलालसे खेलाकरते हैं. इस कदर गुलाल उड़ाई जाती है, कि ज़मीन और महलोंकी दीवारें लाल होजाती हैं. महाराणा साहिब इसी तरह गुलाल उड़ाते हुए हाथियोंकी सवारीमें बाज़ारमें होकर सूरजपोल या सर्वऋतुविलास बागके दरवाज़ेतक पहुंचते हैं, और वहां स्नानादिसे निवृत्त होनेके बाद स्वच्छ पोशाक पहिनकर शामको सवार होके महलोंमें प्रवेश करते हैं और रात्रि-समयमें दुर्बार करके सब सेवकोंको अतर पान और नारियल देते हैं. इसके बाद पुरोहितके साथ जनाने महलोंके चौकमें होलीका पूजन होकर होली जलाई जाती है.

---

(१) इनका मन्दिर पुराना महाराणा राहपनिंहके हाथमें दिया गया.

फिर बाहिरके चौकमें दूसरी होली जलाते हैं. यदि होलीका मुहूर्त्त देरसे हो, तो महलोंमें जाकर वापस आना पड़ता है. सभ्यजन नारियल फेंकते हैं. होलीके बाद घोड़ोंकी व नौकाकी सवारीसे तालाबमें भी फागहोती है. परन्तु यह बात महाराणा साहिबकी इच्छानुसार है, जिसतरह इच्छा हो उसीतरह फाग कीजाती है.

चैत्र कृष्ण १ को धूलहरी कहते हैं. इस दिन महाराणा साहिब महलोंमें रहकर निज सेवकोंको अपने अपने घरजानेकी आज्ञा देते हैं, जो अपनी अपनी कौमके गिरोहमें मिलकर फाग खेलते हैं. पहिले तो इस दिन कोई भला आदमी भी शहरमें नहीं फिरने पाता था, क्योंकि बदमआश लोग बेहूदा बोलकर उसकी दुर्दशा करदेते थे, और औरतोंका तो कहनाही क्या बल्कि रण्डियां भी अपने अपने मकानोंके किंवाड़ बन्दकर के चुप बैठी रहती थीं, जिसपर भी उनके किंवाड़ोंपर सैकड़ों पत्थर गिरते थे; परन्तु कुछ तो महाराणा स्वरूपसिंहने इस रिवाजको कम किया, और फिर महाराणा शम्भुसिंहके समयमें यह और भी कमज़ोर हुआ, लेकिन् महाराणा सज्जनसिंह साहिबने तो इसका ऐसा बन्दोबस्त करादिया, कि अब औरतोंकी आमदोरफ्त भी अच्छी तरह जारी होगई है. देहातों में भी इस दिन बड़ी धूम धाम रहती थी, पर अब कम्ज़ोर होगई है. लोग अपनी बिरादरी में फाग खेलते हैं, और सालभरके भीतर पैदाहुए लड़के लड़कियोंको ढूंढते हैं (१).

चैत्र कृष्ण २ को ज़म्रावीज (यमद्वितीया) कहते हैं. इसदिन शामके वक्त औरतें बेहूदा गीत (गालियां) गाती हुई होलीकी भस्म लाकर उसके पिंडोले बनाकर पूजती हैं. इन दिनोंमें महाराणा साहिब शामके वक्त स्वरूपविलास महलमें हमेशह दर्बार करते और शहरके व देहाती लोगोंकी गहरें आती हैं, वे नाचते गाते और इन्आम ले लेकर अपने अपने घरोंको जाते हैं.

चैत्र कृष्ण ५ को महलोंके चौकमें हाथी, घोड़े, महिष, मींढे, सूअर, सांभर और हरिण वगैरह जानवरोंकी लड़ाइयां होती हैं.

चैत्र कृष्ण ८ को शीतला अष्टमी (२) कहते हैं. इस रोज़ महाराणा साहिब जुलूसकी सवारीसे शीतला देवीके दर्शन करनेको जाते हैं, और दर्शन करनेके बाद रंगनिवास महलकी छतपर कुछ देरतक विराजते हैं, जहां वेश्याओंका नाच व गाना होता

(१) चन्द आदमी लकड़ीके डंडे हाथमें लेकर बालकके ऊपर डंडेसे उन्हें परस्पर बजाते हुए मुखसे आशीर्वाद देते हैं, फिर गुड़ पापड़ी लेकर अपने घरजाते हैं.

(२) यह जल्सह हिन्दुओंमें सब जगह सप्तमीको होता है, लेकिन इस दिन महाराणा भीमसिंह का जन्मदिन होनेके सबब उन्होंने इस जल्सहका दिन अष्टमी रक्खा था, और उसी समयसे यह हमेशह अष्टमीको होने लगगया है.

है. फिर राजकी दासियां व शहरकी स्त्रियां गाती हुई शीतलाके पूजनको आती हैं, और पूजन करके इसी प्रकार वापस लौटजाती हैं. महाराणा साहिब सभ्यगणोंको फूलोंकी चौसरें .इनायत करके जुलूसी सवारीके साथ प्रधानकी हवेलीपर पधारते थे, परन्तु बीचमें प्रधान के यहां पधारना बन्द होगया; जबसे प्रधानकी एवज़का काम महकमहख़ासमें होने लगा. अब महकमहख़ासके सेक्रेटरी महता पन्नालालके मकानपर पधारकर प्रातः कालकी गोठ जीमते हैं, और दिनभर वहां विराजकर सायंकालको जुलूसकी सवारीसे महलोंमें पधारते हैं. इस दिन दोनों वक्त मेला देखनेके लिये हज़ारहा आदमी एकट्ठे होते हैं. इसकेबाद गनगौरतक फूल छाबड़ीका मेला होता है, और महाराणा साहिब महलोंमें दर्बार करते हैं.

ऊपर बयान किया हुआ, हाल सालभरके त्यौहारोंका बहुत मुख़्तसर तौरपर लिखा गया है, अगर कोई बात छूटगई हो, तो पाठकगण उसको तवालतके सबब छोड़ी हुई जानलेवें.

अब हम जागीर व मुआफ़ी वग़ैरह पट्टे याने जागीर, भोम, चौथबंटिया, चौकीदार, और षट्दर्शन याने देवस्थान, ब्राह्मण, चारण, भाट, सेवड़ा, सन्यासी, नाथ, फ़क़ीर वग़ैरहका हाल लिखते हैं.

पहिला पट्टा जागीर, जिसमें नौकरीके .एवज़ पर्गना, गांव, या ज़मीन दीगई है. इस क़िस्मके जागीरदार काले पट्टेके नौकर कहलाते हैं, याने जबतक नौकरी देवें तबतक जागीर खाते रहें, मगर जागीरको बेचने या गिरवी रखने नहीं पाते; अगर किसी क़र्ज़ख़्वाहके यहां गांव या ज़मीन गिरवी रक्खें, तो दैवगतका ज़िम्मेवार क़र्ज़देनेवाला और राजगतका ज़िम्मेदार जागीरदार रहता है. महाराणा पहिले अमरसिंहके समयसे यह क़ाइदह जारी हुआ था, कि पटायत (याने पट्टेके मालिक) के रहनेका ख़ास गांव तो नहीं बदला जावे, लेकिन् पट्टेके गांव बदल दिये जावें, परन्तु महाराणा दूसरे अमरसिंहने इस ख़यालसे, कि पट्टेके गांव तीसरे वर्ष बदले जानेमें रइयतकी बर्बादी होती है, इससे यह प्रबन्ध करदिया, कि जबतक जागीरदार नौकरी अच्छी तरह देवें और सर्कारी हुक़ूक़ पूरे तौरपर अदा करता रहे, तो पट्टेके गांव भी नहीं बदले जावें. जागीरें नौकरीके .एवज़में हैं, और उनके ज़ब्त करने या नई बख़्शनेका इख़्तियार महाराणा साहिब को है, जिसका हाल पाठक लोगोंको इस इतिहासके दूसरे भागको देखनेसे मालूम होगा.

दूसरा पट्टा भौम है; इस देशमें जागीरकी बनिस्बत भौम पुख़्तह समझी जाती है, परन्तु क़ुसूरकी हालतमें ज़ब्त होजाती है. भौमिया लोगोंकी नौकरी ख़ास गांवकी रखवाली और हाकिम ज़िलाकी हाज़िरी है. अलावह इसके राज्यमें जब कभी फ़ौजकी ज़रूरत हो, तो भौमिया लोग बेउज़्र हाज़िर होते हैं, और उनको पेटिया और घोड़ेका दाना राज्यसे मिलता है; लेकिन् मगरा भीलवाड़ा ज़िलेके भौमिया लोग मामूली नौकरी नहीं देते,

लेकिन् ज़रूरतके वक़ अपनी हैसियतके मुवाफ़िक़ फ़ौज लेकर हाज़िर होते हैं. इन लोगोंको भी राज्यसे खुराक मिलती है. कुल भौमिया लोग राज्यमें टांका व भौमवराड़ देते हैं.

चौथ बंटिये, याने किसान लोग तो तीसरा बांटा या आधा हिस्सह राज्यमें देते हैं, लेकिन् राजपूत व मीना वगैरह लड़ाई करने वाली क़ौमें अक्सर चौथा बांटा देती हैं. ये लोग भी फ़ौजकशीके वक़ खुराक मिलनेपर फ़ौजमें भरती होसक्ते हैं. बाज़ बाज़ जगह महाजन, सुतार (खाती), लुहार, दर्ज़ी, सिलावट और ओड़ वगैरह भी चौथा बांटा दियाकरते हैं. इन लोगोंके साथ यह रिआयत इस सबबसे बरती जाती है, कि फ़ौजकशीके वक्त कम्सरियट और मैगज़िनमें इनसे मदद लीजाती है.

चौकीदार, इन लोगोंकी नौकरी गांवकी चौकीदारी करना और राज्यका अहलकार गांवमें आवे उसवक़ उसके पास हाज़िर रहना है.

षट्दर्शन, जिनको तांबापत्र व पत्थरपर मुआफ़ीकी सनद खुदवा दीजाती है, इससे देनेवाले और पालना करने वालेका हेतु यह है, कि काग़ज़ तो जल्दी नाश होजाता है, और इस क़िस्मके गांव या ज़मीन हमेशह बने रहनेके लिये दियेजाते हैं, इसलिये इसकी सनद भी दीर्घ कालतक ठहरनेवाली वस्तुपर खुदाई जावे. षट्दर्शनकी मुआफ़ीमें राजा, पटायत या अहलकार वगैरह कोई दिल बिगाड़कर दस्तन्दाज़ी करे, तो उसकी बड़ी निन्दा होती है. बड़े अपराध करनेकी हालतमें मुआफ़ी भी ज़ब्त होती है, लेकिन् दूसरी तरह पीछी लेलेनेकी इच्छासे कोई हाथ नहीं डालते. इस देशमें हरएक देवस्थानकी पूजा वगैरहके लिये बहुतसे बड़े बड़े पट्टे मुआफ़ीमें हैं. मेवाड़में ऐसा कोई गांव न निकलेगा, कि जिसमें धर्मादाकी ज़मीन मन्दिरके लिये नहो, चाहे वह मन्दिर विष्णु, शिव, देवी, भैरव, जैन, खागलदेव, रामदेव, मामादेव, पाबू, झामादेव वगैरहमेंसे किसी का हो, या मुसल्मानोंकी मस्जिद आदि हो; लेकिन् मन्दिरोंकी मुआफ़ी मन्दिरोंके जीर्णोद्धार व पूजा प्रकारके लिये भेट कीजाती है, पुजारियोंके मज़ा उड़ाने या बेचकर ख़राब करदेनेके लिये नहीं. ब्राह्मण, चारण, भाट और सन्यासी वगैरह सब षट्दर्शनी लोगोंसे ज़मीनके एवज़ नौकरी आदि कुछ लगान नहीं लियाजाता.

इसके सिवा बहुत थोड़े लोग इस्तमरारदार भी हैं, लेकिन् वे लोग जागीर, भौम, या मुआफ़ीमें शुमार नहीं कियेजाते, वे ख़ालिसहकी रिआयाके मुवाफ़िक़ रिआयती समझेजाते हैं.

मेवाड़के बड़े बड़े जागीरदार सर्दारोंका नक़्शह (नामावली) यहांपर दिया जाता है, जिससे पाठक लोगोंको उनका हाल मालूम होगा:—

मेवाड़के अव्वल नम्बरके सर्दारोंका नक़्शह.

नम्बर.	नाम ठिकाना.	जिन दर्बारने ठिकाना दिया उनका नाम मए राज्याभिषेकादि संवत्के.			नाम उस सर्दारका जिसको ठिकाना मिला.	क़ौम.	ख़िताब या पदवी.	नाम मौजूदह सर्दारका.	कैफ़ियत.
		महाराणाका नाम.	गद्दी बिराजने का संवत्.	देहान्त का संवत्.					
१	सादड़ी	महाराणा संग्रामसिंह अव्वल	विक्रमी १५६५	विक्रमी १५८४	अज्जा	झाला	राजराणा	रायसिंह	यह ठिकाना बदल सदल कम हुआ.
२	बेदला	महाराणा अमरसिंह अव्वल	१६५३	१६७६	बल्लू	चहुवान	राव	कर्णसिंह	ऐज़न.
३	कोठारिया	महाराणा जगत्सिंह अव्वल	१६८४	१७०९	रुक्मांगद	ऐज़न	रावत्	जवानसिंह	पहिले जीरण व नींबाहेड़ा था, अब यह ठिकाना मिलनेके बाद बदल सदल कम हुआ.
४	सलूंबर	महाराणा उदयसिंह	१५९२	१६२८	कृष्णदास	सीसोदिया चूंडावत्	रावत्	जोधसिंह	यह ठिकाना एक दफ़ा महाराणा अव्वल राजसिंहने २० वर्षतक पारसोलीके राव केसरीसिंहको बख़्शदिया था.
५	बीजोलिया	महाराणा विक्रमादित्य	१५८८	१५९२	अशोक	पंवार	राव	गोविन्ददास	यह ठिकाना बदल सदल कम हुआ.
६	देवगढ़	महाराणा दूसरे जयसिंह	१७३७	१७५५	द्वारिकादास	सीसोदिया चूंडावत्	रावत्	कृष्णसिंह	यह ठिकाना बीचमें दो बार ख़ालिसह हुआ, और आमेट वालोंको भी मिलगया था.

नम्बर.	नाम ठिकाना.	जिन दर्बारने ठिकाना दिया उनका नाम मए राज्याभिषेकादि संवत्के.			नाम उस सर्दारका जिसको ठिकाना मिला.	क़ौम.	ख़िताब या पद्वी.	नाम मौजूदह सर्दारका.	कैफ़ियत.
		महाराणाका नाम.	गद्दी बिराजनेका संवत्.	देहान्त का संवत्.					
७	बेगूं	महाराणा अमरसिंह अव्वल	विक्रमी १६५३	विक्रमी १६७६	पहिला मेघसिंह	सीसोदिया चूंडावत्	रावत्	तीसरा मेघसिंह	यह ठिकाना अदल बदल कम हुआ.
८	देलवाड़ा	महाराणा संग्रामसिंह अव्वल	१५६५	१५८४	सज्जा	झाला	राजरणा	ज़ालिमसिंह	यह ठिकाना एक दफ़ा बदनौरके ठाकुर मनमनदासको मिलगया था, जो राज कल्याण पहिलेको वापस मिला.
९	आमेट	महाराणा प्रतापसिंह अव्वल	१६२८	१६५३	कर्णसिंह	सीसोदिया चूंडावत्	रावत्	शिवनाथसिंह	
१०	मेजा	महाराणा शम्भुसिंह	१९१८	१९३१	अमरसिंह	सीसोदिया चूंडावत्	रावत्	अमरसिंह	
११	गोगूंदा	महाराणा कर्णसिंह	१६७६	१६८४	कान्हसिंह	झाला	राज	अजयसिंह	यह ठिकाना अदल बदल कम हुआ.
१२	कान्हौड़	महाराणा दूसरे संग्रामसिंह	१७६७	१७९०	सारंगदेव	सीसोदिया सारंगदेवोत	रावत्	नाहरसिंह	
१३	भींडर	महाराणा प्रतापसिंह अव्वल	१६२८	१६५३	भाणसिंह	सीसोदिया शक्तावत	महाराज	केसरीसिंह	यह ठिकाना अदल बदल कम हुआ.

नम्बर.	नाम ठिकाना.	जिन दर्बारने ठिकाना दिया उनका नाम मए राज्याभिषेकादि संवत्के.			नाम उस सर्दारका जिसको ठिकाना मिला.	क़ौम.	ख़िताब या पदवी.	नाम मौजूदह सर्दारका.	कैफ़ियत.
		महाराणाका नाम.	गद्दी विराजने का संवत्.	देहान्त का संवत्.					
१४	बदनौर	महाराणा उदयसिंह	विक्रमी १५९२	विक्रमी १६२८	जयमल्ल	राठौड़ मेड़तिया	ठाकुर	गोविन्दसिंह	यह ठिकाना दो तीन दफ़ा बादशाही ज़ब्तीमें आनेके वक्त छूटगया और पीछा मेवाड़में आनेपर वापस उन्हींको मिला.
१५	भैंसरोड़	महाराणा जगत्सिंह दूसरा	१७९०	१८०८	रघुनाथसिंह	सीसोदिया चूंडावत्	रावत्	प्रतापसिंह	
१६	बानसी	महाराणा राजसिंह अव्वल	१७०९	१७३७	गंगदास	सीसोदिया शक्तावत.	ऐज़न	तख़्तसिंह	
१७	कुरावड़	महाराणा तीसरा अरिसिंह	१८१७	१८२९	अर्जुनसिंह	सीसोदिया चूंडावत्	ऐज़न	जैतसिंह	
१८	पारसोली	महाराणा राजसिंह अव्वल	१७०९	१७३७	केसरीसिंह	चहुवान	राव	रत्नसिंह	
१९	आसींद	महारा[illegible]	[illegible]	१८८५	अजीतसिंह	सीसोदिया चूंडावत्	रावत्	अर्जुनसिंह	अजीतसिंह ठाकुर था, और रावत् का ख़िताब दूलहसिंहको मिला.
५	बीजोलिया	महाराणा विक्रमादित्य	[illegible]१५८८						
		महाराणा भीमसिंह	१८३४						
२०	करजाली	महाराणा दूसरा जगत्सिंह	१७९०७	१८०८	बाघसिंह	सीसोदिया राणावत्	महाराज	सूरतसिंह	
२१	शिवरती	महाराणा तीसरा अरिसिंह	१८१७	१८२९	अर्जुनसिंह	ऐज़न	ऐज़न	गजसिंह	पेश्तर इनकी जागीरमें अठाणाका पट्टा था.

नम्बर.	नाम ठिकाना.	जिन दर्बारने ठिकाना दिया उनका नाम मए राज्याभिषेकादि संवत्के.			नाम उस सर्दारका जिसको ठिकाना मिला.	क़ौम.	ख़िताब या पद्वी.	नाम मौजूदह सर्दारका.	कैफ़ियत.
		महाराणाका नाम.	गद्दी विराजने का संवत्.	देहान्त का संवत्.					
२२	बनेड़ा	महाराणा जयसिंह अव्वल	१७३७	१७५५	भीमसिंह	सीसोदिया राणावत्	राजा	गोविन्दसिंह.	इस ठिकानेको आलमगीरने मेवाड़से ज़ब्त करके भीमसिंहको दिया, फिर मुहम्मदशाहने महाराणा संग्रामसिंहके सुपुर्द करके मेवाड़में मिलादिया.
२३	शाहपुरा	महाराणा जगत्सिंह अव्वल	१६८४	१७०९	सुजानसिंह	ऐज़न	राजाधिराज	नाहरसिंह	फूलिया विक्रमी १६८५ में महाराणा जगत्सिंहसे शाहजहां बादशाहने ज़ब्त करके सुजानसिंहको दिया, और महाराणा राजसिंहने मेवाड़में मिलालिया, फिर आलमगीरने थोड़े वर्ष मेवाड़से अलग करदिया, लेकिन् आलमगीरके बाद पीछा मेवाड़में मिलायागया, जो मरहटोंके अख़ीर वक़में जुदा हुआ; और काछोला का पट्टा महाराणा तीसरे अरिसिंहने राजा उम्मेदसिंहको विक्रमी १८२३ में जागीर करदिया, जो अबतक मेवाड़के मातह्त है.
२४	सर्दारगढ़	महाराणा दूसरा जगत्सिंह	१७९०	१८०८	सर्दारसिंह	डोडिया	ठाकुर	मनोहरसिंह	विक्रमी १८५० में शक्तावत संग्रामसिंहने छीनलिया था, जो विक्रमी १९०४ में महाराणा स्वरूपसिंहने शक्तावतोंसे छीनकर ठाकुर ज़ोरावरसिंहको वापस दिया.

जिस प्रकार प्रथम सर्दार, दूसरे देवस्थानोंके पुजारी, और तीसरे मुआफ़ीदार हैं, उसी क्रमसे इन तीनों गिरोहोंमें हरएक गिरोहके लिये इज़्ज़त भी अव्वल, दूसरे और तीसरे दरजेकी होती है. सर्दारोंमें अव्वल दरजहके लिये जुहार (१), ताज़ीम, बांहपसाव, पैरमें सोनेका ज़ेवर, नक़ारा, निशान और चांदीकी छड़ी, ये आम .इज़्ज़तें कहाती हैं. इसके अलावह और भी .इज़्ज़तें कई तरहकी होती हैं, लेकिन् वे ख़ास कारणोंसे दीजाती हैं. दूसरे दरजह वालोंके लिये जुहार, ताज़ीम, छड़ी, और पैरमें सोना; और तीसरे दरजह वालोंके लिये ख़ाली बड़ी ओल (दाहिनी पंक्ति) में बैठक और दर्बारमें पानका बीड़ा है.

इसी तरह देवस्थानोंके पुजारियोंका भी हाल है. इनमें कितनेएक पुजारी लोग गद्दीपर बैठते हैं और महाराणा साहिब उनके सामने दोवटी (एक तरहका आसन) पर बैठकर उनको दण्डवत (डंडोत) करके भेट करते हैं, और उन पुजारियोंपर चंवर भी होते हैं. बाज़ बाज़ गिरोहोंके महन्तोंको भी यही .इज़्ज़त हासिल है. दूसरे दरजहके पुजारियोंको बैठनेके लिये बानातका आसन मिलता है, और महारा[illegible]हेब उन्हें ताज़ीम देते हैं. तीसरे दरजह वाले आशीर्वाद देकर फ़र्शपर बैठजाते हैं. इसी तरह मुआफ़ीदारोंमें अव्वल दरजह वालोंको जुहार, आशीर्वाद, ताज़ीम, छड़ी, बांहपसाव, पैरमें सब तरहके सुवर्ण भूषण; दूसरे दरजह वालोंको ख़ाली ताज़ीम और छड़ी, और तीसरे दरजह वालोंको ख़ाली दर्बारमें बैठक और महाराणा साहिबके हाथसे बीड़ा मिलता है. हम यह नहीं कहते, कि तीनों गिरोहोंमें इतनी ही .इज़्ज़त मानी जाती है, लेकिन् मुख्य मुख्य बातें लिखीजाकर बाक़ी हाल विस्तारके भयसे छोड़दिया जाता है, और इन बातोंका विशेष हाल राज्यके दफ़्तरोंमें रहता है.

अब हम संक्षेपसे थोड़ासा हाल मज़्हबोंका लिखते हैं:-

संसार भरमें सबसे बड़े दो धर्म (मज़्हब) हैं, याने एक पूर्वी और दूसरा पश्चिमी. पूर्वी मज़्हबकी तीन शाखें, वेदाम्नायी, बौद्ध और जैन हैं; इसी तरह पश्चिमी मज़्हबकी भी तीन शाखें अर्थात् यहूदी, ईसाई और मुहम्मदी हैं. इन छओं शाखाओंकी शाखा प्रशाखा इतनी बढ़गई हैं, कि उनका हाल इस जुग्राफ़ियहमें प्रगट करना कठिन है. मेवाड़ देशमें सिवा बौद्ध और यहूदियोंके और सब मज़्हबके लोग थोड़े बहुत मौजूद हैं. प्राचीन

(१) जुहार शब्दका अर्थ यह है, कि आर्य लोग प्राचीन रीत्यानुसार प्रथम नित्य अग्निका कुशल पूछते थे, याने जुहु होमकी अग्नि, और आर अर्थात् मंगल. इसी रीतिसे जब कोई इस .इज़्ज़तका सर्दार महाराणा साहिबसे सलाम करता है, उस समय छड़ीदार लोग बुलन्द आवाज़से पुकारते हैं; कि करे जुहार, अमुक राजा या ठाकुर, राव या रावत वग़ैरह.

मत छञ्चों शास्त्रोंका वेदसे निकला हुआ षट्दर्शनके नामसे प्रसिद्ध है, परन्तु उनमेंसे सिवा वेदान्तके और पांच शास्त्रोंका प्रचार बहुत कम है, बल्कि वेदान्तका प्रचार भी क्वचित् क्वचित् दिखाई देता है. वेदाम्नायी पांच हिस्सोंमें, याने शैव, वैष्णव, शाक्त, गाणपत्य और सौरमें विभक्त (तक्सीम) कियेगये हैं. इन पांचोंमेंसे शैव, वैष्णव, शाक्त, ये तीन आजकल अधिक तरक़ीपर हैं. शैवोंमें सन्यासी, नाथ और बहुतसे ब्राह्मण भी आचार्य हैं, लेकिन् उन आचार्योंमें कई तरहके भेद होगये हैं. वैष्णवोंमें रामावत, नीमावत, माधवाचार्य, और विष्णुस्वामी, इन चारों नामोंसे चार संप्रदाय प्रसिद्ध हैं, और इनमेंसे फिर भी रामस्नेही, दादूपंथी, कबीरपंथी, नारायणपंथी, आदि कई शाखा प्रशाखा फैलगई हैं, जिनके आचार विचारमें भी कुछ कुछ भिन्नता पाईजाती है. कितनेएक अद्वैत सिद्धान्त और कितनेएक उपासना पक्षका आश्रय लेते हैं. मेवाड़के राजा प्राचीन कालसे शैव हैं, लेकिन् दूसरे मज़्हबोंको भी माननेवाले हैं. शाक्तोंकी दो शाखा, याने एक दक्षिण और दूसरी वाम है. दक्षिण आम्नाय वाले वेदानुकूल पूजा, प्रतिष्ठा, जप, होमादि करते हैं, और वामी वेदाम्नायके विरुद्ध तंत्रशास्त्रके अनुसार पशुहिंसा और मद्य मांसाचरण करते हैं. ये लोग चर्मकारी, रजकी, और चाण्डालीको काशीसेवी, प्रागसेवी, मांसको शुद्धि, मद्यको तीर्थ, कांदा (पियाज़) को व्यास, और लहसुनको शुकदेव बोलते हैं; रजस्वला व चाण्डालीकी योनि पूजा करते हैं, और मुख्य सिद्धान्त उनका इस श्लोकके अनुसार है- "अन्त : शाक्ता बहिर्शैवा : सभा मध्ये च वैष्णवा :॥ नाना रूप धरा : कौला विचरन्ति मही तले ॥१॥" यह मत बौद्धोंका भेद मालूम हुआ है. जानाजाता है, कि जातिभेद अधिक फैलने लगा, तब बौद्ध लोगोंने उसके रोकनेके लिये तन्त्र शास्त्र प्रचलित किये थे. इस मतके आचार्य अपने मतको प्रगट तौरपर प्रचलित रखना उचित नहीं समझते, वर्नह देखाजाये, तो भारतवर्षकी आधी प्रजाके लगभग लोग इस मतको मानने वाले होंगे.

गणपति और सूर्यके माननेवाले इसवक्त बहुत ही कम नज़र आते हैं, और हैं भी तो दक्षिण नहीं, बल्कि वामी लोग हैं, जो अपना ऊपरका ढोंग दिखलाते हैं; और इस वाम मतके आचार्य भी कहीं प्रसिद्ध नहीं होते.

मेवाड़में शिवमतका बड़ा स्थान कैलासपुरी, अर्थात् एकलिङ्गेश्वरकी पुरी है. इस देशके राजा श्रीएकलिङ्गेश्वर, और महाराणा साहिब उनके दीवान (मन्त्री) मानेजाते हैं, बाक़ी शिवमतके प्रचारक नाथ गुसाइयोंके और भी बड़े बड़े मठधारी महन्त हैं, परन्तु केवल नामके लिये हैं; क्योंकि वे लोग निरक्षर और आचार विचारमें विपरीत मालूम होते हैं. नाथद्वारा, कांकड़ौली, चारभुजा और रूपनारायण, ये चार वैष्णवोंके मुख्य स्थान हैं, जिनमें चारभुजाके पुजारी गूजर और रूपनारायणके ब्राह्मण

हैं. ये लोग ख़ाली भेट पूजा लेने वाले बुभुक्षित, और निरक्षर बहुतसे हैं, वे अपने अपने ओसरेपर पूजन करते रहते हैं. उनको आचार्यत्वका अभिमान बिल्कुल नहीं है; लेकिन् नाथद्वारा और कांकड़ोलीके गुसाईं, जो विष्णु-संप्रदायके मुख्य आचार्य हैं, उनको भारतवर्षके तमाम वैष्णव लोग उसी तरह मानते हैं, जैसाकि ईसाइयोंमें रोमनकैथलिक लोग इटलीके पोपको. इस मतको विक्रमी पन्द्रहवें शतकमें वल्लभाचार्यने प्रचलित किया था, जिनके सात पुत्र हुए. उन सातोंकी गद्दियां और पूजनकी सातों मूर्त्तियां अलग अलग हैं, जिनको लोग बड़े आदर के साथ मानते हैं; और आठवीं इन सबसे बड़ी मूर्त्ति नाथद्वाराके श्री गोवर्द्धननाथकी है, और इन सातों भाइयोंमें टीकेत गोस्वामी भी नाथद्वाराके गोस्वामी (१) ही कहाते हैं; और कांकड़ोली वाले उनके छोटे भाइयोंमेंसे हैं.

बौद्ध मज़्हबका यहांपर कोई आदमी या मन्दिर नहीं है, शायद कि कलकत्ता, बम्बई या नयपालमें हो, इसीसे हमने कम वाक़फ़ियतके कारण उनका हाल छोड़दिया है.

तीसरी शाखा जैन है, जिसके सितम्बरी और दिगम्बरी दो भेद हैं. सितम्बरी का मुख्य शास्त्र ३२ सूत्र हैं. जिसतरह वेदाम्नायी गायत्री मंत्रको मानते हैं, उसी तरह जैन लोग नौकार मंत्रको मानते हैं; और समाईके समय उसीका जप करते हैं. इनमें भी दो भेद हैं, एक मूर्त्तिपूजक, और दूसरा अमूर्त्तिपूजक. मूर्त्तिपूजकोंमें जती, समेगी व महात्मा वगैरह हैं, और अमूर्त्तिपूजकोंमें ढूंडिया साधु हैं, लेकिन् २४ तीर्थंकर और ३२ सूत्रोंको सब मानते हैं, केवल उनका अर्थ अपने अपने सिद्धान्तानुसार करनेमें परस्पर विरोध है. उन जैनके आचार्योंको मानने वाले प्रायः महाजन लोग हैं, जिनमें सितम्बरीको मानने वाले राजपूतानहमें मुख्य ओसवाल महाजन हैं. भारतवर्षके दूसरे भागोंमें जुदी २ क़ौमोंके महाजन भी बहुत हैं. विक्रमी संवत्के सोलहवें शतकके शुरूमें जती लोगोंमेंसे वैराग्य न्यून होगया था, तब गुजरातमें लूंका महताने अपने सूत्र ग्रंथोंके अनुसार एक नया फ़िर्क़ा चलाया, जिसका नाम लूंका गच्छ प्रसिद्ध हुआ, और उसीमेंसे ढूंडिया साधु निकले, जिनके २२ गिरोह होकर २२ टोले कहेजाते हैं. इन टोलोंमेंसे हरएक टोलेमें एक एक मुखिया, याने आचार्य होता है. जब इन बाईस गिरोहोंका भी चाल चलन शिथिल होने लगा, तब रघुनाथ ढूंडियाके टोलेमेंसे उसीके शिष्य भीखमने विक्रमी १८१५ [हि० ११७२ = .ई० १७५८] में एक नई शाखा निकाली और उसके तेरह शिष्य होनेके कारण तेरह पंथियोंकी बुन्याद पड़ी. भीखम आचार्य विक्रमी १७८५ [हि० ११४१ = .ई० १७२८] में पैदा हुआ और उसने

---

(१) वर्तमान समयमें टीकेत गोस्वामी गोवर्द्धनलाल नाथद्वारेकी गद्दीपर विद्यमान है.

विक्रमी १८०८ [हि० ११६४ = ई० १७५१] में साधुका भेष लिया; विक्रमी १८१५ [हि० ११७२ = ई० १७५८] में तेरह पंथियोंका फ़िर्क़ा चलाया; और विक्रमी १८६० [हि० १२१८ = ई० १८०३] में वह मरगया. उसके बाद उसका शिष्य भारमल्ल गद्दीपर बैठा, और विक्रमी १८७८ [हि० १२३६ = ई० १८२१] में वह गुज़रगया. उसके पीछे रायचन्द गद्दीपर बैठा, जो विक्रमी १९०८ [हि० १२६७ = ई० १८५१] में परलोक गामी हुआ. उसके बाद जीतमल्ल आचार्य हुआ, जिसके विक्रमी १९३६ [ई० १८७९ = हि० १२९६] में मरजानेपर उसका क्रमानुयायी मेघराज हुआ, जो अब विद्यमान है.

दूसरा फ़िर्क़ा जैनका दिगम्वरी है, जिसका आचार्य भट्टारक कहाजाता है, वह अवस्त्र अर्थात् नग्न रहता है, और दोनों हाथोंकी आंजलीमें भोजन करता है. यदि वह खाते समय बिल्ली आदिका शब्द सुनले, तो उस दिन उपवास करता है. ऐसे भट्टारक कर्णाटक देशमें रहते हैं (१), जो कभी कभी पर्यटन करते हुए इधर भी चले आते हैं. इनको श्रावक लोग मुनिराज भी कहते हैं. सितम्वरी और दिगम्वरी दोनों शाखाओंमें कुछ कुछ अन्तर है. सितम्वरी लोग १२ अंग और बाक़ी उपांग मिलाकर ३२ सूत्र बतलाते हैं. इसी तरह दिगम्वरी भी १२ अंग कहते हैं और उनके नामोंमें भी अधिक अन्तर नहीं बतलाते, लेकिन् कहते हैं, कि महावीर स्वामीसे कई सौ वर्ष पीछे बारह वर्ष का दुष्काल पड़ा, जिसमें हमारे प्राचीन ग्रन्थ नष्ट होगये, और उन्हींका आशय लेकर जो दूसरे ग्रन्थ बने उनके अनुसार हम अपना धर्म ध्यान करते हैं. सितम्बरी भी १२ वर्षके दुष्कालका पड़ना मानते हैं, किन्तु प्राचीन ग्रन्थोंके नष्ट होनेमें ४५ सूत्रोंमेंसे ३२ का साबित रहना और १३ जो खण्डित हुए, उनका पीछेसे बनाया जाना प्रगट करते हैं. इन लोगोंमें दिगम्वरी लोगोंसे जो भेद है वह ८४ बोल, याने ८४ बातोंमें है, जिनमेंसे कुछ बोल (वाक्य) नीचे लिखे जाते हैं:-

१- सितम्वरी केवल ज्ञानीको आहार नीहार करना मानते हैं, और दिगम्बरी नहीं मानते.

२- सितम्वरी केवल ज्ञानीको रोग होना मानते हैं और दिगम्बरी नहीं मानते.

३- सितम्वरी केवल ज्ञानीको उपसर्ग अर्थात् शुभाशुभ सूचक महाभूत विकार मानते हैं, किन्तु दिगम्वरी इसको स्वीकार नहीं करते.

---

(१) दूसरे भट्टारक केवल नाम मात्रके हैं, वे वस्त्र, परिकर, और वाहन आदि सब कुछ रखते हैं. ऐसे लोग वास्तवमें ढोंगी हैं.

४– सितम्बरी केवल ज्ञानीका पाठशालामें जाकर पढ़ना प्रसिद्ध करते हैं, पर दिगम्बरी नहीं मानते.

५– सितम्बरी तीर्थंकरको गुरु द्वारा दीक्षा प्राप्त हुई मानते हैं, और दिगम्बरी नहीं मानते हैं.

६– सितम्बरी कहते हैं, कि तीर्थंकरको दीक्षाके समय इन्द्रने आकर कपड़ा ओढ़ाया है, परन्तु दिगम्बरी इस बातको स्वीकार नहीं करते.

७– सितम्बरी गणधरके विना महावीरकी कुछ वाणी व्यर्थ गई कहते हैं, किन्तु दिगम्बरी नहीं गई बतलाते हैं.

८– सितम्बरी कहते हैं, कि महावीर ब्राह्मणीके गर्भसे खींचकर तृपा राणीके गर्भमें लाये गये, किन्तु दिगम्बरी कहते हैं, कि वह आरम्भहीसे राणीके गर्भमें थे.

९– सितम्बरी आदिनाथको जुगलिया कहते हैं, और दिगम्बरी नहीं कहते.

१०– सितम्बरी आदिनाथके लिये विधवाका घरमें रखना बयान करते हैं, परन्तु दिगम्बरी इसको झूठ बतलाते हैं.

११– सितम्बरी दो तीर्थंकरोंका अविवाहित रहना मानते हैं, और दिगम्बरी ५ का.

१२– सितम्बरी केवल ज्ञानीको सामान्य ज्ञानीका प्रणाम करना मानते हैं, दिगम्बरी नहीं मानते.

१३– सितम्बरी केवल ज्ञानीको छींक होना मानते हैं, मगर दिगम्बरी नहीं मानते.

१४– सितम्बरी गौतमका त्रिडंडी तापसीके पास जाना कहते हैं, लेकिन् दिगम्बरी नहीं कहते.

१५– सितम्बरी स्त्रीका मोक्ष होना मानते हैं, दिगम्बरी नहीं मानते.

१६– सितम्बरी १९ वें तीर्थंकरको मल्लिकुंवरी कहकर स्त्री स्वरूप मानते हैं, और दिगम्बरी मल्लिनाथ कहकर पुरुष मानते हैं.

१७– सितम्बरी जुगलियाको देव हरलेगया कहते हैं, परन्तु दिगम्बरियोंका इस पर विश्वास नहीं है.

इत्यादि ८४ बोलोंका अन्तर है, हमने इसके विपयमें बहुतसी बातें विस्तारके भयसे छोड़दी हैं.

मेवाड़में जैनियोंका बड़ा तीर्थ स्थान उदयपुरसे १६ कोस दक्षिण खैरवाड़ाकी सड़क पर धूलेव गांवमें ऋपभदेवका मन्दिर है, जिसको वेदाम्नायी और जैन दोनों मानते हैं. इस मूर्तिको वेदाम्नायी लोग विष्णुके दशावतारोंमें समझकर अपने धर्मके अनुसार और जैन लोग तीर्थंकर समझकर अपने धर्मके अनुसार पूजते हैं. यहांपर कलकत्ता, बम्बई,

मद्रास, कर्णाटक, पंजाब और उत्तराखण्डके हज़ारों यात्री आते और बड़ी भावनाके साथ केसर चढ़ाते हैं. केसर चढ़ानेकी यह रीति है, कि यदि किसी यात्रीने मन भर केसर चढ़ाई हो और उसी समय दूसरा यात्री एक रुपये भर केसर लेकर आवे, तो मनभरको उतारकर वह अपनी रुपये भर केसर चढ़ादेगा. केसरको शिलापर पत्थरसे घिसकर यात्री लोग अपने हाथसे चढ़ाते हैं, इस उतरी हुई केसरके बट्टे पुजारी लोग यात्रियोंको बेचते हैं, और केसर इस अधिकाईके साथ चढ़ती है, कि जिससे इनका दूसरा नाम "केसरियानाथ" प्रसिद्ध होगया है, और मूर्त्तिका काला रंग होनेसे कालाजी भी बोलते हैं. इस मन्दिरके चारों तरफ़ कोसों पर्य्यन्त भीलोंकी आबादी है और भील लोग केसरियानाथपर बड़ा विश्वास रखते हैं. वे लोग सौगन्द अर्थात् शपथ करनेके वक्त केसरियानाथकी केसर चबाकर जिस बातका प्रण (इक़ार) करते हैं, उससे फिर कभी नहीं बदलते. इस मन्दिरके बननेका मुख्य हाल कहानियोंके तौरपर है, लेकिन् मन्दिरकी प्रशस्तियोंसे इस मन्दिरका जीर्णोद्धार विक्रमी संवत्की १५ वीं सदीके प्रारम्भतक होना पायाजाता है. पहिले जो हज़ारों रुपया और ज़ेवर भेट होता था उसे पुजारी लोग अपना बनालेते थे, लेकिन् वैकुंठवासी महाराणा सज्जनसिंह साहिबके समयसे वहांका प्रबंध एक कमिटीके अधिकारमें करदिया गया है, जिसके मेम्बर जैनमतावलंबी लोग हैं, और उस कमिटीका प्रेसिडेण्ट (सभापति) राजकी तरफ़से देवस्थानोंका हाकिम कोठारी बलवन्तसिंह है.

अब हम पश्चिमी मज़्हबोंका थोड़ासा हाल लिखते हैं, जो यहूदी, ईसाई, और मुहम्मदी हैं. यहूदी लोग राजपूतानह और मेवाड़में बिल्कुल नहीं हैं, और हमारी वाक़फ़ियत भी कम है. इन तीनों मज़्हबोंकी इब्तिदा (प्रारम्भ) और तरीक़ह एक ही है, परन्तु पीछेसे बहुत फ़र्क़ आगया है. सुनागया है, कि यहूदी लोग तौरातके मुवाफ़िक़ बर्त्ताव रखते हैं. यहूदी लोग और तौरात किताब इन तीनों फ़िक़ोंमें अव्वल हैं. दूसरे ईसाई, जिनका पैग़म्बर यसू याने ईसा (क्राइस्ट) है, जिसके समयको कुछ कम १९०० सौ वर्ष हुए हैं. इस ईसाई धर्मकी शाखाकी कई प्रतिशाखाएं हैं, जिनमेंसे तीन सबसे बड़ी सुनी गई हैं, याने प्रथम रोमनकैथलिक, दूसरी प्रोटेस्टैण्ट, और तीसरी ग्रीकचर्च. इनमें रोमन-कैथलिक, और ग्रीकचर्चको उपासना पक्षके समान जानना चाहिये, और प्रोटेस्टैण्ट को वेदान्त पक्षके मुवाफ़िक़; परन्तु प्रोटेस्टैण्ट जीव ब्रह्मको जुदा और वेदान्त वाले एक मानते हैं. इन तीनों प्रतिशाखाओंमें भी कई एक भेद मानेजाते हैं. उदयपुरमें वैकुंठवासी महाराणा साहिबके समयसे, याने विक्रमी १९३४ [ई० १८७७ = हि० १२९४] के बाद प्रोटेस्टैण्ट स्काट्चर्चका पादरी जेम्स शेपर्ड साहिब यहां आया है,

और उसने विक्रमी १९४८ [.ई० १८९१ = हि० १३०८] में अपने मतका एक गिरजा भी वनवाकर खोला है. ग्रीक चर्चके लोग रशिया (रूस) में बहुत हैं. पश्चिमी मज़्हब वाले तौरात, ज़बूर, इंजील, और फ़ुर्क़ान इन ४ किताबोंको आस्मानी पुस्तक बतलाते हैं. तीसरी शाखामें मुहम्मदी याने हज़्रत मुहम्मदको मानने वाले हैं, जो फ़ुर्क़ान (कुर्आन) को मानते हैं, और कुर्आन इनके यहां आस्मानी किताब मानीगई है, जो हज़्रत मुहम्मदके मुंहसे ज़ुहूर (प्रगट) में आई; और हज़्रत पैग़म्बरके क़ौलको हदीस बोलते हैं. पैग़म्बरके बाद अबूहनीफ़ा, मालिक, शाफ़िई, और अहमद हम्बल ये ४ इमाम पैदा हुए. इन ४ इमामोंने उक्त पैग़म्बर साहिबके क़ौलोंको जमा करके जो ४ किताबें बनाईं वे हदीसकी किताबें कहलाईं. उनके बाद ६ इमाम दूसरे हुए, जिन्होंने उन चार किताबोंमें फेरफार और कमी वेशी करके ६ किताबें नई बनाईं. अस्ल तो ये १० ही हदीसकी किताबें हैं, लेकिन् इस समय सैकड़ों क़िस्मकी हदीसकी किताबें मिलती हैं जिनको "सिहाह सित्तह" कहते हैं. इन लोगोंमें दो बड़ी शाखा अर्थात् (फ़िर्क़े) हैं, १- सुन्नी और २- शीआ. सुन्नी कहते हैं, कि हज़्रत पैग़म्बरके बाद उनके चारों यार, याने अबूबक्र, उमर, .उस्मान और अली, ख़लीफ़ा कहलाये; और कहते हैं, कि ३० वर्षतक मज़्हबी ख़िलाफ़त रही, जिनको ख़ुलफ़ाय राशिदीन बोलते हैं, और उनके बाद ९० वर्षतक ख़ुलफ़ाय बिनी उमय्याने हुकूमत की, और उसके बाद क़रीब ५०० वर्षतक ख़ुलफ़ाय बिनी अब्बास रहे, जिनके बाद चंगेज़ख़ानियोंने ख़िलाफ़तको ग़ारत किया. शीआ लोग हज़्रत पैग़म्बरके बाद हज़्रत अलीहीको ख़लीफ़ा व इमाम मानते हैं, और अबूबक्र, उमर, उस्मानको ज़ालिमोंमें गिनते हैं. हज़्रत अली पैग़म्बर साहिबके दामाद थे, जिनकी औलादको सय्यद कहकर उनकी बड़ी इज़्ज़त करते हैं. इस समय सुन्नियोंमें सय्यद अहमदने कुर्आनकी आयतोंका अर्थ नये ढंगसे करके उसे ज़मानहके रवाजसे मिलादिया है. पश्चिमी मज़्हबोंसे हमारी ज़ियादह वाक़फ़ियत नहीं है, यदि कोई ग़लती हो, तो पाठक लोग क्षमा करें.

अब हम मेवाड़का रियासती ढंग और कारख़ानोंका हाल लिखते हैं. इस राज्यका अनुमान ५०० वर्ष पूर्वतकका हाल मालूम होनेसे यही पायागया, कि यहांकी मुल्की हुकूमत दो क़ौमों याने कायस्थों, और महाजनोंके हाथमें रही, अर्थात् महाराणा साहिबको युद्ध सम्बन्धी कार्योंसे अवकाश न था, कि वे माली और मुल्की बन्दोवस्त करते, इसवास्ते ऊपर लिखी हुई दोनों क़ौमवालोंमेंसे किसी एक योग्य पुरुषको अपना प्रधान याने नाइब मुक़र्रर करके उसको माली और मुल्की कामका अधिकार देते रहे, लेकिन् नियम यह था, कि महाराणा साहिबकी इच्छाके विरुद्ध कोई कार्रवाई न करे तबतक .उह्दहपर क़ाइम रहे, वर्नह दूसरी हालतमें .उह्देसे ख़ारिज करदियाजावे.

प्रधानके पदपर महाजन क़ौमका आख़री शख़्स कोठारी केसरीसिंह था, जिसकी जगह अब महकमहख़ास क़ाइम होगया है. और प्रधानके और महकमहख़ासके अधिकारमें केवल इतनाही फ़र्क़ है, कि प्रधान कुल काम स्वतन्त्रतासे करते थे; यदि कोई बड़ा काम होता, तो महाराणा साहिबसे पूछलिया करते थे, परन्तु महकमहख़ास स्वयं नहीं करसक्ता. कुल कामोंके लिये ख़ुद महाराणा साहिब हुक्म देते हैं, जिनकी तामील महकमहख़ास कराता है.

इस महकमहके इख़्तियारमें अज़लाय ग़ैर व कुछ हिस्सह जागीरदारोंका है, और माली काम भी इसी महकमहके तऋल्लुक़ है. लेकिन् इन्साफ़का काम जुदा है, जिसका हाल आगे लिखा जायेगा. इस महकमहके मातहत हाकिमान ज़िला और नाइब हाकिम हैं, जो हरवक़ और सालानह जमाख़र्चकी रिपोर्ट इस महकमहमें करते हैं. ख़ास महाराणा साहिबके कारख़ाने, याने कपड़ोंका भंडार, कपड़ द्वारा, रोकड़का भंडार, हुक्म ख़र्चकी ओवरी, पांडेकी ओवरी, सेजकी ओवरी, अंगोल्याकी ओवरी, रसोड़ा, पाणेरा, सिलहख़ानह, बन्दूक़ोंका कारख़ानह, छुरी कटारीकी ओवरी, धर्मसभा, देवस्थानकी कचहरी, शिल्पसभा, ख़ास ख़ज़ानह, शम्भुनिवास, ज़नानीड्योढ़ी, फ़ीलख़ानह, अस्तबल, फ़र्राशख़ानह, छापाख़ानह, पुस्तकालय, सांडियोंका कारख़ानह, विक्टोरिया हॉल, पुलिस, साइर, वाक़ियातकी कचहरी, रावली दूकान, टकशाल, जंगीफ़ौजका महकमह, और मुल्की फ़ौजका महकमह वग़ैरह कुल अपना अपना जमाख़र्च महकमहख़ासमें भेजते हैं, और महकमहख़ासकी तरफ़से एक कचहरी हिसाबदफ़्तरके नामकी है, जो कुल जमा ख़र्चकी जांच परताल करके महकमह ख़ासमें रिपोर्ट करती है, लेकिन् ऐसे कामोंकी मन्ज़ूरी जबतक महकमह ख़ाससे नहो तबतक सहीह नहीं समझी जाती. यह महकमह विक्रमी १९२७ [हि० १२८७ = ई० १८७०] में क़ाइम हुआ था.

मेवाड़के मुख्य पर्गने ये हैं:- गिरवा, मगरा, छोटी सादड़ी, चित्तौड़गढ़, राशमी, सहाड़ां, भीलवाड़ा, मांडलगढ़, जहाज़पुर, और कुम्भलगढ़. वैकुंठवासी महाराणा साहिबने ऊपर लिखे हुए पर्गने क़ाइम करके अपने पास रहने वालोंमेंसे हरएक पर्गनेका हाकिम नियत करदिया, और उनकी तनख़्वाह बढ़ादी. इन्हीं दिनोंमें मुल्की काम दुरुस्तह करनेके लिये पैमाइश और ठेकेका प्रबन्ध करनेको गवर्मेंटसे एक आदमी मांगा, जिसपर गवर्मेंटने मिस्टर विंगेट साहिबको भेजा. जिसने ख़ालिसहकी पैमाइश और बन्दोबस्तका काम बहुत अच्छी तरह चलाया. पहिले इस मुल्कमें लाटा और कूंतासे जमा वुसूल कीजाती थी. लाटा याने ख़ालिसहकी ज़मीनमें किसानोंके यहां जितनी पैदावार हो उसमेंसे क़ाइदहके मुवाफ़िक़ राज्यका हिस्सह बांटलेनेको लाटा कहते हैं, और कूंता वह

कहलाता है, कि गांवोंके मुखिया लोगोंकी शमूलियतसे राज्यका अह्लकार पकीहुई खड़ी फ़स्लका तख़्मीनह करके हिस्सह वुसूल करलेता है. अफ़ीम, ऊख, और कपास वगै़रह बोई जानेवाली ज़मीनपर पहिले फ़ी बीघा एक रुपयेसे दस रुपयेतक हासिल वुसूल किया-जाता था, लेकिन् अब ख़ालिसहमें बिल्कुल पक्का बन्दोबस्त होगया, जिससे राज्य और रञ्अय्यतके दर्मियानसे मत्लबी लोगोंका दख़्ल उठगया. ऊपर बयान किये हुए पर्गनोंमें भी बन्दोबस्तके साथ कुछ तब्दीली हुई है.

अब हम हरएक पर्गनेका भूगोल सम्बन्धी वृत्तान्त तफ्सीलके साथ जुदा जुदा लिखते हैं.

१- गिरवा, जिसका सद्र ख़ास राजधानी उदयपुरमें गिनाजाता है, इसके दो हिस्से हैं- एक भीतरी गिरवा, और दूसरा बाहिरी गिरवा. भीतरी गिरवा पहाड़ोंके अन्दर उदयपुरके गिर्द वाला हिस्सह है, और बाहिरी गिरवा वह है, जो पहाड़ोंके बाहिर चौड़े मैदानमें वाके़ है. ख़ास शहर उदयपुर, जिसमें ४६६५८ आदमियोंकी आबादी है, पक्की शहरपनाहके अन्दर बसाहुआ है. इसके तीन तरफ़ याने उत्तर, पूर्व और दक्षिण ओर पक्की शहरपनाह और पश्चिमकी तरफ़ पीछोला तालाब वाके़ है. इस शहरपनाहकी शुरू बुन्याद महाराणा पहिले अमरसिंहने डाली थी, लेकिन् उस ज़मानहमें नातमाम रही. फिर महाराणा दूसरे अमरसिंहने इसका काम जारी किया, और उनके पुत्र महाराणा दूसरे संग्रामसिंहने विक्रमी १७९० [हि० ११४६ = ई० १७३३] में उसे ख़त्म किया. इसके पश्चिम तरफ़ अमरकुंडपर शिताबपौल और उसके उत्तर तरफ़ चांदपौल दर्वाज़ह है. इन दो दर्वाज़ोंके बाहिर शहरके पश्चिमी हिस्से ब्रह्मपुरीके दो दर्वाज़े और हैं, जो अंबापौल, और ब्रह्मपौलके नामसे प्रसिद्ध हैं. उत्तरकी तरफ़ हाथी-पौल दर्वाज़ह है, जिसके सामने शम्शेरगढ़का मरहला (जेलख़ानह) है, जो महाराणा दूसरे अरिसिंहने बनवाया था; और शम्शेरगढ़से पश्चिम एक छोटी पहाड़ीपर अंबावगढ़का मरहला है; और ईशानकोणमें दिल्ली दर्वाज़ह और उसके सामने सारणेश्वर गढ़का मरहला है. पूर्वकी तरफ़ सूरजपौल दर्वाज़ह और उसके सामने सूरजगढ़ नामका मरहला है. दक्षिण तरफ़ उदयपौल (१) है, जिसके सामने कृष्णगढ़ नामका मरहला था, जिसकी पुरानी इमारत खंडहर होजानेके सबब अब उसजगह वर्त्तमान महाराणा साहिबने कैदियोंके लिये एक नया जेलख़ानह बनवाया है. अग्निकोणके बुर्जपर जगत्शोभा नामी एक

(१) पहिले इस दर्वाज़हका नाम कमलिया पौल था, जो मरहटोंके ग़द्रमें बन्ध किया गया था, परन्तु वैकुण्ठवासी महाराणा सज्जनसिंह साहिबके पुत्र उत्पन्न हुआ, उस समय यह दर्वाज़ह खोला-जाकर उदयपौलके नामसे प्रसिद्ध कियागया.

बड़ी तोप महाराणा दूसरे जगत्‌सिंहकी बनवाई हुई है, और उसके सामने इन्द्रगढ़का मरहला है. दक्षिण तरफ़ कृष्णपोल दर्वाज़ह है, यहांसे शहरपनाह मांछला मगरा परसे गुज़रकर पश्चिमकी ओर पीछोला तालाबके किनारेतक पहुंचगई है. पहाड़की चोटीपर एकलिंगगढ़ नामका एक छोटासा क़िला है, जिसके दक्षिण तरफ़ पहाड़के अख़ीर हिस्सेपर ताराबुर्ज नामका मोर्चा, और इसी पहाड़के पश्चिम दूध तलाईके सामने रमणापोल दर्वाज़ह और उसके पश्चिम पीछोलाके किनारेपर, जहां शहरपनाह ख़त्म होती है, जलबुर्जकी खिड़की है. इससे आगे पीछोला तालाब है, जो महाराणा लाखाके समय विक्रमी संवत् के १५ वें शतकमें किसी बनजारेने बनवाया था. इस तालाबके दक्षिण तरफ़ पानीके बीचमें जगमन्दिर नामी महल और बग़ीचा है. इन महलोंमें विक्रमी १६७१ [हि० १०२३ = ई० १६१४] में शाहज़ादह ख़ुर्रमने एक बड़े गुम्बज़की नींव डाली थी, जबकि वह जहांगीरका भेजा हुआ फ़ौज लेकर उदयपुरमें आया था, और महाराणा कर्णसिंहने इस महलको तय्यार करवाया. फिर वही शाहज़ादह ख़ुर्रम अपने बाप जहांगीरसे बाग़ी होकर भागनेके समय महाराणाका शरणागत होकर इसी महलमें रहा था. इस महलके पूर्वका हौज़ फ़व्वारोंका ख़ज़ानह है. महलके पश्चिममें ज़नानह मकान, और महलके उत्तर तरफ़ बड़े चौकका हौज़ वग़ैरह महाराणा अव्वल जगत्‌सिंहने बनवाये थे, और १२ पत्थरका महल तथा नहरके महल और स्तम्भों वाले खुले हुए दोनों दरीख़ाने, कुंवरपदाके महल, और ४ हौज़ महाराणा दूसरे संग्रामसिंहके बनवाये हुए हैं. इन महलोंमें कपूरबाबाकी एक छत्री मश्हूर है. सुना गया है, कि शाहज़ादह ख़ुर्रम इस नामके फ़क़ीरपर बड़ा एतिक़ाद रखता था, और उसीके नामसे शाहज़ादहने यह स्थान बनवाया था. इसी तालाबके अन्दर उत्तर तरफ़ महलोंके सामने जगन्निवास नामी दूसरा बहुत उम्दह महल बनाहुआ है, जिसमें बग़ीचा, हौज़, और फ़व्वारे वग़ैरह कई चीज़ें देखनेके लाइक़ हैं. आमके दरख़्तोंपर मयूर बैठकर बोलते हैं, उसवक़ देखनेवालोंकी टिकटिकी लगजाती है. इस तालाबके दोनों मकानोंको देखनेके लिये हज़ारहा कोसोंसे सैकड़ों मुसाफ़िर दौड़कर आते हैं, जो देखकर अपनी मिहनतका बदला भरपाते हैं. तालाबको दक्षिण और पश्चिम दोनों ओर पहाड़ोंसे घिरा हुआ देखकर, जिनमें सरसब्ज़ दरख़्त नज़र आते हैं, मुसाफ़िर लोग यही चाहते हैं, कि इसी यात्रामें अधिक समय व्यतीत हो. तालाबके अन्दर दो और भी छोटे छोटे महल हैं, पहिला अरसी विलास, महाराणा अरिसिंहका बनवाया हुआ, और दूसरा मोहन मन्दिर, जो महाराणा अव्वल जगत्‌सिंहके पासवानिये पुत्र मोहनदासने बनवाया था. तालाबका उत्तरी हिस्सह शहरसे घिरा

हुआ है, और वहां यह तालाव जल पूरित नदीके आकारमें दिखाई देता है. तालाव के पूर्वी किनारेपर राजधानीके महलोंसे दक्षिण तरफ़ इस तालावका बड़ा बन्ध है, जिसको बड़ीपाल कहते हैं. इस बन्धकी मरम्मत महाराणा अव्वल जगत्सिंह, संग्रामसिंह और भीमसिंहके वक्में होती रही, लेकिन् महाराणा जवानसिंहने इस बन्धको ऐसा मज्बूत बनवादिया, कि अब इसके टूटनेका भय नहीं रहा. विक्रमी १८७२ [हि० १२३० = ई० १८१५] में जब यह बन्ध टूटगया था, तो उससे शहरको बहुत नुक्सान पहुंचा. पूर्वी किनारेपर महाराणा साहिबके महल हैं, जिनका बयान आगे लिखा जायेगा, लेकिन् गुप्त किनारेपर महाराणा स्वरूपसिंहके बनवाये हुए अखाड़ाके महल हैं, जिनमें एक तरफ़ सेवाके ठाकुर पीतांबररायका देवालय और दूसरा गुलाबस्वरूपविहारीका मन्दिर है, जो महाराणा स्वरूपसिंहकी महाराणी राठोड़ने बनवाया था, उसके आगे नया महल और पार्वती विलास नामी महल हैं, जो महाराणा भीमसिंहने बनवाये थे, और उससे आगे रसोड़का महल है, जिसकी बुन्याद विक्रमी १६७१ [हि० १०२३ = ई० १६१४] में शाहज़ादह खुर्रमने डाली थी, जिसको महाराणा कर्णसिंहने समाप्त करवाया, और इसी कारण इसका दूसरा नाम कर्णविलास भी रक्खा गया. इसके ऊपरके कोठेपर महाराणा संग्रामसिंहने ग्रह नक्षत्र देखनेका यंत्र बनवाया था, जो अबतक मौजूद है. इसके पासही किनारेपर महाराणा जवानसिंहका बनवाया हुआ जलनिवास महल है, जिसमें नहर व फ़व्वारे बने हुए हैं. इसके नज़्दीक रूपघाट है, जो महाराणा अरिसिंहके धायभाइयोंमेंसे रूपा धायभाईने बनवाया था. उसके आगे नावघाट है, जहां नाव और किश्तियां बंधी रहती हैं, और उसीके क़रीब नाव चलाने वालोंके घर हैं. इसके आगे महियारिया चारण श्यामलदास, जसकर्णकी हवेली है, जिसके पासही राणावत उदयसिंहकी हवेली, लालघाट और सनवाड़की हवेली है. आगे बढ़कर बागोरकी हवेली और त्रिपोलिया घाट है जिसे गनगौर घाट भी कहते हैं. यह त्रिपोलिया महाराणा अरिसिंहके समयमें सनाढ्य ब्राह्मण बड़वा अमरचन्दने बनवाया था, जिसके ऊपर बागोरके महाराज शक्तिसिंहने एक उम्दह महल बनवादिया है. इसके आगे बीरूघाट, शिताबपोल, चांदपोल, फ़त्हख़ां महावत (फ़ीलवान) की हवेली, और मोती कुंडका मकान है. पश्चिमी किनारेपर जगन्निवासके सामने माजीका अंतरीपनुमा मन्दिर महाराणा सर्दारसिंहकी महाराणी बीकानेरीका बनवाया हुआ है, जिसके आगे आमेटकी हवेली है, जो सर्दारगढ़के डोडिया ठाकुर सर्दारसिंहने बनवाई थी. उसके आगे उदयश्यामका मन्दिर है, जो महाराणा उदयसिंहने उदयपुरकी बुन्याद डालनेके वक्

बनवाया था. इससे आगे पीपलियाकी हवेली, पंच देवली घाट, थांवलाकी हवेली, बाबा हनुमानदासका बनवाया हुआ हनुमानघाट, और भीमपद्मेश्वरका मन्दिर, जो महाराणा भीमसिंहकी महाराणी बीकानेरीने बनवाया था, क्रमसे एक दूसरेके बाद वाके हैं. भीम-पद्मेश्वर और शिताबपोल दर्वाज़हके बीचवाला तालाबका हिस्सह अमरकुण्ड कहलाता है, क्योंकि बड़वा अमरचन्दने इसके पूर्व और पश्चिममें घाट बनवाकर इसको फ़व्वारोंसे आरास्तह किया था. इसके उत्तरको चांदपोल दर्वाज़हसे ब्रह्मपुरीमें जानेके लिये एक पुल बना है. इस पुलके आगे जो हिस्सह तालाबका है वह स्वरूपसागर कहलाता है, जिसके दो हिस्से होगये हैं, और उन दोनोंके बीचमें अमरओटा नामसे एक दीवार पानी के सत्हकी बराबर बनी हुई है. इसके आगे पानीका निकास है, जिसको वैकुण्ठवासी महाराणा सज्जनसिंह साहिबने बहुत खूबसूरत और मज्बूत बनवाया है. वर्सातके दिनोंमें जब तालाब भरकर चद्दर गिरने लगती है, उस वक्त यहांकी शोभा देखनेके योग्य होजाती है. तालाबके दक्षिणी किनारे वाली एक टेकरीपर खास ओदी नामी एक शिकारगाह है, जिसको महाराणा संग्रामसिंहने बनवाया था. वर्तमान महाराणा साहिबने वहांपर महल वगैरह बनवाकर उसकी शोभा और भी बढ़ादी है. उसी तरफ़ खुशहाल ओदी, और धर्म-ओदी वगैरह छोटी छोटी कई शिकारगाहें और भी हैं. बाकी पहाड़के बीचमें महाकालीका एक मन्दिर महाराणा जवानसिंहका बनवाया हुआ है, और नैर्ऋत कोणमें सीता माताका छोटासा पुराना मन्दिर है, जहां पौष महीनेमें रविवारको मेला होता है. तालाबके पश्चिमी किनारेपर सीसारमा गांवमें महाराणा संग्रामसिंहका बनवाया हुआ वैद्यनाथ महादेवका एक प्रसिद्ध मन्दिर है, और उसके पश्चिमोत्तरमें बांसदरा पहाड़पर, जो शहरसे ११०० फ़ीट और समुद्रके सत्हसे ३१०० फ़ीट ऊंचा है, वैकुण्ठवासी महाराणा सज्जनसिंह साहिबने बहुत अच्छे महल बनवाकर उसका नाम सज्जनगढ़ रक्खा है. उसमें जो बाकी काम रहगया था, वह वर्तमान महाराणा साहिबने पूर्ण करवाया. यह स्थान भी देखनेके योग्य है. क्योंकि इसके देखनेके लिये आदमी दो मीलकी चढ़ाई चढ़कर ऊपर जानेपर अपनी मिह्नतको उसी वक्त भूल जाता है. बड़ीका तालाब जो सज्जनगढ़के समीप उत्तरकी तरफ़ है, उसका हाल महाराणा अव्वल राजसिंहकी तवारीखके साथ लिखा-जायेगा.

पीछोला तालाबके उत्तर तरफ़ फ़त्हसरोवरके नामसे एक नया तालाब बनरहा है, जो पीछोलेसे मिलादिया जावेगा. ब्रह्मपुरीके उत्तर पीछोला तालाबके किनारेपर अम्बिका भवानीका प्रसिद्ध मन्दिर है, जो महाराणा राजसिंह अव्वलने बनवाया था, और देवाली ग्रामके समीप फ़त्हसरोवरके उत्तरी किनारेवाले एक खड़े पहाड़की

चोटीपर कायस्थोंका बनवाया हुआ नीमचमाताका एक पुराना मन्दिर है, जहां श्रावण कृष्ण ऽऽ को मेला होता है, और कुल शहरके लोग दर्शनोंको जाते हैं. पुरोहितजीका तालाब उदयपुरसे ७ मीलके क़रीब ईशान कोणमें सिफ़ेद ख़ूबसूरत पत्थरसे बांधा गया है.

अब हम इसी जगहसे दक्षिणको चलकर शहरके बाहिर व भीतरका हाल लिखते हैं. फ़त्हसरोवरके पीछे महाराणा संग्रामसिंहका बनवाया हुआ बाग़ है, जिसको सहेलियोंकी बाड़ी कहते हैं, इसमें महल और एक बड़ा हौज़ बना हुआ है. फ़त्ह-सरोवरके बन्धकी दक्षिणी पहाड़ीपर मोतीमहल नामका पुराना खण्डहर है, जहां विक्रमी १६१६ [हि० ९६६ = ई० १५५९] में महाराणा उदयसिंहने उदयपुरके शहर और महलकी बुनूयाद डाली थी, जो बादको एक फ़क़ीरकी इजाज़तसे पीछोला तालाबके किनारेपर बनवाये गये. सहेलियोंकी बाड़ीके पूर्व शिवरतीके महाराज गजसिंह वग़ैरह कई सर्दारों और पासवानोंकी बाड़ियां हैं, और एकलिंगेश्वरकी सड़कपर नदीका पुल और विष्णुका एक मन्दिर धायभाई रूपाका बनवाया हुआ है. पीछोलाके निकासी नाले (गुमानिया खाल) के दक्षिण किनारेसे आबादी शुरू होती है. रेज़िडेंसीकी कोठी, जो महाराणा भीमसिंहके समयमें कॉब साहिबने बनवाई थी, और जिसको महाराणा जवानसिंहने १००००) रुपया देकर ख़रीदली थी, उस कोठीके पास पुराने गुम्बज़दार महल हैं, जो पेश्तर बेगूंके रावत्की हवेली थी, और अब उसमें अंग्रेज़ी रेज़िडेण्ट रहते हैं. इस कोठीके अग्नि कोणकी तरफ़ रेज़िडेंसी सर्जनका बंगला है. कोठीके दक्षिण रेज़िडेन्सी का बगीचा और सेठ ज़ोरावरमल्लकी बाड़ी है. उसके दक्षिण हज़ारेश्वर महादेवका मन्दिर है, और हज़ारेश्वरके महल, जो महाराणा दूसरे जगत्सिंहके समयमें एक दादूपंथी साधुने अपने आश्रमके लिये बनवाये थे. इसीके क़रीब स्कॉच मिशनका गिरजा है, जो पादरी डॉक्टर जेम्स शेपर्डने हालमें बनवाया है. गिरजाके पश्चिममें मेरा (कविराजा श्यामलदासका) श्यामल बाग़, और इसके उत्तर सरदफ़्तरका बंगला है, इसके आगे मिस्टर लोनार्गिन, गार्डन सुपरिण्टेण्डेण्ट मिस्टर स्टोरी, फ़ीरोज़शाह पिश्तनजी सौदागर और मिस्टर जर्मनीका बंगला पास पास वाके हैं. मिस्टर जर्मनीके बंगलेके क़रीब महता तख़्तसिंह और महता गोविन्दसिंहकी बाड़ियां हैं, जिनके क़रीब कचहरी बन्दोबस्तके बंगले, और इनके दक्षिण चौगान और दरीख़ाने वाके हैं. महाराणा साहिब नवरात्रिके त्यौहारोंपर जुलूसी सवारीसे अक्सर इसी जगह आते हैं. चौग़ानके पश्चिममें तोपख़ानह और उसके पीछे महाराणा दूसरे अरिसिंह के समयके बने हुए जैन मन्दिर हैं, जिनमें बड़े बड़े क़दकी जैन मूर्त्तियां हैं. यहांसे

पश्चिम पीछोलाके निकासी नालेपर पादरी जेम्स शेपर्डका बंगला, नालेके पश्चिम विलिअम टॉमसका बंगला, और उसीके पासकी पहाड़ीपर एग्ज़िक्युटिव इंजिनिअर मिस्टर टॉमसनका और उसके उत्तरकी टेकरीपर मिस्टर विंगेटका बंगला है. ये कुल बंगले सिवा पादरी शेपर्डके राजकी तरफ़से बनवाये गये हैं, किसी साहिबकी मिल्कियत नहीं है. श्यामलबाग़के पश्चिम भीम और स्वरूप पल्टनकी लाइनें और उससे दक्षिण हाथीपोलकी सराय, और वायव्य कोणमें हाथीपोलका मरहला है. उसके आगे महाजनोंकी पंचायती थोभकी वाड़ी है, जिसमें एक जैनका मन्दिर और मकान बनाहुआ है.

अब हम हाथीपोल दर्वाज़हके भीतर चलते हैं. मोतीचोहट्टाकी पश्चिमी लाइनकी तरफ़ करजालीके महाराज सूरतसिंह और शिवरतीके महाराज गजसिंहकी हवेलियां हैं, और उसी लाइनमें बनेड़ाके राजा गोविन्दसिंहकी हवेली है, जिसके आगे घण्टाघरका मनारह और कोतवालीका मकान है. इससे आगे पश्चिमी लाइनमें शीतलनाथका जैन मन्दिर है, और उससे आगे महाराणा स्वरूपसिंहकी महाराणी अभयकुंवरका बनवाया हुआ अभयस्वरूपविहारीका मन्दिर और एक बावड़ी है. इसके आगे महाराणा जगत्सिंह अव्वलकी धाय नौजूका बनवाया हुआ विष्णुका मन्दिर है, जो विक्रमी १७०४ [हि० १०५७ = ई० १६४७] में तय्यार हुआ था, और उसके क़रीब जगन्नाथरायका बड़ा मन्दिर है, जो इन्हीं महाराणाने विक्रमी १७०८ [हि० १०६१ = ई० १६५१] में बनवाया था. इससे आगे पूर्वी लाइनमें आसींदके रावत्की हवेली और पश्चिमी लाइनमें गोकुलचन्द्रमाका विष्णु मन्दिर है, जिसको बागोरके कुंवर शार्दूलसिंहकी पत्नी, याने महाराणा शंभुसिंहकी माता नन्दकुंवरने विक्रमी १९३१ [हि० १२९१ = ई० १८७४] में बनवाया है. इसके आगे जगत्शिरोमणिका मन्दिर है, जिसको महाराणा जवानसिंहकी महाराणी बाघेलीकी आज्ञानुसार महाराणा स्वरूपसिंहने बनवाकर विक्रमी १९०५ [हि० १२६४ = ई० १८४८] में समाप्त किया, और उसके सामने जवानस्वरूपेश्वरका मन्दिर है, जो महाराणा जवानसिंहकी आज्ञानुसार महाराणा स्वरूपसिंहने विक्रमी १८९९ [हि० १२५८ = ई० १८४२] में समाप्त किया. इस जगह दोनों तरफ़ दूकानोंकी लाइनें भी महाराणा स्वरूपसिंहकी बनवाई हुई हैं, जिनके आगे महलोंमें प्रवेश करनेको पहिला दर्वाज़ह बड़ीपोल है, जिसको महाराणा अव्वल अमरसिंहने विक्रमी १६७६ [हि० १०२८ = ई० १६१९] में बनवाया था. इसके दोनों तरफ़ वाले दो दालान महाराणा दूसरे अमरसिंहने विक्रमी १७५७ [हि० १११२ = ई० १७००] में बनवाये थे, और उनके दोनों तरफ़ घड़ियाल

व नक़ारख़ानेकी मनारनुमा छतरियां हैं, जो इन्हीं महाराणाने बनवाई हैं. इसके आगे बढ़कर त्रिपौलिया याने बराबर क़तारमें सिफ़ेद पत्थरके तीन दर्वाज़े हैं. ये महाराणा दूसरे संग्रामसिंहके बनवाये हुए हैं. इनके ऊपर हवामहल नामका एक महल महाराणा स्वरूपसिंहका तय्यार करवाया हुआ है. इसके आगे महलोंका बड़ा चौक है, जिसके नीचे लदावके बड़े दालान और सूरज पोल दर्वाज़ह, महाराणा कर्णसिंहके बनवाये हुए हैं. इस लदावपर महाराणा दूसरे संग्रामसिंहकी बनवाई हुई हस्तिशाला है. सभाशिरोमणि दरीख़ानह, तोरण पौल, रावला (ज़नानह महल), और सूरज चौपाड़ तो महाराणा कर्णसिंहने और अमर महल महाराणा अमरसिंह अव्वलने तय्यार करवाये. पीतमनिवासमें चीनीका काम व सूरज चौपाड़में नक़्क़ाशीका काम महाराणा दूसरे जगत्सिंहके और स्वरूपविलास महाराणा स्वरूपसिंहके, माणक महल, भीमविलास, और मोती महल, ये तीनों महाराणा कर्णसिंहके बनवाये हुए हैं, लेकिन् माणक महलमें स्वरूपसिंहने, भीमविलासमें भीमसिंहने, और मोती महलमें जवानसिंहने काच वग़ैरहका नया काम और बनवाया. सिलहख़ानह, राय आंगन, नेकाकी चौपाड़, पांडेकी ओवरी और पाणेराकी नौचौकियां, ये कुल मकानात महाराणा उदयसिंहने बनवाये थे. पाणेराके ऊपरका चन्द्र महल, और दिलकुशाल (दिलख़ुश्हाल) की चौपाड़ महाराणा कर्णसिंहने; बड़ी चित्रशाली दिलकुशालका परछना, महाराणा संग्रामसिंहने; शिवप्रसन्न व अमरविलास (बाड़ी महल) महाराणा दूसरे अमरसिंहने; और ख़ुशमहल महाराणा स्वरूपसिंहने तय्यार करवाये. कोठारका मकान महलोंके प्रारम्भ समयमें महाराणा उदयसिंहका बनवाया हुआ है. दक्षिण तरफ़ "शम्भुनिवास" नामी अंग्रेज़ी तर्ज़का एक महल महाराणा शम्भुसिंहका बनवाया हुआ है. पहिले इस जगह महाराणा अव्वल जगत्सिंहके बनवाये हुए कुंवरपदाके महल थे, जिसका एक पुराना हिस्सह शम्भुनिवासके सामने अबतक मौजूद है. इन महलोंकी तरक़्क़ी वैकुण्ठवासी महाराणा सज्जनसिंहके समयमें भी होती रही, लेकिन् वर्तमान महाराणा साहिबने शम्भुनिवासके दक्षिण तरफ़ एक बड़ा आलीशान अर्द्धवृत्ताकार महल तय्यार करवाया है, जिसका काम अभीतक जारी है. इस महलको कुल महलोंका दक्षिणी रक्षक स्थान (दुर्ग या क़िला) कहना चाहिये. इसके दक्षिणमें बड़ी पालका बन्ध और उसके पीछे सज्जननिवास नामी एक बड़ा बाग़ महाराणा सज्जनसिंहका बनवाया हुआ देखनेके लाइक़ है, जिसमें नीलकंठ महादेवका प्राचीन स्थान, पाला गणेशका मन्दिर और अनेक तरहकी घूमी हुई पट्टियां याने सड़कें, जिनके दोनों तरफ़से अनेक प्रकारके फूलोंकी सुगंध आतीहुई, और कहीं हौज़ोंके बीचमें धातुमयी मूर्त्तियोंके हाथसे फ़व्वारे चलते हुए, कहीं

हौज़के गिर्द फ़व्वारोंके चलनेसे वर्सातकासा रूप दिखाई देना, कहीं जालीदार गुम्बज़ी हौज़में जलजन्तुओंका क्रीडा करते नज़र आना, कहीं शेर, चीते, तेंदुए, और रीछ वगैरह जंगली जानवरोंका बोलना, कहीं लोहेकी जालमयी दीवारोंके भीतर सामर, रोज, हरिण, चौसींगे आदि तृणचर जंगली जानवरोंका फिरना, कहीं तोता, मैना व चंडूल वगैरह अनेक प्रकारके पक्षियोंका किलोल करना, कहीं बड़े विस्तार वाले हरित चौगानमें अंग्रेज़, हिन्दुस्तानी, और मेवाड़ियोंका गेंद खेलना, कहीं गुलाबी व किर्मज़ी फूलोंवाली हरी बेलोंका वृक्षोंको ढंकना, कहीं मेवा और फलदार वृक्षावलीकी शोभा दिखाई देना, और ठौर ठौर वृक्षोंकी सघन छायामें बेंच और कुर्सियोंका रक्खाजाना इत्यादि इस सुहावनी छटा और शोभाको देखकर सैर करनेवालोंका दिल यह नहीं चाहता, कि वहांसे उठकर जावे. इस बागके भीतर महाराणा जवानसिंहके बनवाये हुए महल और उनसे अग्निकोणकी तरफ़ एक ऊंचे स्थानपर विक्टोरिया हॉल नामी बहुत ही सुन्दर तर्ज़का महल वर्त्तमान महाराणा साहिबने बनवाया है, जिसके सामने ज्युबिलीकी यादगार में श्रीमती महाराणी विक्टोरियाकी पाषाणमयी मूर्त्ति है. महलके भीतर अद्भुत वस्तु-संग्रहालय (म्यूज़िअम), प्राचीन वस्तु संग्रहालय, और पुस्तकालय बने हैं, जहां आम लोगोंको सैर करनेकी इजाज़त है. इस बागके उत्तरी फाटककी पूर्वी लाइनमें महता राय पन्नालालकी बाड़ी और पश्चिमी लाइनमें कविलोगोंका मद्रसह (चारण पाठशाला) है, जिसको मैं (कविराजा श्यामलदास) ने उमराव सर्दारोंके चन्दे और त्यागके रुपयोंसे वैकुण्ठवासी महाराणा सज्जनसिंह साहिबकी आज्ञानुसार बनवाया है. इसमें चारणोंके लड़के पठन पाठन करते हैं. वर्त्तमान महाराणा साहिबने इस पाठशालाके पाठक लोगोंका प्रबन्ध राजकी तरफ़से करदिया है. यहांसे थोड़ी दूर आगे बढ़कर वायव्य कोणमें राज यन्त्रालय (छापाख़ानह) है. शहरसे दक्षिण दो मीलके फ़ासिलहपर गोवर्द्धनविलास नामी स्थान है, जहां महाराणा स्वरूपसिंहके बनवाये हुए महल, तालाब व आखेट स्थान हैं, और एक पुराना कुण्ड धायभाई मानाका बनवाया हुआ है, जिसको उसने विक्रमी १७९९ [हि० ११५५ = ई० १७४२] में तय्यार करवाया था. गोवर्द्धनविलाससे पूर्व दिशाको शमीनाखेड़ा ग्रामके बीचमें गुसाइयोंका एक प्रतिष्ठित मठ है. यह मठ महाराणा दूसरे अमरसिंहके समयमें गुसाईं हरनाथगिरि और उसके शिष्य नीलकण्ठगिरिने बनवाया था. इस स्थानके मुआफ़ीके ग्राम व प्रतिष्ठा वगैरह अभीतक बहाल है, और इसके समीप शहरकी तरफ़ नागोंका अखाड़ा है, जहां नागा सन्यासी लोग चातुर्मासमें ठहरते हैं. कृष्णपोल और उदयपोल दर्वाज़हके बीचमें शहरके बाहिर अग्निकोणमें जंगी फ़ौजकी बारकें (रहनेके स्थान) हैं. शहरसे ईशानकोणकी तरफ़ शारणेश्वर महादेवका

ब्राह्मणीकी बनवाई हुई सराय, मन्दिर और बावड़ी है. उससे आगे उसी समयकी सुन्दर-बाव नामकी बावड़ी है; और उससे आगे पुरानी सड़कपर बेड़वास ग्राममें कायस्थ फ़त्हचन्दकी बनवाई हुई सराय, बावड़ी और एक पहाड़ीपर खेमज माताका मन्दिर है. इससे उत्तर नई सड़कपर महाराणा शम्भुसिंहके धवा बदनमल्लकी बनवाई हुई बावड़ी है; उससे आगे नई सड़कके दक्षिणको महाराणा अव्वल राजसिंहकी महाराणी रंगरसदेकी बनाई हुई त्रिमुखी बावड़ी, और उसीके समीप भरणाकी सराय है; और उससे आगे देबारीका दर्वाज़ह और अग्निकोणको उदयसागर नामका बड़ा तालाब है, जिसकी नेव महाराणा उदयसिंहने विक्रमी १६१६ [हि० ९६६ = ई० १५५९] में डाली थी. इससे अग्निकोणमें चेजाका घाटा, और बाहिर गिरवेमें घासाका तालाब है, जो विक्रमी संवत् के १० वें शतकसे पहिलेका बनवाया हुआ मालूम होता है, और ऊंटाला ग्राममें शीतला माताका प्रसिद्ध मन्दिर है. उदयपुरसे क़रीब १६ मील ईशान कोणको महाराणाका आखेट स्थान नाहरमगरा है, जहां महाराणा दूसरे संग्रामसिंहके बनवाये हुए महल थे, लेकिन् महाराणा शम्भुसिंह साहिब और महाराणा सज्जनसिंह साहिबने वहां कई महल और आखेट स्थान नये बनवाकर उसको अति रमणीय करदिया है. उदयपुरसे उत्तर क़रीब ६ कोसपर एकलिंगेश्वरकी पुरी है. यह स्थान बहुत पुराना है. जब चित्तौड़में पहिले राजधानी न थी उससे पहिले गुहिल कुलके राजा इसी नागदा गांवमें राज्य करते थे. इन राजाओंमेंसे बापा रावलने एकलिंगेश्वरको स्थापन करके चित्तौड़का राज्य लिया; उस समयसे यह मन्दिर प्रसिद्ध रहा, लेकिन् मालवी और गुजराती मुसल्मानोंके हमलोंसे मन्दिरको दो तीन बार नुक़्सान पहुंचा; तब महाराणा मोकल, महाराणा कुम्भकर्ण और महाराणा रायमल्लने समय समयपर इसका जीर्णोद्धार करवाया. मन्दिरके गिर्द संगीन दीवार महाराणा मोकलने बनवाई और मन्दिर व मूर्त्तिका जीर्णोद्धार महाराणा रायमल्लने करवाया, और बड़े मन्दिरके दक्षिण तरफ़ नाथ लोगोंकी पुरानी समाधि और मन्दिर वग़ैरह भी हैं. गोस्वामीके रहनेका मठ भी पुराना है, परन्तु पीछेसे उसका जीर्णोद्धार होता रहा है. बड़े मन्दिरसे उत्तर ऊंची कुर्सीपर विंध्यवासिनी देवी और हारीत ऋषि (१) के मन्दिर हैं; मन्दिरसे पूर्व इन्द्रसरोवर तालाब, जिसको भोडेला भी कहते हैं, विद्यमान है. यह तालाब इसी मन्दिरके साथ बनवाया गया था, जिसका जीर्णोद्धार महाराणा मोकल और महाराणा अव्वल राजसिंहने करवाया. मन्दिरसे नैर्ऋतकोणको बाघेला तालाब है, जो महाराणा मोकलने अपने भाई बाघसिंहके नामपर बनवाया था. इस तालाबके

(१) प्रशस्तियोंमें इस नामको हारीत राशि लिखा है.

पश्चिमी तीरपर नागदाके पुराने खण्डहर अबतक मौजूद हैं. खुमाण रावलकी समाधिपर बनाहुआ दो सभामण्डपका मन्दिर अबतक खड़ा है, और ग्रामके नैर्ऋत कोणमें दो जैन मन्दिर विक्रमी १५ वीं सदीके बने हुए हैं, जिनमें बड़ी बड़ी मूर्त्तियां हैं. तालाबके नैर्ऋती तीरपर दो बहुत .उम्दह पुराने मन्दिर हैं, जिनको लोग सास बहूके मन्दिर कहते हैं. इन मन्दिरोंमें नक़ाशीका काम देखनेके लाइक़ है. इन .इमारतोंका ढंग देखनेसे मालूम होता है, कि ये विक्रमी संवत्‌की ११ वीं सदीमें बनाये गये होंगे. एकलिंगेश्वरके मन्दिरसे पूर्व एक खड़े पहाड़की चोटीपर राष्ट्रसेना देवीका मन्दिर है. नवरात्रिमें इस देवीको १ महिष और २ बकरे महाराणा साहिबकी तरफ़से, और ९ महिष, व १८ बकरे देलवाड़ाके राजकी तरफ़से बलिदान कियेजाते हैं. एकलिंगेश्वरके मन्दिरके क़रीब एक मीलसे ज़ियादह दूर बापा-रावलका समाधिस्थान है, और इसी तरह एकलिंगेश्वरके गिर्दोनवाहमें कई मन्दिर पुराने मिले हैं, और उनसे प्रशस्तियां भी प्राप्त हुईं, जिनका हाल प्रसंग स्थानपर लिखाजायेगा.

२- ज़िला मगरा-यह ज़िला उदयपुरके दक्षिण तथा पश्चिममें पहाड़ोंसे घिरा हुआ महा दुर्गम स्थल वाला है. इसका सद्र (मुख्य) मक़ाम हालमें सराड़ा है, जहां एक छोटीसी गढ़ी है, जिसके अन्दर हाकिम रहता है. उदयपुरसे तीस मीलके लगभग दक्षिणमें चावण्ड ग्राममें महाराणा अव्वल प्रतापसिंहने अपने रहनेके महल बनवाये थे, जो अब खण्डहर पड़े हुए हैं. भोराईका क़िला डूंगरपुरकी हद्दपर वैकुण्ठवासी महाराणा सज्जनसिंह साहिबका बनवाया हुआ है. पश्चिम भोमटमें राघवगढ़का क़िला है, जो देलवाड़ाके राज राघवदेवने क़रीब १२५ वर्ष पहिले बनवाना चाहा था, लेकिन् वह पूरा न होने पाया, और राघवदेव उदयपुरमें मारागया. सिरोही, पालनपुर और ईडरके इलाक़ोंतक भोमटका ज़िला कहलाता है. इसमें भोमिया लोगोंके छोटे बड़े कई ठिकाने हैं, और ये लोग राजपूत व भीलोंके पैवन्दसे पैदा हुए कहे जाते हैं. बाक़ी भीलोंकी अनेक पालें नाहर, भांडेर, ऊपरेट, छप्पन, मेवल, और डांगल नामके ज़िलोंमें आबाद् हैं. इस ज़िलेमें जयसमुद्र नामका एक बड़ा भारी और अनुपम तालाब, जिसको ढेबर भी कहते हैं, महाराणा दूसरे जयसिंहका बनवाया हुआ है. इसका वृत्तान्त महाराणा जयसिंहके हालमें लिखाजायेगा. इसी ज़िलेमें धूलेव ग्रामके अन्दर ऋषभदेवका एक बड़ा प्रसिद्ध मन्दिर है, जो जैन और वैष्णवोंका बड़ा तीर्थ है, और जिसका वर्णन ऊपर होचुका है.

३- ज़िला छोटी सादड़ी-यह ज़िला मेवाड़, मालवा और पहाड़ी ज़िलेकी हदपर सेंधिया, प्रतापगढ़ और नीबाहेड़ाके इलाक़ोंसे मिला हुआ है; हाकिमके रहनेका सद्र मक़ाम छोटी सादड़ी शहरपनाहके भीतर आबाद है. इसके दक्षिण तरफ़ पहाड़ और बाक़ीमें मैदान और काली ज़मीन है. इस ज़िलेमें कोई स्थान लिखनेके लाइक़ नहीं है.

४ - ज़िला चित्तौड़गढ़- इसका पूर्वी भाग पहाड़ी और बाक़ी मैदान है. हाकिमके रहनेका मुख्यस्थान चित्तौड़गढ़ है. इस क़िलेकी बुन्यादका हाल सविस्तर तौरपर नहीं मिलसक्ता, लेकिन् इतना माना जाता है, कि मौर्य (मोरी जातिके) क्षत्रिय राजा चित्रंगने यह क़िला बनवाकर अपने नामपर इसका नाम चित्रकोट रक्खा था, उसीका अपभ्रंश चित्तौड़ है. मोरी ख़ानदानके अन्तिम राजा मान मोरीसे विक्रमी ७९१ [हि० ११६ = ई० ७३४] में गुहिलोत राजाओंके हाथमें आया, जो आजतक मौजूद है. इस क़िलेके दो बड़े मार्ग और दो खिड़कियां हैं, जिनमें एक पश्चिमी मार्ग आसानीसे चढ़नेके लाइक़ है. इस मार्गमें चढ़ते समय ७ दर्वाज़े पड़ते हैं- जिनमें १-पाडलपौल, २-भैरवपौल, ३-हनुमानपौल, ४- गणेशपौल, ५-लछमनपौल, ६- जोड़लापौल, और ७- रामपौल है. इन दर्वाज़ोंमेंसे भैरवपौलको विक्रमी १९३८ [हि० १२९८ = ई० १८८१] में वैकुण्ठवासी महाराणा सज्जनसिंह साहिबने सड़ककी दुरुस्ती करवानेके समय गिरवादिया, क्योंकि वह पहिले ही से गिराहुआ था, केवल दोनों तरफ़की शाखोंके निशान बाक़ी रहगये थे, जो रास्तह चौड़ा करनेके लिये गिरादिये गये; बाक़ी ६ दर्वाज़े मौजूद हैं. पहिले इस रास्तेपर एकही दर्वाज़ह ऊपरका था, जिसका नाम मानपौल है, लेकिन् महाराणा कुंभकर्णने रामपौल, जोड़लापौल, गणेशपौल और हनुमानपौल, ये चार दर्वाज़े नये बनवाये, और बाक़ी पीछेसे बनवायेगये हैं. भैरव-पौल, और हनुमानपौलके बीचमें राठौड़ कल्ला और ठाकुर जयमल्लकी छत्रियां हैं, जिनको बदनौरके ठाकुर प्रतापसिंहने बनवाई हैं. ये दोनों सर्दार यहांपर विक्रमी १६२४ [हि० ९७५ = ई० १५६७] में अक्बरसे लड़कर मारेगये थे, और पाडलपौलके बाहिर देवलिया वालोंके बड़े रावत् बाघसिंहका चबूतरा है, जो अक्बरसे बड़ी बहादुरीके साथ लड़कर काम आया था. ऊपरकी तरफ़ रामपौलके भीतर आमेटके रावत् पत्ताका चबूतरा है, जो अक्बरसे लड़कर बहादुरीके साथ मारागया था. क़िलेके उत्तरी हिस्सेमें रत्नेश्वर तालाब है, और उसके ऊपर हींगलू अहाड़ाके महल हैं, इसके बन्धके पीछे राठौड़िया तालाब है, और उससे आगे अन्नपूर्णा देवीका मन्दिर और कुण्ड, और उसके क़रीब पश्चिमको कुकड़ेश्वर महादेवका मन्दिर है. मन्दिरसे दक्षिण भीमगोड़ी नामका एक बड़ा गहरा पुष्कर (जलाशय) और कुंभसागर तालाब तथा तुलजा भवानीका मन्दिर और कुण्ड है. यहांसे आगे आला काब्राकी जगहका खण्डहर, और नौ कोठा मकानकी दीवारका निशान है, जो बनवीरने भीतरी क़िला बनवानेके इरादहसे बनवाया था. इस दीवारके पश्चिमी बुर्ज और दालानके बीचमें शृंगार चंवरी नामका एक जैन मन्दिर है, उससे दक्षिण महाराणा साहिबके पुराने

महल, त्रिपोलिया और बड़ी पौल नामका दर्वाज़ह है. बड़ी पौल दर्वाज़हसे पूर्व सात वीश देवरीके नामका एक पुराना जैन मन्दिर है. महलोंके दक्षिणी फाटकसे पूर्वी कोनेपर महाराणा कुम्भकर्णका बनवाया हुआ एक कीर्त्ति स्तम्भ (मनार) और महलोंकी पूर्वी सीमाके पास कुम्भश्यामका मन्दिर है, जिसको महाराणा कुम्भकर्णने विक्रमी १५०५ [हि० ८५२ = ई० १४४८] में बनवाया था. महलोंके दक्षिणी फाटकके बाहिर महासती स्थान है, जो पहिले चित्तौड़के राजाओंका दग्धस्थान था. इसमें समिद्धेश्वर महादेवका एक मन्दिर है, जिसको विक्रमी १४८५ [हि० ८३१ = ई० १४२८] में महाराणा मोकलने बनवाया था, और इसीके क़रीब पुराने जैन मन्दिरकी कुर्सीपर गुसाइयोंका मठ है, और उसके दक्षिणमें गोमुख नामी झरना और हौज़ है. इसकी सीढ़ियां उतरते वक्त दाहिने हाथको गुफाके तौरपर एक छोटीसी मढ़ी है, जो महाराणा रायमल्लके समयमें जैनियोंने बनवाई थी. इससे दक्षिण रावत् पत्ताका तालाब और पत्ता व जयमल्लकी हवेलियां हैं. इस तालाबके पूर्व भीमलत नामी पानीका एक बड़ा पुष्कर (चारों ओर पत्थरोंसे बन्धाहुआ जलाशय) है. पत्ताकी हवेलीसे दक्षिण कालिका देवीका प्रसिद्ध और प्राचीन मन्दिर है. इस मन्दिरके दक्षिण तरफ़ पद्मिनीका तालाब और महल हैं, जिनकी मरम्मत वैकुण्ठवासी महाराणा सज्जनसिंह साहिबने करवाई थी. इसके पश्चिम ऊंचाईपर सलूंबर, रामपुरा, और बूंदीवालोंकी हवेलियोंके खण्डहर हैं, और दक्षिणको बादशाहकी भाक्षी (क़ैदख़ानह) (१) और उसके पूर्व घोड़ा दौड़ानेका चौगान तथा घोरा बादलके गुम्बज़ हैं. इसके दक्षिणमें चित्रंग मोरीका तालाब है. यहांसे आगे बढ़कर कोई प्रसिद्ध स्थान नहीं है. क़िलेकी पूर्वी दीवारमें सूरजपोल नामी दर्वाज़ह है. इस रास्तहपर ३ दर्वाज़ोंके निशान हैं, लेकिन् दो साबित हैं. दर्वाज़हके भीतर नीलकण्ठ महादेवका प्राचीन मन्दिर और उससे उत्तर एक पुराना कीर्त्ति स्तम्भ है, जो विक्रमी १० वीं सदीमें जैनियोंने बनवाया था. क़िलेके दक्षिणकी खिड़की बंद है, और उत्तर तरफ़ वाली लाखोटा नामकी खिड़की खुली है. पश्चिम तरफ़ पहाड़से मिला हुआ क़स्बह आबाद है, जिसको तलहटी बोलते हैं. इस क़स्बेमें क़िलेके पाडलपोल दर्वाज़हके बाहिर महाराणा उदयसिंहकी महाराणी झालीकी बनवाई हुई एक बावड़ी है, जिसको झालीबाव कहते हैं. सिवा इसके दो कुण्ड पुराने और हैं, जो ज़मीनमें दबगये थे, लेकिन् महता शेरसिंहके पुत्र सवाईसिंहने उन्हें दुरुस्त करवाया. मालूम नहीं, कि ये कुण्ड शुरूमें किसने

---

(१) यहांपर बादशाह क़ैद कियागया था.

और कब बनवाये थे. क़स्बहमें एक पाठशालाका और दूसरा अस्पतालका, ये दोनों मकान नये बनवाये गये हैं. यह क़स्बह एक छोटी शहरपनाहसे रक्षित है. पश्चिम तरफ़ गंभीरी नदीपर अलाउद्दीन ख़िल्जीके पुत्र ख़िज़रख़ांका बनाया हुआ पुल अबतक मौजूद है. इस नदीमें बारहों महीना पानी बहता है. क़स्बह चित्तौड़के पश्चिम रेलकी सड़क बनी है, जो विक्रमी १९३८ [हि० १२९८ = ई० १८८१] में खोलीगई थी. क़िला चित्तौड़ हिन्दुस्तानमें बहुत पुराना और लड़ाईके लिये अधिक प्रसिद्ध है. इसमें पानीके ८४ निवाण बतलाते हैं, परन्तु १२ तो हमेशह भरे रहते हैं, जिनमें कितनेएक तो ऐसे हैं, कि उनका पेंदा आजतक किसीने नहीं देखा.

क़िलेसे उत्तर ३ कोसके फ़ासिलहपर नगरी नामी गांव है, जहां पहिले बहुत पुराना शहर था. ऐसा सुनागया है, कि मोरी गोतके राजाओंने इस शहरको छोड़कर चित्तौड़का क़िला बनवाया था; यहां पुराने मकानोंके कई निशानात और प्राचीन सिक्के भी मिलते हैं. इसके पश्चिम तरफ़ बेड़च नदी और तीन तरफ़ गिरे हुए शहरपनाहका चिन्ह है, जिसके भीतर बड़े बड़े पत्थरोंसे बनाहुआ चार दीवारोंके भीतर एक स्थान है, जिसको वहां वाले हाथियोंका बाड़ा कहते हैं, लेकिन् यह बुद्ध लोगोंका स्तूप मालूम होता है. इसी तरह एक मनार भी है, जिसको लोग ऊभदीवट बोलते हैं, और कहते हैं, कि अक्बर बादशाहने अपनी फ़ौजमें प्रकाश रखनेके लिये यह मनार बनवाया था, परन्तु यह बात सत्य नहीं है, क्योंकि यह मनार बहुत पुराना बुद्ध लोगोंका बनवाया हुआ मालूम होता है. हमने इस शहर, स्तूप, और मनार (कीर्ति स्तम्भ) वग़ैरहका हाल एशियाटिक सोसाइटी बंगालके ईसवी सन् १८८७ के जर्नल में विस्तार सहित लिखा है. इसमें दो प्रशस्तियां विक्रमादित्यके संवत्से अनुमान २०० वर्ष पहिलेकी मिलीं, जिनमें एक छोटा टुकड़ा तो नगरीमें और दूसरी बड़ी प्रशस्ती वहांसे डेढ़ कोसके फ़ासिलहपर घोसूंडी ग्रामकी बावड़ीमें मिली है. इससे मालूम होता है, कि यह शहर बहुत पुराने ज़मानहसे आबाद था.

मेवाड़में तीन ज़िले याने ५-रासमी, ६-सहाड़ां और ७-भीलवाड़ा चौड़ेके हैं, और इनमें जुग़्राफ़ियहमें लिखनेके लाइक़ कोई बड़े या प्राचीन स्थान भी नहीं हैं. केवल रासमी ज़िलेमें मातृकुंडियां नामी तीर्थ स्थान बनास नदीपर है और वहां एक महादेवका मन्दिर है, जहां वैशाखी पूर्णिमाको मेला भरता है. इसके सिवा करेड़ा गांवमें एक बहुत बड़ा और पुराना जैन मन्दिर है.

८-ज़िला मांडलगढ़-यहांका क़िला अजमेरके चहुवानोंके समयका बनाहुआ बहुत

पुराना है. इसके बाबत क़िस्से कहानी तो कई तरहसे मश्हूर हैं, जैसे कितनेक लोगोंका बयान है, कि मांडिया नामी एक भीलको बकरियां चराते वक्त पारस (१) मिला था, उसपर उसने अपना तीर घिसा और वह तीर सुवर्णका होगया. यह देखकर वह उस पारसको चांनणा नामी गूजरके पास लेगया, जो अपनी मवेशी चरारहा था, जाकर कहा, कि इस पत्थरपर घिसनेसे मेरा तीर ख़राब होगया. गूजर समझदार था, उसने भीलसे वह पत्थर लेलिया, और यह क़िला बनवाकर उसी भील (मांडिया) के नामपर इसका नाम मांडलगढ़ रक्खा, और बहुत कुछ फ़य्याज़ी (उदारता) करके अपना नाम मश्हूर किया. उसने वहांपर सागर और सागरी नामके दो पानीके निवाण बनवाये, जिनमेंसे सागरकी सीढ़ियोंपर उस (चांनणा गूजर) की देवली मौजूद है. अगर्चि सागर पेश्तरसे ही गहरा था, लेकिन् सुना है, कि महता अगरचन्दने दो कुए उसमें खुदवाकर उसे अटूट करदिया. अब इसका पानी कभी नहीं टूटता. सागरीका पानी अकालमें टूटजाता है. ये दोनों निवाण पहाड़के एकही दरेके बीचमें बंध डालकर बनवाये गये हैं. क़िलेके अग्निकोण और उत्तरमें जालेसर और देवसागर नामक तालाब है, और पूर्वको तलहटीका क़स्बह. क़िलेका पहाड़ पूर्वकी तरफ़ ऊंचा और पश्चिमको नीचा झुकगया है. इस क़िलेमें एक रास्तह और दो खिड़कियां हैं. उत्तर तरफ़ नकटियाका चौड़ (चढ़ाव) (२) बीजासणका पहाड़ है. लड़ाईके वक्त इन पहाड़ोंपर भी मोर्चा बन्दी कीजाती है. इस क़िलेपर मालवी बादशाह महमूद ख़िल्जीने दो तीन बार हमलह किया, और दिल्लीके मुग़ल अक्बर बादशाहने विक्रमी १६२४ [हि० ९७५ = ई० १५६७] में इस क़िलेपर क़बज़ह करलिया था. यह क़िला ज़िले खैराड़की पनाहका मक़ाम समझा जाता है. मांडलगढ़से पूर्व और दक्षिण तथा ईशान कोणके ज़िलोंमें पुराने खण्डहर और कई जगह पुरानी प्रशस्तियां मिली हैं. मैनाल, भैंसरोड़ और बीजोलिया वग़ैरह ज़िलोंमें कई पुराने खण्डहर मौजूद हैं.

९- ज़िला जहाज़पुर- इस ज़िलेका मुख्यस्थान जहाज़पुर एक पहाड़के दामनमें शहरपनाहके भीतर आबाद है. यह बहुत पुराने समयमें बसाया गया था. राजा जन्मेजयने इस जगहपर सर्पोंको होमनेके लिये यज्ञ किया था, और इसी सबबसे इसका नाम यज्ञपुर रक्खागया, जहाज़पुर इसका अपभ्रंश है. क़स्बहसे अग्निकोणकी तरफ़

---

(१) पारस एक क़िस्मका ख़याली पत्थर है, जिसके छूनेसे लोग लोहेको सुवर्ण होजाना मानते हैं.

(२) यह पहाड़ मांडलगढ़से आध मीलके क़रीब है और इसकी घाटीके चढ़ावपर किसी शत्रु की नाक काटी गई थी, इस कारण यह नकटियाका चौड़ कहागया.

क़रीब १ $\frac{1}{2}$ मीलके अन्तरपर नागेला तालाब है, जिसके बन्धपर नाग होमे गये थे, और उसी तालावसे एक छोटी नदी निकली है, जिसका नाम नागदही है. जहाज़पुरका क़स्बह इसी नदीके किनारेपर बसा है. हाकिमके रहनेकी जगहमें नौचौकियां नामक एक मकान बड़ा बुलन्द और .उम्दह बना है (१), जिसको वैकुण्ठवासी महाराणा साहिबने जीर्णोद्धार करवाकर बहुत उ़म्दह बनवादिया है. नौचौकियांके पीछे नागदहीके किनारेपर एक बहुत अच्छा बग़ीचा बना है; और इसी नदीके पूर्वी किनारेपर १२ देवरा याने बारह मन्दिर एक स्थानमें बने हैं. इन मन्दिरोंकी निस्बत कहा जाता है, कि ये बहुत पुराने हैं; इनकी बाबत् यह भी बयान है, कि राजा जन्मेजयने यहांपर सोमनाथ महादेवकी मूर्त्तिकी प्रतिष्ठा अपने हाथसे की थी, जो अबतक मौजूद है. अगर्चि हमको यहां कोई प्रशस्ति नहीं मिली, लेकिन् मन्दिरोंका ढंग देखनेसे वे बहुत पुराने मालूम होते हैं. बस्तीके दक्षिण शहरपनाहसे मिला हुआ पहाड़की चोटीपर एक छोटा क़िला है, जिसमें क़िलेदार रहता है. क़िलेमें पानीके दो हौज़ हैं, जिनमें बारहों महीना पानी रहता है. शहरमें एक अस्पताल और एक स्कूल (पाठशाला) भी है. जहाज़पुरके उत्तर, पूर्व, और दक्षिणकी तरफ़ अधिकतर मीना लोगोंकी आबादी है, जिनका सविस्तर हाल हमने बंगाल एशियाटिक सोसाइटीके जर्नल सन् १८८६ .ई० में लिखा है. जहाज़पुर पर्गनहके दो विभाग हैं, जिनमें पहिला भाग बनास नदीके पश्चिम तरफ़ किसान लोगोंकी आबादीका है, और वहांकी ज़मीन बिल्कुल हमवार अर्थात् बराबर है, पहाड़का कहीं निशानतक नहीं दिखाई देता; और दूसरा विभाग बनास नदीके पूर्व तरफ़ वाला है, जिसमें लोहारी, गाडोली, टीकड़, इटोंदा, शुकरगढ़, और सरसिया वग़ैरह मीनोंकी आबादीके बड़े बड़े गांव हैं. इनमें सर्कारी आदमियोंके रहनेके लिये छोटी छोटी गढ़ियां बनाई गई हैं. यह ज़िला जयपुर और बूंदीकी अमल्दारीसे लेकर कोटा, झालावाड़, सेंधिया, और हुल्करकी अमल्दारीतक खैराड़के नामसे प्रसिद्ध है; परन्तु इसके अंतरगत छोटे छोटे कई ज़िले हैं, याने ऊपरमाल, आंतरी, पठार, कुंड़ाल और पचेल वग़ैरह. खैराड़के उत्तरी हिस्सहमें ज़ियादहतर मीनोंकी आबादी, और दक्षिणी हिस्सहमें मीनोंके शामिल दूसरी क़ौमोंके लोग भी बहुत बसते हैं. खैराड़की ज़मीनमें यह तासीर है, कि इस प्रान्तमें रहनेवाले ब्राह्मण, बनिये और किसानतक भी बहादुर होते हैं, लेकिन् निर्दयी और ज़ुल्मसे भरे हुए इत्यादि. इस ज़िलेमें कई जगह राजा सोमेश्वरदेव और उसके बेटे पृथ्वीराज चहुवानके समयकी प्रशस्तियां मिली

(१) प्रसिद्ध है, कि यह मकान अ़लाउद्दीन ख़ल्जीने बनवाया था.

हैं. हमको इस ज़िलेकी तह्क़ीक़ातमें महता लक्ष्मीलालने अच्छी मदद दी, जो तह्क़ीक़ातके समय वहांका हाकिम था.

१० - ज़िला कुम्भलगढ़ - इस ज़िलेमें विशेषकर पहाड़ी भाग है; कितनीएक जगह तो इसमें चौगानका नाम निशानतक भी नहीं मिलता. किसान लोग एक एक या दो दो बिस्वेका खेत पहाड़को काट काट कर बड़ी मुश्किलके साथ निकालते हैं, दो चार बीघेका खेत तो बहुतही कम नज़र आता है; लेकिन् मक्का, गेहूं, जव, चना, शाल, माल और शमलाई वग़ैरह नाज बहुतायतके साथ निपजते हैं. गन्नेकी खेती यहां बहुत होती है. इस ज़िलेमें गाड़ीका नाम निशान भी नहीं, क्योंकि गाड़ी वहां चलही नहीं सक्ती, केवल बैल और गधोंसे माल अस्बाब पहुंचाने व लानेका काम लियाजाता है, लेकिन् एक रीति यहां ऐसी है, कि हर एक गांवमें भील लोगों (जिनको बेठिया कहते हैं) के दो चारसे लेकर पचास साठतक घर ज़रूर होते हैं, और प्रत्येक गांवमें उनके बेठ (बेगार) के एवज़ थोड़ीसी ज़मीन मुआफ़ीकी भी होती है. गांवके किसान व जागीरदार और ख़ालिसहका हरएक अह्लकार इन बेठियोंके घरोंमें जितने मर्द व औरत हों उनके सिरपर गठड़ियां देकर यदि सौ कोसतक लेजावे, तोभी वे इन्कार नहीं करते, परन्तु उनको रोटी खिलादीजावे, या रोज़ानह आध सेरके हिसाबसे जव अथवा मक्की भत्तेके तौरपर देदीजावे. गांवमें रहनेकी हालतमें भी उनसे खेतीका, इमारतका, मवेशी चरानेका, अथवा घास कटवानेका काम लियाजाता है. इस बातमें ये लोग अपने मालिक तथा अफ्सरकी कभी शिकायत नहीं करते, बल्कि ऐसी ख़िद्मतोंका करना अपना फ़र्ज़ समझते हैं. इस ज़िलेकी रिआया सद्रमें अथवा हाकिम ज़िलेके पास फ़र्याद करनेमें डरती है. ज़मानहके फेरफारसे अब कुछ कुछ सिलसिला जारी होने लगा है. इनकी बोलचालके शब्दोंमें भी मेवाड़ी ज़बानसे किसी प्रकार अन्तर है, याने इस प्रान्तके लोग बैलको टाला, भैंसको डोबा, बकरीको टेटूं या टेटा, चलनेको हींडना, बुलानेको सादना या हादना वग़ैरह बोलते हैं. क़िला कुम्भलगढ़, जिसको कुम्भलमेर भी कहते हैं, चित्तौड़गढ़से दूसरे दरजहपर है. इसकी चोटी समुद्रके सतहसे ३५६८ फ़ीट और नीचेकी नालसे ७०० फ़ीट ऊंची है. कैलवाड़ा गांवमें हाकिम ज़िलाका सद्र मक़ाम है, जहां जैनके पुराने मन्दिर और बाणमाताका एक प्रसिद्ध मन्दिर है. यहांसे एक रास्तह पश्चिमकी तरफ़ पहाड़ी नालमें होकर एक पर्वती घाटीके फाटकपर पहुंचता है, जो क़िलेका आरेटपौल नामी पहिला दर्वाज़ह है. यहां राज्यकी तरफ़से बन्दोबस्तके लिये सिपाही व जागीरदार लोग रहते हैं, जहांसे क़रीब एक मीलके फ़ासिलहपर हल्लापौल नामी दर्वाज़ह आता है. फिर थोड़ी दूर आगे चलकर हनुमानपौल दर्वाज़ह है. इस दर्वाज़हपर हनुमानकी एक मूर्त्ति है, जिसको महाराणा कुम्भकर्ण नागौरके मुसल्मानोंको फ़त्ह करके लाये थे. वहांसे आगे

विजयपोल दर्वाज़ह है, जिसके समीप क़िलेकी मज्बूत और ऊंची दीवार नये ढंगके बुर्जों सहित खड़ी है. इस दीवारके भीतर शहरके खण्डहर, टूटे फूटे मन्दिर और मकानात नज़र आते हैं. नीलकण्ठ महादेवका मन्दिर और वेदीका मंडप, ये दोनों पुराने ढंगके हैं. कहते हैं, कि क़िलेकी प्रतिष्ठाके समय इस मण्डपमें विधिपूर्वक होम किया गया था. इसी जगहसे कटारगढ़ नामी छोटेसे क़िलेका चढ़ाव शुरू होता है, जो बड़े क़िलेके अन्दर एक पहाड़की चोटीपर बना है. इसका पाहिला दर्वाज़ह भैरवपोल, दूसरा नींबूपोल, तीसरा चौगानपोल, चौथा पागड़ापोल, पांचवां गणेशपोल और उसके आगे महाराणा साहिबके गुम्बज़दार महल हैं. यहां देवीका एक स्थान भी है. उक्त स्थानसे कुछ सीढ़ियां चढ़कर पहाड़की चोटीपर महाराणा उदयसिंहकी महाराणी झालीका महालिया याने महल हैं, जिसका वृत्तान्त महाराणा उदयसिंहके हालमें लिखाजायेगा. इस भीतरी क़िले कटारगढ़के उत्तर झालीवाव (बावड़ी) और मामा देवका कुण्ड है. इस कुण्डपर एक होज़नुमा चारदीवारके अन्दर महाराणा कुम्भकर्णकी स्थापन कीहुई कई देवताओंकी मूर्त्तियां हैं, और चारों तरफ़की ताकोंमें श्याम वर्णके पाषाणपर खुदी हुई प्रशस्तियां हैं, जिनमेंसे कुछ तो नष्ट होगईं, और कुछ बाक़ी हैं. इनमेंसे एक पाषाण उदयपुरमें विक्टोरिया हॉलके बरामदेमें हमने रक्खा है. क़िलेके पश्चिम तरफ़का रास्तह टीडाबारी है, जिससे कुछ दूरीपर महाराणा रायमल्लके पुत्र कुंवर पृथ्वीराजकी छत्री है, जहां उनका देहान्त हुआ था, और क़िलेके भीतर मामादेवके समीप भी, जहां इनका दग्ध हुआ था, एक छत्री बनी हुई है. क़िलेके उत्तरकी तरफ़ पैदलोंका रास्तह टूंट्याका होड़ा, और पूर्व तरफ़ हाथियागुढ़ाकी नालमें उतरनेका एक रास्तह है, जो दाणीवटा कहलाता है. इस क़िलेमें पहिले शहर आबाद था, जो बिल्कुल वीरान होगया है, और अब केवल खंडहर पड़े हैं. यह क़िला विक्रमी १५०५ से १५१५ [हि० ८५२ से ८६२ = ई० १४४८ से १४५८] तक बना था. इसका सविस्तर हाल महाराणा कुम्भकर्णके वृत्तान्तमें लिखाजायेगा. कैलवाड़ाके उत्तर मारवाड़में जानेका रास्तह हाथियागुढ़ाकी नाल है. उसमें कोठारबड़के समीप एक दर्वाज़ह है, जहां बन्दोबस्तके लिये कुछ चौकीदार और सिपाही रहते हैं. कैलवाड़ासे अनुमान ५ कोसपर चारभुजाके समीप मारवाड़में जानेका एक बड़ा रास्तह देसूरीकी नाल है. इस रास्तहसे गाड़ी भी आ जा सक्ती है. यह पहाड़की श्रेणी अजमेरकी तरफ़ चलीगई है, जिसके पश्चिममें मारवाड़ और पूर्वमें मेवाड़ है. पहिले इस श्रेणीके पश्चिममें पर्गनह गोड़वाड़ ज़मानह क़दीमसे मेवाड़के शामिल था, लेकिन् १०० वर्षसे पहिले मारवाड़में चलागया है. इसी श्रेणीमें मेवाड़का पश्चिमोत्तर विभाग, याने मेरवाड़ा नामी ज़िला गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीको इन्तिज़ामके वास्ते कुछ समयके

लिये सौंपा हुआ है, जिसका सद्रमक़ाम छावनी ब्यावर अर्थात् नयाशहर है. हमने जो ज़िले ऊपर लिखे वे वैकुंठवासी महाराणा साहिबके नियत किये हुए हैं. इस समय सेटलमेण्ट याने मालगुज़ारीका पक्का बन्दोबस्त होनेसे नज़्दीक व दूर होनेके कारण उन्हीं पर्गनोंमेंसे चुन चुन कर चन्द जुदे पर्गने क़ाइम करदिये गये हैं, जैसे कपासन, हुरड़ा, राजनगर, खमणोर, रींछेड़, सायरा वगैरह, और ल्हसाड़ियाका पाहाड़ी ज़िला मगरेसे जुदा करके गिरवेमें, और कणेराका ज़िला सादड़ीसे अलग करके चित्तौड़में मिलादिया गया है. इसी तरहसे कई गांव एक पर्गनेसे दूसरे पर्गनेमें मिलाकर दुरुस्ती करदीगई है. इनके सिवा कुम्भलगढ़, भीतरी गिरवा, ल्हसाड़िया और मगरा ज़िलोंमें मालगुज़ारीका पक्का बन्दोबस्त अभीतक नहीं हुआ है.
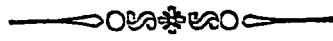
(क़ौमी हालात).

अब हम मेवाड़में बसनेवाली क़ौमोंका मुख़्तसर हाल लिखते हैं. पहिले मैं अपनी क़ौमका हाल लिखूंगा, क्योंकि ग्रन्थके प्रारम्भमें ग्रन्थकर्त्ताके इतिहासकी ज़रूरत होती है.

मैं (कविराजा श्यामलदास) चारण जातिमें पैदा हुआ हूं, पाठक लोग जानेंगे, कि चारण कौन, कैसे और कहां हैं, तो जानना चाहिये, कि यह जाति सृष्टि सर्जन काल से पाई जाती है, क्योंकि हमारे भारतवर्षका पहिला मुख्य शास्त्र वेद मानागया है, उसमें भी चारण जातिका नाम मिलता है, और चारणोंकी देवताओंमें गणना है, जिसके बहुतसे प्रमाण ग्रन्थान्तरोंके मिलते हैं, जिनमेंसे कुछ प्रमाण यहांपर लिखेजाते हैं:—

प्रथम तो श्री मद्भागवतमें विदुरने मैत्रेय ऋषिसे पूछा है, कि लोक पितामह ब्रह्माने कितने प्रकारकी सृष्टि रची, इसपर मैत्रेयने जो उत्तर दिया वह नीचे लिखा जाता है:—

श्लोक.

देवसर्गश्चाष्टविधो विबुधाः पितरोऽसुराः।
गन्धर्वाप्सरसः सिद्धा यक्षरक्षांसि चारणाः॥
भूतप्रेतपिशाचाश्च विद्याध्राः किन्नरादयः। (१)

(अर्थ).

देवताओंकी उत्पत्ति आठ तरहकी इस प्रकार है, कि प्रथम देवता; दूसरे पितृ; तीसरे दैत्य; चौथे गन्धर्व और अप्सर; पांचवें यक्ष और राक्षस; छठे भूत, प्रेत,

---

(१) देखो तृतीय स्कन्द, १० वां अध्याय, २७-२८ वां श्लोक.

और पिशाच; सातवें सिद्ध, चारण तथा विद्याधर; और आठवें किन्नरादि. यह देवसर्ग का उपरोक्त क्रम श्रीधरी टीकाके अनुसार है.

ऊपर लिखे हुए प्रमाणसे चारणोंकी उत्पत्ति देवसर्गमें हुई, तो इनका व्यवहार भी आज दिनतक देवता व ऋषियोंके बराबर उत्तम बना रहा. इस विषयमें पहिले आदि काव्य वाल्मीकि रामायणके कुछ प्रमाण दियेजाते हैं:-

जब रामचन्द्रका अवतार हुआ, तब ब्रह्माने देवता, ऋषि, सिद्ध और चारण आदिकोंको आज्ञा दी, कि हमारे कल्याणके लिये विष्णुने राजा दशरथके यहां अवतार लिया है, इसवास्ते तुम सब उनकी सहायताके वास्ते वानरोंकी योनिमें उत्पन्न हो. इस आज्ञासे देवता, ऋषि आदिके साथ चारणोंने भी वानर योनिमें अपने अंशसे पुत्र पैदा किये, जिसका प्रमाण यह है:-

श्लोक.

ऋषयश्च महात्मानः सिद्धविद्याधरोरगाः ।
चारणाश्च सुतान् वीरान् ससृजुर्वनचारिणः ॥ (१)

(अर्थ).

ऋषि, महात्मा, सिद्ध, विद्याधर, उरग और चारणोंने वानरोंकी योनिमें अपने अपने अंशसे वीर पुत्रोंको पैदा किया.

गौतम ऋषिकी स्त्री अहल्यासे जब इन्द्रने मुनिका वेष करके दुराचार किया, और गौतमने इस बातको जाना, तब इन्द्रको अफल अर्थात् पुरुषार्थ रहित होनेका और अहल्याको पाषाण होनेका शाप दिया, और आपने उस आश्रमको छोड़कर, जहांपर सिद्ध चारण रहते थे, उस हिमालयके सुन्दर शिखरपर तप किया, जिसका प्रमाण इस प्रकार है:-

श्लोक.

एवमुक्त्वा महातेजागौतमोदुष्टचारिणीम् ।
इममाश्रममुत्सृज्य सिद्धचारणसेविते ॥
हिमवच्छिखरे रम्ये तपस्तेपे महातपाः । (२)

(अर्थ).

तेजस्वी गौतम अपनी दुष्ट आचरण वाली स्त्रीको शाप देकर इस आश्रमको छोड़ सिद्ध और चारणोंसे सेवा किये गये हिमालयके सुन्दर शिखरपर तप करने लगे.

---

(१) देखो बालकाण्ड सर्ग, १७, श्लोक ९.

(२) देखो बालकाण्ड सर्ग, ४८, श्लोक ३३.

रामचंद्रने धनुष तोड़ा उस विषयके प्रकरणमें एक यह प्राचीन कथा लिखी है, कि जब शिव और विष्णुके मध्यमें युद्ध हुआ, तो वहांपर विष्णुने हुंकार मात्रसे शिवको स्तंभित करदिया था, उस समय देवता, ऋषिसमूह, और चारणोंने उनको समझाया, इस विषयका प्रमाण नीचे लिखाजाता है:-

श्लोक.

हुंकारेण महादेवस्तम्भितोथ त्रिलोचन : ।
देवैस्तदा समागम्य सर्षिसंघैः सचारणैः ॥ (१)

(अर्थ).

हुंकारसे तीन नेत्रवाले महादेवको जड़ करदिया, उस समय ऋषि और चारणोंके साथ देवताओंने आकर शान्ति की.

जब रावण सीताको हरकर पीछा लङ्काको गया, तब सीताके हरेजानेपर समुद्र स्तम्भित होगया, और चारण तथा सिद्ध कहने लगे, कि अब रावणका विनाश आया, जिसका प्रमाण नीचे लिखाजाता है:-

श्लोक.

वैदेह्यां ह्रियमाणायां बभूव वरुणालय : ।
अन्तरिक्षगतावाचः ससृजुश्चारणास्तथा ॥
एतदन्तो दशग्रीव इति सिद्धास्तदाब्रुवन् । (२)

(अर्थ).

सीताके हरेजानेपर समुद्र स्तम्भित होगया, तब अन्तरिक्षमें प्राप्त चारणोंने यह वाक्य कहे, कि रावणका मृत्यु आपहुंचा, और इसी तरह सिद्धोंने भी कहा.

लङ्काको जला देनेके पीछे हनुमानके चित्तमें इस बातका बड़ा पश्चात्ताप हुआ, कि इस अग्निसे यदि सीताका दाह होगया होगा, तो उसके शोकसे राम लक्ष्मण आदि सब प्राण त्यागदेंगे, और उनके शोकसे सुग्रीव और अङ्गदादिक भी मरजायेंगे, तो इस दोषका मुख्य कर्त्ता मैं हुआ; इसलिये इनसे पहिले मुझेही अपना शरीर त्यागदेना योग्य है. इस प्रकार विचार करते हुए हनुमानने चारण ऋषियोंके मुखसे सुना, कि लङ्का जलगई, परन्तु सीताका दाह नहीं हुआ. इसका प्रमाण नीचे लिखाजाता है:-

श्लोक.

सतथा चिन्तयंस्तत्र देव्याधर्मपरिग्रहम् ।

---

(१) देखो बालकाण्ड, सर्ग ७५, श्लोक १८.
(२) देखो अरण्यकाण्ड, सर्ग ५४, श्लोक १०-११.

शुश्राव हनुमांस्तत्र चारणानां महात्मनाम् ॥ (१)

(अर्थ).

सीताके विषयमें चिन्ता करते हुए हनुमानने चारण महात्माओंके वचनोंको श्रवण किया.

फिर जब हनुमान लङ्काको जाकर पीछा आया, तब अङ्गदादिक वानरोंने पूछा, कि तुम किस प्रकार लङ्कामें गये ? उस समय हनुमानने अपना सब वृत्तान्त कहा, उसमें यह भी कथा कही, कि मैंने लङ्काको जलानेके पीछे समुद्रके किनारेपर आकर सोचा, कि सब लङ्का जलाई गई, तो सीता भी उसमें अवश्य जलगई होगी, अतः मुझको भी मरजाना योग्य है; उस समय चारणोंसे सुना, कि जानकी नहीं जली, उसके प्रमाणमें यह श्लोक है:-

श्लोक.

इति शोकसमाविष्ट श्चिन्तामहमुपागतः।
ततोहं वाचमश्रौषं चारणानां शुभाक्षराम् ॥
जानकी न च दग्धेति विस्मयोदन्तभाषिणाम्।
ततो मे बुद्धिरुत्पन्ना श्रुत्वा तामद्भुतां गिरम् ॥ (२)

(अर्थ).

जब मैं इस प्रकारके शोकमें डूबा, तो आश्चर्यके वृत्तान्त कहने वाले चारणोंसे ये सुन्दर वचन सुने, कि सीता नहीं जली. फिर इस अद्भुत वाणीको सुनकर मुझमें भी बुद्धि पैदा होगई.

जब रावण वरदानसे मानी होकर चन्द्रलोकको विजय करनेके लिये गया, तब मार्गमें चारणोंका लोक भी आया, जिसका प्रमाण नीचे लिखाजाता है:-

श्लोक.

अथ गत्वा तृतीयन्तु वायोः पंथानमुत्तमम्।
नित्यं यत्र स्थिताः सिद्धाश्चारणाश्च मनस्विनः॥ (३)

(अर्थ).

इसके पश्चात् तीसरे उत्तम वायुके मार्गको गया, जहां सिद्ध और मनस्वी याने शुद्ध मनवाले चारण सदैव निवास करते हैं.

---

(१) देखो सुन्दरकाण्ड, सर्ग ५५, श्लोक २९.
(२) देखो सुन्दरकाण्ड, सर्ग ५८, श्लोक ६१-६२.
(३) देखो उत्तरकाण्ड, सर्ग ४, श्लोक ४.

ऊपर लिखे हुए प्रमाणोंके अतिरिक्त और भी बहुतसे प्रमाण हैं, जो विस्तारके भयसे नहीं लिखेजाते.

अब हम यहांपर महाभारतके प्रमाण भी संक्षेप रूपसे लिखते हैं.

वसिष्ठ ऋषिने जहां राजा जनकको सृष्टिका क्रम बताया है, वहां २४ तत्व सब आकृतियोंमें कहे हैं, उनमेंसे दो श्लोक यहांपर प्रमाणके लिये लिखेजाते हैं, जिनसे यह प्रयोजन है, कि चारण सृष्टिके आदिसेही हैं न कि पीछेसे.

श्लोक.

एतद्देहं समाख्यातन्त्रैलोक्ये सर्वदेहिषु।
वेदितव्यं नरश्रेष्ठ सदेवनरदानवे ॥
सयक्षभूतगन्धर्वे सकिन्नरमहोरगे।
सचारणपिशाचे वै सदेवर्षिनिशाचरे ॥ (१)

(अर्थ).

हे उत्तम नर, उक्त देह समाख्यानको, देवता, मनुष्य, दानव, यक्ष, भूत, गन्धर्व, किन्नर, महोरग, चारण, पिशाच तथा देवर्षि और राक्षसोंके साथ त्रैलोक्यके सब प्राणियोंमें जानना चाहिये.

जिस समय राजा पांडु तपश्चर्या करनेके लिये इन्द्रद्युम्न सर और हंसकूटको छोड़कर शतशृङ्ग नामक पर्वतपर गया, और वहांपर चारणोंका प्रीतिपात्र बना, उसका प्रमाण नीचे लिखाजाता है:-

श्लोक.

तत्रापि तपसि श्रेष्ठे वर्तमानः सवीर्यवान्।
सिद्धचारणसंघानां बभूव प्रियदर्शनः ॥ (२)

(अर्थ).

उत्तम तपमें प्रवृत्त होता हुआ वह पराक्रमी राजा पांडु शतशृङ्ग पर्वतपर भी सिद्ध और चारण लोगोंके समूहका प्रीतिपात्र (प्यारा) बना.

वहां तपश्चर्या करनेपर जब पाण्डुका देहान्त हुआ, तब येही चारण ऋषि पाण्डुके पांचों पुत्रों और उनकी माता कुन्तीको साथ लेकर हस्तिनापुरमें आये, उस समय द्वारपालोंने उनका आना राजासे निवेदन किया, जिसका प्रमाण इस प्रकार है:-

---

(१) देखो शान्तिपर्व मोक्षधर्म पर्वका अध्याय ३०३, श्लोक २९-३०.

(२) देखो आदि पर्वका अध्याय १२०, श्लोक ९.

श्लोक.

तच्चारणसहस्राणां मुनीनामागमं तदा ।
श्रुत्वा नागपुरे नृणां विस्मयः समपद्यत ॥ (१)

(अर्थ).

इस प्रकार उन हज़ार चारण मुनियोंका आना सुनकर हस्तिनापुरके मनुष्योंको आश्चर्य हुआ.

जहांपर अगस्त्य ऋषिने राजा युधिष्ठिरके सामने कुरुक्षेत्र और सरस्वती नदीकी प्रशंसा की है, उस प्रकरणके एक श्लोकमें इस प्रकार कहा है:-

श्लोक.

तत्र मासं वसेद्धीरः सरस्वत्यां युधिष्ठिर ।
यत्र ब्रह्मादयो देवा ऋषयः सिद्धचारणाः ॥ (२)

(अर्थ).

हे युधिष्ठिर, जहां ब्रह्मादिक देवता, ऋषि, सिद्ध, और चारण रहते हैं उस सरस्वतीके समीप धीर पुरुष मास पर्यन्त निवास करे.

जब राजा ययाति स्वर्गमें गया, तो वहांपर उसका बड़ा सत्कार कियागया, उस विषयके दो श्लोक नीचे लिखेजाते हैं:-

श्लोक.

उपगीतोपनृत्तश्च गंधर्वाप्सरसां गणैः ।
प्रीत्या प्रतिगृहीतश्च स्वर्गे दुन्दुभिनिःस्वनैः ॥

(अर्थ).

गन्धर्व लोग गाते हुए, अप्सराएं नाचकर प्रसन्न करती हुईं, और दुन्दुभि (नौबत नफ़ीरी) बजते हुए, इस तरह प्रीति पूर्वक आदरके साथ वह ययाति राजा स्वर्गमें लियागया.

श्लोक.

अभिष्टुतश्च विविधैर्देवराजर्षिचारणैः ।
अर्चितश्चोत्तमार्घेण दैवतैरभिनंदितः ॥ (३)

---

(१) आदिपर्व, अध्याय १२६, श्लोक १११.

(२) देखो वनपर्व, अध्याय ८२, अंक ५ का श्लोक.

(३) देखो उद्योगपर्व, अध्याय १२३, श्लोक अंक ४ से ५ तक.

(अर्थ).

देवता, राजर्षि और चारणोंने ययाति राजाकी अनेक प्रकारसे स्तुति की, और उत्तम अर्थसे पूजा, और वह देवताओंसे प्रसन्न कियागया. इस प्रमाणके अनुसार स्तुति करना चारणोंका मुख्य धर्म है, और चारण शब्दकी व्युत्पत्ति भी "चारयन्ति कीर्ति मितिचारणाः" इस प्रकार है.

दोनों तरफ़की सेनाओं और अर्जुनको युद्धके लिये तय्यार देखकर श्रीकृष्णने अर्जुनसे कहा कि "हे अर्जुन, तू देवीकी स्तुति कर, वह तेरे को विजय प्राप्त करा-वेगी ". तब अर्जुनने स्तुति की है, वहांका एक श्लोक इस प्रकार है:-

श्लोक.

तुष्टिः पुष्टिर्धृतिर्दीप्तिश्चंद्रादित्यविवर्द्धिनी ।
भूतिर्भूतिमतां संख्ये वीक्ष्यसे सिद्धचारणैः ॥ (१)

(अर्थ).

हे देवी, तू तुष्टि, पुष्टि, धृति, दीप्ति, चन्द्र और सूर्यको वृद्धि करने वाली, और ऐश्वर्य वालोंकी ऐश्वर्य ऐसी, संग्राममें सिद्ध और चारणोंको दिखाई देती है.

जयद्रथके मारनेके लिये द्रोणाचार्यने जो व्यूह रचा उसकी प्रशंसा देवता और चारणोंने की, जिसका वृत्तान्त संजयने धृतराष्ट्रके आगे कहा है, उसमेंसे एक श्लोक यहांपर लिखाजाता है:-

श्लोक.

तत्र देवास्तदापश्यन् चारणाश्च समागताः ।
एतदन्ताः समूहा वै भविष्यन्ति महीतले ॥ (२)

(अर्थ).

उस समयपर आये हुए देवता और चारणोंने कहा, कि पृथ्वीपर अन्तिम समूह यही होगा, अर्थात् फिर ऐसी व्यूह रचना कभी न होगी.

---

(१) देखो भीष्मपर्व, अध्याय २०, श्लोक अंक १६.
(२) देखो द्रोणपर्व, अध्याय १२९, श्लोक अंक १०.

जब श्री मद्भागवत, रामायण और महाभारतके प्रमाणोंसे यह निश्चय हुआ, कि चारणोंका कर्म तथा व्यवहार आदिसे उत्तम रहा, और राजा पांडुके मृत देहका दाह करना तथा पाण्डवोंका हस्तिनापुरमें लाना और हिमालयमें रहना इत्यादि बातोंसे पृथ्वीपर निवास होना भी प्रमाणित हुआ; और जहां देवताओंका वर्णन है वहां चारणोंका भी वर्णन है, कारण यह कि प्राचीन कालमें स्वर्ग, भूमि और पातालोंका एक सम्बन्ध था, क्योंकि भारतवर्षके दशरथादिक अनेक राजा इन्द्रकी सहायताको गये थे, और इन्द्रादिक देवताओंने भी पृथ्वीपर आकर कई एक भूमिपालोंकी सहायता की थी. मेरे विचारसे ऐसा मालूम होता है, कि प्राचीन कालमें हिमालय पर्वतके मध्यस्थ देश तिब्बतको (१) स्वर्ग, और आर्यावर्तको भूमिलोक, और समुद्रतटस्थ दक्षिणी देशोंको पाताल कहते थे. इसके प्रमाणमें महाभारतके दो श्लोक नीचे लिखते हैं, जहांपर कि भारद्वाजने भृगुसे पूछा है:–

श्लोक.

अस्माल्लोकात् परोलोकः श्रूयते न च दृश्यते ।
तमहं ज्ञातुमिच्छामि तद्भवान् वक्तुमर्हति ॥ (२)

(अर्थ).

हे महाराज, इस लोकसे परलोक सुनाजाता है, परन्तु देखा नहीं जाता; उस परलोकका वृत्तान्त मैं आपसे जानना चाहता हूं, जो आप कहनेके योग्य हैं. तब भृगु महाराजने इस प्रकार उत्तर दिया:–

श्लोक.

उत्तरे हिमवत्पार्श्वे पुण्ये सर्वगुणान्विते ।
पुण्यः क्ष्येम्यश्च काम्यश्च सपरोलोक उच्यते ॥

(अर्थ).

उत्तर दिशामें हिमालयकी पवित्र सब गुणोंवाली भूमिके पास अति पवित्र विघ्नों रहित जो सुन्दर लोक है वही परलोक कहाता है.

मेरे इस लिखनेका हेतु यह है, कि चारण लोग भी स्वर्गसे भूमि लोकमें आते जाते थे; उनमेंसे बहुतसोंका भूमिलोकमें रहकर स्वर्गीय सम्बन्ध छूटगया, तब वे क्षत्रियोंको देवता मानकर जैसे इंद्रादिकोंकी स्तुति करते, वैसे ही क्षत्रियोंकी स्तुति करने लगे और क्षत्रिय भी इनको पूज्य तथा स्वर्गीय देवता मानने लगे; इससे चारणोंका सम्बन्ध

---

(१) अभी होर्नली साहिबको तिब्बतसे ५ वें शतकका भोजपत्रपर लिखाहुआ एक संस्कृत ग्रन्थ मिला है, जिसमें तिब्बतको त्रिविष्टप लिखा है, जो स्वर्गका नाम है.

(२) देखो शान्ति पर्व मोक्षधर्म पर्व, अध्याय १९२, श्लोक ७–८

क्षत्रियोंके साथ दृढ़ हुआ, यहां तक कि राजा लोग न्याय अथवा राजनैतिक विचारोंमें भी चारणोंको शामिल रखने लगे और अद्यावधि राजपूतानहकी रियासतोंमें चारण लोग बड़े बड़े राजकीय कार्योंको कररहे हैं.

जब क्षत्रियोंपर बौद्धोंका दबाव पड़ा और हरएक कौमके लोग राजा बनकर वैदिक क्षत्रियोंको बौद्ध बनाने लगे; तब ये लोग क्षत्रियोंके साथ भागकर राजपूतानह और गुजरात वगैरह पश्चिमी देशोंमें आरहे; इसीसे भारतवर्षके अन्य भागोंमें चारणोंका वंश नहीं रहा. उस समय चारण लोग सौदागरी पेशह इख्तियार करके अपने यजमान क्षत्रियोंको आपत् कालमें अन्नादिक वस्तुओंसे सहायता देते रहे, परन्तु उस देशमें चारणों की सब विद्या नष्ट होगई, और उक्त बौद्ध लोगोंने चारणोंके बनाये हुए प्रत्येक प्राचीन ग्रन्थ भी नष्ट करदिये, तोभी क्षत्रियोंसे एकता बनी रही, और पोएट हिस्टोरियन याने इतिहास वेत्ता और कवि कहलाये. ये लोग प्राकृत भाषा आदिमें अपनी काव्य रचना श्लोकोंके स्थानपर दोहा आदि छन्दोंमें करने लगे, इसीसे इनका दोहे छन्द आदिका पढ़ना मुख्य कार्य प्रसिद्ध हुआ, और राजा लोग भी इनका पूर्ण सत्कार करते आये और करते हैं, जिसके विषयमें हम पिछले समयमें गुज़रे हुए राजाओंका भी कुछ वृत्तान्त लिखते हैं, जिन्होंने अपने पूज्य चारणोंको बड़ी बड़ी इज़्ज़तें, बड़े बड़े पद और करोड़ों रुपयों का द्रव्य और लक्षों रुपयोंकी जागीरें प्रदान कीं, जिनसे पाठकोंको विदित होगा, कि राजा लोग चारणोंको नाम मात्रही से पूज्य नहीं मानते, किन्तु अधिकसे अधिक सत्कार भी करते आये हैं.

इस विषयमें प्रथम हम अजमेरके राजा बछराज गौड़का उदाहरण देते हैं, जिसने एक चारणको अरब पसाव (१) दिया तब उसने राजाकी तारीफ़में उस समय मरु भाषामें यह दोहा कहाः-

दोहा.

देतांअरबपशाव दत बीर गौड़ बछराज ॥
गढ़ अजमेर सुमेरसूं ऊंचो दीशे आज ॥ १ ॥

इस दोहेका अर्थ यह है, कि हे बछराज गौड़, ऐसे अरब पसावके दिये जानेसे यह अजमेरका क़िला सुमेरुसे भी ऊंचा दीखता है.

यदुवंशी राजा ऊनड़, जो सातों ही सिन्धु देशोंका स्वामी था, और जिसका ख़िताब

---

(१) पसाव शब्द प्रसव शब्दका अपभ्रंश है और इसका अर्थ उत्पत्ति है, इससे लाख पसाव शब्दका अर्थ लाख रुपयोंकी उत्पत्ति जिस दानमें हो वह लाख पसाव कहाजाता है, इसी तरह करोड़ पसाव, अरब पसाव आदिका अर्थ जानना चाहिये.

जाम था उसने अपनी कीर्तिके लिये [illegible] के शूद नामक चारणको अपना सातोंही सिन्ध देशोंका राज्य दानमें देदिया, [illegible] दान दियेहुए उस देशको छोड़कर गुजरातमें चलागया, और वहीं अपना [illegible] या, जिस ऊँनड़के वंशमें इस समय जामनगर और भुजके राजा हैं. [illegible] दानकी साक्षीमें उस चारणने यह दोहा कहाः-

दोहा.

माई एहा पूत जण जेहा ऊँनड़ जाम ॥
समपी सातों सिन्धड़ी ज्यों दीजे हिक गाम ॥ १ ॥

इस [illegible] अर्थ यह है, कि हे माता इस प्रकारके पुत्रोंको पैदाकर जैसाकि जाम [illegible] धारण करनेवाला राजा ऊँनड़ है, जिसने सातों ही सिन्ध देशोंको एक गांवकी [illegible] दानमें देदिये.

चित्तौड़के महाराणा सांगा, जो दस कोटी मेवाड़के राजा कहलाते थे, उन्होंने अपना चित्तौड़का राज्य माहियारिया गोत्रके हरिदास नामक एक चारणको दानमें देदिया, [illegible] प्रमाणमें मरु भाषामें गीत जातिके छन्दके दो फ़िक्रे इस प्रकार हैंः-

गीत.

कवराणा कीधा केलपुरा, हिंदवाणा रव बिया हमीर ।

इसका अर्थ यह है, कि हे (दूसरे हमीर जैसे) हिन्दुओंके सूरज केलपुरा [illegible]सोदिया महाराणा सांगा), तूने कवि लोगोंको राणा बनादिया.

इसके सिवा जयपुरके महाराजा मानसिंहने छः चारणोंको छः करोड़का दान दिया. [illegible]कानेरके महाराजा कर्मसी तथा उन्हींके वंशज बीकानेरके महाराजा रायसिंहने रोहड़िया [illegible]त्रके बारहट चारण शंकरको सवा करोड़ पसाव दिया, और सिरोहीके महाराव रताणने आहाड़ा गोत्रके चारण दुरशाको सवा करोड़का दान दिया, और लाख लाख के [illegible]न तो अनेक राजाओंने असंख्य दिये, और अब भी देते हैं, जिनका लिखना केवल बढ़ावेके [illegible]सवा और कुछ नहीं है. क्षत्रिय राजा लोग योग्य चारणोंके साथ अपने भाई बेटे, सर्दार, [illegible]मरावोंका जैसा बर्ताव करते हैं, और किसी किसी समयमें तो कितनेएक राजा लोगोंने इससे भी बढ़कर इज़्ज़त की और अब भी करते हैं, जिसके लिये कुछ नज़ीरें और भी देते हैं. जब कि जोधपुरके महाराजा अभयसिंहने कविया जातिके चारण करणीदानको लाख पसावका दान देकर अपनी पुरानी राजधानी मंडोवरसे हाथीपर सवार कराया और आप घोड़ेपर सवार हो उसके आगे आगे चलकर उसको जोधपुर शहरतक पहुंचाया, जो मंडोवरसे २ $\frac{1}{2}$ कोसके फ़ासिलेपर है, उस समय उक्त महाराजाकी प्रशंसामें करणीदान ने मरु भाषामें यह दोहा कहा थाः-

अश चढ़ियो राजा ... ढ गजराज ॥
पोहर हेक जलेवमें ... ज ॥ १ ॥

इसका अर्थ यह है, कि महाराजा ... करणीदानको हाथीपर चढ़ाकर आप घोड़ेपर सवार हुए, और एक पहरतक ... जलेवमें चले.

जबकि जोधपुरसे मूंधियाड़ ठिकानेका बारहट चारण ... , जो महाराजाका पौल्पात (१) था, किसी राज्य कार्यके लिये उदयपुरमें आया, ... जगत्सिंहने उसकी पेश्वाई महलोंसे जगन्नाथरायके मन्दिर तक की, जो महलोंसे ... क़दमके अन्तपर है, इस प्रकारका आदर करनेमें उक्त बारहटने महाराणा ... में यह दोहा कहाः—

दोहा.

करनारो जगपत कियो कीरत काज कुरब्ब ॥
मन जिण धोखो ले मुआ शाह दिलेस शरब्ब ॥ १ ॥

इसका अर्थ यह है, कि महाराणा जगत्सिंहने करणीदानकी जितनी ... उतनी ही इज़्ज़तके लिये दिल्लीके सब बादशाह चित्तमें धोखा लेकर मरे, अर्थात् जिन ... णाओंने दिल्लीके बादशाहोंकी पेश्वाई नहीं की उन्होंने करणीदानकी की. इसी तरह आदर राजा लोगोंने चारणोंका किया, और करते हैं. इसके सिवा जोधपुरके अभीतक यह दस्तूर चलाआता है, कि जब नवीन राजा गद्दी नशीन होता है, तब योग्य चारणको लाख पसाव देकर महलोंके दर्वाज़ेतक साथ जाकर उसे पहुंचाता इत्यादिक बहुतसी बातें हैं.

इसके सिवा स्वयं महाराजा लोग भी चारणोंके गुणानुवाद (तारीफ़) करते हैं, चारणोंकी तारीफ़में क्षत्रिय महाराजाओंकी बनाई हुई बहुतसी कविता भी प्रसिद्ध जिसमेंसे भी कुछ उदाहरणके लिये यहांपर दे देते हैं, जो बड़े बड़े महाराजाओंने योग्य चारणोंकी प्रशंसामें की है. जोधपुरके पूर्व महाराजा जशवन्तसिंहने ... नामक ग्रामके बारहट चारण राजसिंहके मरनेपर यह दोहा कहाः—

दोहा.

हय जोड़ा रहिया हमें गढ़वी काज गरत्थ ॥
ऊ राजड़ छत्रधारियां गो जोड़ाबण हत्थ ॥ १ ॥

---

(१) पौल्पात शब्दका अर्थ यह है, कि पौल् अर्थात् द्वारके नेग (दानादिक दस्तूरों) के वालोंमें पात्र याने योग्य. पात्र शब्दका अपभ्रंश पात शब्द है.

इसका अर्थ यह है, कि अब जो चारण लोग रहे हैं, वे रुपयोंके लिये हाथ जोड़ने वाले हैं, परन्तु छत्रधारी लोगोंसे हाथ जोड़ाने वाला वह राजसिंह चलागया.

जब कविराजा बांकीदान परलोकगामी हुआ, जो जोधपुरके महाराजा मानसिंहका बड़ा ही प्रतीतपात्र था, तो उसकी प्रशंसामें महाराजाने यह सोरठा दोहा फ़र्माया:–

सोरठा.

विद्या कुल विख्यात राज काज हर रहशरी ॥
वांका तो विण वात किण आगल मनरी कहां ॥१॥

इसका अर्थ यह है, कि विद्यामें, और कुलमें विख्यात, हे बांकीदान तेरे विना राज्य कार्यकी हरएक गुप्त बात किसके आगे कहें. इन्हीं महाराजाने चारण जातिकी प्रशंसामें गीत जातिका एक छन्द इस प्रकार बनाया था:–

गीत.

करण मुकर महलोक कृतारथ परमारथ ही दियण पतीज।
चारण कहण जथारथ चौड़े चारण वड़ा अमोलख चीज ॥

(अर्थ).

पृथ्वी लोकको कृतार्थ करने, परमार्थकी प्रतीत दिलाने और यथार्थ बातको स्पष्ट कहनेके लिये चारण लोग एक अमोल्य वस्तु हैं.

रतलामके महाराजा वलवन्तसिंहने भी इन्हीं चारणोंकी तारीफ़में यह सोरठा फ़र्माया:–

सोरठा.

जोगो किणिअन जोग शह जोगो कीधो सुकव ॥
लूंठा चारण लोग तारण कुल क्षत्रियां तणो ॥ १ ॥

(अर्थ).

इसका अर्थ यह है, कि जोगा नामक क्षत्रिय कुछ भी योग्य नहीं था, तोभी सुकवियोंने उसे योग्य बनादिया, इससे क्षत्रियोंके कुलको तारनेके लिये चारण लोग प्रवल हैं. यह जोगा एक साधारण क्षत्रिय था, जिसका नाम राजपूतानहमें प्रसिद्ध है.

इसी तरह चारणोंकी तारीफ़में राजाओं और क्षत्रियोंके बनाये हुए अनेक दोहे छन्द आदि हैं, और राजा लोग अपनेसे सनातन सम्बन्ध रखने वाली चारण जातिके गुणोंको अच्छी प्रकार जानते हैं, और चारणोंको शासन (१) गांवकी सनद भी ब्राह्मणोंकी तरह वेलगान ताम्रपत्रपर खुदवाकर दीजाती है.

---

(१) राजपूतानहमें चारणों और ब्राह्मणोंके गांव शाशणीक कहलाते हैं.

आधुनिक विद्वान भी उक्त जातिका सन्मान और सत्कार राजपूतोंमें ब्राह्मणोंकी बराबर ही स्वीकार करते हैं.

इसके अतिरिक्त अंग्रेज़ विद्वानोंने भी इस जातिका प्राचीन और पवित्र होना निश्चय किया है. इसका हाल जिन पाठक लोगोंको देखना हो, वे नीचे लिखी हुई किताबोंमें देखलेवें:—

विल्सन साहिबकी बनाई हुई इण्डियन कास्ट नामक किताबकी दूसरी जिल्दके पृष्ठ १८१ से १८५ तक.

शेरिंग साहिबके बनाये हुए पुस्तक ट्राइब्ज़ ऐण्ड कास्टस् ऑफ़ इण्डियाकी तीसरी जिल्द, पृष्ठ ५३–५४.

टॉड राजस्थान जिल्द दूसरीके पृष्ठ ६३१ और ६३२.

इन चारणोंके दो भेद होगये हैं, जो इस समय भी बने हुए हैं, याने एक काछेला, जो कच्छमें जानेसे कहलाये, और दूसरे मारू जो मारवाड़से फैले हैं. काछेला चारणोंका पूर्व व्यवहार छूट गया है, लेकिन् मारू चारणोंका पूर्व कर्म वैसाका वैसाही बना-हुआ है. मारू चारणोंके १५० के क़रीब गोत्र थे, परन्तु उनमेंसे बहुतसे नष्ट होगये, किन्तु इस समय १२० गोत्र विद्यमान हैं.

इन्हीं १२० गोत्रोंमें देवल ऋषिकी संतान देवल गोत्रके चारण कहलाये, जिनको शांखला क्षत्रियोंने अपना पौळ्पात बनाया. रूणके राजा सोढदेव शांखलाकी बेटीसे जब अलाउद्दीन ख़ल्जीने जब्रन शादी की, और बहुतसे क्षत्रियोंका नाश किया, उस समय देवल गोत्रके चारण मेहाजलने बादशाहको प्रसन्न करके शेष क्षत्रियोंको बचाया, और अलाउद्दीन ख़ल्जीको मए फ़ौजके बहुत उम्दह दावत दी. इसपर बादशाहने खुश होकर कहा, कि यह चारण कूर्वा (सामानका) समुद्र है, तबसे मोतीसर, रावल, और वीरम ढोली (जो चारणोंको मांगनेवाले हैं) देवल (दधिवाड़िया) गोत्रके चारणोंको कूर्वा समुद्र कहकर सलाम करते हैं. मारवाड़में रूणके राजाओंने अपने पौळ्पातको दधिवाड़ा ग्राम शासन (उदक) दिया, जिससे ये लोग दधिवाड़िया कहलाये.

जब राठौड़ राव रणमल्ल और जोधाने रूणका राज शांखलोंसे छीन लिया, उस समय रहे सहे शांखला क्षत्रिय चित्तौड़में आरहे, क्यौंकि महाराणा कुम्भकर्ण इन शांखलोंके भानजे थे; और इनके पौळ्पात चारण भी मारवाड़ छोड़कर मेवाड़में चलेआये. फिर यहां महाराणाकी तरफ़से दधिवाड़िया जैतसिंहको नाहरमगराके क़रीब धारता और गोठीपा दो गांव मिले. जैतसिंहके ४ पुत्र हुए, उनमें बड़ा महपा, दूसरा मांडण, तीसरा देवा, और चौथा वरसिंह था. विक्रमी १५७५ [हि० ९२४ = ई० १५१८]

में महमूद ख़ल्जीको जब महाराणा अव्वल संग्रामसिंहने गिरिफ़्तार किया, और उस फ़त्ह की खुशीका दर्बार क़िले चित्तौड़के रत्नेसर तालाबपर हुआ, उस वक्त मेहपाको ढोकलिया और उसके भाई मांडणको शावर गांव शासन दियागया, तब मेहपा और मांडण ने अपना विभाग छोड़कर छोटे भाई देवाको धारता और वरसिंहको गोठीपा देदिया. मांडणकी औलाद मारवाड़में वासनी, कूंपड़ास, और वलूंदा वग़ैरह गांवोंमें; देवाकी धारता और खेमपुरमें; और वरसिंहकी गोठीपामें मौजूद हैं. मेहपाका बड़ा पुत्र आसकरण और आसकरणका चत्रा हुआ, जिसके समयमें विक्रमी १६२४ [हि० ९७५ = ई० १५६७] में जब अक्बर बादशाहने मांडलगढ़का क़िला लेकर चित्तौड़पर हमलह किया, तो उस वक्त ढोकलिया भी ख़ालिसहमें शामिल करलिया. परन्तु कई वर्षोंके बाद चत्रा दिल्ली गया, और जोधपुरके मोटा राजा उदयसिंहकी मारिफ़त अर्ज़ मारूज़ करवाकर उसने गांव पीछा बहाल करवालिया. चत्राका पुत्र चावंडदास और चावंडदासका पुत्र हरिदास था, जिसके समयमें महाराणा राजसिंहने नाराज़ होकर ग्राम ढोकलिया ख़ालिसह करलिया. जब मांडलगढ़पर आलमगीरका क़ब्ज़ह होगया, तब भी यह गांव ख़ालिसहमें ही रहा. बहुतसी तक्लीफ़ें उठानेके बाद हरिदासका बेटा अर्जुन उदयपुरमें आया, और विक्रमी १७६५ [हि० ११२० = ई० १७०८] में उसने चन्द्रकुंवर बाईके विवाहोत्सवपर ग्राम ढोकलिया महाराणा दूसरे अमरसिंहसे वापस इन्आ़ममें पाया. अर्जुनका बड़ा बेटा केसरीसिंह और उसका मयाराम हुआ, जिसने महाराणा जगत्[illegible] समयमें नया ग्राम मिलनेकी एवज़ ढोकलियाके चारों तरफ़ हद बन्दी करवाकर गो वच्छ[illegible] सहित पत्थर (१) रुपवा दिये. मयारामका बड़ा पुत्र कनीराम था, जिसका जन्म विक्रमी १८१० [हि० ११६६ = ई० १७५३] में, और देहान्त विक्रमी १८७० [हि० १२२८ = ई० १८१३] में हुआ. इसको महाराणा भीमसिंहने जयसिंहपुरा, और झालरा नामके दो ग्राम दिये. कनीरामका पुत्र रामदान था, जो विक्रमी १८४७ [हि० १२०४ = ई० १७९०] में पैदा हुआ, और विक्रमी १८९५ [हि० १२५४ = ई० १८३८] में मरा. इसके दो पुत्र, बड़ा क़ाइमसिंह और दूसरा खुमाणसिंह हुआ. क़ाइमसिंहका जन्म विक्रमी १८६७ [हि० १२२५ = ई० १८१०] में, और देहान्त विक्रमी १९२७ [हि० १२८७ = ई० १८७०] में हुआ. क़ाइमसिंहके ४ पुत्र, बड़ा ओनाड़सिंह, दूसरा मैं (श्यामलदास), तीसरा ब्रजलाल और चौथा गोपालसिंह हुए, जिनमेंसे ओनाड़सिंह खेमपुर गोद गया. मेरा (श्यामलदासका) जन्म विक्रमी १८९३ द्वितीय

---

(१) सीमा आदि स्थानोंपर गो वच्छाके चिन्ह वाले पत्थर रोपेजानेसे यह मत्लब होता है, कि जो कोई इन पत्थरोंको उखेड़े उसको बच्चे वाली गायके मारेका पाप हो.

आषाढ़ कृष्ण ७ [हि॰ १२५२ ता॰ २॰ रबीउल्अव्वल = .ई॰ १८३६ ता॰ ५ जुलाई] को; और मेरा प्रथम विवाह विक्रमी १९०७ [हि॰ १२६६ = .ई॰ १८५०] में, और दूसरा विवाह विक्रमी १९१६ [हि॰ १२७६ = .ई॰ १८५९] में हुआ. विक्रमी १९१८ [हि॰ १२७८ = .ई॰ १८६१] में मेरी बड़ी स्त्रीका देहान्त होगया. विक्रमी १९२७ [हि॰ १२८७ = ई॰ १८७०] में मैं अपने पिताका क्रमानुयायी बना. विक्रमी १९०४ [हि॰ १२६३ = .ई॰ १८४७] में मैं अपने पिताके साथ महाराणा स्वरूपसिंह की सेवामें आया था. इसके दो तीन वर्ष पहिलेसे मैंने सारस्वत और अमरकोश पढ़ना प्रारम्भ करदिया था. उसके पीछे दूसरे भी कोश और काव्य तथा साहित्यके ग्रंथ पढ़ता रहा. फिर मुझको ज्योतिषका शौक़ हुआ, और थोड़ासा गणितका अभ्यास करके फलित ग्रन्थोंमें लग गया. मुहूर्तचिन्तामणि, मुहूर्तमार्तण्ड, मुहूर्त्त-गणपति, जातकाभरण, मुहूर्त्तमुक्तावलि, चमत्कार चिन्तामणि, हिल्लारजातक, पद्मकोश-जातक, लघुपाराशरी, वृहत्पाराशरी, पट्पंचाशिका, प्रश्नभैरव, और हायनरत्न वगैरह कई ग्रन्थ देखनेके पश्चात् फलितपरसे मेरी श्रद्धा उठगई. फिर मेरा चित्त थोड़े दिनोंके लिये मन्त्र शास्त्र, सिद्धनागार्जुन, इन्द्रजालादिककी तरफ़ रुजू हुआ, लेकिन् उनको भी व्यर्थ जानकर शीघ्र ही चित्त हटगया. फिर मैंने थोड़े दिनोंके लिये वैद्यकपर चित्त लगाया. अल्बत्तह इस विद्यामें मुझको कुछ लाभ मालूम हुआ, लेकिन् अंग्रेज़ी डॉक्टरोंसे मित्रता होनेके [illegible] संस्कृत वैद्यकका अभ्यास छूटगया. उसके बाद मुख्य विद्या काव्य, कोश और साहित्यकी तरफ़ मन लगाया, और बीच बीचमें महाभारत, रामायण, भागवत, देवीभागवत आदि कई पुराण ग्रन्थ भी देखे. इन सबका फल यह हुआ, कि मेरे मनसे मारण, मोहन, वशीकरण, उच्चाटन और डाकिन, भूत, मूठ, जादू वगैरहका वहम बिल्कुल निकलगया. इसीके साथ धर्म सम्बन्धी ग्रन्थोंमें भी सन्देह होने लगा. तब मैंने वेदान्तके पंचदशी वगैरह छोटे छोटे ग्रन्थ देखे, जिससे कुछ विश्वास हुआ, क्योंकि संसारमें जितने धर्म हैं, उन सबमें बहुत कुछ बारीकियां निकाली गई हैं, लेकिन् यह सोचा कि सब सृष्टिका नियम बनाने वाली कोई एक वस्तु है, अनेक नहीं; इसलिये कुल मज़्हबोंमें एक दूसरेके साथ कुछ न कुछ अन्तर अवश्य है; परन्तु सच्चाई, दया, और ईमानदारी प्रभृति अच्छी बातें, और झूठ, चोरी, तथा हिंसा आदि बुरी बातें सब मज़्हबोंकी रायसे एकसी हैं, और सबोंके मतसे सृष्टिको बनानेवाली वस्तु एक और व्यापक है, इसलिये मैंने सब मतोंकी रायके अनुसार अपने ही वेदान्त शास्त्रको ठीक जानकर उसीपर सन्तोष करलिया. फिर मेरा शौक़ ज़ियादहतर इतिहासकी तरफ़ झुका, लेकिन् हमारे ऐतिहासिक ग्रन्थोंको तो लोगोंने मज़्हबमें मिलाकर बढ़ावे और करामाती बातोंसे बहुतही

कुछ भरदिया है, और इसके सिवा पुराने ग्रंथोंमें देखाजावे, तो साल संवत् भी नहीं मिलते, अल्बत्तह हमारे काव्य और जैनके ग्रन्थोंसे कुछ कुछ साल संवत् और इतिहासका प्रयोजन सिद्ध होता है. मैं इन बातोंकी खोजनामें लगा हुआ था, कि इसी समय याने विक्रमी १९२८ [हि० १२८८ = ई० १८७१] में मेवाड़के पोलिटिकल एजेएटने महाराणा शम्भुसिंह साहिबसे मेवाड़का इतिहास बनानेके लिये बहुत कुछ कहा. तब महाराणा साहिबने इस कामके लिये दो चार आदमी मुक़र्रर किये, लेकिन् जैसा चाहिये वैसा काम न चला. फिर मुझको आज्ञा मिली, तो मैंने और पुरोहित पद्मनाथने ऐतिहासिक सामग्री एकट्ठी करना शुरू किया, और कुछ सामग्री एकत्र होने बाद तवारीख़ लिखनी शुरू करदी; परन्तु उसका मुसवद्दह बहुत बढ़ावेके साथ लिखाजाने लगा, क्योंकि पहिले मुझको इतिहास विद्यामें पूरा अनुभव प्राप्त नहीं हुआ था, केवल दो चार फ़ार्सी तवारीख़ें देखकर उसी ढंगसे तअस्सुबके साथ लिखने लगा. थोड़े ही दिन पीछे ईश्वरने इस कार्यको रोकदिया, याने महाराणा शम्भुसिंह साहिबका परलोक वास होनेसे मेरे दिलपर बड़ा भारी सद्मा पहुंचा, जिससे यह काम भी बन्द होगया, लेकिन् मैंने ऐतिहासिक सामग्री एकट्ठी करना नहीं छोड़ा. अपने तौरपर पाषाण लेख, सिक्के, ताम्रपत्र, पुराने काग़ज़ात, जनश्रुति, भाषा और संस्कृतके ग्रन्थ, काव्य, तथा अंग्रेज़ी व फ़ार्सी वग़ैरह ऐतिहासिक पुस्तकें एकत्र करता रहा. इसी अरसेमें वैकुण्ठवासी महाराणा सज्जनसिंह साहिबने मुझको कुछ दिनों बाद मुसाहिबों (मन्त्रियों) में दाख़िल करके अपना सलाहकार अर्थात् मुख्य मन्त्री बनालिया, जिससे मुझको रियासती कामोंके सबब इस कामके लिये बहुत ही कम फ़ुर्सत मिली. रियासती प्रबन्धमें मेरी तुच्छ सलाहसे विद्याकी उन्नति, देशका सुधार, सेटलमेंट और जमाबन्दीका प्रबंध, कौन्सिल वग़ैरह न्यायकी कचहरियोंका खोलाजाना, नई नई इमारतोंके बनानेसे देशको रौनक़ और प्रजाको लाभ पहुंचाना वग़ैरह अनेक अच्छे अच्छे कार्य कियेगये, जिनका फल इस वक्त दिखाई देरहा है. फिर मेवाड़के पोलिटिकल, एजेएट कर्नेल् इम्पी साहिबने वैकुण्ठवासी महाराणा साहिबसे गुज़ारिश की, कि मुसाहिबीके कामके लिये तो बहुत आदमी मिलसक्ते हैं, लेकिन् तवारीख़के लिये नहीं, इसलिये तवारीख़का काम श्यामलदाससे शुरू करवाना चाहिये, जिससे आपकी और आपके राज्यकी नामवरी हज़ारों वर्षोंतक क़ाइम रहेगी. उक्त साहिबकी यह राय महाराणा साहिबको बहुत पसन्द आई, और मुझको हुक्म दिया, कि रियासती बड़े बड़े कामोंमें कभी कभी हमको सलाहसे मदद देतेरहनेके अलावह तुम अपना मुख्य काम इतिहास लिखनेका रक्खो. तब मैं यह आज्ञा

पाकर और भी अधिक तेज़ीके साथ सामग्री एकत्र करने लगा, और विक्रमी १९३६ [हि० १२९६ = .ई० १८७९] के माघ फाल्गुनसे मैंने इस बृहत् कार्यका प्रारम्भ किया. फिर मैंने गवर्मेंट अंग्रेज़ीसे पाषाणलेख पढ़नेवाला एक आदमी मांगा. इसपर फ्लीट साहिबकी मारिफ़त गोविन्द गंगाधर देश पांडे नामका एक पंडित एक वर्षसे ज़ियादह समयके लिये हमको मिला. इस पंडितके ज़रीएसे मैंने मेवाड़ और मेवाड़के समीपवर्ती स्थानोंसे कई एक पाषाण लेख प्राप्त किये, और हमारे दो तीन आदमियोंको भी उक्त पंडितके पास रखकर प्रशस्ति छापने और बांचनेका कार्य सिखलाया. इन बातोंसे मुझको बहुत कुछ अनुभव हासिल होगया. इसके बाद मैं रॉयल एशियाटिक सोसाइटी बंगालका मेम्बर बना, और कुछ लेख भी उक्त सोसाइटीके जर्नलोंमें दिये. फिर उक्त सोसाइटीके मेम्बरोंने मुझको आर्कियोलॉजी और हिस्टरीका ऑनरेरी मेम्बर चुना, और बाद उसके मैं रॉयल एशियाटिक सोसाइटी लण्डन व बम्बई ब्रैंच रॉयल एशियाटिक सोसाइटीका मेम्बर होगया. फिर हिस्टोरिकल सोसाइटी लण्डनका फ़ेलो बना. यदि मैं इन सोसाइटियोंमें लेख देनेका ही काम रखता, तो कोई जर्नल मेरे लेखसे ख़ाली न रहता, लेकिन् मैंने आजतक अपना कुल समय इसी इतिहास वीरविनोदके बनानेमें व्यतीत किया. महाराणा सज्जनसिंह साहिबने मुझको कविराजाकी पदवी (ख़िताब), जुहार, ताज़ीम, छड़ी, बांहपसाव, चरण शरणकी बड़ी मुहर, पैरोंमें सर्व प्रकारका सुवर्ण भूषण, और पघड़ीमें मांझा (१) वग़ैरह सब प्रकारकी .इज़्ज़त .इनायत की, और गवर्मेंट अंग्रेज़ीसे मुझको महामहोपाध्यायका ख़िताब मिला. वर्तमान महाराणा साहिबने भी इस इतिहास वीरविनोदकी क़द्र करके मेरा बहुत कुछ उत्साह बढ़ाया. महाराणा शम्भुसिंह साहिब और सज्जनसिंह साहिबने मुझको यह आज्ञा दी थी, कि तवारीख़में तारीफ़ नहीं चाहिये, उसी तरह वर्तमान महाराणा साहिबकी भी अभिरुचि है, जिससे इस इतिहासके शीघ्र पूर्ण होनेकी आशा है.

अब मैं अपना ऐतिहासिक वृत्तान्त पूरा करनेके बाद दूसरी क़ौमोंका मुख़्तसर हाल वर्तमान समयके अनुसार नीचे दर्ज करता हूं, जो पुराने जाति भेदसे भिन्न है, क्योंकि यदि मनु और याज्ञवल्क्यके कथनानुसार आजकलका जाति भेद

(१) मांझा उस तासके कपड़के टुकड़ेको कहते हैं, जो मेवाड़के बड़े दर्जहवाले सर्दारोंको पघड़ियोंमें लगायाजाता है, और यह विशेषकर अमरशाही पघड़ीमें लगायाजाता है. इसके लगाने की इजाज़त उन्हीं लोगोंको होती है जिनको महाराणा साहिब बख़्शते हैं, और यह सुनहरी और रुपहरी दो प्रकारका होता है.

मिलाया जावे, तो बिल्कुल नहीं मिलता, और उसका कारण यह है, कि प्राचीन समयमें कर्मप्रधान जाति मानीजाती थी, और अब वीर्यप्रधान मानीजाती है.

ब्राह्मण.

इनके दो भेद हैं, अव्वल पञ्चगौड़, और दूसरे पञ्चद्राविड़. ब्राह्मणोंमें पहिले कोई जाति भेद नथा, उस समय ये लोग ऋग्वेदी, यजुर्वेदी, सामवेदी, और अथर्ववेदी कहलाते थे, और विशेष पहिचान उनकी वेदोंकी शाखाके अनुसारही होती थी. परन्तु जब विन्ध्याचलके पार दक्षिणमें ये लोग आबाद हुए, तो हिमालयसे विन्ध्याचलके बीचमें रहनेवाले पञ्चगौड़ याने १- गौड़, २- कान्यकुब्ज, ३- सारस्वत, ४- मैथिल, और ५- उत्कल; और विन्ध्याचलसे रामेश्वरतक रहनेवाले पञ्चद्राविड़, याने १- द्रविड़, २- तैलंग, ३- कर्णाटक, ४- महाराष्ट्र और ५- गुर्जर, देशोंके नामसे प्रसिद्ध होगये, लेकिन् उस समयमें सब ब्राह्मणोंका आचार व्यवहार एकसाही था. जब मुसल्मानोंने भारतमें आकर जातिध्वंस करना आरम्भ किया, तबसे ब्राह्मणों तथा अन्य जातियोंमें भी अनेक जातियां होगईं, और उनके आचार, विचार तथा व्यवहारमें भी बहुत कुछ फ़र्क़ आगया है. क़रीब क़रीब तमाम राजपूतानह और विशेषकर मेवाड़के ग्रामीण ब्राह्मण, जिनको ग्राम तथा ज़मीन उदक मिली है वे तो बिल्कुल कृषिकार ही होगये हैं, और ऐसे निरक्षर हैं, कि गायत्री मंत्रका भी एक अक्षरतक नहीं जानते, क़ौमी पहिचानके लिये शादीके समय केवल यज्ञोपवीत गलेमें डाल लेते हैं, और उसीसे ब्राह्मण कहलाते हैं. शहर अथवा क़स्बोंमें रहने वाले ज़ियादहतर नौकरी अथवा व्यापारसे अपना गुज़र करते हैं, और बहुतसे कणभिक्षा करके भी पेट भरते हैं. इन लोगोंमें अल्बत्तह बाज़ बाज़ पढ़ते भी हैं. थोड़े पढ़ने वाले पञ्चाङ्ग बांचकर और उनसे ज़ियादह पढ़े हुए जन्मपत्री, वर्षपत्र आदि बनाकर अपना गुज़ारा करते हैं. यदि किसीने ज़ियादह हिम्मत की तो कथाभट्ट बनगया, जो पुराणोंकी कथा बांचकर जीविका प्राप्त करता है; परन्तु वेदाभ्यास और शास्त्र पठन करने वाले तो यहांपर हज़ारों ब्राह्मणोंमें एक दोही नज़र आते हैं, जो भी अपने शेष जाति समूहमें फंसकर देशोपकारपर चित्त नहीं लगाते. राजपूतानहमें पञ्चद्राविड़ थोड़े, और पञ्च गौड़ अधिक आबाद हैं.

क्षत्री.

पिछले ज़माने याने १२ वें शतक विक्रमीसे लेकर इस समयतक ब्राह्मणोंकी तरह क्षत्रियोंमें भी बहुतसी पृथक् पृथक् जातियां होगई हैं, कि जिनकी गणना करना

कठिन है. अलग अलग जातियां क़ाइम होनेके दर्मियानी समयमें क्षत्रियोंके कुल ३६ वंश नियत हुए, जिनमें १६ सूर्यवंशी, १६ चंद्रवंशी, और ४ अग्निवंशी थे. इन छत्तीस वंशोंमेंसे बहुतसे तो नष्ट होगये और कई वंशोंकी प्रतिशाखाओंको लोगोंने जुदा वंश समझ लिया. इस गड़बड़से ३६ वंशकी गणनाका क्रम भंग होगया. कुमारपाल चरित्र काव्यमें ३६ वंशकी गणना लिखी है, परन्तु उसमें भी कई शाखाओंको जुदा वंश मानलिया है; और कर्नेल् टॉडने जो कई ग्रन्थोंसे चुन चुनकर फ़िहरिस्तें बनवाईं और उसके बाद अपने ख़यालके मुवाफ़िक़ एक नई लिस्ट याने फ़िहरिस्त तय्यार की उसमें भी हमारे विचारसे गड़बड़ है, इसलिये हमने ऐसे सन्देहमें पड़ना ठीक न जानकर उक्त ३६ वंशोंका क्रम ढूंढना छोड़दिया, और वर्त्तमान समयमें जो लोग क्षत्रियोंके प्रचलित वंशोंकी शाखा और प्रतिशाखाओंको मानते हैं उन्हींका लिखना उचित समझा, जो इस प्रकार हैं (१) :-

(सीसोदियोंकी २५ शाखा.)

१- गुहिलोत, २-सीसोदिया (२), ३- पीपाड़ा, ४- मांगल्या, ५- मगरोपा, ६- अजबरया, ७- केळवा, ८- कूंपा, ९- भीमल, १०- धोरण्या, ११- हुल, १२-गोधा, १३-आहाड़ा, १४- नादोत, १५-सोवा, १६- आशायत, १७-बोडा, १८- कोढा, १९- करा, २०- भटेवरा, २१- मुदोत, २२- घालरया, २३- कुचेला, २४- दुसंध्या, और २५- कड़ेचा.

(चहुवानोंकी २४ शाखा.)

१- खीची, २-हाड़ा, ३-वालेछा, ४-सोनगरा, ५- मादड़ेचा, ६- मालवण, ७- बील, ८-बागड़ेचा, ९-सांचौरा, १०-बागट, ११-बागड़िया, १२-चालशखा, १३- वयवधणा, १४-जोजा, १५-भमरेचा, १६- वालोत, १७-बरड़, १८- देवड़ा,

---

(१) यह नहीं जानना चाहिये, कि हमारी लिखी हुई शाखा और प्रति शाखा बहुत ही ठीक हैं, क्योंकि इनमेंसे भी बहुतसी प्रतिशाखा नष्ट होगईं, और कई नवीन कल्पना कीहुईका भी भ्रम है, लेकिन् इस विषयमें कुछ न कुछ लिखना अवश्य समझकर लिखदी गई हैं.

(२) यहांपर सीसोदिया वंशकी २५ शाखाओंमें उक्त वंशके नामकी जो एक शाखा लिखी गई है, उससे यह मत्लब है, कि कुछ राजपूत इस वंशमें ऐसे हैं, जो केवल सीसोदिया नामसे ही प्रसिद्ध हैं; और इसी तरह चहुवान, पुंवार, झाला आदि वंशोंमें भी जहां जहां वंशके नामकी शाखा आवे, ऐसाही समझलेना चाहिये.

१९- चन्दाणा, २०- सेपट्या, २१- पामेचा, २२- चीवा, २३- गहरवा, और २४- चहुवान.

(पुंवारों की ३५ शाखा.)

१- पुंवार, २- शोढा, ३- शांखला, ४- चावड़ा, ५- खेह, ६- खेजड़, ७- शागर, ८- पड़कोड़ा, ९- भायला, १०- भीमल, ११- काला, १२- प्रमार, १३- काबा, १४- कालमुहा, १५- डोडा, १६- ऊमट, १७- धांधू, १८- सुमरा, १९- रेवर, २०- कालेज, २१- काहरया, २२- बाढेल, २३- ढीढा, २४- ढेवा, २५- बेहका, २६- बोढ, २७- गहला, २८- जीपा, २९- शायरया, ३०- रांकमुहा, ३१- ढीक, ३२- सूंढा, ३३- फटक, ३४- बरड़, और ३५- हूंमड़.

(झालोंकी ९ शाखा.)

१-झाला, २-मकवाणा, ३-रेणवा, ४- लूणगा, ५-खरलायत, ६- बालायत, ७- बूहा, ८- पीठड़, और ९- बापड़.

(राठौड़ोंकी १३ शाखा.)

१- दानेसुरा, २- अभयपुरा, ३- कपालिया, ४- करहा, ५- जलखेड़िया, ६- बुगलाना, ७- अरह, ८- पारकेश, ९-- चंदेल, १०- वीर, ११- वस्यावर, १२- खैरबदा, और १३- जैवन्त.

(सोलंखियोंकी २४ शाखा.)

१-- सोलंखी, २- बालणोत, ३-- बाघेला, ४- टहल, ५- कुटवहाड़ा, ६- आलमोच, ७-- शेष, ८- खेड़ा, ९--तवड़क्या, १०-- महलगोता, ११-- वाघेला, १२-- भाशूंडा, १३-- बड़शूढा, १४-- राणक्या, १५-- दलावड़ा, १६-- भाड़ंग्या, १७-- वीरपरा, १८--नाथावत, १९--खटड़, २०-- हराहर, २१--कांधल, २२- वलहट, २३-- चूडामणा, और २४-- माहेड़ा.

(वड़गूजरोंकी २ शाखा.)

बड़गूजरोंकी दो शाखाओंमें पहिली वड़गूजर, और दूसरी शकरवाल हैं.

(ईंदोंकी २ शाखा.)

बड़गूजरोंके समान ईंदा राजपूतोंकी भी दो शाखा हैं, याने अव्वल ईंदा, और दूसरे पड़ियार.

(भाटियोंकी ७ शाखा.)

१– भाटी, २– जादव, ३– माहेड़ा, ४– जाड़ेचा, ५– बोधा, ६– लहुवा, और ७– भाड़ेचा.

(गौड़ोंकी ६ शाखा.)

१– गौड़, २– ऊंठेड़, ३– शालियाना, ४– तंवर, ५– दुहाणा, और ६– वोडाणा.

जिन जिन वंशोंकी दूसरी शाखा नहीं जानी गई, उनके नाम नीचे लिखे-जाते हैं:–

डोडिया, डावी, टांक, कछावा, पंडीर, वांलो, गोरवाळ, जोइया, गोयील, शरवय्या, टामेर, आदेण, कुनणेचा, दायमा, मोरी, गोहिल, चूह, थेगा, बल्ला, गोरवा, बगड्या, नकूप और खरवड़ वगैरह.

क्षत्रियोंकी स्त्रियां पर्देमें रहती हैं; प्राचीन समयमें इनके यहां यह रवाज नहीं था, परन्तु जब मुसल्मानोंकी बादशाहत हिन्दुस्तानमें क़ाइम हुई, तबसे क्षत्रियोंने भी पर्देका रवाज जारी करलिया, इस ग़रज़से कि अव्वल तो उनकी स्त्रियोंकी बराबर अपनी स्त्रियोंकी .इ़ज़्ज़त दिखलाना, क्योंकि मुसल्मान लोग बाहिर फिरने वाली स्त्रियोंकी हिक़ारत करते थे; और दूसरे मुसल्मानोंके दुराचरणसे औरतोंको बचाना, कि जो उनके घरोंमें रूपवती स्त्रियोंको देखकर उनकी .इ़ज़्ज़तपर हमलह करनेको तय्यार होते थे, जिसमें हज़ारों राजपूत लड़कर मारेजाते और उनकी स्त्रियां भी अपना सत बचानेके लिये आगमें जल मरतीं. इस समय पर्देका रवाज ऐसा दृढ़ होगया है, कि नवीन मालूम नहीं होता. राजपूत लोग प्राचीन कालसे भारतवर्षके राजा, ईमानदार, सत्यवक्ता, वीर और उपकारको माननेवाले होते आये हैं; दग़ाबाज़ी इन लोगोंमें बहुत कम थी, क्योंकि पहिले ज़मानेमें दग़ाबाज़ीसे मारने वालेकी पूरी निन्दा करते थे, परन्तु मुसल्मानोंके आने बाद इनमें भी थोड़ी थोड़ी दग़ाबाज़ी फैलगई, तोभी इतना तो इन लोगोंमें पिछले समयतक भी बना रहा, कि शस्त्र डालकर हाथ जोड़ने वालेको न मारना, और मज़्हबी पेश्वा, तथा षटदर्शन वग़ैरहको न लूटना इत्यादि.

क्षत्रिय लोग मांस मद्य खाते पीते हैं. मेवाड़के राजा और उनके सजातीय सीसोदिया पहिले मद्यपान नहीं करते थे, परन्तु महाराणा दूसरे अमरसिंहसे इनमें भी मद्यपान करनेका प्रचार हुआ, जिसको महाराणा स्वरूपसिंहने निज पुरातन रीतिके अनुसार कुल सीसोदियोंसे छुड़ा दिया था, लेकिन उनका देहान्त होते ही फिर प्रचलित

होगया. उत्तम घरानेकी स्त्रियां हरएक रंगके वस्त्र, भूषण, और हाथीदांत, नारियल तथा लाखकी चूड़ियां दोनों हाथोंके पहुंचे और भुजोंपर पहिनती हैं. इनके पहिननेका घाघरा (लहंगा) ३०० फुटतकका घेरदार और ओढ़नेकी साड़ी १२ फुटतक लंबी होती है. पहिले बाज़ बाज़ स्त्रियां तो यथा विधि अपने पतिके मरनेपर उसके साथ ही जलजाती थीं, परन्तु सतीकी रस्म बन्द होनेके बादसे वे विधवापनमें पूर्ण सन्यासका व्रत पालन करती हैं. मद्य मांस त्यागदेनेके सिवा कच्चे रंगको तो वे छूती भी नहीं, बल्कि पक्के रंगमें भी आलके रंगकी या काली साड़ी, और साधारण सिफ़ेद छींट अथवा पक्के लाल या काले रंगका थोड़े घेरवाला घाघरा पहिनती हैं. खाने पीनेमें उत्तम और स्वादिष्ट भोजनोंका परित्याग करदेती हैं, किसी प्रकारका भूषण नहीं पहिनतीं, और अपनी बाक़ी .उम्र मज़्हबी अक़ीदेपर पूरी करती हैं.

क्षत्रियोंमें ज़ियादहतर बड़ा लड़का बापकी कुल जायदादका मालिक होता है, और बाक़ी छोटे लड़के जितने हों उनको बापकी जायदादमेंसे गुंजाइशके मुवाफ़िक़ ख़र्चके लाइक़ थोड़ा थोड़ा हिस्सह दियाजाता है, लेकिन् उनको बड़े भाईकी नौकरी करनी पड़ती है.

महाजन.

इस देशमें वैश्य वर्ण महाजनोंको गिनते हैं, जो पुराने समयसे वैश्य नहीं हैं, किन्तु अहीर वगैरह पुराने वैश्य हैं. इनमेंसे कितनेएक तो कृषि और गोरक्षा वगैरह कर्म करते ही हैं, और कितनेएक अपना कर्म छोड़कर नौकरीमें लगगये हैं. बहुतसी अन्य जातियोंने बौद्ध और जैनमतावलम्बी होनेके कारण अहिंसा धर्ममें प्रवृत्त होकर कृषि वाणिज्यको ही अपना मुख्य कर्म समझलिया, जिनके दो विभाग हुए, याने एक वह जिन्होंने कायस्थोंसे अहलकारी पेशह छीनकर उसे अपना पेशह बनालिया, और दूसरे वे जिन्होंने वाणिज्य ही को अपना पेशह समझा; और येही लोग महाजन तथा वनिया कहलाते हैं. इन लोगोंकी ८४ शाखा हैं, जिनमेंसे राजपूतानहमें बारह प्रसिद्ध हैं, अव्वल श्री श्रीमाल, दूसरी श्री माल, और तीसरी ओसवाल, जिनके आपसमें शादी सम्बन्ध होता है, और इन तीनोंकी १४४४ प्रशाखा हैं; चौथी पोरवाळ, जिसकी अनन्त प्रशाखा हैं; पांचवीं महेश्वरी, जिसकी ७२ प्रशाखा हैं; छठी हूमड़, जिनकी १८ प्रशाखा; सातवीं अगरवाला, जिनकी साढ़े १७ प्रशाखा; आठवीं नागदा, जिनकी १३ प्रशाखा; नवीं नरसिंहपुरा, जिनकी २७ प्रशाखा; दसवीं चित्तौड़ा, जिनकी २७ प्रशाखा हैं; ग्यारहवीं बघेरवाळ; और बारहवीं बीजावर्गी.

इन जातियोंके अलावह श्रावगी और खंडेलवाल मिलकर एक शाखा और कहलाती है, जिसकी ८४ प्रशाखा हैं. ये सब शाखावाले खाना पीना शामिल करसक्ते हैं, परन्तु कन्याका लेना देना अपनी शाखामें ही करते हैं. शादी और गमीकी रस्में सर्व साधारण हैं, केवल किसी किसी बातमें कुछ फ़र्क़ होता है, विशेष नहीं. ये लोग खर्चमें किफ़ायत शिआरी करने, और धनकी वृद्धि करनेमें अव्वल दरजहके गिनेजाते हैं. इनमें महेश्वरी वगैरह कोई कोई वेदाम्नायी और बाक़ी सब जैन मतावलम्बी हैं. इनमेंसे कितनीएक शाखाओंमें फिर दो भेद हैं, याने एक बीसा, और दूसरे दशा. उपरोक्त सब शाखाओंमें पासवान स्त्रीसे पैदा होनेवाले पांचड़े कहे जाते हैं.

कायस्थ.

ये लोग ज़ियादहतर अहलकार पेशा होते हैं; बंगालेमें बाबू, पश्चिमोत्तर देशमें लाला, और राजपूतानहमें पंचोली वा ठाकुर भी कहलाते हैं. इनके यहां शादी और गमीका व्यवहार सबमें एकसा है. प्राचीन कालसे इनका मौरूसी पेशह अहलकारी चला आता है, और इसीसे इनका मसीश (सियाहीके मालिक) नाम रक्खा गया था. इनकी कई शाखा हैं. भविष्यपुराणमें इनकी मुख्य ८ शाखा, याने १- श्री भद्र, २- नागर, ३- गौड़, ४- श्री वत्स, ५- माथुर, ६- अहिफण, ७- सौरसेन, और ८- शैवसेन लिखी हैं; इसके सिवा वर्णावर्ण अंबष्ठादि और भी कई भेद हैं. दक्षिण राढीय घटक कारिकामें इनकी ८ शाखा इस तरहपर लिखी हैं :- १- दत्त, २- सेन, ३- दास, ४- कर, ५- गुह, ६- पालित, ७- सिंह, और ८- देव. फिर इनकी ७२ प्रशाखा हैं, और ये गौड़ देशमें मुख्य मानेगये हैं. बंगजकुलाचार्य कारिकामें अग्निपुराणके हवालेसे लिखा है, कि इनका मूल पुरुष होम था, जिसका प्रदीप और उसका कायस्थ हुआ, जिसके ३ पुत्र पैदा हुए, १- चित्रगुप्त, २- चित्रसेन, और ३- विचित्र. इनमेंसे चित्रगुप्त तो स्वर्गमें, विचित्र पातालमें, और चित्रसेन पृथ्वीपर रहा, जिसके ७ पुत्र हुए:- १- वसु, २- घोष, ३- गुह, ४- मित्र, ५- दत्त, ६- करण, और ७ मृत्युञ्जय. इनमेंसे छठे करणके ३ पुत्र, १- नाग, २- नाथ, और ३- दास; और सातवें मृत्युञ्जयके ४ पुत्र, १- देव, २- सेन, ३- पालित, और ४- सिंह हुए. इस तरह करण और मृत्युञ्जयको छोड़कर बारह भेद हुए, जो बंग देशमें मुख्य मानेगये हैं, और इनकी ८७ प्रशाखा गिनी गई हैं. इसके सिवा देशाचारके भेदसे भी कई शाखा प्रशाखा होगई हैं. राजपूतानहके कायस्थ मांस मिश्रित भोजनका छूना कम मानते हैं.

हमने विस्तारके भयसे यह हाल सूक्ष्म तौरपर लिखदिया है; क्योंकि यदि हरएक जातिका हाल जुदे जुदे तौरपर बहुत थोड़ा थोड़ा भी लिखें, तो बहुत कुछ विस्तार होना सम्भव है, इसलिये नमूनेके तौरपर ख़ास ख़ास क़ौमोंका थोड़ासा वृत्तान्त लिखकर बाक़ीको छोड़देते हैं; लेकिन् जो क़ौमें कि जङ्गली गिनी जाती हैं, जैसे भील, मीना वग़ैरह उनका थोड़ासा वृत्तान्त नीचे लिखते हैं:-

भील.

भील लोग थोड़े या बहुत राजपूतानहके तमाम हिस्सोंमें आबाद हैं, लेकिन् मुख्य गिरोह इनका आबू पहाड़से लेकर नर्मदा नदीके किनारेतक फैला हुआ है. उदयपुर सिरोही, पालनपुर, ईडर, डूंगरपुर, बांसवाड़ा और प्रतापगढ़ वग़ैरह रियासतोंके पहाड़ी हिस्सोंमें ख़ासकर यही प्रजा बसती है. इनका प्राचीन इतिहास मिलना बहुत कठिन है. इन लोगोंके गांव बड़े विस्तारमें आबाद होते हैं, हरएक भीलकी झोंपड़ी बांस, लकड़ी, और पत्तोंकी बनी हुई जुदी जुदी पहाड़ी टेकरियोंपर होती है, और उस झोंपड़ीकी सीमाके भीतर जो खेत, पहाड़ तथा जंगल हो उसका मुरूतार वही भील होता है. एक झोंपड़ीसे कुछ फ़ासिलेपर उसी तरह दूसरे भीलका झोंपड़ा जानना चाहिये. इसी तरह कई झोंपड़े मिलकर एक 'फळा' कहलाता है, और ऐसे कई फळे मिलकर एक गांव होता है, जिसको वे लोग 'पाल' बोलते हैं, यह पाल कई वर्गात्मक मील याने मीलमुरब्बामें आबाद होती है. हरएक फळेमें एक या दो भील मुखिया और कुल पालका एक सरगिरोह भील 'गमेती' कहलाता है. उसी गमेतीकी मारिफ़त कुल पालमें मुक़द्दमों और दूसरे मुआमलोंकी कार्रवाई कीजाती है; और वह गमेती जुदे जुदे फळोंके मुखियोंकी मारिफ़त इस कामको करता है; लेकिन् फळाके मुखिया और पालके गमेतीकी ताक़त कम होजानेपर जो ज़बर्दस्त और बहादुर होता है, वह पहिले वालेको रद करके आप मुखिया और गमेती बनजाता है. ये लोग सूअर आदि सब जानवरोंके सिवा गायतकको भी खाजाते हैं, परन्तु फिर भी हिन्दू होनेका अभिमान रखते हैं. सौगन्ध खाने का रवाज इनके यहां इस तरहपर है, कि साफ़ ज़मीनपर गोलकुंडा खेंचकर उसमें तलवार रखदेते हैं, और उसपर अफ़ीम रखकर इक़ार करने वाला शख़्स उसमेंसे थोड़ीसी अफ़ीम खालेता है. इसके सिवा दूसरा तरीक़ह यह है, कि ऋषभदेवकी अर्पण कीहुई थोड़ीसी केसर पानीमें घोलकर इक़ार करने वाला पीलेता है. फिर वह इक़ारके बख़िलाफ़ कभी नहीं करता. बड़े शहरोंके समीपवर्ती स्थानोंमें रहने वाले भीलोंके सिवा दूसरे भील लोग झूठ बहुत कम बोलते हैं, और इन लोगोंमें भविष्यत्का विचार बिल्कुल नहीं है. ये लोग शराब पीकर पुरानी बातोंको याद करके आपसमें लड़ मरते हैं, और यदि उसमें किसी

पालका भील माराजावे, तो उस पालवाले भील मारनेवालेकी पालसे बदला मांगते हैं. यदि मवेशी या रोकड़ रुपया देकर मारनेवाले पंचायतसे फ़ैसला करलेवें तो ठीक, वर्नह बदला मांगनेवाली पालके लोग अपने दुश्मनकी पालपर चढ़जाते हैं, और आपसमें लड़ाई होनेके वक्त ऊंची आवाज़से 'फाइरे, फाइरे' कहकर किलकारी मारते हैं. हज़ारों आदमियोंकी ऐसी आवाज़ोंसे पहाड़ गूंज उठते हैं. ये लोग ढाल, तलवार और तीर कमठा रखते हैं; बाज़ बाज़के पास बन्दूक़ भी रहती है, परन्तु बारूद वग़ैरह सामान पूरा नहीं मिलता. लड़ाईके वक्त दोनों ओरकी औरतें अपने अपने गिरोहको पानी, रोटी और लड़ाईके लिये पत्थर पहुंचाती हैं. ये लोग अपनी जातिकी औरतोंपर हथियार नहीं चलाते, चाहे वे दोस्तकी हों या दुश्मनकी. लड़ाईके समय ढाल वाला सबसे आगे रहकर दुश्मनके तीरोंको अपनी ढालसे रोकता है और उसके पीछे पांच पांच या दस दस आदमी तीर कमठा वाले रहकर तीर चलाते हैं. कमसरियट (सेनाको सामग्री पहुंचानेवाला महकमह) की इनको जुरूरत नहीं होती, हरएक घरसे दो दो चार चार रोटी लाकर औरतें लड़ने वालोंको खिला जाती हैं. अगर नाजकी कमी हो, तो महुवा रांधकर लेआती हैं, और अगर यह भी न हो तो भैंसा, बकरा वग़ैरह जानवरको मारकर उसके मांसका एक एक टुकड़ा हरएक भीलको देदेती हैं, जिसको वे आगपर सेंककर खालेते हैं, नमक मिरचकी भी जुरूरत नहीं होती. दोनों तरफ़के गिरोहोंमेंसे चाहे कोई जीते या नहीं, उनके गुरु जो बाबा कहलाते हैं वे अथवा तीसरे पालके भील बीचमें आकर लड़ाईको शान्त करादेते हैं. फिर पंचायतके तौरपर कुछ दे दिलाकर फ़ैसला करदेते हैं. रास्तह लूटने अथवा चोरी करनेको ये लोग ऐब नहीं समझते, और कहते हैं, कि ईश्वरने हमको इसी वास्ते पैदा किया है. ये लोग मुसाफ़िरके खून निकाले बिना उसका अस्बाब नहीं लेते. अगर मुसाफ़िर कहे, कि हमको तक्लीफ़ दिये बिना अस्बाब लेलो, तो वे कहेंगे, कि क्या हमको खैरात देता है ? इस तरह वे मुसाफ़िरको पत्थर, तीर या तलवारसे थोड़ा बहुत ज़ख्म पहुंचाकर अस्बाब लेते हैं; लेकिन् यह भी उनका स्वभाव है, कि यदि कोई मुसाफ़िर कितनाही अस्बाब लेकर किसी भीलके घर जा पहुंचे, तो फिर उसको कुछ खतरह नहीं रहता. इस हालतमें उस घरके जितने मर्द औरत हों वे सब उस मुसाफ़िरकी हिफ़ाज़तके लिये जान देनेको तय्यार होजाते हैं, सिवा इसके मुसाफ़िरको अपने घरपर भूखा भी नहीं रहने देते; लेकिन् उसकी हदसे बाहिर चलेजाने बाद वही भील लुटेरोंके शामिल होकर उस मुसाफ़िरको लूटलेता है. अगर मुसाफ़िर उसी भीलको या किसी दूसरेको कुछ उज्रत देकर अपने साथ बोलावा (पहुंचाने वाला) लेलेवे, अथवा भीलनी औरत भी पहुंचानेको साथ होजावे, तो मुसाफ़िरको लूटमारका कुछ भय नहीं

रहता. कोई शख़्स देशमें बगावत करके पालमें आबैठता है, तो उसकी मददके लिये भी सैकड़ों आदमी तय्यार होजाते हैं. राज्यकी फ़ौज या थानेदार अथवा राजपूत लोग जब किसी समय इन लोगोंपर धावा करते हैं, तो राजपूत इनको कांडी (१) कहकर पुकारते हैं. जो कोई भील किसी सवारके घोड़ेको मारलेता है वह पाखरयाके नामसे अपनी क़ौममें बड़ा बहादुर कहलाता है. अगर किसी भीलको सर्कारी मुलाज़िम या राजपूत पाड़ा (भैंसा) कहे तो, वह बहुत खुश होता है, मानो उसको सिंहकी पदवी दी. इस क़ौममें एकता बहुत है. अगर कोई एक भील किलकारी करे, तो उसी वक्त कुल पालके भील चाहे वे उसके दोस्त हों वा दुश्मन दौड़कर मौक़ेपर आ मौजूद होते हैं, और दूरसे एककी किलकारी सुनकर दूसरा भी किलकारी करता है. इसतरह मददके लिये किलकारीकी आवाज़ कई कोसों तक पहुंच जाती है. जब इनके लड़के लड़कियोंकी मंगनी याने सगाई होती है, तो बकरा या भैंसा मारकर मिह्मानोंको खिलाते या शराब पिलाते हैं. अगर मंगनी कीहुई लड़कीकी शादी दूसरी जगह होजावे, तो पहिला पति उस दूसरे पतिसे स्त्रीके एवज़में उसका अथवा उसके किसी सम्बन्धीका जीव लेता है, अथवा पंचायत द्वारा मवेशी या नक्द रुपया ठहरकर आपसमें फ़ैसला होजाता है. मंगनी कीहुई लड़कीका बाप दापेका मामूली रुपया लेता है, लेकिन् ऐसी छीना झपटीमें पहिला पति अपने मनमाना रुपया वुसूल करता है. अगर ब्याही हुई औरतको कोई दूसरा लेजावे, तो भी ऊपर लिखे मुवाफ़िक़ ही फ़ैसला होता है; और विधवा औरत किसीके साथ नाता करलेवे तो पहिले पतिके रिश्तेदार नाता करने वालेसे मामूली दापा लेते हैं, इसके सिवा औरतका बाप भी कुछ हिस्सह लेता है. अगर कुंवारी लड़कीको कोई उड़ा लेजावे, तो लड़कीका बाप दापेका मामूली रुपया लेकर फ़ैसला करलेता है. इन लोगोंको खानेके लिये मक्की, जुवार, और जव तो कम, लेकिन् कूरी, कोदरा, माल, और शमलाई, अधिक मिलता है, जो कि एक क़िस्मका जंगली नाज है; इसके अलावह महुवेको उबालकर खानेमें ये लोग बहुत खुश होते हैं. आम और महुवा इनकी बड़ी जायदाद है. सर्कारी फ़ौजकी चढ़ाईके समय आम और महुवे काटे-जानेपर ये लोग जल्द ही सुलह करलेते हैं. गर्मीके वक्त एक तरहके जंगली गृहस्थ सन्यासी इनके यहां क्रिया कर्म करवाते हैं, जिनको ये लोग बाबा कहते हैं. द्वादशाहके दिन जवकी दो दो बाटी मनुष्य प्रति अपनी जाति वालोंको देते हैं, अथवा एक अंजलि भर मक्कीकी घूघरी देकर शराब पिलाते हैं, और बाज़े भैंसा मारकर मांस भी खिलाते हैं. इस समय हज़ारों भील भीलनियोंके गिरोह एकत्र होकर नाचते और

---

(१) संस्कृतमें बाणका नाम कांड है, और बाण धारण करने वालेको कांडी कहते हैं, लेकिन् अब यह शब्द भीलोंको हिक़ारतके साथ पुकारनेमें बोलाजाता है.

अब हम लोग अहारी नामसे प्रसिद्ध हैं. इसी तरह कागदरके भील अपनेको राठौड़ बतलाकर पीछेसे भील होना बयान करते हैं. नठारा, और बारापालके भील कटार नामसे मश्हूर हैं, पहिले ज़मानहमें ये अपनेको चहुवान राजपूतोंमेंसे होना बतलाते हैं. हमारे ख़यालसे ऐसा मालूम होता है, कि जब बौद्धोंके भयसे बहुतसे क्षत्रिय अर्वली पहाड़में आकर छुपे, उसी समय राजपूतोंका पैवन्द इन भीलोंके साथ हुआ होगा, लेकिन् समयका पूरा पता लगना कठिन है. अर्वलीके पश्चिमोत्तरमें रहने वाले भील गराया (ग्रासिया) कहलाते हैं, और जिस ज़िलेमें वे रहते हैं वह नायरके नामसे प्रसिद्ध है. नायरसे दक्षिण तरफ़ भाडेरका ज़िला है, और उससे पूर्व सोम नदीके किनारेतकका हिस्सह छप्पन कहलाता है. उदयपुरसे केवड़ाकी नाल और जयसमुद्रके बीच वाले मन्पोलनामक पर्वतसे पूर्वका ज़िला मेवलके नामसे मश्हूर है. केवड़ाकी नालसे पश्चिम ज़िलेके रहने वाले भील, और पूर्वमें प्रतापगढ़की सीमातक रहने वाले मीना कहलाते हैं.

इन भीलोंमें रहनेवाले भोमिया लोग अपनेको राजपूत कहते हैं, लेकिन् राजपूतोंके साथ उनका खाना पीना या शादी व्यवहार नहीं है. इन लोगोंका सविस्तर हाल बांसवाड़ा व प्रतापगढ़के असिस्टैंएट पोलिटिकल एजेएट कप्तान सी० ई०येट साहिब, और कप्तान जे० सी० ब्रुक साहिब तथा कर्नेल् सी० के०एम० वाल्टर साहिबने अपनी अपनी किताबोंमें लिखा है. ये लोग महाराणा साहिबकी दीहुई जागीरें खाते हैं, और उदयपुरमें टांका भरनेके सिवा फ़ौजका काम पड़नेपर अपनी अपनी जमइयतके अ़लावह अपने मातहत भीलोंको भी हाज़िर करते हैं. मेवाड़के मगरा ज़िलेमें तीन क़ौमके भोमिया हैं- अव्वल चहुवान, दूसरे सीसोदिया, और तीसरे सोलंखी. चहुवानोंमें दो शाखा हैं, एक बागड़िया और दूसरे पूर्विया. जवास, पाड़ा, छाणी और थाणाके भोमिया बागड़िया चहुवानोंसे निकले हैं. जवासकी जागीरमें ७०, पाड़ाकी जागीरमें ३९, छाणीकी जागीरमें ७, और थाणाकी जागीरमें ७ गांव हैं. छाणी और थाणा जवासके भाई हैं और इनकी जागीरें भी जवासके पट्टेसे ही निकली हैं. ये लोग अपना कुर्सीनामह माणकराव चहुवानसे मिलाते हैं. बागड्योंमें जवासका वर्तमान भोमिया रावत् अमरसिंह; पाड़ाका रावत् लछमणसिंह; छाणीका भोमिया गुमानसिंह; और थाणाका पर्वतसिंह है. दूसरा, पूर्विया चहुवानोंका ठिकाना जूड़ा है. इस ठिकाने वाले अपने पूर्वजोंका आना मैनपुरीसे बतलाते हैं. जूड़ाके पट्टेमें १३५ गांव हैं, और वर्तमान जागीरदार रावत् ज़ोरावरसिंह है. सीसोदियोंका ठिकाना मादड़ी है. ये लोग अपना कुर्सीनामह रावत् सारंगदेवसे मिलाते, और अपनेको कानौड़के भाई बतलाते हैं. इनकी जागीरमें २३ गांव हैं, और वर्तमान रावत्का नाम रघुनाथसिंह है. तीसरे दो मुख्य सोलंखी भोमिया पानड़वा और

गाते भी हैं. नाचने गानेका इन लोगोंमें बड़ा शौक़ होता है. अगर किसी भीलनीका पति अच्छा नहीं नाचता हो, तो ऐसा भी होता है कि वह उसे छोड़कर अच्छे नाचने वालेके साथ नाता करलेती है. प्रतिवर्ष कार्तिक शुक्ल १५ को हरएक खानदानके लोग एकट्ठे होते हैं, और हरएकके बदनमें अपने अपने पूर्वजोंका भाव आता है. ये सब आदमी शराब पीकर खूब उछलते कूदते हैं, और हरएक कहता है, कि मैं अमुक पूर्वज हूं, और मुझे अमुक पालवालेने मारडाला था, जिसका बदला नहीं लिया गया. अगर उस हालतमें उक्त पालके भील मौजूद हों, तो फ़साद भी होजाता है.

कल्याणपुरके ज़िलेमें ओवरी गांवके भील मसार कहलाते हैं, जो अपनी निस्वत यह क़िस्सह बयान करते हैं, कि हम धारके पुंवार राजाकी औलाद हैं, जिसके दो बेटे १ - मसार और २ - डामर थे, जिनमेंसे मसार ओवरीमें और डामर धनकावाड़ामें आरहा. हम लोग कुटुम्ब अधिक बढ़जानेके कारण खेती करते वक्त बैलकी पूंछ मुंहमें लेनेसे बिटल गये, बाद उसके भीलोंमें शादियां करनेसे भील होगये, और बापा नामे अलग अलग गोत होगये, जिनके नाम ये हैं:- हीरोत, तेजोत, और नीबोत. धनकावाड़ाके डामरोंके गोत ये हैं:- खेतात, रतनात, अमरात, मतात, जोगात, रंगात, और नीक्यात.

पारड़ावाले कहते हैं, कि हम पहिले गूजर थे और यहां आरहनेके बाद भीलोंमें शादियां होनेसे भील होगये; हमारी जाति बूज है.

महुवाड़ा, खेजड़, और सराड़ा वाले पारगी जातके भील हैं. ये कहते हैं, कि हम चित्तौड़के उत्तम क़ौमके बाशिन्दोंमेंसे थे. वहांसे हम लोग झाड़ोलमें आरहे और झाड़ोल से पीलाधर और वहांसे खेजड़में आये, जहांपर रोझको मारकर उसका मांस खालेने तथा भीलोंमें शादियां होजानेसे भील बनगये. हम लोग सराड़ाके रखेश्वर महादेवको मानते हैं.

देपराके भीलोंका बयान है, कि पहिले हम सीसोदिया राजपूत थे, पहाड़में आरहने के समयसे भील लोगोंमें विवाह करने लगगये; लेकिन् ख़राब खानेमें हम उनके शामिल नहीं होते, और हम ग्रासिया भील कहे जाते हैं. पडूणा, खरवड़, मांडवा, जावर, चीणा-वदा, सरू, लींबोदा, सींगटवाड़ा, अमरपुरा, और देरवास वग़ैरह पालोंके भील अपनेको रावत् पूंजाके वंशमेंसे बतलाते हैं, और कहते हैं, कि पहिले हम सीसोदिया राजपूत थे, पहाड़में आरहनेके बाद सांभर (शामर) के भ्रममें गायको मारकर खाजानेसे भील होगये. हम खराड़ी जातके भील हैं, और ऋषभदेव, भैरव, हनुमान तथा अंबा भवानीको मानते हैं.

वीलक वाले अपनेको चहुवान राजपूतोंकी हाड़ा शाखमेंसे बतलाते हैं, और कहते हैं, कि हमारे मूल पुरुष हाड़ौतीसे आये थे, और दुष्कालके सबब बिटलकर भील होगये.

अव हम लोग अहारी नामसे प्रसिद्ध हैं. इसी तरह कागदरके भील अपनेको राठौड़ वतलाकर पीछेसे भील होना वयान करते हैं. नठारा, और बारापालके भील कटार नामसे मश्हूर हैं, पहिले ज़मानहमें ये अपनेको चहुवान राजपूतोंमेंसे होना बतलाते हैं. हमारे ख़यालसे ऐसा मालूम होता है, कि जब बौद्धोंके भयसे बहुतसे क्षत्रिय अर्वली पहाड़में आकर छुपे, उसी समय राजपूतोंका पैवन्द इन भीलोंके साथ हुआ होगा, लेकिन् समयका पूरा पता लगना कठिन है. अर्वलीके पश्चिमोत्तरमें रहने वाले भील गराया (ग्रासिया) कहलाते हैं, और जिस ज़िलेमें वे रहते हैं वह नायरके नामसे प्रसिद्ध है. नायरसे दक्षिण तरफ़ भाडेरका ज़िला है, और उससे पूर्व सोम नदीके किनारेतकका हिस्सह छप्पन कहलाता है. उदयपुरसे केवड़ाकी नाल और जयसमुद्रके बीच वाले मन्पोलनामक पर्वतसे पूर्वका ज़िला मेवलके नामसे मश्हूर है. केवड़ाकी नालसे पश्चिम ज़िलेके रहने वाले भील, और पूर्वमें प्रतापगढ़की सीमातक रहने वाले मीना कहलाते हैं.

इन भीलोंमें रहनेवाले भोमिया लोग अपनेको राजपूत कहते हैं, लेकिन् राजपूतोंके साथ उनका खाना पीना या शादी व्यवहार नहीं है. इन लोगोंका सविस्तर हाल वांसवाड़ा व प्रतापगढ़के असिस्टेण्ट पोलिटिकल एजेण्ट कप्तान सी० ई०येट साहिब, और कप्तान जे० सी० ब्रुक साहिब तथा कर्नेल् सी० के०एम० वाल्टर साहिबने अपनी अपनी किताबोंमें लिखा है. ये लोग महाराणा साहिबकी दीहुई जागीरें खाते हैं, और उदयपुरमें टांका भरनेके सिवा फ़ौजका काम पड़नेपर अपनी अपनी जमइयतके अलावह अपने मातहत भीलोंको भी हाज़िर करते हैं. मेवाड़के मगरा ज़िलेमें तीन क़ौमके भोमिया हैं– अव्वल चहुवान, दूसरे सीसोदिया, और तीसरे सोलंखी. चहुवानोंमें दो शाखा हैं, एक वागड़िया और दूसरे पूर्विया. जवास, पाड़ा, छाणी और थाणाके भोमिया वागड़िया चहुवानोंसे निकले हैं. जवासकी जागीरमें ७०, पाड़ाकी जागीरमें ३९, छाणीकी जागीरमें ७, और थाणाकी जागीरमें ७ गांव हैं. छाणी और थाणा जवासके भाई हैं और इनकी जागीरें भी जवासके पट्टेसे ही निकली हैं. ये लोग अपना कुर्सीनामह माणकराव चहुवानसे मिलाते हैं. बागड़ियोंमें जवासका वर्तमान भोमिया रावत् अमरसिंह; पाड़ाका रावत् लछमणसिंह; छाणीका भोमिया गुमानसिंह; और थाणाका पर्वतसिंह है. दूसरा, पूर्विया चहुवानोंका ठिकाना जूड़ा है. इस ठिकाने वाले अपने पूर्वजोंका आना मैनपुरीसे बतलाते हैं. जूड़ाके पट्टेमें १३५ गांव हैं, और वर्तमान जागीरदार रावत् ज़ोरावरसिंह है. सीसोदियोंका ठिकाना मादड़ी है. ये लोग अपना कुर्सीनामह रावत् सारंगदेवसे मिलाते, और अपनेको कानोड़के भाई बतलाते हैं. इनकी जागीरमें २३ गांव हैं, और वर्तमान रावत्का नाम रघुनाथसिंह है. तीसरे दो मुख्य सोलंखी भोमिया पानड़वा और

ओगणा वाले हैं. पानड़वाकी जागीरके गांवोंकी तादाद ४८ है. ये लोग अपना कुर्सीनामह अनहलवाड़ा पट्टनके राजा सिद्धराज सोलंखीसे जा मिलाते हैं, और कहते हैं कि लोहियाना छोड़कर हमारे पूर्वज ७ भाई, याने १- अक्षयसिंह, २- उदयसिंह, ३- अनोपसिंह, ४- जैतसिंह, ५- किशनसिंह, ६- जगत्‌सिंह, और ७- रूपसिंह पहाड़में चलेआये थे, जिनमेंसे जैतसिंहकी औलाद तो ग्रासिया भील हैं और अक्षयसिंह वगैरह दूसरे भाइयोंकी औलादमें हम हैं. पानड़वा वाला कहता है, कि पहिले मेरे पूर्वज रावत् कहलाते थे, परन्तु बादशाहके साथ लड़ाइयां होनेके वक्त अच्छी नौकरी देनेके कारण महाराणा प्रतापसिंहने राणाका ख़िताब बख़्शा. यहांके वर्तमान जागीरदारका नाम अर्जुनसिंह है. ओगणाकी जागीरमें ४५ गांव हैं. इस ठिकानेका वर्तमान जागीरदार अमरसिंह है, जो रावत् कहलाता है. पानड़वा वाले और यह एकही ख़ानदानमेंसे हैं. इसके सिवा पानड़वाके भाइयोंमें ऊमरया, आदीवास, और ओड़ा नामके तीन और भी जागीरदार ठिकाने हैं; जिनमेंसे ऊमरयाके तह्तमें २३ गांव, आदीवासके १० गांव और ओड़ाके ११ गांव हैं, जो इनको पानड़वाके पट्टेसे मिले हैं. ऊपर लिखे हुए ठिकानोंकी भायपमेंसे छोटे छोटे जागीरदार और भी हैं, लेकिन् हमने उनके नाम मज़्मूनको तवालत होनेके सबब नहीं लिखे. मेवाड़के राज्यमें विक्रमी १९४७ [हि० १३०८ = ई० १८९१] की मर्दुमशुमारीके तख़्मीनेसे १३४४२९ भील हैं, जिनकी तफ़्सील इसतरहपर हैः-

भीलोंकी तादादका तख़्मीनह.

१	उदयपुर	२८८३	६	बानसी	४२०४
२	गिरवा	१२३९३	७	झाड़ोल	६३८१
३	मगरा, सराड़ा	२४३३२	८	धरयावद	२३८१५
४	सलूंबर	८२९३	९	खैरवाड़ा, भोमट	३४१६९
५	कानोड़	२१६६	१०	कोटड़ा, भोमट	१३८३३

मीनोंका हाल.

मीना लोग मेवाड़के ज़िले जहाज़पुर और मांडलगढ़के पर्गनोंमें कस्रत से आबाद हैं. हमने इनका मुफ़स्सल हाल रॉयल एशियाटिक सोसाइटी बंगाल (कलकत्ता) के जर्नल सन् १८८६ ई० में लिखा है, और यहां मुख्तसर तौरपर लिखते हैं:–

'मीना' शब्द 'मेवना' से बना है, जिसका अर्थ मेवका, अथवा मेवके वंशका है. मेव (मेद) एक पुरानी क़ौम है, जो पहिले मेवाड़के मेवल प्रांतमें रहती थी, और 'ना' गुजराती भाषाका प्रत्यय है, जो हिन्दी भाषाके प्रत्ययकी जगहपर आता है. मीनोंकी उत्पत्ति उत्तम वर्णके पुरुष और नीच वर्णकी स्त्रीसे है. इन लोगोंकी १४० शाखा हैं, उनमेंसे नीचे लिखी हुई १७ शाखा मुख्य हैं:–

१– ताजी, २– पवड़ी, ३– मोरजाला, ४– चीता, ५– हुणहाज, ६– बरड़, ७– बेगल, ८– काबरा, ९– डांगल, १०– घरटूद, ११– भूड़वी, १२– कीड़वा, १३– धोधींग, १४– भील, १५ बोपा, १६– मोठीस, और १७– परिहार (पडिहार). इन १७ मेंसे दो शाखावाले याने मोठीस और परिहार मेवाड़के इलाक़हमें बहुत फैलेहुए हैं. इनके सिवा केवड़ाकी नाल और जयसमुद्रके पूर्व प्रतापगढ़की सीमातक रहनेवाले भी मीने कहलाते हैं, लेकिन् ये लोग भीलोंमें शादी करलेते हैं, इसलिये इनको कितनेएक लोग भील भी कहते हैं; परन्तु भीलोंकी और इन (मीनों) की चाल ढाल और कुछ कुछ शरीरकी बनावटमें भी फ़र्क़ है. मीनोंका एक फ़िर्क़ा उदयपुरसे वायव्य कोण ज़िले गोड़वाड़में आबाद है, जो ज़िला कुछ वर्ष हुए मेवाड़से मारवाड़में चलागया है. इन सबमें जहाज़पुर और मांडलगढ़के मीने बहादुर और नामी लुटेरे हैं. ये लोग तलवार, कटार, तीर, कम्ठा, और बन्दूकें भी रखते हैं. लड़ाईके वक्त जिसतरह भील किल्कारी करते हैं उसी तरह खैराड़के मीने डुडकारी याने डू डू डू डू करते हैं, और इनको ढेढ़ कहकर पुकारनेमें ये अपनी हिक़ारत समझते हैं. ये लोग महादेवको ज़ियादह मानते हैं. परिहार मीने सूअर नहीं खाते, बाक़ी सब प्रकारका मांस खाते हैं, परन्तु मोठीस वग़ैरह दूसरी क़ौमके मीने सूअरको भी खाजाते हैं. मोठीस मीने अपने पूर्वज माला नामी जुझारको बहुत मानते हैं, और अक्सर सौगन्ध भी उसीकी खाते हैं. सन् १८९१ ई० की मर्दुमशुमारीमें मेवाड़के मीनोंकी तादाद २००३२ गिनी गई है.

मेरोंका हाल.

मेर लोग अपनी उत्पत्तिका हाल कहानीके तौरपर बयान करते हैं, जिसपर हम

पूरा पूरा भरोसा नहीं कर सक्ते. इस कौमका हाल अच्छी तरह दर्याफ़्त नहीं किया- गया, इसलिये नीचे लिखा हुआ हाल स्केच ऑफ़ मेरवाड़ा नामकी किताबसे मुख्तसर तौरपर लिखाजाता है:–

मेर लोग अपनी उत्पत्ति अजमेरके राजा पृथ्वीराज चहुवानसे इस तरहपर बतलाते हैं, कि एक दफ़ा पृथ्वीराजने बूंदीपर हमलह किया था उस वक्त वहांसे तीजकी पूजा करती हुई सहदे नामक एक लड़कीको जो आसावरी जातिकी मीनी थी, पकड़कर लेगया, और उसे हाड़ा राजपूतकी लड़की जानकर अपने बेटे जोध लाखणको सौंपदी. जोध लाखणसे उसके अनहल और अनूप नामके दो लड़के पैदा हुए. कई वर्ष पीछे जब जोध लाखणको सहदेकी कुलीनतामें सन्देह हुआ, और उसने इस विषयमें उससे पूछा, तो सहदेने अपनेको आसावरी जातिकी मीनी होना बयान किया. इसपर जोध लाखणने नाराज़ होकर सहदेको उसके दोनों लड़कों समेत निकालदिया. तब वह अपने दोनों बेटों सहित मेरवाड़ा ज़िलेके चंग ग्राममें चंदेला गूजरोंके पास आरही. पांच पीढ़ीतक अनहल और अनूपके वंशवाले उसी ग्राममें रहते रहे, और अख़ीरमें वहांके गूजरोंको मारकर वह ग्राम (चंग) उन्होंने छीन लिया. अनहलकी पांचवीं पीढ़ीमें कान्हा और काला नामके दो लड़के पैदा हुए, जिनमें कान्हासे चेता और काला से बड़ नामी दो शाखा निकलीं. इसके पीछे जोध लाखणके वंशवालोंने कान्हा और कालाको उनके साथियों सहित मारडालनेके लिये चंगपर फ़ौज भेजी, उस समय कान्हा और काला वहांसे भागकर टॉडगढ़ ज़िलेके चेटण ग्राममें जाबसे, और वहां जानेके बाद इन दोनों (कान्हा और काला) के वंशवाले आपसमें विवाह सम्बन्ध करने लगगये. कुछ दिनों पीछे काला तो मेवाड़के कैलवाड़ा ग्राममें जारहा, और कान्हा पीछा चंगमें चलाआया, पीछे इसके वंश वालोंने मीना, भील, और धाकड़ मीना आदि जातियोंकी लड़कियोंसे विवाह करना शुरू करदिया. इस तरहपर २४ शाखा कान्हाके वंशवालों (चेतों) की और २४ काला (बड़ों) की मिलाकर मेरोंकी ४८ शाखा हुईं.

चेता वंशमेंसे हीरा नामी एक मेर बादशाह आलमगीरके ज़मानहमें दिल्ली जाकर बादशाही नौकरी करने लगा, वहांपर अच्छी नौकरी करनेके सबब उसको 'कट्टा' (मज़्बूत) का ख़िताब मिला, और इसके बाद वह बादशाहको खुश करनेके लिये मुसल्मान होगया, फिर उसने चंगमें वापस आकर अपनी औलादको भी मुसल्मान बनादिया. इसी तरह इलाके अजमेरके करील गांवमें रहनेवाला एक दूसरा ख़ानदान भी मुसल्मान होगया, जिसने ज़िले अजमेरमें कई गांव अलाउद्दीन गौरीसे जागीरमें पाये. इस रीतिसे ये लोग मेर जातिमेंसे मुसल्मान हुए.

इस जातिके विषयमें ऐसा भी कहते हैं, कि जोध लाखण और सहदेकी औलाद सिवा मेरोंकी कई एक शाखें उत्तम वर्णके लोगोंसे बनी हैं, जो किसी सबबसे पहाड़ोंमे आबसने और मेरोंके साथ रहनेसे इन लोगोंमें मिलगये, जिसका हाल इस-तरहपर कहागया है, कि अलाउद्दीन ग़ौरीने जब चित्तौड़पर हमलह किया, और मेवाड़को लूटा, उस समय गुहिलोत वंशके दो राजपूत भागकर मेरवाड़ा ज़िलेमें सारोठके पास बूरवा ग्राममें जाबसे, उनमेंसे एकने वहांपर मीना जातिकी स्त्रीसे शादी करली, और उसके बारह बेटे हुए जिनसे बारह शाखें उत्पन्न हुईं; और दूसरा भाई अजमेरके ज़िलेमें जारहा, जो भी उसके हाथसे गोहत्या होजानेके सबब भागकर पहाड़ोंमें जा रहा, और उससे मेरोंकी ६ शाखा निकलीं.

मोठीसोंकी उत्पत्तिके विषयमें ऐसा कहते हैं, कि भायलां ग्राममें रुगदास नामी वैरागी के पास एक बनजारी औरत रहती थी, जिसके दो बेटे पैदा हुए, उस बनजारीने उनको रुगदासकी औलाद होना ज़ाहिर किया. इसपर रुगदासने उस औरतको लड़कों समेत अपने यहांसे निकाल दिया, तब वह बनजारी एक ब्राह्मणके घर जारही. जब लड़के बड़े होगये, तो ब्राह्मणने उन्हें गऊ चरानेपर मुक़र्रर किया, परन्तु उन लड़कोंने एक गाय मारडाली इस सबबसे उस ब्राह्मणने भी उनको अपने घरसे निकाल दिया. इन लड़कोंकी पांचवीं पीढ़ीमें माकूत नामी एक शख़्स पैदा हुआ, जिसने ज़िले भायलांके तमाम ब्राह्मणोंको मारकर उस ज़िले पर अपना क़बज़ह करलिया. माकूतको उसके वंशके (मोठीस) लोग अबतक पूजते हैं; पहिले ये लोग वर्षमें एक बार उसके मन्दिरमें गौका बलिदान किया करते थे. माकूतके हाथसे बचा हुआ एक ब्राह्मण बरड़ ग्रामके धाकड़ मीनोंमें जाबसा था, और वहांपर उसने मीना जातिकी स्त्रीके साथ विवाह करलिया, जिससे धाकड़ मेरोंकी कई शाखें उत्पन्न हुईं.

मेर लोग अपनेको हिन्दू बतलाते हैं, परन्तु हिन्दू धर्मके नियमोंपर पूरे पाबन्द नहीं हैं. वे देवी, देवजी, आलाजी, शीतला माता, रामदेवजी और भैरवको पूजते हैं; और होली, दिवाली तथा दशहराका त्यौहार मानते हैं. उनकी ख़ास ख़ुराक मक्की, जव, और भेड़ी, गाय, बकरा तथा भैंसेका मांस है. मेर लोग सूअर, हरिन, मछली और मुर्ग़ेका मांस नहीं खाते. इस क़ौममें विवाह सम्बन्ध वग़ैरह हिन्दुओंके मुवाफ़िक़ ही होते हैं. यदि कोई इनके यहां मरजावे तो ये उसका कस्यावर करते हैं, जिसमें अपनी सब जातिको बुलाते हैं. ये लोग भूत डाकिन वग़ैरहको भी मानते हैं. पहिले ज़मानहमें मेर लोग अपने लड़के लड़कियों और ख़ासकर औरतोंको गाय भैंसकी

तरह बेचदिया करते थे, बल्कि यह भी रवाज था, कि बापके मरनेके पीछे बेटा अपनी माताको बेचदेता. इसके सिवा ये अपनी लड़कियोंको मार भी डाला करते थे; परन्तु इस समय लड़कियोंका मारना वगै़रह बहुतसी बुरी रस्में बन्द करदीगई हैं. इन लोगोंमें बड़ा भाई छोटे भाईकी विधवा स्त्रीको घरमें नहीं डाल सक्ता, परन्तु छोटा भाई बड़े भाईकी औरतसे नाता करलेता है. विवाहमें लग्नके वक्त ये लोग गुरुको ७), ढोलीको ४०) और बेटीके बापको १०६) रुपये देते हैं. ख़ाविन्दके मरजानेपर उसका बारहवां होनेके पीछे औरतके सामने लाल और सिफ़ेद रंगकी दो ओढ़नियां डालदीजाती हैं, अगर वह लाल चूंदड़ी पसन्द करे, तो समझलियाजाता है, कि नाता करनेकी इच्छा रखती है, और उसका देवर उसको अपने घरमें डाललेता है. अगर वह औरत अपने देवरके घरमें रहना न चाहे, तो दूसरेसे नाता करसक्ती है, परन्तु इस हालतमें नाता करनेवाला उसके हक़दार वारिसको २००) से ५००) तक रुपये देता है. अगर स्त्रीकी इच्छा नाता करनेकी नहीं होती, तो वह सिफ़ेद ओढ़नी पसन्द करलेती है.

मेर जातिमें यह क़ाइदह है, कि ये लोग अक्सर कोई दुःख अथवा आपत्ति आन पड़नेपर सर्दार लोगोंके यहां जाकर उनके गुलाम हो जाते हैं, जो तीन प्रकारके होते हैं, एक चोटीकट, दूसरे बसी अथवा बसीवान, और तीसरे अंगुलीकट. जो शख़्स चोटीकट गुलाम बनना चाहता है वह अपनी चोटी काटकर सर्दारको देदेता है, और वह सर्दार उसको अपनी रक्षामें रखलेता है. चोटीकट गुलामकी गै़र मौजूदगीमें उसकी तमाम जायदाद और माल अस्बाबका मालिक सर्दार होता है, बल्कि चोटीकट अपनी कमाईका चौथा हिस्सह अपने मालिकको देता रहता है. बसीवान और चोटीकटमें केवल इतना भेद है, कि बसीवानकी बाबत् लिखापढ़ी होती है और चोटीकटमें सिर्फ़ चोटी ही काटदी जाती है. इसके सिवा यह भी बात है, कि सब जातियोंकी तरह बसीवान तो मुसल्मान शख़्स भी होसक्ता है, परन्तु (चोटी न रखनेके कारण) वह चोटीकट नहीं होसक्ता. अंगुलीकट गुलाम वह कहलाता है, जो गुलाम बननेके समय अपने हाथकी अंगुली काटकर मालिकके हाथमें थोड़ासा लोहू टपका देता है, और इसके बाद मालिक और गुलामके बीचमें बाप बेटेकासा भाव माना जाता है; परन्तु अंगुलीकटके माल जीविकापर मालिकका दावा नहीं होसक्ता.

मेरोंमें यह क़ाइदह है, कि गुलाम अपने मालिककी जायदाद समझा जाता है; और यह भी दस्तूर है, कि एक मालिकके लौंडी गुलाम आपसमें भाई बहिनके समान माने जाते हैं, उनके आपसमें विवाह नहीं होता.

मेर लोग मरनेमें बड़े बहादुर होते हैं, वे अपनी और दूसरेकी जानको कुछ ख़यालमें

नहीं लाते. ऑरतकी .इज़त बिगाड़ने वालेको ये जानसे मारडालते हैं, शस्त्रोंमें तलवार और ढाल रखते हैं, और वैर पीढ़ियोंतक नहीं भूलते. ये लोग बड़े मिहनती, मज़बूत, चालाक और शरीरमें लम्बे चौड़े तथा पुष्ट होते हैं, और किसी बातसे नहीं डरते, यहांतक कि शेरपर तलवारसे वार करते हैं, परन्तु बहादुरीका घमंड नहीं जताते.

हमने ऊपर लिखी हुई जंगली क़ौमोंका हाल मुख़्तसर तौरपर लिखा है, जिनसे चारों तरफ़ मेवाड़का .इलाक़ह घिरा हुआ है. इन क़ौमोंके अलावह जंगलमें रहने वाले वनजारा, कालबेलिया, सांसी, साटिया, कांजर, बागरिया, और लुहार वगैरह और भी लोग हैं, जो सदैव एक स्थानपर जमकर नहीं रहते बल्कि .इलाक़ोंमें फिरते रहते हैं.

वनजारोंमें कई भेद हैं, जिनमें तीन मुख्य मानेजाते हैं- हैवासी, गवारिया और भाट. हैवासी मुसल्मान, और गवारिया नीच जातिमेंसे हैं. ये लोग बैलोंपर नमक और नाज वगैरह लादकर दूर दूर मुल्कोंमें पहुंचाते, और जंगलमें तम्बू तानकर रहते हैं.

कालबेलिया लोग, जो कापालिक मतके नाथ जोगी कहलाते हैं, केवल नामके जोगी हैं, वर्नह अस्लमें इनको नीच जातिमेंसे समझना चाहिये. ये लोग सांपोंको पकड़कर बांसके पिटारोंमें लिये फिरते हैं, जिनको लोगोंके सामने पूंगी बजाकर खिलाते, और ख़ास इसी ज़रीएसे रोटी टुकड़ा या पैसा वगैरह मांगकर अपना गुज़र करते हैं. इन लोगोंमें भैंसा वगैरह हरएक जानवरका मांस खाते और शराब पीते हैं. बाज़े लोग इनमें अच्छे बन्दूक़ लगाने वाले शिकारी भी होते हैं. इनके रहनेकी कोई ख़ास जगह नहीं है, बस्तीसे दूर जंगलमें जहां कहीं जी चाहता है रहते हैं.

सांसी और साटिया, ये दोनों क़ौमें चालचलन और रीति व्यवहारमें एकसी हैं, जो कांजरोंकी तरह जंगलमें रहती और बस्तियोंमेंसे रोटी टुकड़ा मांगकर या भंगियों के यहांकी जूठन (उच्छिष्ट भोजन) से अपना पेट भरती हैं. साटियोंमें अगर्चि कई लोग मालदार होते हैं, तो भी वे अपने दूसरे जातिवालोंकी तरह बस्तीके टुकड़े खाकर और सिर्फ़ एक लंगोटी पहरकर गुज़र करते हैं. इनमें यह एक विचित्र दस्तूर है, कि गाय, भैंस और बैल वगैरह जानवरोंके एवज़ आपसमें एक दूसरेकी औरतको लेते देते हैं, और इसके सिवा कुछ रुपया लेकर बूढ़ी .औरतके .एवज़ जवान .औरत बदल देनेका भी रवाज है. ये लोग चोरी और डकैती भी करते हैं.

कांजर अस्लमें गूजर और मीनोंके भाट हैं, जो उन लोगों की वंशावली ज़बानी तौरपर याद रखते हैं, और इनकी स्त्रियां नट विद्याके तमाशे करती हैं. इन लोगोंमें बहती हुई नदीका पानी नहीं पीते, इनका ख़याल है, कि नदीका पानी पीनेसे वंशावली याद नहीं रहती. इनकी लड़कियां जो खिलाड़ी कहलाती हैं तीस तीस वर्षकी होनेपर व्याही जाती हैं, और जबतक बापके घर रहती हैं अपनी सारी कमाई, याने नाच गाकर बस्तीमेंसे जोकुछ रोटी टुकड़ा, नाज और पैसे वगैरह मांग लाती हैं, मा बापोंको ही देती हैं. इनका पहराव सूथन याने पायजामा और दुपट्टा (ओढ़नी) है. जब ये लड़कियां नाचती हैं तो मर्द इनके साथ ढोलकी बजाते हैं. कालबेलियों और सांसियोंकी तरह ये भी सरकियां तानकर जंगलमें रहते हैं, और मौक़ा पाकर चोरी भी कर बैठते हैं.

बागरिया - इन लोगोंका चाल चलन अक्सर सांसी और साटिया लोगोंके मुवाफ़िक़ ही है, लेकिन् सुना जाता है, कि इनकी औरतें व्यभिचार नहीं करतीं. जब किसी अवसरपर ये लोग एकट्ठे होते हैं, तो लोहेकी कढ़ाईमें तेल औटाकर उसमें एक छल्ला डालदेते हैं, जिसको हरएक औरत उस औटते हुए तेलमेंसे निकालती है. इन लोगोंका ख़याल है, कि जिस औरतने व्यभिचार किया होगा, उसका हाथ जलेगा, और जिसका हाथ जल जाता है उसको बिरादरीके लोग दण्ड देते हैं. ये लोग भी जंगलोंमें रहते और टुकड़े मांग खाते हैं.

गाड़ोलिया लुहार, जो घर बनाकर एक जगह नहीं रहते, किन्तु गाड़ियोंमें अपना डेरा डांडा लादकर ऊपर लिखी हुई जातियोंकी तरह जगह जगह फिरते रहते हैं, लोहेकी घड़ाईसे गुज़र करते हैं. ये कहते हैं, कि हम पहिले ज़मानहमें चित्तौड़-गढ़पर बस्ते थे, लेकिन् जब मुसलमानोंके हमलोंसे चित्तौड़ ऊजड़ होगया, तो हम भी वहांसे निकल भागे; अब जबकि मेवाड़के महाराणा चित्तौड़को फिरसे राजधानी बनाकर राज्य करेंगे उस समय हम भी वहां घर बनाकर रहेंगे.

अब हम यहांपर हिन्दुस्तानकी जातियोंके विषयमें थोड़ासा हाल यूनानके एल्ची मेगस्थिनीज़का लिखा हुआ दर्ज करते हैं, जो उसने हिन्दुस्तानमें आनेके समय लिखा था.

वह लिखता है, कि इस समय हिन्दुस्तानमें ७ जाति विभाग हैं, जिनमें पहिला

वर्ग फ़ेल्सूफ़ लोगों (तत्वेत्ता) का है. ये दरजेमें सबसे अव्वल हैं, परन्तु संख्यामें कम हैं. इनके द्वारा सब लोग यज्ञ या धर्म सम्बन्धी कार्य करते हैं. राजा लोग नये वर्षके प्रारम्भपर सभा करके इनको बुलाते हैं, जहां ये अपने किये हुए उत्तम कामोंको प्रगट करते हैं.

दूसरा वर्ग कृषिकारों (खेती करनेवालों) का है, जो ज़मीनको जोतते बोते हैं, और शहरमें नहीं रहते. इनका रक्षण लड़ने वाली क़ौमें करती हैं.

तीसरा वर्ग ग्वाल और शिकारियोंका है. ये लोग चौपाये रखते, शिकार करते, और बोये हुए बीज खाने वाले जानवरोंको मारते हैं, जिसके एवज़में उनको राज्यकी तरफ़से नाज मिलता है.

चौथे वर्गमें वे लोग हैं, जो व्यापार करते, वर्त्तन बनाते, और शारीरिक मिह्नत करते हैं. इनमेंसे कितनेएक लोग अपनी आमदनीका कुछ हिस्सा राज्यको देते हैं, और मुक़र्रर कीहुई नौकरी भी करते हैं. शस्त्र और जहाज़ बनाने वालोंको राज्यकी तरफ़से तन्ख़्वाह मिलती है. सेनापति सिपाहियोंको शस्त्र देता है, और नौका-सेनापति मुसाफ़िरों तथा व्यापारकी चीज़ोंको एक जगहसे दूसरी जगह पहुंचानेके लिये जहाज़ किराये देता है.

पांचवां वर्ग लड़ने वालोंका है. जब लड़ाई नहीं होती है, तो उस हालतमें ये लोग अपना वक्त नशे और सुस्तीमें गुज़ारते हैं, और इनको कुल ख़र्च राजाकी तरफ़से मिलता है, इस कारण जिसवक्त लड़ाई हो उसवक्त जानेको तय्यार होते हैं.

छठा वर्ग निगरानी रखने वालोंका है. ये लोग सब जगहकी निगरानी रखकर राजाको गुप्त रीतिसे ख़बर देते हैं. इनमेंसे कितनेएक शहरकी और कितनेएक सेनाकी निगरानी रखते हैं. सबसे लाइक़ और भरोसे वाले आदमी निगरानीके उह्दोंपर रक्खे जाते हैं.

सातवां वर्ग वह है, जिसमें राजाके सलाहकार या सभासद होते हैं, जो इन्साफ़ वग़ैरह बड़े बड़े कामोंपर नियत कियेजाते हैं.

इन फ़िर्क़ोंमेंसे न कोई अपनी जातिके बाहिर शादी करसक्ता, न अपना पेशह (वृत्ति) छोड़कर दूसरोंका पेशह इख्तियार करसक्ता, और न एकसे ज़ियादह पेशह करसक्ता है, परन्तु फ़ेल्सूफ़ (तत्वेत्ता) लोगोंके लिये यह नियम नहीं है, क्योंकि उनको अपने सद्गुणोंके सबब इतनी आज़ादी है.

अब हम क़ौमोंका हाल पूरा करनेके बाद सर्व साधारण तौरपर हिन्दुस्तानका रीति रवाज लिखते हैं, जिससे पाठकोंको मालूम होगा, कि पुराने ज़मानह और ज़मानह

हालके रीति रवाजमें कितना फ़र्क़ पड़गया है. सिकन्दरके साथी जहाज़ी सेनापति नियार्कस और पंजाबके गवर्नर शेल्यूकसके एल्ची मेगस्थिनीज़के लेखका जो खुलासह आरियन लिखता है, उसका सारांश हम नीचे लिखते हैं:–

हिन्दुस्तानके लोग अनपढ़ आदमियोंको ज़ियादह पसन्द नहीं करते, उनके यहां चोरी बहुत कम होती है. चंद्रगुप्तकी छावनीमें ४००००० आदमी रहते थे, परन्तु वहां एक दफ़ा सिर्फ़ २०० द्रम्म (१) की चोरी हुई थी; लेन देनमें हिसाब किताब, गवाही, ज़मानत या मुहर करनेकी कुछ ज़रूरत नहीं रहती, और न उनको अदालत में जाना पड़ता है. लेन देनका काम विश्वासपर चलता है, उनके घर और जीविकाकी हिफ़ाज़तके लिये पहरा चौकी नहीं रखना पड़ता; वे शरीरको मुद्गर वग़ैरह फिराकर श्रम देते हैं, ज़ेवर पहिनना और शरीरकी शोभा दिखलाना ज़ियादह पसन्द करते हैं; उनके अंगरखे सुनहरी कामके और रत्नजड़ित होते हैं; ख़िझतगार लोग छत्री लेकर इनके पीछे पीछे चलाकरते हैं, और ये हर तरहसे अपने चिहरेको खूबसूरत रखनेकी कोशिश करते हैं; सत्य और सद्गुणकी इज़्ज़त बराबर करते हैं, और बहुतसी औरतोंसे शादियां करते हैं. यज्ञके वक़्त कोई सिरपर मुकुट नहीं रखता, और यज्ञ पशुको सांस रोककर मारते हैं (२), झूठी साक्षी देने वालोंको बड़ी सज़ा होती है; यदि कोई किसीका अंग भंग कर-डाले, तो इस अपराधके एवज़ उसका वही अवयव ख़ारिज कियाजानेके सिवा सज़ाके बदलेमें एक हाथ भी काटडाला जाता है; कारीगरका हाथ काटने और आंख फोड़नेपर अपराधीको मौतकी सज़ा होती है. इनके यहां बहुधा गुलाम नहीं रक्खे जाते (३), राजाके शरीरकी

---

(१) यह साढ़ेतीन माशा वज़नका एक चांदीका सिक्का है.

(२) इसके मुंहमें जव और तिल भरकर दर्भसे मुंह बांधनेके बाद अण्डकोशपर मुक्की मारकर मारडालते हैं.

(३) हमारे धर्म शास्त्रके ग्रंथोंमें दास लिखे हैं, परन्तु वे गुलामोंकी तरह पराधीन नहीं थे, किन्तु नौकरकीसी स्वतन्त्रता रखते थे, और वे शास्त्रमें पन्द्रह तरहके लिखे हैं– १– गृहजातः (दासीपुत्र), २–क्रीतः (ख़रीदा हुआ), ३–लब्धः (मिलाहुआ), ४– दायप्राप्तः (हिस्सेमें आयाहुआ), ५–अन्नाकाल भृतः (दुष्कालमें पाला हुआ), ६–आहितः (गिरवी रक्खाहुआ), ७–मोक्षितः (क़र्ज़ेसे छुड़ाया हुआ), ८– युद्ध प्राप्तः (लड़ाईमें पकड़ाहुआ), ९–पणेजितः (जूएमें जीताहुआ), १०–स्वयंदासः (दिलसे दास बनने वाला), ११– सन्न्यास भृष्टः (सन्न्याससे भृष्ट हुआ), १२– कृतकः (किसी निमित्त अवधिके साथ दास किया हुआ), १३–भक्तदासः (प्रीतिसे दास हुआ), १४–बडवाहृतः (दासीके लोभसे दास हुआ), और १५ आत्म विक्रयी (खुद बिका हुआ).

रक्षा औरतोंके आधीन है. राजा दिनमें नहीं सोते, और रातमें कई जगह बदलते हैं; सिवा लड़ाईके इन्साफ़, यज्ञ, और शिकारके लिये भी राजा महलोंसे बाहिर निकलते हैं. शिकारके वक्त बहुतसी औरतें राजाके पास रहती हैं, और उनके पीछे भालावाले आदमी रहते हैं. रास्तोंपर रस्सियां बांधी जाती हैं; ढोल नक़ारे वाले लोग आगे चलते हैं. ऊंचे बनेहुए स्थानसे जब राजा शिकारपर तीर चलाता है, तो दो तीन शस्त्रबंध औरतें उसके पास खड़ी रहती हैं, और चौड़ेमें हो, तो हाथीपर सवार होकर शिकार खेलता है. शिकारके समय स्त्रियां हाथी, घोड़े और रथोंपर सवार होकर साथ रहती, और सब प्रकारके शस्त्र रखती हैं. इन लोगोंमें सिवा यज्ञके सुरा नहीं पीते (१), और रूईके वस्त्र पहिनते हैं. नीचेकी पोशाक (धोती) घुटने और पिंडलीके बीचतक होती है, और एक दुपट्टा सिरपर बांधकर उसका कुछ हिस्सा कंधेपर डाललेते हैं. धनाढ्य लोग कानोंमें हाथीदांतके कुण्डल पहिनते हैं, और डाढ़ीको सिफ़ेद, आस्मानी, लाल, बैंगनी अथवा हरी, अपनी इच्छाके अनुसार रंगलेते हैं, और सिफ़ेद चमड़ेके मोटे तलेवाले जूते पहिनते हैं; लड़ाईके वक्त आदमीके क़दकी बराबर बड़ा धनुष और क़रीब तीन गज़ लंबा तीर पैदल आदमी काममें लाते हैं, और तीर छोड़ते वक्त धनुषको ज़मीनपर टेककर बाएं पैरसे दबाते हैं. हिन्दुस्तानियोंके तीरको ढाल, कवच वग़ैरह कोई चीज़ नहीं रोक सक्ती. चौड़े फलकी तलवार जो तीन हाथसे ज़ियादह न हो, हरएक आदमीके पास रहती है, और बाज़े भाला भी रखते हैं. नज़्दीकी लड़ाईमें तलवारको दोनों हाथोंसे पकड़कर मारते हैं. सवारोंके पास दो दो भाले रहते हैं. हिन्दुस्तानी आदमी क़दमें ऊंचे और पतले और कम वज़नके होते हैं. हाथीकी सवारी इनमें अव्वल दरजहकी गिनीजाती है, और दूसरे दरजेपर रथ, तीसरेपर ऊंट और इसके बाद घोड़ेकी सवारी है. जब लड़की ब्याहनेके योग्य होती है, तो उसका पिता उसे आम लोगोंके सामने ले आता है, और दौड़ने तथा कुश्ती वग़ैरहके इम्तिहानोंमें जो शख़्स तेज़ निकलता है, उसीके साथ अपनी लड़कीको ब्याह देता है (२). यहांके लोग मांस नहीं खाते, नाजसे गुज़र करते हैं.

चीन देशके यात्री जो हिन्दुस्तानमें आये उन्होंने भी अपनी अपनी किताबोंमें हिन्दुस्तानके रीति रवाजका कुछ वर्णन किया है. ईसवी सन्‌की चौथी सदीके विषयमें

---

(१) सौत्रामणि यज्ञमें सुरा पीते थे.

(२) यह स्वयंवरकी रीति है, जो कि रामचंद्रने सीताको और अर्जुनने द्रौपदीको ब्याहनेके समय की थी; प्राचीन समयमें यह रवाज ज़ियादहतर क्षत्रियोंमें था, जो आठ प्रकारके विवाहोंमेंसे एक है.

फ़ाहियान लिखता है, कि मध्य देशके लोग सुखी हैं, और उनपर कोई कर नहीं है. जो लोग राज्यकी ज़मीन बोते हैं वे अपनी आमदनीका कुछ हिस्सह राजाको देते हैं. राजा लोग अपराधियोंको मौतकी सज़ा नहीं देते, उनके कुसूरोंके मुवाफ़िक़ दंड देते हैं. बार बार उपद्रव करनेपर अपराधीका दाहिना हाथ काटडालते हैं. राजाके शरीरकी रक्षा करने वालोंको मुक़र्रर तनूख़्वाहें मिलती हैं. चांडालोंके सिवा कोई आदमी जीतेहुए जानवरोंको नहीं मारते, न शराब पीते और न पियाज़ लहसुन खाते हैं. चांडाल लोग बस्तीसे अलग रहते हैं, और जब शहर या बाज़ारमें जाते हैं, तो बांसकी लकड़ी खटकाते हुए चलते हैं, कि जिससे उनको कोई भींटे नहीं. सिर्फ़ चांडाल लोगही शिकार करके मांस बेचते हैं.

दूसरा चीनी मुसाफ़िर ह्युएन्त्संग जो ईसवी सन् की ७वीं सदीमें हिन्दुस्तानमें आया था, लिखता है, कि यहांके लोगोंके वस्त्र काट छांटकर नहीं बनाये जाते, मर्द अपने पहिननेके कपड़ोंको कमरसे लपेटकर कन्धोंपर डाललेते हैं, औरतोंकी पोशाक ज़मीनतक लटकती रहती है, और वे अपने कन्धोंको ढक लेती हैं. ये लोग केशोंका थोड़ासा हिस्सा बांधकर बाक़ीको लटकते रखते हैं. कितनेएक आदमी मूछ कटवा डालते हैं, सिरपर टोपा और गलेमें फूलों तथा रत्नोंकी माला पहिनते हैं. इनके पहिननेके वस्त्र रूई, रेशम सण, और ऊनके बनेहुए होते हैं. उत्तर हिन्दुस्तानमें जहां ठंढ ज़ियादह पड़ती है, वहांके लोग तंग कपड़े पहिनते हैं. कई आदमी मोरपंख धारण करते हैं, कई खोपरियोंकी माला पहिनते हैं, और कितनेएक नंगे रहते हैं. कई ऐसे हैं, जो दरख़्तोंके पत्ते और छालसे अपना शरीर ढकलेते हैं. बाज़े लोग अपने केश उखेड़ डालते हैं, और मूछें कटवाडालते हैं. श्रमण लोगों (बौद्धोंके भिक्षु) के पहिननेके वस्त्र उनके मतोंके अनुसार न्यारे न्यारे तीन तरहके होते हैं; राजा और बड़े बड़े मंत्री लोग भी अलग अलग तरहके ज़ेवर और पोशाकें पहिनते हैं. धनाढ्य व्यापारी लोग सुवर्णके कड़े वग़ैरह ज़ेवर पहिनते हैं. वे लोग बहुधा नंगे पैर चलते, माथेपर चंदन लगाते, दांतोंको लाल और काले रंगते, केशोंको बांधते और कानोंको बींधते हैं.

इस समय मनुष्य बलि भी बाज़ बाज़ जगह होता था. ह्युएन्त्संगके जीवन-चरित्रमें लिखा है, कि जब वह अयोध्यासे रवानह होकर अस्सी मुसाफ़िरोंके साथ जहाज़में बैठकर गंगाके रास्तेसे हयमुखकी तरफ़ जारहा था, तो क़रीब १०० ली (१) दूर जानेपर अशोकवनकी एक छायामें डाकुओंकी १० किश्तियां छुपी हुई मिलीं,

(१) एक मील क़रीब क़रीब छः ली के बराबर होता है.

जिन्होंने आकर उनके जहाज़को घेरलिया, और माल अस्वाब लूटने लगे. ये डाकू दुर्गाके भक्त होनेसे मनुष्य बलि किया करते थे. उन्होंने ह्युएन्त्संगको शरीरका पुष्ट देखकर इस कामके लिये पकड़ लिया, और दरख़्तोंके एक कुंजमें तय्यारकी हुई वेदीपर लेगये, जहां डाकुओंके सर्दारने उसके मारनेके लिये दो आदमियोंको छुरी निकालनेका हुक्म दिया; जब वे मारनेको तय्यार हुए, ह्युएन्त्संग उनकी इजाज़तसे बोधिसत्व-मैत्रेयका स्मरण करने लगा. इतनेमें एकदम ऐसा तूफ़ान आया, कि दरख़्त गिरने लगे, चारों तरफ़से धूल उड़ने लगी, और नदीके पानीमें किश्तियां टकराने लगीं. इससे डाकू लोगोंने डरकर उसे छोड़दिया, और मुआफ़ी मांगी.

मनुष्य बलिका ऐसा ही हाल गोडवध काव्यमें विन्ध्यवासिनीके वर्णनमें लिखा है, और बाज़ बाज़ (१) मुल्कोंमें अंग्रेज़ी अमल्दारीके प्रारम्भतक भी यह रवाज जारी था.

वर्त्तमान समयका रवाज राजपूतानहमें नीचे लिखे मुवाफ़िक़ है:– राजपूतानहके मर्दोंका ख़ास पहराव पघड़ी, कुड़ता, अंगरखी, धोती और कमरबन्धा है; बाज़ बाज़ लोग पायजामा भी पहिनते हैं. दर्बारी लिबास, जो महाराणा साहिबके दर्बारमें जानेके समय पहिनना पड़ता है, उसमें अमरशाही और अरसीशाही पघड़ी (२), कुड़ता, झग्गा (जामा), और पायजामा पहिनकर कमर बांधनी पड़ती है. औरतें बड़े घेरका लहंगा पहिनकर अनुमान ६ हाथ लम्बी साड़ी (ओढ़नी) ओढ़ती हैं; और दोनों हाथोंके भुजों तथा पहुंचोंपर हाथी दांतके अथवा लाखकी चूड़ियां और उनके बीच बीचमें जड़ाऊ सोने व चांदीका ज़ेवर भी पहिनती हैं. माथेका बोर, नाककी नथ, गलेका तिमणियां और हाथकी चूड़ियां सुहागिन (सधवा) स्त्री के चिन्ह गिनेजाते हैं. इनके सिवा और भी कई तरहके भूषण पहिनती हैं. विधवा स्त्री आंखमें काजल आंजना, सर्व प्रकारके भूषण, और कच्चे रंगका वस्त्र पहिनना त्यागनेके अलावह मद्य व मांसका भी परित्याग करदेती है. ब्राह्मण और महाजन मद्य मांस नहीं खाते, परन्तु क्षत्रियोंमें इसका रवाज है. उत्तराखण्ड और पूर्वके क्षत्री मद्य नहीं पीते, इसी तरह वे लोग पियाज़ और लहसुन भी नहीं खाते. क्षत्री लोग अपनी स्त्रियोंको पर्देमें रखते हैं, यहांतक कि ग़रीबसे

---

(१) बंगाला और आसाम वग़ैरह.

(२) इससे पुरानी एक छौगादार पघड़ी थी, उसका रवाज तो मिटगया, आजकल अमरशाही और अरसीशाहीके सिवा महाराणा साहिबकी इजाज़तसे बाज़ बाज़ सर्दार स्वरूपशाही पघड़ी बांधते हैं. अमरशाही महाराणा दूसरे अमरसिंहने, अरसीशाही महाराणा अरिसिंहने और स्वरूपशाही महाराणा स्वरूपसिंहने चलाई थी.

ग़रीब क्षत्री भी, चाहे वह अपने कंधेपर रखकर पानीका घड़ा भरलावे, परन्तु औरतको पर्देसे बाहिर नहीं निकालता. अगर्चि यह रस्म हिन्दुस्तानके प्राचीन रवाजमें दाख़िल नहीं है, लेकिन् मुसल्मानोंके जुल्मसे बचनेके लिये उन्हींका अनुकरण करलियागया है. धर्म शास्त्रमें जो षोडश संस्कार लिखे हैं उनमेंसे राजपूतानहमें बहुत थोड़े प्रचलित हैं, और जो हैं भी तो उनका बर्ताव यथाविधि नहीं है. जब बालक पैदा होता है, तो उस वक्त नाम करण करदेते हैं. यज्ञोपवीतका कोई समय नियत नहीं है, बाज़ लोग पहिले और बाज़ विवाहके समय करदेते हैं, और क्षत्रिय तथा वैश्योंमें नहीं भी करते. शादीका रवाज इस तरहपर है, कि नियत समयपर दूल्हा बरातके साथ आकर दुल्हिनके बापके दर्वाज़ेपर तोरण वंदना करता है. घरके भीतर जानेके समय बेटीकी माता जमाईको आरती वग़ैरह करके भीतर लेजाती है. फिर गणेश चित्रके आगे दूल्हा और दुल्हिनको बिठाकर दुल्हिनके दक्षिण हाथको, जिसमें मिंहदी और १) रुपया रखते हैं, दूल्हाके दक्षिण हाथसे मिलादेते हैं, यानी हथलेवा जोड़ते हैं, और दुल्हिनकी ओढ़नी और दूल्हाके दुपट्टेको गांठ देकर एक रुपया उसमें बांध देते हैं, जो गठजोड़ा कहलाता है. इसके पीछे दोनोंको मंडपके नीचे लाकर ब्राह्मण लोग वेद मंत्रोंसे होम करते हैं, और कन्याके माता पिता जोड़ेसे बैठकर यह कृत्य करवाते हैं. फिर वर कन्याको होमकी अग्निके गिर्द ४ परिक्रमा (फेरा) करवाते हैं. इसके बाद कन्याका पिता हाथमें जल लेकर, जबकि वर कन्याका हथलेवा छुड़ाया जावे, वरके हाथमें कन्यादानका संकल्प छोड़ता है. पीछे कन्याको जनवासे (१) लेजाते हैं, जहां वरका नाना कन्याकी गोदमें मुंहदिखावा, पताशे, और कुछ नक्द रुपया देता है, और यह रस्म होजानेपर कन्याको उसके रिश्तेदार जनवासेसे वापस अपने घर ले आते हैं. पहिले दिन जो भोजन बरातको दियाजाता है उसको कुंवारीभात, दूसरे दिनके भोजनको धोरण, और तीसरे दिन दियाजावे उसको जीमनवार कहते हैं. चौथे दिन बरात बिदा करदी जाती है. हमने यह हाल प्रचलित रीतिके मुवाफ़िक़ लिखा है वर्नह भोजन देने और बरातको रखनेमें अधिक न्यून भी होता है. यह रीति ख़ासकर क्षत्रियोंकी है, और चारणोंकी भी इसीके मुवाफ़िक़ है, बाक़ी क़ौमोंमें बाज़ बाज़ रस्मोंमें थोड़ा बहुत फेर फार भी होता है. कन्याका पिता दहेज़में हाथी, घोड़ा, कपड़ा, ज़ेवर और जुहारी (२) देता है.

---

(१) जहांपर बरातका उतारा दियागया हो, उस जगहको जनवासा कहते हैं.

(२) दूल्हाके संबन्धियों अथवा कुछ बिरादरीको जो बेटीका बाप सरोपाव, या रुपया और नारियल, अथवा ख़ाली नारियल देता है उसको जुहारी कहते हैं.

जब कोई मरजाता है, तो मृत्युका यह रवाज है, कि मरने वालेको गीता या भागवतका पाठ सुनाते हैं, और हाथी, घोड़ा, कपड़ा, ज़ेवर तथा गाय वगैरहका उससे दान करवाते हैं. फिर गायके गोबर और शुद्ध मृत्तिकासे लीपी हुई ज़मीनपर दर्भ (डाब) और जव, तिल, बिछाकर मरने वालेको खाटसे उतारकर उसपर सुलादेते हैं, और उसके मुखमें गंगाजल, गंगामाटी और थोड़ासा सुवर्ण देदेते हैं. जब श्वास निकलजाता है, तो स्नान और हजामत करवानेके बाद उसपर गंगाजल व गंगामाटी वगैरह डालकर उसे वस्त्र पहिनाते हैं. फिर त्रिकटी (शववाहिनी) पर दर्भ, दर्भ पर रूई, और रूईपर कपड़ा बिछाकर लाशको उसपर रखते हैं, और ऊपर कपड़ा ढककर यदि मिले तो उसपर दुशाला वगैरह भी डालदेते हैं. फिर रीतिके अनुसार पिंड वगैरह करके मुर्देको स्मशानमें लेजाते हैं, और वहां चितापर सुलाकर सिरकी तरफ़से आग लगा देते हैं. मुर्दा जल-जानेके बाद सब लोग उसपर लकड़ी डालते हैं, फिर रीति पूर्वक बारहवें (द्वादशाह) तक पिण्ड श्राद्ध होनेके बाद भोजन दियाजाता है. मरने वालेके रिश्तेदार और उसके आश्रित लोग डाढ़ी मूंछ मुंडवाकर भद्र होते हैं. यह रवाज हमने आम तौरपर लिखा है, वर्नह राजा महाराजाओंके यहां षोडश संस्कार शास्त्रके अनुसार होते हैं, और ग्रामीण लोगोंमें बिल्कुल कम. हिन्दुस्तानकी स्त्रियोंके पातिव्रत्यकी प्रशंसा प्राचीन कालसे बहुत कुछ चली आती है, बल्कि मेगस्थिनीज़ वगैरह विदेशी लोगोंने भी तारीफ़ लिखी है. इस देशकी ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य वगैरह कई कौमोंमें पुनर्विवाहका रवाज नहीं है, अल्बत्तह कुछ दिनोंसे भारतवर्षके कई ज़िलोंमें पुनर्विवाह करनेकी चेष्टा होरही है, परन्तु वर्तमान समयमें आम लोगोंमें इस रवाजका प्रचलित होना असंभव मालूम होता है.

राजपूतानहके क्षत्रियोंमें पहिले अफ़ीम खानेका रवाज अधिक था, यहांतक कि मिह्मानकी ख़ातिर तवाज़ो भी अफ़ीम खिलाकर ही करते थे, लेकिन् अब यह रवाज़ धीरे धीरे कम होताजाता है. तम्बाकू पीनेकी रीति भी यहांके लोगोंमें बहुत है, थोड़े ही आदमी ऐसे निकलेंगे, जो न पीते हों. भांग पीनेका रवाज़ नगर निवासी ब्राह्मणोंमें ज़ियादह है.

सिक्का.

सिक्का इस मुल्कमें प्राचीन कालसे गुहिलोत राजाओंके नामका प्रचलित रहा है.

छठी सदी .ईसवी में गुहिलके नामका सिक्का चलता था, जिसके दो हज़ार सिक्के आगरेमें मिले थे. इन सिक्कोंका हाल जेनरल कनिंघमने आर्कियॉलॉजिकल सर्वेके चौथे नम्बरमें इसतरहपर लिखा है, कि दो हज़ारसे ज़ियादह सिक्के आगरेमें ज़मीनके भीतर गड़ेहुए निकले थे, जिन सबपर "श्री गुहिल" या "गुहिल श्री" (१) का लेख था. यह (गुहिल) मेवाड़के गुहिल ख़ानदानका पहिला पुरुष .ईसवी ७५० [वि० ८०७ = हि० १३२] में मौजूद था, परन्तु अक्षरोंकी लिपि इस समयसे अधिक पुरानी है, इसलिये वे शिलादित्यके पुत्र गुहा अथवा गुहिलके होंगे, जिसके राज्यका समय ठीक ठीक मालूम नहीं है, परन्तु अनुमानसे मालूम होता है, कि वह सन् .ईसवीकी छठी सदीमें हुआ होगा. सौराष्ट्रके राजाओंका अधिकार क़रीब क़रीब आगरेतक था, जिससे यह भी अनुमान होसक्ता है, कि ये दो हज़ार सिक्के कोई मुसाफ़िर सौराष्ट्रसे आगरेमें लाया होगा, परन्तु ज़ियादहतर यह मुम्किन है, कि ये सिक्के गुहिलके समय आगरेमें चलते थे, क्योंकि समय समयपर इसी राजाके कई सिक्के आगरेमें और भी मिले हैं, जो मैंने नहीं देखे.

दूसरा सिक्का महाराणा हमीरसिंहका प्रिन्सेप साहिबको मिला, जिसकी बाबत वह अपनी किताबकी पहिली जिल्दमें लिखता है, कि "हमीर" नाम कई सिक्कोंमें मिलता है, और यह हमीर मेवाड़का होगा. इन सिक्कोंपर एक तरफ़ "श्री हमीर" (२) और दूसरी तरफ़ किसीमें "ग़यासुद्दीन", किसीमें "महमद साम", तथा "सुरिताण (३) शमसुद्दीन", "अलाउद्दीन", "नासिरुद्दीन", और "फ़तहुद्दीन" नाम लिखे हुए हैं (४).

तीसरा तांबेका एक चौखूंटा सिक्का महाराणा कुम्भाका है, जिसके एक तरफ़ "कुंभकर्ण्ण" और दूसरी तरफ़ "एकलिंग" साफ़ तौरपर पढ़ाजाता है. इस सिक्केके

---

(१) गुहिलपतिके नामका एक दूसरा सिक्का मिलनेसे जेनरल कनिंघम उसको तोरमान वंशका बतलाता है, लेकिन हमारी रायमें गुहिलपतिका सिक्का भी मेवाड़के पहिले राजा गुहिलका ही होना चाहिये, अथवा गुहिलके वंशमेंसे किसी ऐसे राजाका, जिसका विशेषण गुहिलपति हो. शिलादित्यका पुत्र गुहिल छठी सदी .ईसवी (पांचवीं सदीके अख़ीरमें) में हुआ है, क्योंकि गुहिलसे छठा राजा अपराजित विक्रमी ७१८ में मेवाड़के पहाड़ी ज़िलेमें राज्य करता था.

(२) इन सिक्कोंपर एक तरफ़ "श्री हमीर" और दूसरी तरफ़ बादशाहोंके नाम लिखे हैं, जिसका यह कारण है, कि महाराणा हमीरसिंहके पूर्वजोंने ऊपर लिखे हुए बादशाहोंसे बड़ी बड़ी लड़ाइयां लड़ी थीं, इसलिये दूसरी तरफ़ उनके नाम लिखेगये होंगे.

(३) सिक्कोंके शब्द यहांपर वैसेही लिखदिये हैं जैसे कि अस्ल सिक्कोंमें पढ़ेगये हैं.

(४) यही प्रिन्सेप साहिब अपनी किताबकी पहिली जिल्दके पृष्ठ ३३१ में हमीर शब्दको बादशाही ख़िताब मानकर इस सिक्केको बादशाही बतलाते हैं.

बारेमें प्रिन्सेप साहिबने अपनी किताबकी पहिली जिल्दके २९८ प्रष्ठमें जो बयान किया है उसमें उन्होंने ग़लतीसे एकलिंगको एकलिस, और कुंभकर्णको कभकंस्मी पढ़लिया है, परन्तु सिक्केकी छापको देखनेसे कुंभकर्ण और एकलिंग साफ़ साफ़ पढ़ा-जाता है– (देखो प्रिन्सेप साहिबकी किताब जिल्द पहिली, प्लेट २४ में सिक्का नम्बर २६).

चौथा सिक्का महाराणा पहिले संग्रामसिंहका है, जिसकी बाबत् प्रिन्सेप साहिब अपनी तवारीख़की पहिली जिल्दमें लिखते हैं, कि नम्बर २४ व २५ के सिक्के पिछले ज़मानहके और तांबेके हैं, जो स्टेचींके संग्रहमेंसे इसी क़िस्मके कितनेएक सिक्कोंमेंसे पसन्द किये गये हैं. २४ नम्बरके सिक्केपर एक तरफ़ "श्री रण (सं) ग्रम सं (घ)" और दूसरी तरफ़ त्रिशूल और कुछ चिन्ह हैं; और नम्बर २५ में एक तरफ़ "श्री रा (णा सं) ग्राम सं (घ) ४१५८०" और दूसरी तरफ़ केवल त्रिशूल और स्वस्तिक (साथिये) का चिन्ह है. किसी किसी सिक्केपर "संग्रम" और किसीपर "संगम" भी पाया जाता है, जो सिक्केके अक्षरोंकी ख़राबी है. ऊपर लिखे हुए सिक्कोंके लिये अनुमान कियाजाता है, कि वे उस नामी संग्रामसिंहके सिक्के हैं, जिसका नाम मुग़ल मुवर्रिख़ोंने सिंह लिखा है, और जिसने बाबरसे बयानामें लड़ाई की थी. कर्नेल् टॉडने इन महाराणाका गद्दी बैठना विक्रमी १५६५ [हि० ९१४ = ई० १५०८] में, और बाबरसे विक्रमी १५८४ कार्तिक कृष्ण ५ [हि० ९३४ ता० १९ मुहर्रम = ई० १५२७ ता० १६ ऑक्टोबर] को खानवा ग्राममें लड़ाई होना (१) वग़ैरह लिखा है.

विक्रमी १६२४ [हि० ९७५ = ई० १५६७] में जब अक्बर बादशाहने चित्तौड़को फ़त्ह करलिया, तो उस समयसे महाराणा उदयसिंह, प्रतापसिंह और अमरसिंह ये तीनों महाराणा पहाड़ोंमें रहकर बादशाह अक्बर और जहांगीरसे लड़ाइयां लड़ते रहे, और इस आपत्ति कालमें टकशाल भी बन्द रही; लेकिन् विक्रमी १६७१ [हि० १०२३ = ई० १६१४] में जब महाराणा पहिले अमरसिंहसे जहांगीरकी सुलह होगई, तब यह क़रार पाया, कि सिक्का और खुतबा तो बादशाही सिक्कोंके मुताबिक़ ही रहना चाहिये, याने रुपयेमें मज़्मून तो शाही सिक्केके मुवाफ़िक़ हो, और वज़न तथा नाम मेवाड़के पुराने सिक्कोंके मुवाफ़िक़ रहे. चुनांचि इसी इक़ारके मुवाफ़िक़ चित्तौड़ी सिक्का जारी हुआ; और इसके बाद विक्रमी १७७० [हि० ११२५ = ई० १७१३] में उदयपुरी सिक्का बनवानेकी शर्त फ़र्रुख़सियर बादशाहसे क़रार पाई.

---

(१) यह लड़ाई विक्रमी १५८४ चैत्र शुक्ल १५ [हि० ९३३ ता० १३ ज़मादियुस्सानी = ई० १५२७ ता० १७ मार्च] को हुई थी.

तांबेके सिक्के मेवाड़में कई तरहके चलते हैं, जो भीलवाड़ी, उदयपुरी, त्रिशूलिया, भींडरिया, सलूंबरिया, नाथद्वारिया वगैरह नामोंसे प्रसिद्ध हैं. इनमें अस्ली अक्षर तो बिगड़गये हैं, लेकिन् फ़ार्सी अक्षरोंकी सूरतके चिन्ह बनादियेजाते हैं, जो अच्छी तरह नहीं पढ़े जाते.

एक सिक्का चांदीका महाराणा स्वरूपसिंहने विक्रमी १९०६ [हि० १२६५ = ई० १८४९] में स्वरूपशाहीके नामसे जारी किया था, जिसके एक तरफ़ नागरीमें "चित्रकूट उदयपुर" और दूसरी तरफ़ "दोस्तिलंधन" लिखा है; और दूसरा सिक्का (चांदोड़ी) महाराणा भीमसिंहकी बहिन चन्द्रकुंवरबाईने जारी किया था, जिसमें फ़ार्सी अक्षर थे, परन्तु महाराणा स्वरूपसिंहने उन अक्षरोंको निकालकर केवल बेल बूटेके चिन्ह बनवादिये.

तोल व नाप.

मेवाड़में कई प्रकारके तोल हैं. देहातमें कहीं ४२ रुपये भरका सेर, कहीं ४४ भरका, कहीं ४६ भरका, कहीं ४८ भर, और कहीं ५६ रुपये भरका है. इसी तरह माशे और तोलेका भी हिसाब है, याने कहीं ६, कहीं ७, और कहीं ८ रत्तीका माशा माना जाता है, लेकिन् ख़ास राजधानी उदयपुरमें ८ रत्तीका माशा, और १२ माशेका तोला प्रचलित है, और इसीसे सोना चांदीका ज़ेवर वगैरह तोला जाता है. यहांका रुपया १० दस माशे भरका है, जिससे १०४ रुपये भर वज़नका एक सेर और चालीस सेरका एक मन है. बारह मन वज़नको एक माणी और बारह सौ मनको एक मणासा कहते हैं. मेवाड़के पहाड़ी ज़िलोंमें अनाज वगैरहका वज़न लकड़ीके बने हुए पात्रों अर्थात् पैमानोंसे कियाजाता है, जो पाई, माणा, और सेई वगैरहके नामसे प्रसिद्ध हैं. दवाइयोंके वज़नका मेवाड़में जुदाही ढंग है. ८ चांवलका एक जव, २ जवकी एक रत्ती, ५ रत्तीका एक माशा, ४ माशेका एक टंक, ४ टंकका एक कर्ष, ४ कर्षका एक पल, ४ पलका एक कुड, ४ कुड़का एक प्रस्थ, और ४ प्रस्थका एक आढक कहलाता है.

मेवाड़में नाप भी कई तरहके हैं, लेकिन् ज़ियादहतर हाथकी नाप काममें आती है, जो क़रीब क़रीब दो फ़ीटके बराबर है; और ख़ास शहर उदयपुरमें दो क़िस्मके गज़ प्रचलित हैं, एक सिलावटी जो दो फ़ीट लम्बा है, और दूसरा बज़ाज़ी जो तीन गज़ मिलाकर चार हाथके बराबर होता है.

राज्यके कारख़ाने और न्यायालय.

अब हम यहांपर महाराणा साहिबके कारख़ानोंका कुछ हाल लिखते हैं, जिनका मुख़्तसर बयान पहिले लिखा जाचुका है:–

कपड़ेका भंडार– कुल राज्यमें जितना कपड़ा ख़र्च होता है वह सब इस कारख़ानेमें ख़रीद होकर जमा होता है, फिर जिस सीग़ेमें ख़र्च हो, यहांसे जाता है. मामूली ख़र्चके सिवा विशेष ख़र्च हो तो, वह महकमहख़ासके हुक्मसे होता है.

कपड़द्वारा– इस कारख़ानहमें ख़ास महाराणा साहिबके धारण करनेके वस्त्र रहते हैं.

रोकड़का भंडार– यह राज्यका मामूली ख़ज़ानह है, कुल राज्यमें रोकड़का ख़र्च यहांसे ही होता है.

हुक्म ख़र्च– यह कारख़ानह ख़ास महाराणा साहिबके जैबख़र्चका है, प्रति दिन जो ख़र्च महाराणा साहिबके ज़बानी हुक्मसे होता है, उसके हिसाबपर दूसरे दिन ख़ुद महाराणा साहिब अपनी मुहर करदेते हैं.

पांडेकी ओवरी– इस कारख़ानहमें पहिले तो बहुतसी पर्चूनी चीज़ें रहती थीं, लेकिन् उसके हिसाब किताब और जमाख़र्चमें गड़बड़ देखकर महाराणा शम्भुसिंह साहिबने कुल कारख़ानहकी मौजूदह चीज़ोंको मुलाहज़ह फ़र्मानेके बाद जो चीज़ जिस कारख़ानहके लाइक़ पाई उसको वहां पहुंचादी, और रद्दी चीज़ें जो नीलाम व बख़्शिशके लाइक़ थीं वे बख़्शदीगई. अब जो कोई चीज़ नज़्र वग़ैरह हो, तो इस कारख़ानहमें लिखीजाकर जिस कारख़ानहके योग्य होती है, वहीं भेजदीजाती है, फ़क़त महाराणा साहिबके पहिननेका ज़ेवर और तस्वीरें इस कारख़ानहमें रहती हैं.

सेजकी ओवरी – इस कारख़ानहमें महाराणा साहिबके ख़ास आराम करनेके पलंग वग़ैरहकी तय्यारी रहती है.

अंगोलियाकी ओवरी – इस कारख़ानहमें महाराणा साहिबकी स्नान सम्बन्धी तय्यारी रहती है.

रसोड़ा – इस कारख़ानहमें ख़ास महाराणा साहिब और उनके सन्मुख पंक्तिमें भोजन करनेवाले सभ्यजनोंके लिये भोजन तय्यार होता है. पुराने समयमें वहींपर भोजन कियाजाता था, जिसका रवाज इसतरहपर था, कि महाराणा साहिब अपने चौके (१) में बैठकेपर विराजकर, और सभ्यजन अपने चौकेमें पांतियेपर बैठकर भोजन करते थे.

---

(१) प्रत्येक मनुष्यके बैठकर जीमनेके लिये हद क़ाइम कीहुई ज़मीनको चौका कहते हैं, जो अबतक इस कारख़ानहमें बने हुए मौजूद हैं.

यह रवाज महाराणा तीसरे अरिसिंहतक तो बना रहा, लेकिन् उसके बाद किसी कारणसे उक्त कारख़ानहमें भोजन करना बन्द होगया, और क्रम क्रमसे भोजन करने वालोंमें भी न्यूनाधिक होता रहा. वर्तमान समयमें किसी उत्तम स्थानमें महाराणा साहिब अपनी इच्छानुसार जिन सर्दार पासवानोंको अपने सन्मुख पांतियेपर बैठकर भोजन करनेकी आज्ञा देते हैं वे नित्य प्रति वहांपर भोजन करते हैं, और सफ़रमें सर्दार, पासवान तथा कारख़ानहके नौकर सब जीमते हैं.

पानेरा - इस कारख़ानहमें महाराणा साहिबके पीनेका जल, खुश्क और तर मेवा, नाथद्वारा व एकलिंगेश्वर वग़ैरह देवस्थानोंका महाप्रसाद, और नशेली चीज़ें तथा दवाईख़ानह (१) वग़ैरह रहता है.

सिलहख़ानह - इस कारख़ानहमें तलवार, बर्छी और तीर कमान वग़ैरह कई प्रकारके शस्त्र रहते हैं, जिनमें वह खड्ग भी है, जो बहरी जोगिनी (देवी) ने राव मालदेव सोनगराको दिया था, और वहांसे महाराणा हमीरसिंहके हाथ आया. यह खड्ग नवरात्रियोंके दिनोंमें एक मुख्य स्थान (खड्ग स्थापना) में स्थापन कियाजाता है, जिसका ज़िक्र नवरात्रिके हालमें लिखाजा चुका है. दूसरी तलवार इस कारख़ानहमें वह है, जो बेचरामाताने शार्दूलगढ़के राव जशकरण डोडियाको और उसने महाराणा लक्ष्मणसिंहको दी थी. इस तलवारको बांधकर महाराणा हमीरसिंहने क़िला चित्तौड़गढ़ मुसल्मानोंसे वापस लिया, और महाराणा प्रतापसिंह अव्वलने अक्बर बादशाहके साथ कई लड़ाइयां लड़ीं. उपरोक्त शस्त्रोंके सिवा कई प्रकारकी ढालें, और तरह तरहके टोप, बक्तर, कवच, करत्राण वग़ैरह भी हैं.

बन्दूक़ोंका कारख़ानह - इस कारख़ानहमें कई प्रकारकी तोड़ादार बन्दूकें, और जुजावलें रहती हैं, जिनके सिवा नये फ़ैशनकी कई क़िस्मकी टोपीदार व कारतूसी बन्दूकें और पिस्तौलें वर्तमान महाराणा साहिबने एकट्ठी की हैं. पहिले यह कारख़ानह बाबा चन्दसिंहकी संभालमें था, और अब प्रतापसिंहकी निगरानीमें है.

छुरी कटारीकी ओवरी - इस कारख़ानहमें कई क़िस्मकी छुरी और कटारियां रहती हैं.

धर्मसभा - इस कारख़ानहके मुतअ़ल्लिक़ मामूली दान पुन्य वग़ैरहका काम और महाराणा साहिबकी ख़ास सेवाके श्री बाणनाथ महादेव, और पूजनकी सामग्री वग़ैरह रहती है.

---

(१) पेश्तर वैद्य अथवा हकीम वग़ैरह लोगोंसे जो औषधि बनवाते, वह इसी कारख़ानहमें बनाई जाती, और वहीं रक्खी जाती थी, लेकिन् अब डॉक्टरोंका इलाज जारी होनेके कारण इस कारख़ानहकी निगरानी डॉक्टर अक्बरअ़लीके तअ़ल्लुक़में है.

देवस्थानकी कचहरी- इस कारख़ानहके मुतऋल्लक़ कई छोटे मोटे देवस्थानों (१) के जमाख़र्चका प्रबन्ध है, जिनके पुजारियोंके लिये जो कुछ बन्धान नियत करदिया-गया है, जो उनको इस कचहरीके द्वारा मिलता रहता है, और वाक़ी जो कुछ बचत जिस मन्दिरकी आमदनीमेंसे रहती है, वह उसी मन्दिरकी समझी जाती है, केवल निगरानी मात्र राज्यकी ओरसे मालिकानह तौरपर रहती है. यह कचहरी महाराणा स्वरूपसिंहके समयसे जारी हुई है.

शिल्पसभा - इस कारख़ानहके मुतऋल्लक़ कुल तामीरात (कमठाणे) का काम है. पहिले यह काम पर्चूनी कारख़ानहके मुतऋल्लक़ जुदे जुदे आदमियोंकी निगरानीमें था, लेकिन् महाराणा शम्भुसिंह साहिवके समयसे टेलर साहिवको सौंपागया, और उसके वाद दो हिस्सोंमें तक़्सीम होगया, तवसे इस कामका वड़ा हिस्सह साह अम्वाव मुरड्याकी निगरानीमें और थोड़ासा इंजिनिअर टॉमस विलिअमकी सम्भालमें रहा; लेकिन् वर्तमान महाराणा साहिवकी गद्दीनशीनीके वक़्से कुछ समयकी मीआदके लिये एग्ज़िक्युटिव इंजिनिअर केम्वल टॉमसन साहिवके अधिकारमें होगया है.

ख़ास ख़ज़ानह - यह ख़ज़ानह वैकुण्ठवासी महाराणा साहिबने अपना ख़ास ख़ज़ानह मुक़र्रर किया था.

शम्भुनिवास- महाराणा शम्भुसिंह साहिवने शम्भुनिवास नामी अंग्रेज़ी तर्ज़का एक महल वनवाकर उसकी तय्यारी और रौशनी वग़ैरहका सामान तथा बहुतसी क़िस्मकी पर्चूनी नुमाइशी चीज़ें इसी महलके दारोग़ह महासाणी रत्नलालके सुपुर्द करदी थीं, जिससे यह एक वहुत वड़ा कारख़ानह बनगया.

ज़नानी ड्योढ़ी- यह कोई कारख़ानह नहीं है, वल्कि एक जुदी सर्कार है, सैकड़ों औरत व मर्द ड्योढ़ीसे पर्वरिश पाते हैं. ड्योढ़ी सीग़ेका कुल काम महता लालचन्द व प्यारचन्दकी निगरानीसे होता है, और इनके तह्तमें महाराणियोंके कामदार, मौसल और दास, दासियां वग़ैरह सैकड़ों मनुष्य हैं.

---

(१) श्री एकलिंगेश्वर, श्री ऋषभदेव, श्रीचतुर्भुजनाथ, श्रीजगतशिरोमणि, श्रीनवनीतप्रिय, श्री गोकुलचन्द्रमा, श्री जवान स्वरूपविहारी, श्रीवांकड़ाविहारी, श्रीगुलावस्वरूपबिहारी, श्रीऐजनस्वरूप-विहारी, श्रीअभयस्वरूपविहारी, श्रीजगदीश्वर, श्रीभीमपद्मेश्वर, श्रीसर्दारविहारी; माजीका मन्दिर, अम्बिकाभवानी, ऊंटालामें शीतला देवी, चित्तौड़गढ़में श्रीअन्नपूर्णा (वरवड़ी देवी) वग़ैरहके सिवा राजधानी उदयपुर और इलाक़े मेवाड़में और भी बहुतसे देवस्थान हैं.

फ़ीलखानह – पहिले यह कारख़ानह बाबा चन्दसिंहकी सुपुर्दगीमें था, जिसको महाराणा स्वरूपसिंहने उससे जुदा करके ढींकड़िया राधाकृष्णको सौंपा, जो अबतक उनके बेटे श्रीकृष्णकी निगरानीमें बहुत दुरुस्तीके साथ चला आता है. इस कारख़ानहमें पचीससे लेकर पचासतक हाथी और हथनियां रहती हैं.

इस्तबल (घुड़शाला) – इस कारख़ानहमें ख़ास महाराणा साहिबकी सवारीके और मान्यजनोंके चढ़नेके घोड़े और ख़ासा तथा बारगीर बग्घियोंके घोड़े घोड़ियां रहती हैं. पुराने ज़मानहमें पायगाहका दारोगह भंडारी गोत्रका एक कायस्थ था, जो महासाणी कहलाता था, लेकिन् पीछेसे नगीनाबाड़ीका दारोगह भी इस कारख़ानेकी संभालपर नियत कियागया, उसके बाद महासाणीका तअल्लुक़ बिल्कुल उठकर दारोगह नगीना (१) बाड़ीहके सुपुर्द यह काम होगया. उसके बाद भण्डारी गोत्रके कायस्थका वंश तो बिल्कुल नष्ट होगया, जो घराना कि पुराने पासवानोंमेंसे था, और अब इस कारख़ानहका दारोगह कायस्थ ज़ालिमचन्द है.

फ़र्राशख़ानह – इस कारख़ानहमें राज्यके कुल डेरे, सरायचे, क़नातें, पर्दे और फ़र्श वग़ैरह सफ़री सामान तथा महलोंका सामान रहता है.

छापाख़ानह – यह कारख़ानह वैकुण्ठवासी महाराणा सज्जनसिंह साहिबने क़ाइम किया था, जिसमें "सज्जन कीर्ति सुधाकर" नामका एक अख़्बार और अदालतोंके इश्तिहार व सम्मन वग़ैरह पर्चूनी काग़ज़ात छपते हैं, और यह तवारीख़ भी इसी कारख़ानहमें छपी है.

पुस्तकालय – इस राज्यमें दो पुस्तकालय हैं, एक नवीन पुस्तकालय जिसका नाम "श्री सज्जनवाणी विलास" है, जो महाराणा सज्जनसिंह साहिबने निर्माण किया है; और दूसरा प्राचीन, जो "सरस्वती भण्डार" के नामसे प्रसिद्ध है. इन दोनोंके अलावह मद्रसहकी और विक्टोरिया हॉलकी लाइब्रेरी अलग हैं.

सांडियोंका कारख़ानह – रियासतमें सांडियोंके दो कारख़ाने हैं. एक ढींकड़िया नाथूरामके तअल्लुक़में, जिसमें बारबर्दारीके नौकर ऊंट और क़रीब हज़ार बारह सौ सर्कारी सांडनियां (ऊंटनी) हैं; और दूसरा कारख़ानह मेरे (कविराजा श्यामलदास) के तहतमें है, जिसमें ८० सांडिये और दस घोड़ियां हैं. ये चौकीके उन पचास सर्दारोंकी

---

(१) चौगानके मैदानके बीच, जहां अब खुला हुआ दरीख़ानह है, पेश्तर एक बग़ीची थी, जिसका नाम "नगीना बाड़ी" था, उसकी निगरानी ज़ालिमचन्दके पूर्वजोंको दीगई थी, जिससे यह ख़ांदान नगीना बाड़ीके नामसे मश्हूर होगया. इस दारोगहकी सुपुर्दगीमें महाराणा साहिबका [illegible] काम भी है.

सवारीके लिये हैं, जो मेरे तह्तमें हैं. इन सर्दारोंकी नौकरी खास महाराणा साहिबके हुक्मसे लीजाती है.

विक्टोरिया हॉल- यह कारखानह वर्तमान महाराणा साहिबने अपनी क़द्रदानी और महाराणी क्वीन विक्टोरियाकी यादगार ज्युबिलीके निमित्त सज्जन निवास बागमें एक बहुत अच्छा महल बनवाकर क़ाइम किया है, जिसमें दो कारखाने हैं- एक म्यूज़िअम (अद्भुत-द्रव्य संग्रहालय) और दूसरा लाइब्रेरी (पुस्तकालय). ये दोनों कारखाने दिनोदिन तरक्क़ी पातेजाते हैं.

पुलिस- यह महकमह वैकुण्ठवासी महाराणा सज्जनसिंह साहिबने क़ाइम किया है, जिसका सविस्तर हाल उक्त महाराणा साहिबके वृत्तान्तमें लिखाजावेगा.

साइर- इस महकमहका वृत्तान्त भी वैकुण्ठवासी महाराणा साहिबके वृत्तान्तमें दर्ज कियाजायेगा.

वाक़ियातकी कचहरी- कुल राज्यकी नक्द बक़ाया इस कचहरीकी मारिफ़त वुसूल होती है.

रावली दूकान- यह व्यापारी सीग़ेका एक महकमह है, जो महाराणा स्वरूपसिंह साहिबने जारी किया था.

टकशाल- इस कारखानहमें सिक्का पड़ता है, जिसका मुफ़स्सल हाल हम ऊपर लिखचुके हैं. पहिले इस राज्यमें दो टकशालें थीं, एक चित्तौड़में और दूसरी उदयपुरमें; लेकिन् इन दिनों उदयपुरकी टकशाल ही जारी है, जिसमें स्वरूपशाही अश्रफ़ी और स्वरूपशाही, उदयपुरी और चांदोड़ी रुपया बनता है.

जंगी फ़ौज- यह क़वाइदी फ़ौज है, जिसकी शुरू बुन्याद तो महाराणा शम्भुसिंह साहिबके समयसे पड़ी थी, लेकिन् वैकुण्ठवासी महाराणा (सज्जनसिंह) साहिबने इसको बढ़ाकर और भी दुरुस्ती करदी है. इसमें क़वाइदी पल्टनें, रिसालह, तोपखानह, बॉडीगार्ड और बैण्ड बाजा वगैरह शामिल हैं. यह फ़ौज मामा अमानसिंहके तह्तमें है.

मुल्की फ़ौज- यह फ़ौज महता माधवसिंहके पुत्र बलवन्तसिंहकी निगरानीमें है, जिससे मुल्की पुलिसका काम और पर्चूनी नौकरी लीजाती है. इस फ़ौजमेंसे भीम-पल्टन और कुछ सवार तो हाकिम मगराके तह्तमें, और अर्दलीके दो सौ जवान तथा भील कम्पनी और दो रिसाले महासाणी रत्नलालके तह्तमें हैं.

महकमहखासके मुतअल्लिक़ कारखानोंका बयान तो हम ऊपर लिखचुके हैं, अब दूसरा सीग़ह अदालती रहा, जिसमें सबसे बड़े दरजहकी अदालत राज्य श्री महद्राज-सभा है, जिसका मुफ़स्सल हाल महाराणा सज्जनसिंह साहिबके वर्णनमें लिखा-जावेगा, यहांपर मुख्तसर तौरसे लिखते हैं:-

महद्राज सभा – इसको मेवाड़की रॉयल कौन्सिल समझना चाहिये. इसके दो इज्लास होते हैं, एक इज्लास कामिल और दूसरा इज्लास मामूली. इन दोनों इज्लासोंकी रूबकारें बनकर महाराणा साहिबके सामने पेश होती हैं, और उनकी मन्ज़ूरी होनेके बाद फ़ैसले जारी कियेजाते हैं. इस सभाके मातहत एक अदालत सद्र फ़ौज्दारी और दूसरी सद्र दीवानी है, जिनका मुराफ़ा इसी सभामें सुनाजाता है.

महकमह स्टाम्प व रेजिस्टरी– इसमें स्टाम्प छपकर जारी होता है, और मकानात व ज़मीन जायदादकी खरीद फ़रोख़्त वगैरहके विषयमें रेजिस्टरीकी कार्रवाई होती है.

हाकिमान ज़िलाके पास दीवानी और फ़ौज्दारी सीगेका अमला रहता है, नाइब हाकिमोंका अपील हाकिम ज़िला सुनते हैं, और हाकिमान ज़िलेका अपील सद्र फ़ौज्दारी व सद्र दीवानीमें होता है.

वर्त्तमान महाराणा साहिबके समयमें एक नया महकमह गिराई भी काइम हुआ है, जिसका अफ़्सर इलाक़हभरमें हमेशह दौरा करता रहता है.